

सचित्र रामचरितमानस कथा

रामचरितमानस का माहात्म्य

रामचरितमानस का प्रत्येक पृष्ठ भक्ति से भरपूर है। मानस अनुभवजन्य ज्ञान का भण्डार है। तुलसीदास की रामायण मुझे अत्यंत प्रिय है और मैं उसे अद्वितीय ग्रंथ मानता हूं। रामायण के संगीत से जैसी स्फूर्ति और उत्तेजना मुझे मिलती है वैसी और किसी से नहीं मिलती।

—महात्मा गांधी

रामायण का भारत में हिमालय से नर्मदा तक सर्वत्र प्रभाव है। यह कृति राजमहल से लेकर झोंपड़ी तक प्रत्येक मनुष्य के हाथों में देखी जाती है और मानव जाति के प्रत्येक वर्ग द्वारा, चाहे वह उच्च हो या नीच, धनी हो या निर्धन, युवा हो या वृद्ध, एक समान पढ़ी-सुनी जाती और समादृत होती है। इंग्लैंड में बाइबिल का जितना प्रचार है, उससे अधिक प्रचार भारतीय जनसामान्य में रामचरितमानस का है।

—जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन

रामचरितमानस विश्व के अन्यतम ग्रंथों में से है। इस कृति के माध्यम से जन-जीवन में लोकमंगल की अपूर्व प्रतिष्ठा हुई है। रामचरितमानस की शिक्षाओं को जीवन में उतार कर सामान्य मनुष्य किसी भी सामाजिक संघर्ष में निरन्तर विजयी हो सकता है।

—वारान्निकोव

रामायण में इतनी मार्मिकता है कि हर युग में उसका सामयिक महत्व निरन्तर बना रहेगा और जब तक मनुष्य का अध्यात्म पर विश्वास बना रहेगा, तब तक मानस का भगवत्भक्ति संबंधी मूल संदेश सर्वजनीन और सर्वयुगीन माना जायेगा।

—फादर कामिल बुल्के

मूल्य रु : 125.00

सचित्र रामचरितमानस कथा

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

आषाढ़ 1909 (जून 1987)

मूल्य: 125.00

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,
पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केन्द्र • प्रकाशन विभाग

सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001
कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
एल०एल० ऑडीटोरियम, 736 अन्नासलै, मद्रास-600002
बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001
10-बी, स्टेशन रोड, लखनऊ-226019
राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004

एलाइड पब्लिशर्स (प्रा०) लि०, मायापुरी, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

इन्दिरा जी की अमृत-स्मृतियों को ....

लेखकीय

दस वर्ष पहले रामचरितमानस की चारसौवीं जयन्ती सारी दुनिया में अपूर्व उत्साह से मनाई गई। किसी एक ग्रंथ को लेकर आज तक शायद ही ऐसा लोकप्रिय आयोजन हुआ हो। उस महोत्सव पर तुलसीदास और उनकी अमर कृतियों का भाषा की दीवार तोड़कर मानव हित में व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार हुआ।

मानस चतुःशती के समय मैंने 'अंधेरे का सूर्य तुलसीदास', 'तुलसीदास और उनका संदेश' तथा 'रामचरितमानस चित्रावली' आदि कई कृतियां लिखीं। उसी समय 'सचित्र रामचरितमानस' भी तन्मय एकाग्रता से लिखी थी।

रामचरितमानस के संदेशों ने स्वार्थ पीड़ित मानव समुदाय को अभिनव शक्ति-चेतना से संपन्न किया है। रामचरितमानस अमूल्य कृति है। संसार के किसी साहित्यिक ग्रंथ से इसकी तुलना नहीं की जा सकती। तुलसीदास ने इस काव्य में ज्ञान, कर्म और भक्ति का समन्वय करके लोक धर्म की स्थापना की और मानवीय मर्यादा को प्रतिष्ठित किया। तुलसी की दृष्टि में कविता गंगा के समान सबका हित करनेवाली होती है:

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कर हित होई।।

तुलसीदास के रामचरितमानस से राष्ट्र, समाज, धर्म और मानव जाति को निरंतर लाभ हुआ है। तुलसीदास यदि चाहते तो संस्कृत में रामकथा की रचना करके समकालीन पंडितों में अपनी धाक जमा लेते, परन्तु सर्वसाधारण के मानसिक धरातल तक पहुंचने के लिए उन्होंने जनभाषा में ही रामचरितमानस लिखा। जन-जीवन में हिन्दी की प्रतिष्ठा उनका उद्देश्य था। वे जानते थे कि राम के चरित्र को इसी भाषा के माध्यम से जन-मन में उतारा जा सकता है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम, भावनाओं की वाणी और विचारों की वाहिका होती है। वेद, पुराण, श्रुति, स्मृति आदि की तुलना में रामचरितमानस अधिक लोकप्रिय इसलिए है कि इसमें जनसाधारण की भाषा में सर्वसामान्य के कल्याण का मार्ग दिखाया गया है। मानव जीवन की ऐसी कोई परिस्थिति या समस्या शायद ही छूटी हो, जिसका सत्य चित्रण और वास्तविक समाधान रामचरितमानस में निरूपित न किया गया हो।

गांधीजी ने तुलसीदास के रामचरितमानस से सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन की प्रेरणा ली। वे रामचरितमानस को संसार की अद्भुत कृति मानते थे। गांधीजी ने कहा था—''मेरे जीवन में मानस का वही स्थान है, जो भोजन में दूध का। जैसे कोई भी खाद्य-पदार्थ दूध के सभी गुणों को पूरा नहीं कर सकता, वैसे ही रामचरित-मानस की पूर्ति संसार की कोई भी साहित्यिक निधि नहीं कर सकती।'' तुलसीदास ने युग मानव की आशा, आकांक्षा, इच्छा, विश्वास और श्रद्धा को अपनी साहित्यिक कसौटी पर कसा था। सामयिक समस्याओं का शाश्वत समाधान ही उनके साहित्य का आदर्श था। तुलसीदास महान साहित्यकार होने के साथ-साथ लोकनायक भी थे। लोकनायक अपना सर्वस्व समाज के हित में विसर्जित कर व्यक्ति-चित्त को लोकचित्त बना देता है। अपने युग की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं की तुलसी के रामचरितमानस पर गहरी छाप है। उनका साहित्य जनता की चित्त-वृत्तियों का ऐसा संचित प्रतिबिंब है, जिसमें संवेदना, स्पंदन और सरसता की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है। तुलसी का मानस वैष्णव और शैव, निर्गुण और सगुण, ज्ञान और भक्ति—विभिन्न समुदायों तथा मत-मतांतरों के बीच सामंजस्य तथा समन्वय स्थापित करने का सुन्दर प्रयास है।

तुलसीदास ने जिस युग में जन्म लिया, उस युग में भारतीय मानव का स्वाभिमान दब गया था और लोगों का नैतिक अधःपतन हो चुका था। उच्छृंखलता फैली हुई थी। रूढ़ियों और कुप्रथाओं का एकछत्र साम्राज्य था।

भक्ति के नाम पर भोग और शक्ति के नाम पर शोषण का शंखनाद हो रहा था। मानवता त्राहि-त्राहि कर रही थी। निराशा की कालिमा छाई हुई थी। सामाजिक परम्पराएं और नैतिक मर्यादाएं बुरी तरह तोड़ी जा रही थीं। सामाजिक अव्यवस्था में कल्याणकारी मूल्यों को फिर से स्थापित करने के लिए तुलसी जैसे दूरदर्शी और लोकप्रिय नायक की आवश्यकता थी। मानस की रचना का लक्ष्य समाज में आस्था उत्पन्न कर लोकमंगल को जन्म देना था। इतिहास साक्षी है कि तुलसीदास ने राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण के लिए नदी की धारा को नया मोड़ दिया और सामाजिक चेतना के प्रतीक पुरुष बन गए।

बचपन से ही रामचरितमानस की कहानियां और सूक्तियां हमारी रक्त- धारा में प्रवाहित हैं। रामचरितमानस का संस्कार ही कर्मठ, जीवन्त, संवेदनशील और परोपकारी बनाये हुए है। हमारा आचरण रामचरितमानस के आदर्शों से संचालित है।

रामचरितमानस पर जो भी साहित्य--टीका, व्याख्या, समीक्षा आदि प्राप्त हुआ उसे चैतन्य होते ही निरन्तर पढ़ता, सुनता और गुनता रहा हूं। रामचरित-मानस की शायद ही कोई टीका हो जिसके अक्षरों का आत्म-साक्षात्कार न किया हो। पढ़ना उतना ही आवश्यक है जिससे पृष्ठभूमि का बोध हो सके। मनन करना बड़ा कठिन काम है। असाधारण को साधारण, अज्ञात को ज्ञात, अस्वाभाविक को स्वाभाविक और अनुपयोगी को उपयोगी बनाना सहज नहीं है। 'सचित्र रामचरित-मानस कथा' मेरी रचनात्मक कृति है। रामचरितमानस में कुल कितनी कथाएं हैं, यह तो विद्वान ही जानें, लेकिन मुझे 53 कहानियां रामचरितमानस के घटनाक्रम में ऐसी मिलीं जो पूरे कथानक को विकसित और विस्तृत करती हैं। श्री बैजनाथ वर्मा ने अपनी तूलिका से इस कृति के चित्रों को सजाया है। मैंने पाण्डुलिपि की भाषा, शैली और भाव को पूर्णता देने की कोशिश की है। फिर भी संतुष्टि नहीं मिली। संतोष समाधि है। मैं समाधिस्थ नहीं होना चाहता। इस कृति में तुलसीदास के रामचरितमानस के प्रसंगों को सहज-सरल, सात्विक भाषा में अंकित करने की कोशिश की है। मेरा यत्न है कि नागरी लिपि जानने वाला प्रकाण्ड ज्ञानी पंडित हो या झोंपड़ी में रहनेवाला सामान्य साक्षर, सभी एकरस समभाव से मानस की कथा हृदयंगम कर सकें।

इस पुस्तक की पाण्डुलिपि पर डॉ० श्यामसिंह शशि, निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार की नज़र पड़ी। उन्होंने 'सचित्र रामचरितमानस कथा' को प्रकाशित करने का निश्चय किया। इसके प्रकाशन का श्रेय उनको ही है। पाण्डुलिपि को डॉ० देवदत्त शर्मा ने संक्षिप्त किया है। अपना लिखा एक शब्द भी काटना मेरे लिए संभव नहीं था, फिर भी जिस रूप में जैसी भी है, यह कृति आपके सामने है।

रामचरितमानस की अनुभूतियों का मधु संचय कर जो सत्व इस पुस्तक में अलंकृत हो लिपिबद्ध हुआ है, वह केवल निर्जीव कागज पर रंग-बिरंगे बेजुबान अक्षर नहीं हैं। इसके पढ़ने से मनुष्य में सद्वृत्तियां जागृत होंगी। कुटेव और दुर्गुणों से अलग रहने की शक्ति मिलेगी। मेरा श्रम तभी सार्थक होगा, जब कोटि-कोटि हिन्दी भाषा-भाषी इसे पढ़कर मानवीय सद्गुणों को अपने आचरण में उतारें और दुर्गुणों से मुक्त हो सकें। मन में हीं राम-रावण हैं। दानवी-दैवी शक्तियों के लगातार अन्तः संघर्ष से अमृत और विष की सृष्टि होती है। तुलसीदास ने विष पीकर अमृत का दान प्रत्येक अक्षर में किया है। रामचरित-मानस की भाषा अवधी बोली थी, परन्तु 'सचित्र रामचरितमानस कथा' में विशुद्ध राष्ट्रभाषा हिन्दी में तुलसी के अवदान को अंकित करना मेरा लक्ष्य रहा है। इस कृति में कोई गुण है तो वह तुलसीदास का है, सारे अवगुण मेरे हैं—

''प्रभु जी मेरो अवगुन चित न धरो''।

26, राजेन्द्र प्रसाद रोड,
नई दिल्ली।
चैत्र, रामनवमी, संवत 2042 विक्रमी।

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय

मंगलाचरण

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि ।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम ॥



जेहि सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिवर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन।।

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।
भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्।।

मैं अक्षर, अर्थ समूह, विविध रस और छन्दों तथा समस्त कल्याण के विधायक सरस्वती और गणेश की वंदना करता हूं। श्रद्धामयी पार्वती और विश्वासमय शंकर की वंदना करता हूं जिनकी कृपा के अभाव में सिद्धजन हृदय में स्थित ईश्वर को नहीं देख पाते। नित्य ज्ञानमय शंकर रूपी गुरु की वंदना करता हूं जिनका आश्रय पाकर वक्र चन्द्रमा भी वंदनीय हो गया। सीता-राम के गुणगान रूपी कुंज में विचरण करने वाले कवीश्वर वाल्मीकि और कपीश्वर हनुमान की वंदना करता हूं। उत्पत्ति, पोषण तथा संहार करने वाली, क्लेश हरने वाली रामप्रिया जानकी को प्रणाम करता हूं। मैं समस्त कारणों से परे राम रूप में प्रख्यात ईश्वर की वंदना करता हूं जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता, राक्षस और मनुष्य हैं। रस्सी में सर्प होने के भ्रम की तरह जिनके सत्य से मायामय विश्व भी सच्चा प्रतीत होता है। वेद, पुराण, तंत्रशास्त्रसम्मत और रामायण एवं अन्य ग्रंथों से संग्रहीत रामकथा को मैं स्वयं के सन्तोष के लिए अत्यंत मनोरम भाषा में लिख रहा हूं।

जिनकी स्मृति मात्र से समस्त कार्य सिद्ध होते हैं ऐसे गुणों के स्वामी, सुंदर हाथी के समान मुख वाले, बुद्धिपुंज तथा शुभ गुणों के आगार गणेश मुझ पर कृपा करें। जिनकी कृपा से मूक बोलता है, लंगड़ा उच्च गहन पर्वत के शिखरों पर आरूढ़ हो जाता है, ऐसे कलियुग के समस्त पापों को नष्ट कर देने वाले ईश्वर मुझ पर दयालु हों। नीलकमल-से वर्ण वाले, पूर्ण विकसित लाल कमल-समान नेत्र वाले तथा क्षीर-सागर में शयन करने वाले भगवान विष्णु निरंतर मेरे हृदय में निवास करें। कुंद पुष्प और पूर्ण चन्द्रमा के समान शरीर वाले, पार्वती के पति, करुणागार, भक्तवत्सल तथा कामदेव के दर्प को नष्ट करने वाले शंकर मुझ पर कृपा करें। मैं कृपा के सागर मानवरूपी ईश्वर गुरु के चरण-कमलों की वंदना करता हूं। उनके उपदेश रूपी वचन महामोह रूपी गहन अंधकार को नष्ट करने के लिए प्रखर सूर्य की किरणें हैं। मैं अपने गुरु-चरणकमल-धूलि की वंदना करता हूं जो सुरुचि, सुगन्ध तथा अनुरागमय रस से परिपूर्ण है। संजीवनी बूटी-सी सुन्दर गुरु-चरणों की धूलि संसार के समस्त विकार-समूहों को नष्ट करने वाली है। गुरु के चरण-नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश की तरह हृदय में दिव्यदृष्टि उत्पन्न कर देती है। यह प्रकाश मोह-रूपी अंधकार को नष्ट करता है और जिसके हृदय में ऐसा प्रकाश आलोकित होता है, उसके बड़े भाग्य हैं। इस प्रकाश से निर्मल हृदय-चक्षु खुल जाते हैं जिससे रामचरित रूपी अगणित गुप्त एवं प्रकट मणि-मुक्ताएं स्पष्ट दिखाई पड़ने लगती हैं।

वेद विदित धर्म ध्वजा धारण करने वाले, ज्ञान और गुणों की खान राजा दशरथ रघुकुल वंश के सिरमौर थे। अयोध्यापुरी का राज्य करते हुए वे निरंतर भगवान का स्मरण करते थे। पति की आज्ञा के अनुकूल पवित्र आचरण करने वाली कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा उनकी तीन रानियां थीं। वे भी ईश्वर के प्रति दृढ़ भक्ति रखती थीं। एक बार दशरथ के मन में बड़ी पीड़ा हुई कि मेरे घर में कोई पुत्र नहीं है। तत्काल दशरथ राजगुरु वशिष्ठ के यहां गए। उनकी चरण वंदना कर अपना सारा दुःख कहा। वशिष्ठ ने दशरथ को समझाया कि धैर्य धारण करो। तुम्हारे घर में चार पुत्र होंगे जो विश्वप्रसिद्ध तो होंगे ही, भक्त-समूह का दुःख भी दूर करेंगे।

वशिष्ठ ने तत्काल श्रृंगी ऋषि को बुलवाया। पुत्र-प्राप्ति के लिए यज्ञ का आयोजन हुआ। भक्ति सहित आहुति देने पर हाथ में खीर लिये अग्निदेव प्रकट हुए। अग्निदेव ने दशरथ से कहा कि तुम्हारा मनोवांछित कार्य सफल हो गया। रानियों को खीर उचित भाग बनाकर बांट दो। अग्निदेव अन्तर्धान हो गये। दशरथ आनंदविह्वल हो उठे।

राजा ने तीनों रानियों में उचित भाग बनाकर खीर बांट दी। तीनों रानियां



देखरावा मातहिं निज, अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति राजहिं, कोटि कोटि ब्रह्मांड।।

गर्भवती हुईं। शोभा, शील और कांतिमयी तीनों रानियां पुत्र उत्पन्न होने की अभिलाषा संजोये राजमहल में सुख से रहने लगीं।

पवित्र चैत्र महीने के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि थी। भगवान का प्रिय अभिजित नक्षत्र था। मध्याह्न का समय था। न अधिक धूप थी और न अधिक ठंडक। शीतल तथा सुरभित वायु प्रवाहित हो रही थी। सभी नदियों में जैसे अमृत की धारा बह रही थी। सुखद, पवित्र दिन राम का जन्म हुआ।

राम का जन्म सामान्य शिशु की भांति नहीं हुआ था। उनके जन्म का दृश्य तपस्वियों के मन को मोहित करने वाला था। मेघ के समान श्यामल शरीर, चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म सुशोभित थे। वे कांति और सौंदर्य के समुद्र प्रतीत हो रहे थे। राम मणि और पुष्पों की माला पहने हुए थे। उनके विशाल नेत्र बड़े आकर्षक थे। कौशल्या ने उनकी अनेक प्रकार से वंदना की। मां की प्रार्थना पर भगवान ने फिर नवजात शिशु का रूप धारण कर लिया।

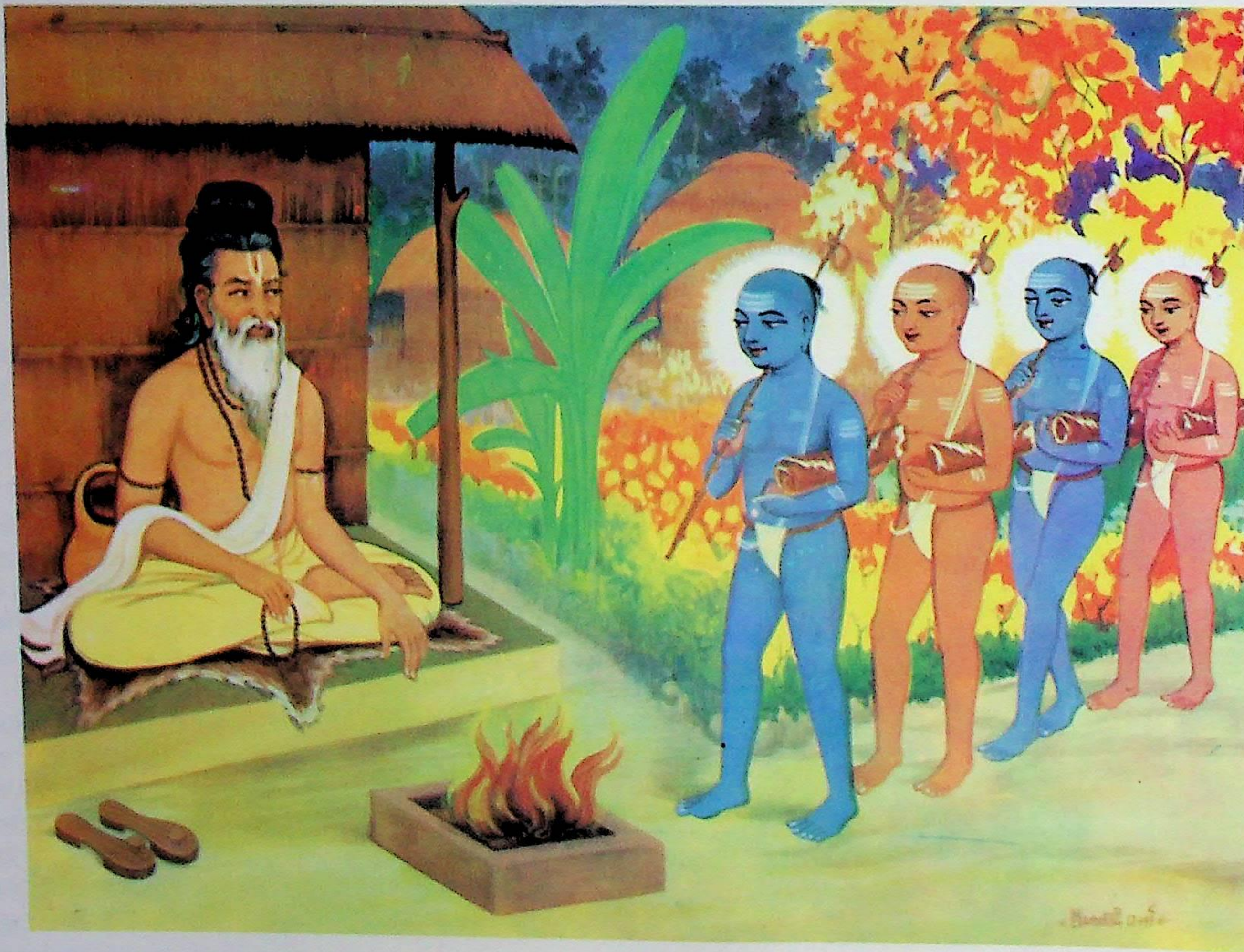
कैकेयी और सुमित्रा ने भी सुन्दर पुत्रों को जन्म दिया। अयोध्यापुरी में चारों ओर अगरु धूप का मेघ छाया हुआ था। अबीर की आंधी से डूबते हुए सूर्य की लालिमा का भ्रम हो रहा था। राजमहल का दीप्त कलश चन्द्रमा और महलों के मणियों के समूह तारों की तरह चमक रहे थे। पंडितों की वाणी वेद ध्वनि का गुंजन कर रही थी। सूर्य भी इस दृश्य को देख चलना भूल कर ठहर गए। महीना दिन के समान हो गया। रात्रि का आगमन ही नहीं हुआ। राजा दशरथ अपने राजमहल में इस अभूतपूर्व अवसर पर उपस्थित लोगों को हाथी, रथ, घोड़ा, गाय, सोना और नाना प्रकार के वस्त्र व आभूषण आदि उपहारस्वरूप भेंट कर रहे थे। सभी लोग दशरथ के पुत्रों को आशीर्वाद दे रहे थे।

इसी प्रकार सुखद दिन बीतते गये। किसी को कुछ ज्ञात न हो सका। वशिष्ठ ने पुत्रों के नामकरण की रीति पूरी की। उन्होंने आनंदसिंधु तथा कृपा की एक बूंद से विश्व को कृतार्थ कर देने वाले कौशल्या-पुत्र का नाम राम, संसार का भरण-पोषण करने की शक्ति से सम्पन्न दूसरे पुत्र का नाम भरत, शुभ लक्षणों के धाम तथा संसार के आधार तीसरे पुत्र का नाम लक्ष्मण और स्मरण मात्र से शत्रु का नाश कर देने वाले चौथे पुत्र का नाम शत्रुघ्न रखा। चारों भाई शील और गुणों के धाम थे। सर्वव्यापक, निरंजन, निर्गुण और विनोद रहित अजन्मा ईश्वर प्रेम और भक्ति के वशीभूत हो कौशल्या की गोद में पुत्र बनकर खेल रहा था। राम नील-कमल और मेघ के समान श्याम शरीर वाले थे। करोड़ों कामदेवों के सौंदर्य को लज्जित करने वाले उनके लाल चरण के नखों से ऐसा प्रकाश चमक रहा था मानो लाल कमल के पत्र पर मोती जड़ दिया गया हो। आभूषणयुक्त उनकी लम्बी भुजाएं, छाती पर मणियों के हार की अलौकिक कांतिपूर्ण शोभा, शंख के समान कंठ, दो छोटे-छोटे दांत, लाल-लाल सुन्दर होठ, मधुर तोतली किलक, घुंघराली केश राशि तथा शरीर पर पीला कुर्ता, सभी मिल कर अवर्णनीय शोभा बिखेर रहे थे। अयोध्यावासियों को अपनी विभिन्न बाल-लीलाओं से सुख देने वाले राम के स्नेह में कौशल्या निमग्न रहने लगीं।

एक बार राम पालने में लेटे हुए थे। माता कौशल्या कुलगुरु और देवताओं की पूजा कर रही थीं। उन्होंने नैवेद्य चढ़ाया। उन्होंने देखा कि राम नैवेद्य खा रहे हैं। भयभीत हो कौशल्या भागती हुई पालने पर सोये हुए राम को देखने गयीं। वह वहां भी सोये हुए थे। फिर वहां से पूजा-गृह में भागीं। दोनों जगह दो बालक देखकर उन्हें भ्रम हुआ। उनका हृदय कांपने लगा। मन का धैर्य टूट गया। राम ने कौशल्या को विह्वल देखकर अपना अखण्ड स्वरूप दिखलाया। उनके रोम-रोम में करोड़ों ब्रह्माण्ड स्थित थे। कौशल्या ने असंख्य सूर्य, चन्द्र, शिव, पहाड़, नदियां, पृथ्वी, गुण, अवगुण, ज्ञान और स्वभाव देखे। उन्होंने वह सब कुछ अपनी आंखों से देखा जो कभी किसी से सुना भी न था। कौशल्या ने देखा कि सांसारिक माया राम के समक्ष भयभीत हो कर खड़ी है। कौशल्या ने माया के वशीभूत मानव को देखा और जीव और माया से मुक्त भक्ति का भी दर्शन किया।

कौशल्या इतनी पुलकित हो गयीं कि उनके मुख से शब्द ही न निकला। अपने पुत्र की इस लीला को देखकर माता कौशल्या उनके चरणों पर गिर पड़ीं। विविध प्रकार से वंदना करने लगीं। वह भयभीत थीं कि उन्होंने ईश्वर को पुत्र समझ रखा था। राम ने माता को समझाया कि यह रहस्य किसी से मत कहना।

गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से बच्चों का मुण्डन संस्कार हुआ। निरंतर चारों सुकुमार राजकुमार अपनी बाल लीलाएं करते रहे। मन, वचन, कर्म द्वारा न जाने जा सकने वाले राम दशरथ के आंगन में स्वच्छन्द विचरण करते थे। जब वात्सल्य से भरकर दशरथ राम को बुलाते तो बाल मण्डली छोड़ कर वह नहीं



भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता।।
गुरुगृहं गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई।।

आते थे। कौशल्या जब राम को बुलातीं तो ठुमुक-ठुमुक कर भाग जाते। उस ईश्वर को, जिसका वेद भी रहस्य न जान सका, जिसका अंत शिव ने भी न पाया, उसे कौशल्या हठपूर्वक दौड़ा कर अपने आंगन में पकड़ने का प्रयत्न करतीं। धूल में लिपटे हुए राम आते। दशरथ उन्हें गोद में बैठाते। वे चंचल चित्त से थोड़ा-बहुत भोजन करते और किलकारी मार कर मुख में दही लपेटे खेलने के लिए भाग जाते। चारों भाई सुन्दर बाल लीलाओं से सभी का मन प्रसन्न रखते।

भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता।।
गुरुगृहं गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई।।

जैसे ही चारों भाई किशोर अवस्था के हुए, माता-पिता तथा गुरु ने उनका यज्ञोपवीत संस्कार कर दिया। फिर चारों भाई गुरुकुल में अध्ययन के लिए गए। गुरु की कृपा से समस्त विद्याओं का पूर्ण ज्ञान उन्होंने अल्प समय में ही प्राप्त कर लिया। वेद जिनकी स्वाभाविक श्वास है, जो वेदों के कर्ता हैं, वे ईश्वर पढ़ें, यह कैसा आश्चर्य है? चारों राजकुमार विद्या और विनय में पूर्ण पारंगत होकर खेल-खेल में ही राजाओं के सारे कार्यकलापों की लीलाएं करने लगे। राम के हाथों में धनुष और बाण अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होते थे। उन्हें देख कर जड़-चेतन सभी आनंदित हो जाते थे। अयोध्या की जिन गलियों में राम चलते-खेलते, उन गलियों के समस्त नर-नारी उनके सौन्दर्य को देख विह्वल हो जाते। अयोध्या में रहने वाले नर-नारी, बाल-वृद्ध सभी के लिए राम प्राणों से भी अधिक प्रिय थे। राम अपने भाइयों और संगी-साथियों को अपने साथ ले लेते और प्रतिदिन अयोध्या के निकट जंगलों में जाकर हिरण का शिकार करते। प्रतिदिन मृगया से लौटकर मारे हुए मृगों को दशरथ को दिखाते। जो हिरण राम के बाण से बिंधकर शरीर त्यागते थे वे मुक्ति पाकर देवलोक को सिधारते थे। राम अपने तीनों छोटे भाइयों और मित्र मंडली के साथ भोजन करते थे और अपने माता-पिता की आज्ञा का सदा पालन करते थे। अयोध्या के रहने वाले सभी लोग जिस प्रकार अधिकाधिक सुख का अनुभव कर सकें, वही सुखद कार्य राम करते थे।

असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउं नृप तोही।।
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा।।

सुप्रसिद्ध ज्ञानी और महान तपस्वी विश्वामित्र वन के अपने पवित्र आश्रम में रहते थे। मुनिगण उस एकांत, शांत वातावरण में जप, तप और योगाभ्यास किया करते थे पर उनका चित्त एकाग्र नहीं रह पाता था क्योंकि उनके यज्ञ में मारीच और सुबाहु नामक राक्षस निरंतर बाधाएं उत्पन्न करते थे। मुनियों द्वारा प्रज्वलित अग्नि को देखकर अनेक राक्षस यज्ञ विध्वंस करने के लिए दौड़ पड़ते थे और अनेकानेक प्रकार की राक्षसी माया रचकर घोर उपद्रव मचाते रहते थे। निरंतर इस व्यवधान से विश्वामित्र और अन्य मुनियों को बड़ा दुःख होता था। विश्वामित्र ने सोचा कि राम दशरथ के पुत्र रूप में जन्म ले चुके हैं और उन्हीं के द्वारा इन निशाचरों का नाश संभव है। राम-दर्शन का सुअवसर समझकर विश्वामित्र ने निश्चय किया कि अयोध्या जाकर राम-लक्ष्मण दोनों भाइयों को वन में लाऊं। इसी बहाने प्रभु के चरण-कमलों के दर्शन कर लूंगा। अपने मन में अनेक प्रकार से संकल्प-विकल्प, आशा और अभिलाषा संजोये हुए विश्वामित्र अयोध्या की ओर चल पड़े।

जब दशरथ को यह खबर मिली कि विश्वामित्र राज्य में आये हुए हैं तब वे राज्य के विद्वान पण्डितों के साथ तत्काल उनका दर्शन करने चल पड़े। उन्होंने मुनि के चरण धोकर विविध प्रकार से पूजा की, भोजन करवाया तथा अपने चारों पुत्रों से मुनि को प्रणाम कराया। राम की शोभा देख विश्वामित्र विभोर हो गए। अत्यंत हर्षित हृदय से दशरथ ने कहा—महामुनि विश्वामित्र! आपने अयोध्या में पधार कर मुझ पर जो कृपा की है उससे मैं धन्य हुआ। आपका शुभागमन मुझ अकिंचन के यहां किस कारण हुआ है? आप आदेश दें, मैं आपकी आज्ञा पूर्ण करने में क्षण भर भी विलम्ब नहीं करूंगा।

विश्वामित्र ने कहा कि वन में राक्षसों की सामूहिक हिंसा-वृत्ति से मैं परेशान हूं। इसलिए महाराज दशरथ! मैं आज आपसे कुछ मांगने आया हूं। मेरी कामना है कि अनुज लक्ष्मण सहित राम को मुझे दे दीजिए।

दशरथ ने विश्वामित्र की इस अप्रिय मांग को जब ध्यान से सुना तो उनका



असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउं नृप तोही।।
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा।।

हृदय कांप उठा। उनके मुख की ओजस्वी कांति धूमिल हो गयी। उन्होंने अत्यंत विनीत और निराशा-भरी वाणी में कहा, मुनिवर! वृद्धावस्था में मुझे चार पुत्र प्राप्त हुए हैं। यह मांग आपने बिना सोचे रख दी। यदि आप कहें तो अत्यन्त उत्साह के साथ अपना सर्वस्व आपको समर्पित कर दूं। आप पृथ्वी, गाय, हाथी, घोड़े, राजकोश, जो भी मुझसे मांगें, मैं निःसंकोच तत्क्षण देने के लिए तैयार हूं। अपने प्राण तक आप को न्यौछावर करने में मुझे तनिक हिचक नहीं है। शरीर और प्राण से बढ़कर प्रिय संसार में कुछ भी नहीं है। यदि आपकी आज्ञा हो, क्षण भर में अपना शरीर और प्राण आपके चरणों में अर्पित कर दूं। दशरथ ने अत्यंत कातर वाणी में बिलखते हुए याचना की कि मुनीश्वर! मुझे सभी पुत्र अपने प्राण की तरह प्यारे हैं परन्तु राम को किसी भी भांति आपकी सेवा में समर्पित करने की इच्छा नहीं हो रही है। कहां मारीच और सुबाहु जैसे हिंसक, भयानक राक्षस और कहां किशोरावस्था की देहली पर पांव रख रहे सुंदर, कोमल, सुकुमार मेरे ग्यारह-बारह वर्ष के पुत्र राम-लक्ष्मण!

विवेकशील विश्वामित्र मुनि महाराजा दशरथ की वात्सल्य से भीगी वाणी सुनकर मन ही मन हर्षित हुए। तब वशिष्ठ ने राजा को बहुत समझाया जिससे उनके मोह और सन्देह का नाश हो गया और राम के वास्तविक स्वरूप एवं अवतार लेने के उद्देश्य का बोध हुआ। उन्होंने स्नेह और आदर से राम-लक्ष्मण को बुलाया। उन्हें अपने हृदय से लगाकर अनेक प्रकार से शिक्षा दी। उनके धैर्य का बांध टूट गया। दशरथ ने मुनिराज विश्वामित्र से प्रार्थना की कि राम-लक्ष्मण दोनों पुत्र मेरे प्राणों के स्वामी हैं। अब इनके पिता आप ही हैं। दूसरा इनका कोई नहीं। महाराज दशरथ ने राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र को सौंप दिया। विश्वामित्र के साथ जाने से पूर्व दोनों भाई राम-लक्ष्मण रनिवास में गये और माताओं की चरण वंदना कर वे विश्वामित्र के अनुचर बनकर जंगल की ओर बढ़ चले। वे दोनों वीर ओजस्वी पुरुष सिंह की भांति राक्षसों से भयाकुल परिस्थितियों को नष्ट करने की इच्छा लेकर विश्वामित्र के पीछे वन की ओर बढ़ते रहे।

राम के नेत्र रक्त की लाली से भरे थे। उनकी भुजाएं और वक्षस्थल अत्यंत विशाल थे। उनके शरीर से प्रस्फुटित होने वाली कांति में नील कमल और तमाल वृक्ष का श्याम रंग मिला हुआ था। शरीर पर वे पीताम्बर धारण किये हुए थे। पीठ पर शक्ति का द्योतक तरकस कसा हुआ था। राम-लक्ष्मण के दोनों हाथों में सुंदर धनुष और बाण सुशोभित थे। प्रेम-विह्वल विश्वामित्र सोचने लगे कि कृपालु, ब्राह्मणों-विद्वानों के रक्षक ईश्वर ने उनकी रक्षा के लिए माता-पिता को भी छोड़ दिया। ऋषि को मानो महानिधि प्राप्त हो गयी।

चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई।।
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।।

विश्वामित्र ने आश्रम की ओर बढ़ते हुए राम-लक्ष्मण को संकेत से ताड़का को दिखलाया। ताड़का अत्यंत क्रोध से हुंकारती हुई आक्रमण करने के लिए दौड़ पड़ी। तत्क्षण राम ने एक ही बाण के प्रहार से उसका हृदय बेध दिया। ताड़का को अत्यंत दीन-हीन समझ कर राम ने उसे मुक्ति प्रदान की। विश्वामित्र ने सच्चे हृदय से अपने स्वामी राम की शक्ति को पहचाना। विविध विद्याओं में पारंगत विश्वामित्र ने ऐसी योग क्रिया का अभ्यास राम को कराया जिससे न भूख लगे न प्यास, लेकिन पौरुष और शक्ति घटने की बजाय शरीर में असीम शक्ति और तेजस्विता आये।

मार्ग की बाधाओं को नष्ट करते हुए राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के आश्रम में आये। राम और लक्ष्मण भक्तों का परम कल्याण करने वाले हैं। विश्वामित्र ने उन्हें स्नेहपूर्वक आश्रम में उपलब्ध कंद-मूल और विविध स्वादिष्ट फलों से तृप्त किया। उन्होंने आश्रम के समस्त अस्त्र-शस्त्र राम और लक्ष्मण को प्रदान किये। प्रातःकाल राम ने विश्वामित्र से कहा कि आप किसी भी राक्षस से भयभीत हुए बिना अपनी यज्ञ-साधना प्रारंभ कीजिए। विश्वामित्र और आश्रम के समस्त मुनिगण निर्विघ्न हवन करने लगे। यज्ञ क्रिया में राक्षस किसी प्रकार का विघ्न न डालें, इस निमित्त राम-लक्ष्मण-मुनियों की रक्षा करने लगे। विश्वामित्र और अन्य मुनियों की रक्षा राम और लक्ष्मण कर रहे हैं, यह समाचार जब अत्यंत हिंसक और क्रोधी मारीच को ज्ञात हुआ तो अपने समस्त सहायक क्रूर राक्षसों को लेकर सज्जनों का वह शत्रु यज्ञ विध्वंस करने के लिए संपूर्ण शक्ति के साथ दौड़ पड़ा। विष बुझे तीव्र फलक वाले तीर से राम ने उसे मारा। राम के सांघातिक बाण के प्रहार से वह सैकड़ों मील दूर समुद्र के दूसरे किनारे पर छटपटाते हुए गिरा।



चले जात मुनि दीन्ह देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई।।
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।।

भयानक राक्षस सुबाहु ने भी मुनियों के यज्ञ में विघ्न उपस्थित करने का निरर्थक प्रयत्न किया। राम ने अपने बाण से सुबाहु को भी नष्ट कर दिया। लक्ष्मण की दृढ़ता और वीरव्रत धर्म की सहायता से राम ने मुनियों के यज्ञ में विघ्न उपस्थित करने वाली असंख्य राक्षसी सेनाओं का नामोनिशान मिटा दिया। यज्ञ के माध्यम से कल्याण की कामना करने वाले तपस्वी साधक विश्वामित्र और उनके सहयोगी ऋषि-मुनि शांत-सुंदर वातावरण में निर्विघ्न विविध प्रकार के यज्ञादि करने लगे। राम ने आश्रम पर दृष्टि लगाने वाले पापियों का नाश कर दिया। ऋषिगण और देवता उनकी सच्चे मन से स्तुति और विनती करने लगे। बहुत दिनों तक राम और लक्ष्मण विश्वामित्र और अन्य ऋषि-मुनियों के स्नेह सान्निध्य के कारण उस आश्रम में रहे।

राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के आश्रम को विघ्नमुक्त करके साधुओं के सत्संग का आनंद उठाने लगे। एक दिन विश्वामित्र ने जनकपुर में आयोजित राजा जनक की कन्या सीता के धनुषयज्ञ की सारी कथा स्नेहपूर्वक राम को सुनाई और उनसे आग्रह किया कि चल कर इस धनुषयज्ञ महोत्सव को देखना चाहिए। रघुवंश के सिरमौर राम धनुषयज्ञ का समाचार सुनकर मुदित और प्रफुल्लित हो उठे। वे विश्वामित्र के साथ-साथ लक्ष्मण सहित धनुषयज्ञ में भाग लेने उस आश्रम को छोड़ चल पड़े। कुछ दूर जाने पर उन्हें दूसरा आश्रम मिला। उस आश्रम में पशु-पक्षी, जीव-जन्तु और मनुष्य कोई भी न था। हां, वहां एक विस्तृत शिला थी। राम ने उस शिला के सम्बन्ध में विश्वामित्र से जिज्ञासा की। विश्वामित्र ने राम को अत्यंत विस्तार से उस पत्थर की कहानी सुनाई। अहल्या अपने पति गौतम के श्राप से पत्थर का रूप धारण कर निर्जीव पड़ी थी। विश्वामित्र ने कहा कि राम! आपके चरण-कमल की धूलि के स्पर्श मात्र से वह पुनः सजीव नारी हो सकती है। इसलिए आप कृपा कर इस पत्थर का स्पर्श करें।

विश्वामित्र की आज्ञा पाकर राम ने अपने चरण से उस पत्थर का स्पर्श किया। समस्त शोक, संतापों का नाश करने वाले राम के कमलवत चरणों के स्पर्शमात्र से तपस्विनी अहल्या सजीव रूप में प्रकट हुईं। अपने अनुयायी और भक्तों को सच्चे हृदय से आनंदित करने वाले राम को देख कर अहल्या राम के समक्ष नतमस्तक हाथ जोड़ खड़ी हो गयी। वह अपने प्रस्तर रूप से मुक्ति पा गयी। वह अत्यंत व्याकुल थी। उसके अंग-प्रत्यंग प्रकंपित हो उठे। वह आनंदविभोर थी। गद्गद होकर प्रभु की स्तुति करती हुई वह बोली, मैं अत्यंत सीधी-सादी बुद्धिरहित नारी हूं। हे संसार को पवित्र करने वाले, रावण के शत्रु, मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। भक्तों का कल्याण करने वाले ईश्वर, मैं शरणागत हूं, मेरी रक्षा करें। मुनि का शाप मेरे लिए कल्याणकारी हो गया। मैं वरदान मांगती हूं कि मेरा मन-भौंरा आपके चरण-कमल-रस का निरंतर एकाग्र चित्त से पान करता रहे। आपकी विलक्षण छवि को देखने का सौभाग्य मुझे मिला। आपके इसी दर्शन की अनुभूति को ही शंकर जी सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि मानते हैं। प्रभु! मात्र अपने चरण-कमलों की रज का भौंरे की तरह पान करने का वर दीजिए। हे प्रभु! जिन चरण-कमलों से परम पवित्र गंगाजी निकली हैं, जिनकी ब्रह्मा और शिव वंदना करते हैं, उन महिमामय चरणों को मेरे सिर पर रखने की आपने असीम कृपा की।

इस प्रकार स्तुति कर गौतम-पत्नी अहल्या मनवांछित वर पाकर स्वर्ग में पति के पास आनंदित होकर चली गयी।

परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख होइ कर जोरि रही।।

राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ जनकपुर में आयोजित धनुषयज्ञ में भाग लेने के लिए चल पड़े। मार्ग में सबने पवित्र गंगा में स्नान किया और विश्वामित्र ने धरती पर गंगा के प्रवाहित होने की पूरी कथा कही। धीरे-धीरे जनकपुर के समीप वे आ गये। जनकपुर की रमणीयता देखकर राम और लक्ष्मण बहुत प्रसन्न हुए।

विश्वामित्र नगर के बाहर एक सुंदर और सुहावनी अमराई में समस्त मुनि-जनों तथा राम-लक्ष्मण के साथ रुके। उनके आगमन की खबर जनक के पास पहुंची। तत्काल जनक विश्वासपात्र मंत्रियों, योद्धाओं, गुरु शतानंद तथा राजपरिवार के अन्य लोगों को लेकर हर्षित चित्त से विश्वामित्र की अगवानी के लिए चल पड़े। जनक ने विश्वामित्र के चरणों पर मस्तक रखकर अभिवादन किया। ब्राह्मणों को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। बार-बार कुशल क्षेम पूछकर विश्वामित्र ने जनक को प्रेमपूर्वक बैठाया। इसी बीच अमराई से घूमकर राम-लक्ष्मण आ गये। कोमल, किशोर, सांवले और गौर राम-लक्ष्मण को



परसत पद पावन सोक नसावन प्रकट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही।।

देखकर जनक की जिज्ञासा जागृत हुई। दोनों राजकुमार उनके चित्त को मोहित करने लगे। राम-लक्ष्मण को देखकर जनक की सुध-बुध खो गई और उन्हें शरीर तक की चिन्ता न रही। राजा जनक ने अत्यंत श्रद्धा के साथ विश्वामित्र से पूछा कि ये दोनों सुंदर बालक मुनिकुल के तिलक हैं, या राजपुत्र? कहीं वेदों में वर्णित अनादि ब्रह्म ही मनुष्य-शरीर धारण कर इन दोनों कुमारों के रूप में अवतरित तो नहीं हुए हैं। जैसे चन्द्रमा को देखकर चकोर आह्लादित हो जाता है उसी प्रकार मुझे ऐसा प्रगाढ़ प्रेम दोनों बालकों से हो गया है कि मैं ब्रह्म-प्राप्ति के सुख को भी इसके सामने निरर्थक समझता हूं।

विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण का परिचय देते हुए कहा कि संसार में जितने भी प्राणी हैं, सबको प्रिय लगने वाले राम-लक्ष्मण अवध नरेश दशरथ के पुत्र हैं। इन्हें हमारी रक्षा के लिए दशरथ ने मेरे साथ भेजा है। रूप, शील और शक्ति से संपन्न राम और लक्ष्मण ने राक्षसों को जीतकर हमारे यज्ञ की रक्षा की है।

जनक की जिज्ञासा जब तृप्त हुई तो उन्होंने कहा कि श्याम और गौर वर्ण के दोनों भाई आनंद को भी आनंदित करने वाले हैं। उन्होंने विश्वामित्र से कहा कि ये दोनों भाई परस्पर वर्णनातीत प्रेम में गुंथे हुए हैं। ब्रह्म और जीव की भांति परस्पर इनका स्वाभाविक प्रेम है। बार-बार जनक ने राम को आत्मीयताभरी दृष्टि से देखा। उनका हृदय उत्साहित और शरीर रोमांचित हो उठा। जनक विश्वामित्र सहित राम-लक्ष्मण और मुनियों को सादर नगर की ओर ले चले। समस्त ऋतुओं में स्वाभाविक सुख देने वाले सुंदर महल में उन्हें ठहराया गया। भोजन, विश्राम से निवृत्त होकर जब एक घण्टा सूर्य डूबने में शेष था, तब राम विश्वामित्र की आज्ञा लेकर लक्ष्मण के साथ जनकपुर देखने चल पड़े। सबके नेत्रों को सुखी करने वाले राम और लक्ष्मण की रूप-छवि देखकर नगर के बालकों का समूह आनंदित हो उनके पीछे चल पड़ा।

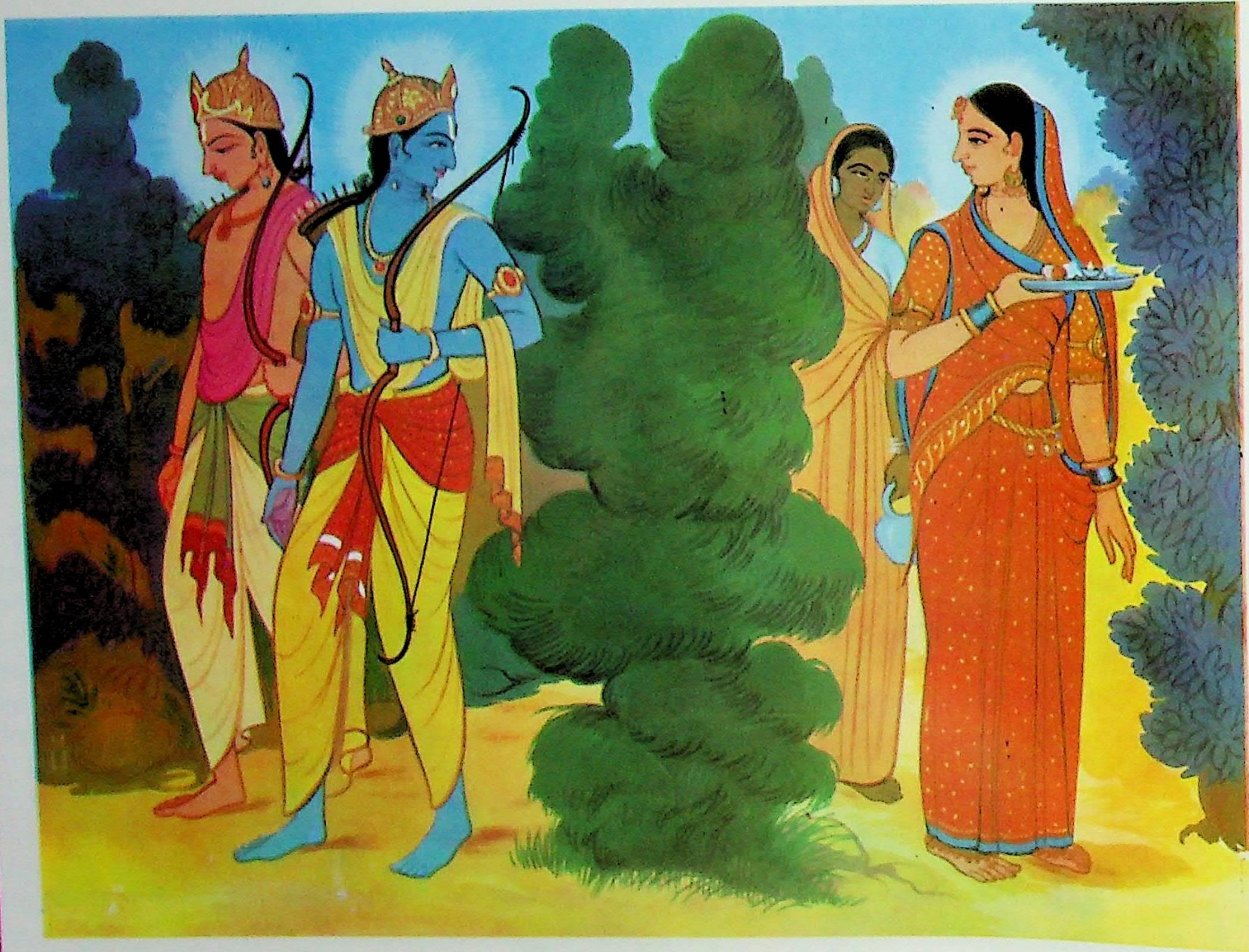
दोनों ही राजकुमार सर्वांगसुन्दर थे। नगरवासियों को जब राम-लक्ष्मण के नगर-भ्रमण का पता चला, तो सभी काम छोड़ उनके दर्शन करने दौड़ पड़े। युवतियां झरोखों से उनके सुन्दर रूप को देखकर भाव- विह्वल हो प्रशंसा करने लगीं।

किसी चतुर सखी ने कहा कि राजहंस की सुंदर जोड़ी के समान दोनों राजकुमार अवधनरेश दशरथ के पुत्र हैं। मुनि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करते हुए उन्होंने राक्षसों को युद्ध में मारा। उसी सखी ने बताया, श्यामल कमल के समान सुंदर वर्ण वाले किशोर जिनके हाथों में धनुष-बाण सुशोभित हैं, जो सुबाहु और मारीच जैसे नृशंस राक्षसों का गर्व नष्ट कर उन्हें मारने वाले हैं, वही नेत्रों को सुख देने वाले कौशल्यापुत्र राम हैं। गौर वर्ण, सुंदर वेशभूषायुक्त हाथ में धनुष-बाण लिये राम के पीछे सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण हैं। दोनों भाइयों ने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करके मार्ग में गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या का उद्धार किया। अब ये दोनों जनकपुर में यज्ञ देखने आये हैं। स्त्रियां चर्चा करने लगीं कि काश! सीता को राम-सा वर मिल जाता! फिर वे धनुषयज्ञ तथा स्वयंवर की शर्तों के बारे में सोचकर चिंतित हो गयीं।

राम-लक्ष्मण नगर भ्रमण करते रहे। सुंदर, आकर्षक, कांतिमयी,बड़े-बड़े नेत्रों वाली स्त्रियां, अत्यंत हर्षित मन से इन राजकुमारों का पुष्पवृष्टि कर स्वागत कर रही थीं। जहां-जहां राम-लक्ष्मण जाते वहां-वहां आनंद का समुद्र उमड़ पड़ता था।

जनकपुर के पूर्व छोर पर धनुषयज्ञ के लिए रंगभूमि की संरचना की गयी थी। बहुत विशाल ढालू चबूतरा बना था। मध्य में दिव्य वेदी थी। वहां राजाओं के बैठने के लिए सोने के मंच बने थे। उन मंचों के पीछे अनेकानेक मचान भी सुशोभित थे। मंचों से थोड़ी ऊंचाई पर नगर निवासियों के बैठने का स्थान था। समीप ही बहुत-से निर्मल गृह सुशोभित थे। जनकपुर के बालक राम को रंगभूमि की रचना दिखाने लगे। इसी बहाने वे राम-लक्ष्मण के शरीर का स्पर्श कर रहे थे। प्रेम-विभोर बालकों ने अपनी इच्छा और विवेक के अनुसार उन्हें अपनी ओर आकर्षित करते हुए रंगभूमि का सारा दृश्य दिखाया।

रात बीती। भोर में मुर्गों की बांग सुनकर सबसे पहले लक्ष्मण उठे। गुरु विश्वामित्र से पहले राम जाग गये। नित्य-क्रिया से निवृत्त हो संध्यावंदन करने के बाद विश्वामित्र की आज्ञा लेकर राम-लक्ष्मण पूजा के फूल लाने सुंदर बाग में गये। बाग में निरंतर बसंत ऋतु छायी रहती थी। मन को मोहित करने वाले अनेक प्रकार के सुंदर वृक्षों और लताओं के मण्डप बने हुए थे। नवीन पत्तों, फूलों तथा फलों से लदे हुए वृक्ष कल्पवृक्ष की शोभा को मात कर रहे थे। तोता, मोर, कोयल,



थके नयन रघुपति छबि देखे। पलकन्हिहूं परिहरीं निमेषे।।
[illegible] सयानी।।

चकवा-चकई, पपीहा इत्यादि मधुरभाषी पक्षियों के कलरव से वन गूंज रहा था। सुंदर पंख फैलाये मोर अलौकिक नृत्य कर रहे थे। बाग के बीचों-बीच अत्यन्त आकर्षक सरोवर सुशोभित था जिसकी सीढ़ियों की रचना मणियों से की गयी थी। स्वच्छ जल में अनेक रंग के कमल खिले थे। जल पक्षी किल्लोल कर रहे थे। बाग के अनुपम और आकर्षक दृश्य को देखकर राम-लक्ष्मण बहुत ही प्रसन्न हुए। वे मुदित भाव से चारों ओर देखते हुए मालियों से पूछकर फूल चुनने लगे।

उस समय सीता अपनी माता की आज्ञानुसार सखियों सहित पार्वती पूजन के लिए उपवन में आयी थीं। सीता के साथ अत्यन्त सुंदर और चतुर सखियां थीं। वे मधुर स्वर में पूजा के गीत गा रही थीं। सरोवर के समीप स्थित गिरिजा मंदिर को देखकर मन में श्रद्धा का भाव उमड़ने लगता था। अपनी सखियों के साथ स्नान कर सीता पार्वती मंदिर में जाने लगीं। अत्यन्त अनुराग भरी जानकी ने पार्वती की पूजा की। उन्होंने अपने अनुरूप श्रेष्ठ वर प्राप्त होने का वरदान देवी से मांगा।

सीता की एक सखी उन्हें छोड़कर फुलवारी में घूम रही थी। उसने राम-लक्ष्मण को देखा। वह प्रेमविह्वल सीता के पास लौटी। उसका शरीर रोमांचित था। सीता ने उसकी प्रसन्नता और आह्लाद का कारण पूछा। सखी ने बताया कि दो सुंदर किशोर राजकुमार उपवन में भ्रमण कर रहे हैं। एक सांवले हैं और दूसरे गोरे। जिन आंखों ने उन्हें देखा, उनके पास वाणी नहीं है और वाणी के पास नेत्र नहीं हैं। अर्थात् वह सौन्दर्य शब्दातीत है, उसे आंखों से अनुभव किया जा सकता है, बताया नहीं जा सकता है। मैं उनका रंग देख हैरान रह गयी। एकाएक मैं उनका रूप देख कर आश्चर्यचकित हो उठी। मैं उनके रूप का किस प्रकार वर्णन करूं? किशोरी सीता के मन में उत्कंठा उत्पन्न हुई। एक सखी ने कहा कि ये दोनों राजकुमार विश्वामित्र के साथ आये हैं। अपने रूप के जादू से उन्होंने नगर निवासियों को वशीभूत कर लिया है। उन्हें अवश्य देखना चाहिए। सखी की बात जानकी को अच्छी लगी। नेत्र दर्शन के लिए तड़पने लगे। अपनी सारी सखियों को आगे करके सीता चल पड़ीं। उनकी पुरातन प्रीति को एक भी सखी न समझ पाई। उसी क्षण नारद के पवित्र और सत्य वचन जानकी को याद आ गए। प्रेम और श्रृंगार भाव जागृत हुआ। सहमी हुई मृग छौने-सी सीता चकित नेत्रों से चारों ओर निहारने लगीं।

थके नयन रघुपति छबि देखे। पलकन्हिहूं परिहरीं निमेषे।।
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी।।

जानकी के कंकण, किकिनी एवं नूपुरों की सुमधुर ध्वनि सुनकर राम के हृदय की प्रेम भावनाएं न रुक सकीं। वे लक्ष्मण से कहने लगे कि इन आभूषणों की श्रृंगारिक ध्वनि सुनकर लगता है कि कामदेव ने सारे संसार को जीतने की इच्छा से दुंदुभी बजायी है। ऐसा कहकर ज्यों ही उन्होंने आवाज की दिशा में देखा तो उनके चकोर रूपी नेत्र सीता के चंद्रमा-से कांतिमय मुख पर एकटक टिक गये। पलकें गिरनी बंद हो गईं मानो जनक के पूर्वज निमि संकोच में पड़ पलकों से अलग हट गये। अपने कुल की कन्या की प्रेम-क्रीड़ा को अपनी आंखों से वे कैसे देख सकते थे? राम टकटकी लगाये सीता को निरखते रहे। सीता भी सुध-बुध खो बैठीं। राम ने मन ही मन जानकी के रूप और छवि की प्रशंसा की। राम इतने प्रेमविह्वल थे कि उनके मुख से शब्द भी नहीं निकल रहा था। मानो ब्रह्मा ने अपने सम्पूर्ण कौशल को मूर्तिमान कर सीता के रूप में विश्व को दिखाया हो।

सीता की शोभा सौन्दर्य को भी सुन्दर करने वाली थी। ऐसा लगता था मानो सौन्दर्य रूपी भवन को सीता के दीपशिखा जैसे सौन्दर्य ने आलोकित कर दिया हो। सीता का अलौकिक सौन्दर्य अवर्णनीय है। सारी उपमाओं को तो कवियों ने पहले ही प्रयोग कर जूठा कर दिया है। सीता के अप्रतिम सौंदर्य के लिए वह उपमाएं कैसे दी जा सकती हैं?

अपने मन की भावनाओं को न रोक सकने के कारण अनुज लक्ष्मण से राम कहने लगे कि यह जनक की पुत्री हैं जिनके लिए धनुषयज्ञ आयोजित हुआ है। इन्हें सखियां पार्वती-पूजा के लिए लाई हैं। उपवन में वे अपनी छवि बिखेरती हुई घूम रही हैं। सीता की अलौकिक छवि देख कर मेरा स्वाभाविक पवित्र मन चंचल हो उठा है। मेरे मंगलकारी दायें अंग फड़क रहे हैं। हे ईश्वर! न जाने क्या होने वाला है? रघुवंश में उत्पन्न होने वालों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि कुकर्म के किसी रास्ते पर कभी मन नहीं बढ़ता। मुझे अपने मन की दृढ़ता पर विश्वास है। स्वप्न में भी मैंने परस्त्री की ओर नजर नहीं उठायी। जो रणक्षेत्र में शत्रुओं को पीठ नहीं दिखाते और जो अपने मन तथा दृष्टि में पराई स्त्री को स्थान नहीं देते, याचक

जिनके यहां जाकर अपनी इच्छा-भर पाये, ऐसे महापुरुष संसार में थोड़े हैं। राम बातें तो लक्ष्मण से कर रहे थे पर उनका मन सीता के रूप पर मुग्ध था। उनके कमल रूपी मुख की मकरंद की छवि का वे भौंरे की तरह पान कर रहे थे।

सीता चमत्कृत हो चारों ओर देख रही थीं कि मनभावन राजकुमार गये कहां? मृग-छौने से नेत्र वाली सीता जिधर भी देख लेतीं मानो श्वेत कमल की पंक्तियां-सी बिखर जातीं। सखियों ने सीता को लता की आड़ से प्रकट हो रहे सुंदर और सलोने, श्याम-गौर वर्ण राम-लक्ष्मण का स्वरूप दिखलाया। उनकी रूप-छवि देखकर सीता की आंखें ललक उठीं। वे प्रसन्न हो उठीं। उन्हें मनचाही सम्पत्ति मिल गयी। राम की छवि देख सीता की आंखें तृप्त हो गयीं और पलक स्थिर हो गये। अत्यधिक स्नेह के वशीभूत सीता बावरी-सी हो गयीं। लग रहा था कि शरद ऋतु के चन्द्रमा को चकोरी एकटक निहार रही हो। प्रवीणा जानकी ने नयनों के मार्ग से राम को अपने हृदय में बसा कर पलकों का द्वार बंद कर लिया। सखियां सीता को प्रेम-रस में सराबोर देख सकुचा गयीं। वे सीता से कुछ भी न कह सकीं। बादलों की घटा को चीरकर जैसे दो स्वच्छ चन्द्रमा उगे हों उसी तरह राम और लक्ष्मण लता-कुंज से बाहर निकले। दोनों सुंदर भाई मानो शोभा की सीमा थे। उनके शरीर से प्रस्फुटित होने वाली कांति नीले, स्वर्ण कमल-सी थी। मस्तक पर सुंदर मोरपंख सुशोभित था जिसके मध्य में सुंदर कलियों के गुच्छे लहरा रहे थे। ललाट पर चंदन का तिलक सुशोभित था। मुखमंडल पर पसीने की बूंदें झलक रही थीं। कानों में स्वर्ण कुंडल देदीप्यमान थे। बड़ी-बड़ी आंखों पर तिरछी भौंहें थीं। अत्यंत सघन घुंघराली केश-राशि थी। रतनारे नेत्रों में नवीन कमल की आभा थी। नाक और भाल अत्यंत सुंदर थे। मधुर मुस्कान मन को मोहित करने वाली थी। मुख की कांत छवि अगणित कामदेवों को लज्जित करने वाली थी। वक्षस्थल पर मणियों की माला थी। शंख के समान सुंदर कंठ था। हाथी के बच्चे की सूंड की तरह लंबी भुजाओं में अजेय शक्ति थी। राम के बांये हाथ में फूलों भरा दोना था। वे बड़े ही सुंदर लग रहे थे। जानकी और सारी सखियां सिंह के समान ओजस्वी स्वरूप वाले, पीताम्बरधारी, सौंदर्य और शील की खान, सूर्यवंश के अमूल्य रत्न राम को देख अपनी सुध-बुध खो बैठीं।

एक चैतन्य धैर्यवती सखी ने सीता का हाथ पकड़ते हुए कहा कि पार्वती का ध्यान फिर कर लेना। इस समय आंख भर इन राजकुमारों को निःसंकोच निरख क्यों नहीं लेतीं? संकोच से सीता सिमट गयीं। लज्जा छोड़ कर सीता ने अपनी दृष्टि ऊपर उठाकर राम-लक्ष्मण को देखा। एड़ी से चोटी तक राम की छवि देखकर जानकी का मन पिता के कठोर धनुषयज्ञ की प्रतिज्ञा का स्मरण कर विक्षुब्ध हो उठा। राम के सौंदर्य और आकर्षण से सीता परवश होने लगीं। भयभीत सखियों ने कहा कि उपवन में आये बड़ी देर हो गयी। पुनः कल इसी समय वे फिर मिलेंगे। ऐसा कह कर एक सखी मन ही मन मुस्करा उठी। सखी की व्यंग्य भरी बातें सुन कर सीता लज्जित हो गयीं। माता का भय था। मन को धैर्य देकर राम को हृदय में स्थापित कर सीता लौट पड़ीं। मृग, पक्षी, वृक्ष आदि देखने के बहाने बार-बार सीता पीछे मुड़कर राम की छवि का रसपान करती रहीं। राम के प्रति उनका प्रेम दृढ़तर होता गया। शिवधनुष की कठोरता को याद कर वह चिंतित हो गयीं। राम की श्याम छवि को हृदय में स्थान दे जानकी चल पड़ीं। राम ने जब देखा कि सुख, स्नेह, गुण और सौंदर्य की खान सीता जा रही हैं, तो उन्होंने उसी क्षण स्नेह की स्याही से अपने सुंदर हृदय-फलक पर सीता का सजीव रूप अंकित कर लिया।

जानकी मंदिर में आकर पार्वती के चरणों की वंदना करके बोलीं कि पर्वतराज हिमालय की राजकुमारी गिरिजा! तुम्हारी जय हो! हे शिव-मुख-चन्द्र की चकोरी! गणेश और कार्तिकेय की माता! विद्युत कांति-सी रूप वाली जगत जननी! तुम्हारी जय हो! न तो तुम्हारा आदि है न अंत। तुम्हारे अमित प्रभाव को वेद नहीं जानते। संसार की जननी, पालने और नाश करने वाली तुम्हीं हो। विश्व को अपनी शक्ति से सम्मोहित करने वाली तुम स्वेच्छा से सर्वत्र विचरण करती हो। श्रेष्ठ पतिव्रता नारियों में तुम्हारा सर्वोच्च स्थान है। तुम्हारी अनुपम महिमा का वर्णन हज़ारों सरस्वती और शेषनाग भी नहीं कर सकते। सच्चे मन से तुम्हारी सेवा और पूजा करने से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष प्राप्त होता है। तुम याचक को वर देने वाली हो। त्रिपुरारि शंकर की प्रियतमा हो। तुम्हारे चरण-कमल की वंदना कर देवता, मनुष्य और मुनि सभी सुख का अनुभव करते हैं। मा पार्वती! तुम मेरे मन की इच्छा और महत्वाकांक्षा जानती हो। तुम सबके हृदय में वास करती हो। इसीलिए मैंने अपनी इच्छा प्रकट नहीं की। यह प्रार्थना कर जानकी पार्वती के चरणों से लिपट गयीं। अत्यंत प्रसन्न गिरिजा सीता के विनय एवं प्रेम के वशीभूत हो गयीं।

पार्वती की मूर्ति की माला खिसक गयी। मूर्ति मुस्करा उठी। पार्वती की माला को जानकी ने अपने मस्तक पर सादर धारण कर लिया। प्रसन्नमन हो पार्वती बोलीं–

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी।।

पार्वतीजी से अपनी इच्छा की पूर्ति का आशीर्वाद ले जानकी घर लौटीं।

राम मन ही मन सीता के सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए लक्ष्मण सहित विश्वामित्र के पास आये। निश्छल तथा सरल स्वभाव वाले राम ने विश्वामित्र से सारी घटना का वर्णन किया। उपवन के पुष्पों से विश्वामित्र ने पूजा संपन्न की। उन्होंने राम-लक्ष्मण को आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी मनोकामना सफल हो। भोजन आदि से निवृत्त होकर विश्वामित्र पुराणों की कथाएं सुनाने लगे। दिन बीत जाने पर दोनों भाई विश्वामित्र की आज्ञा से संध्योपासना के लिए चल पड़े।

पूर्व दिशा में उदित आकर्षक चन्द्रमा से सीता के मुख की तुलना करने पर राम को प्रतीत हुआ कि सीता की छवि के सामने चन्द्रमा कुछ भी नहीं है। चन्द्रमा का जन्म खारे समुद्र से हुआ है। चन्द्रमा के साथ समुद्र से विष भी निकला है जिससे वह दिन में निस्तेज और मलिन रहता है। चन्द्रमा में कलंक और धब्बे हैं। बेचारा दरिद्र चन्द्रमा! सीता की मुख-छवि के समकक्ष कैसे हो सकता है? चन्द्रमा निरंतर घटता-बढ़ता रहता है। विरहिणी नारियों को चन्द्रमा पीड़ित करता है। अपने संपर्क में पाकर राहु उसे ग्रस लेता है। चकवा पक्षी को वह वियोग के शोक में तड़पाता है। चन्द्रमा कमल का शत्रु है। चंद्रमा में अनेकानेक दोष हैं। सीता के मुख से चन्द्रमा की तुलना करने से बहुत अनुचित कार्य करने का दोष लगेगा। चंद्रमा के बहाने सीता की मुख-छवि की प्रशंसा करते आधी रात बीत गयी। राम विश्वामित्र की आज्ञा ले कर सो गये।

प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व राम उठ गये और लक्ष्मण से कहने लगे–देखो! कमल, चक्रवाक और समस्त संसार को आनंदित करने वाला अरुणोदय हो रहा है। लक्ष्मण ने मधुर स्वर में उत्तर दिया– अरुण रवि के उदित होने से कुमुदनी के पल्लव-कोष बंद हो गये। आकाश में चमकने वाले नक्षत्रों की ज्योति विलीन हो गयी। ठीक इसी प्रकार धनुषयज्ञ में आये हुए राजा आपके आगमन के समाचार से बलहीन हो गये हैं। शंकर के धनुष रूपी भयानक अंधकार को तारागण रूपी राजा नहीं मिटा सकते। उसके लिए तो आपका प्रताप-सूर्य ही आवश्यक है। रात्रि समाप्त हो गयी। इसलिए भोर में पक्षीगण और कमल सभी प्रसन्न थे। सूर्य उदित हो गया। अंधकार दूर हो गया। तारे छिप गये। संसार में सूर्य-किरणों का प्रकाश हो उठा। उदित होने के बहाने सूर्य ने सभी सम्राटों को आपके पवित्र प्रताप का दिग्दर्शन कराया है। आपकी बलशाली भुजाओं की शक्ति सर्वविदित हो सके, इसीलिए यह धनुषयज्ञ आयोजित हुआ है। अपने अनुज की निर्मल और उत्साह भरी प्रतिक्रिया से राम प्रसन्न हो गए। उन्होंने नित्यक्रिया से निवृत्त होकर गुरु चरणों में प्रणाम किया।

महाराज जनक ने शतानंद को तत्काल विश्वामित्र सहित राम और लक्ष्मण को सादर बुलवाने का आदेश दिया। राम और लक्ष्मण धनुषयज्ञ में भाग लेने रंगभूमि में आ चुके हैं, यह समाचार सुनकर जनकपुरी के बाल, युवा, वृद्ध काम-काज छोड़कर दौड़ पड़े। राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों के शरीर पर मानो स्वयं मनोहरता छायी हुई थी। उन्होंने श्रद्धा से गुरु विश्वामित्र का चरण-स्पर्श किया। विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को धनुषयज्ञ का वृत्तांत सुनाते हुए रंगभूमि का अवलोकन करने लगे। सब लोग चकित होकर यह दृश्य देख रहे थे। विश्वामित्र ने रंगभूमि की सुंदर संरचना की प्रशंसा की। जनक कृतकृत्य हो उठे। जनक ने रंगस्थल के सर्वश्रेष्ठ, अत्यधिक स्वच्छ, सुंदर और विशाल मंच पर राम, लक्ष्मण और विश्वामित्र को आसीन किया। तल्लीन सेवकों ने विनीत भाव से उत्तम, मध्यम, लघु तथा विविध श्रेणियों के लोगों को अलग-अलग आसनों पर यथायोग्य बैठाया।

जैसे पूर्ण चन्द्र के उदय होने पर तारे तेजहीन हो जाते हैं वैसे ही राम को देखकर सभी राजा तथा राजकुमार मन ही मन पराजय का अनुभव करने लगे। सबके मन में ऐसी भावना जागृत हुई कि इस विशाल धनुष को राम अवश्य ही तोड़ेंगे। वे शंकर-धनुष को न तोड़ पायें तो भी सीता राम के गले में ही जयमाल डालेंगी। यह सोचकर राजा लोग अपना यश और प्रताप निरर्थक समझने लगे। अज्ञानी और दम्भी राजा अट्टहास कर बोले कि धनुष तोड़ने पर भी विवाह कठिन है, बिना धनुष तोड़े कौन राजकुमारी से ब्याह कर सकता है? वे जनक को कोसने लगे। परन्तु धार्मिक प्रवृत्ति के ईश्वरभक्त विवेकी सम्राटों का दृढ़ मत था कि सबका दर्प

वर होगा और सीता राम का ही वरण करेंगी। दशरथ के योद्धा पुत्रों को कोई नहीं जीत सकता। व्यर्थ की शेखी बघारने और मन के लड्डुओं से भूख नहीं मिटती। शिष्ट राजाओं ने कहा—सीता को जगज्जननी तथा राम को जगत् पिता जानकर उनकी अलौकिक छवि का रसपान करो। ईश्वर-दर्शन से उपलब्ध अमृतरूपी सुख को छोड़ सीता को पाने की मृगतृष्णा और दुराशा के पीछे क्यों भागते हो? जिसकी जो इच्छा हो, करे। हमें तो जीवन-फल मिल गया।

देवतागण इस अभूतपूर्व धनुषयज्ञ को आकाश से देख रहे थे और भगवान राम पर पुष्प-वृष्टि कर रहे थे। सुअवसर समझ कर जनक ने सीता को बुलवाया। सखियां सीता को रंगभूमि में ले आयीं। सीता की शोभा का वर्णन असंभव था। वह रूप और गुण की खान प्रतीत हो रही थीं। सामान्य नारियों को दी जाने वाली उपमाओं से जगतमाता की अतुलनीय छवि का वर्णन कैसे हो सकता है?

मनोहर स्वर में मंगल गीत गाती हुई चतुर सखियां सीता को रंगभूमि में ले आयीं। सीता की श्रृंगारिक छवि झलक रही थी। सखियों ने सीता के अंग-प्रत्यंग में विविध आभूषण पहना दिये थे। जब रंगभूमि में सीता ने पदार्पण किया तो उनकी छवि को देखकर लोग मंत्रमुग्ध रह गये। सीता के हाथों की सुंदर जयमाला की ओर राजा लोग ललक कर देख रहे थे। चकित सीता राम को देखने लगीं। सीता ने विश्वामित्र के साथ दोनों भाइयों को देखा और राम रूप में अपनी सर्वोत्तम संपदा पाकर उनकी आंखें वहीं एकटक टिक गयीं। उनकी आशा विराट जन-समूह को देखकर लज्जित हो गयी। तत्क्षण अपने हृदय में राम को स्थापित कर सखियों की ओर देखने लगीं। लोग राम और जानकी के स्वर्गोपम सौंदर्य को निर्निमेष देख ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि जनक जड़ता छोड़कर सीता का राम से विवाह कर दें तो हितकर होगा। निश्चय ही राम सीता के योग्य वर हैं।

वंदीजन जनक के गुण और प्रताप की काव्यप्रशस्ति करते हुए आये। जनक की आज्ञानुसार चारणों ने घोषणा की कि चन्द्रमा रूपी राजाओं के बल को कुंठित करने के लिए शिव-धनुष राहु के समान है। धनुष अत्यंत भारी और कठोर है। रावण और बाणासुर जैसे योद्धा भी धनुष को देखकर वापस चले गये। शिव के कठोर धनुष को जो राजसभा में भंग करेगा वह त्रिलोकविजयी होगा और सीता उसे ही अपने पति-रूप में वरण करेंगी। वंदीजनों द्वारा जनक की प्रतिज्ञा को सुनकर राज-समाज में उपस्थित वीर अपनी वीरता दिखाने के लिए उत्कंठित हो उठे। वे चौंककर धनुष की ओर देखने लगे। एक से एक वीर योद्धा धनुष उठाने में पूरी सामर्थ्य से लगे थे। परन्तु शंकर के विशाल धनुष को भूमि से हिला भी न सके। लज्जित हो-होकर अपनी जगह पर बैठ गये। जो विवेकी सम्राट थे वे धनुष के समीप ही नहीं गये। मूर्ख राजा लोग उत्साह में भर कर सामूहिक रूप से धनुष उठाने लगे। उन योद्धाओं की भुजाओं का बल पाकर धनुष मानो और भी भारी हो गया था। अंत में दस हजार राजा एक साथ मिलकर धनुष उठाने की व्यर्थ चेष्टा करने लगे। सती-साध्वी नारी का मन जैसे किसी वासना पीड़ित पुरुष की बातों से नहीं डिगता वैसे ही शंकर के धनुष की हालत थी। वैराग्यहीन संन्यासी की भांति राजा उपहास के पात्र बन गये। धनुष का स्पर्श करते ही उनकी कीर्ति, यश और शौर्य समाप्त हो गये।

श्रीहीन राजा जब अपने-अपने स्थान पर निराश होकर बैठ गये तब व्याकुल जनक ने क्रोध से भर कर कहा कि मेरी प्रतिज्ञा सुनकर अनेकानेक राजा, सम्राट, देवता और दैत्य भी मनुष्य का रूप धारण कर यहां आए, परन्तु इस धनुषयज्ञ में महान विजय प्राप्त कर सुंदर राजकुमारी का वरण करने के लिए विधाता ने किसी को पैदा नहीं किया। शंकर का धनुष कोई भी टस से मस नहीं कर सका। कोई वीर अपनी वीरता पर आज से अभिमान न करे। यह धरती वीरों से रहित हो गयी है। अब आप लोग अपने-अपने घर जायें। मुझे लगता है कि जानकी के भाग्य में विवाह नहीं लिखा है। मैं अपनी प्रतिज्ञा से पीछे हट कर राजवंश के मस्तक पर कलंक का टीका नहीं बनूंगा। क्या करूं? यदि मैं जानता कि पृथ्वी वीरों से रहित है तो मैं अपनी हंसी न कराता।

जनक की निराश बातें सुनकर सभी लोग कातर दृष्टि से जानकी को देखने लगे। जनक की मिथ्या बातें सुनकर लक्ष्मण क्रुद्ध हो गये। उनकी आंखें क्रोध से लाल हो उठीं। राम का आदेश लेकर उन्होंने कहा कि जिस समाज में कोई रघुवंशी हो वहां ऐसी बातें अनुचित हैं। राम के रहते जनक को ऐसा नहीं कहना चाहिए। यदि रघुवंश रूपी कमल के सूर्य राम का आदेश हो तो अनायास सारे ब्रह्मांड को उठा सकता हूं और क्षण भर में कच्चे घड़े के समान उसे फोड़ सकता हूं। राम के प्रताप से सुमेरु पर्वत को मूली की तरह मरोड़ कर फेंक सकता हूं। शंकर का यह

पुराना धनुष बहुत बड़ा हो गया? राम की आज्ञा हो जाए तो मैं खिलवाड़ में ही इस धनुष को तोड़ दूं। कमल नाल की तरह इस धनुष को लेकर सैकड़ों योजन तक दौड़ सकता हूं। राम की आज्ञा हो जाए तो मैं इसे कुकुरमुत्ते की तरह तोड़ सकता हूं। यदि ऐसा न कर पाया तो हाथों में मैं फिर कभी धनुष बाण न लूंगा।

लक्ष्मण के क्रोधपूर्ण वचन को सुन पृथ्वी डगमगा उठी और दसों दिशाओं के दिग्गज भय से कांपने ओर चिंघाड़ने लगे। विश्वामित्र, राम और मुनिगण रोमांचित हो मन ही मन प्रसन्न होने लगे। राम ने प्रेम से लक्ष्मण को शांत कर उनके आसन पर बैठाया। विश्वामित्र ने अत्यंत स्नेहभरी स्वच्छ और पवित्र वाणी में कहा कि राम उठो! शंकर के धनुष को तोड़कर जनक का पश्चात्ताप समाप्त करो। गुरु की आज्ञा पाकर हर्षित मन से युवक राम सिंह-गति से उठे। मंचरूपी उदयाचल पर रामरूपी सूर्य के उदित होते ही संत समुदायरूपी कमल खिल उठे। उनके नेत्र-भ्रमर प्रसन्न हो उठे। सभी राजाओं की आशारूपी रात्रि का गहन अंधकार नष्ट हो गया। उनके अभिमानपूर्ण वचन रूपी तारकपंक्ति प्रकाशहीन हो गयी। घमण्डी राजाओं का घमण्ड कुमुद की तरह सिमटने लगा। कपटी राजा उल्लू की तरह छिप गये। मुनि व देवता रूपी चकवे शोकविहीन हो पुष्पवर्षा करने लगे।

गुरु-चरणों का आशीर्वाद ले मुनियों की आज्ञा से ब्रह्माण्ड के स्वामी राम मदमस्त हाथी की भांति धनुष की ओर बढ़े, सभी रोमांचित हो उठे। लोग सोचने लगे कि यदि हमने और हमारे पूर्वजों ने जीवन में पुण्य कमाया है तो उसके प्रताप से राम धनुष को तोड़ दें। राम को देखते ही सखियों को अपने पास बुलाकर स्नेहवश सीता की मां कहने लगीं कि जो हमारे हितेच्छु हैं, वे भी दर्शक बने बैठे हैं। जनक को कोई समझाने वाला नहीं है कि जिस धनुष को रावण और वाणासुर जैसे योद्धा हिला तक न सके उस धनुष को किशोर राजकुमार कैसे तोड़ेंगे? क्या शिशु मंदराचल पर्वत उठा सकता है? एक चतुर सखी ने तत्काल महारानी से कहा कि तेजस्वी को कभी छोटा नहीं समझना चाहिए। घड़े से उत्पन्न अगस्त्य मुनि ने समुद्र को सोख लिया। देखने में सूर्य लघु प्रतीत होता है परन्तु उसके उगते ही तीनों लोकों का अंधकार नष्ट हो जाता है। मंत्र अत्यंत लघु होते हैं परन्तु उनके वश में ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा सभी देवता हैं। मदमत्त गजराज को छोटा अंकुश वशीभूत कर लेता है। मन का संशय मिटाइये। राम अवश्य धनुष तोड़ेंगे। अपनी सखियों की बात सुन कर महारानी का विश्वास दृढ़ हुआ और उनकी चिंता दूर हो गयी।

सीता का प्रेम राम के प्रति निरंतर बढ़ता गया। जानकी मन में व्याकुल होने लगीं। वे शंकर और पार्वती से प्रार्थना करने लगीं कि किसी प्रकार धनुष का भार कम हो जाए। उन्होंने गणेश की भी वंदना की। राम के शरीर को देख सीता मन ही मन विविध देवी-देवताओं की अर्चना करने लगीं। उनका मन विकल हो उठा। राम के सौंदर्य को आंख भर देखकर मन में पिता के कठिन प्रण का स्मरण किया। उनका मन क्षुब्ध हो गया। वह सोचने लगीं—मंत्रीगण भयभीत हैं। कोई पिता को समझा नहीं रहा है। वज्र से भी कठोर कहां वह धनुष और कहां राम? हे ईश्वर! कैसे धैर्य धारण करूं? भला शिरीष के कोमल फूल से हीरे में छिद्र हो सकता है। सारी राजसभा की बुद्धि पत्थर हो गयी है। हे शिव-धनुष! अब एकमात्र तुम्हारा ही भरोसा है। अपना भार तुम और लोगों को बांट कर अत्यंत हलके हो जाओ। सीता का मन व्याकुल हो उठा। उनका प्रत्येक क्षण सैकड़ों युगों के समान बीत रहा था। जानकी राम को देखतीं फिर पृथ्वी निहारने लगतीं। उनके नेत्र ऐसे लग रहे थे मानो चंद्रमंडल में कामदेव की दो मछलियां नाना प्रकार की क्रीड़ा कर रही हैं। सीता की वाणी रूपी भ्रमरी मुख रूपी कमल कोश में आबद्ध थी। लज्जारूपी रात्रि में वह प्रकट हो रही थी। सीता के नेत्रों के कोर में स्थित जलबिन्दु किसी कृपण के स्वर्णभंडार के समान स्थिर था। सीता व्याकुल और संकुचित थीं। धैर्य धारण करती हुई स्वयं को सांत्वना देने लगीं। उन्होंने सोचा कि यदि मन, वचन और कर्म से मेरी प्रतिज्ञा सच्ची है और राम के चरण-कमलों में मेरा चित्त अनुरक्त है तो मैं सर्वव्यापक राम को अवश्य प्राप्त करूंगी। जिस पर जिसका सच्चा प्रेम होता है उसे वह अवश्य मिलता है। राम के मुख की ओर देख कर जानकी ने अपने अचल प्रेम की प्रतिज्ञा की। कृपासागर राम ने उनके अंतर की सारी बातें समझ लीं। सीता को देखकर उन्होंने धनुष को ऐसे ताका जैसे गरुड़ किसी छोटे सांप को देखे। लक्ष्मण ने देखा कि राम शिव-धनुष की ओर ध्यान लगाये हैं, उनका शरीर रोमांचित हो उठा। पृथ्वी को पैरों के नीचे दबाकर आदेशात्मक शब्दों में पुलकित हो लक्ष्मण बोले, "हे दिग्गजो! हे कच्छप!

चतुर सखी लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई।।
सुनत जुगल करमाल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई।।

हे शेष! हे वराह! तुम धीरज धरो। राम शिव-धनुष खण्डन करना चाहते हैं। आरंभ में ही तुम सजग हो जाओ।" सभी सन्देह, अज्ञान, अविवेक, राजाओं का दर्प, परशुराम का गर्व, देवताओं और मुनियों की कातरता, सीता की चिन्ता, रानियों की दु:ख-दावाग्नि और जनक का पश्चात्ताप—सभी एक साथ शिव-धनुष रूपी विस्तृत जहाज पर आसीन हैं। अपूर्व शक्तिशाली राम का बाहुबल अथाह समुद्र है। सभी समुद्र पार करना चाहते हैं परन्तु कोई केवट नहीं है। राम ने रंगभूमि में बैठे हुए सभी लोगों को चित्रलिखित-सा देखा। सीता को देखकर उनके असहनीय दु:ख की कल्पना की। सीता का एक-एक पल युग समान व्यतीत हो रहा था। समय बीत जाने पर पछताने और खेती सूख जाने पर वर्षा होने से क्या लाभ?

यह सोच राम ने सीता को पुनः देखा। जानकी का अपने प्रति सच्चा अनुराग देखकर राम पुलकित हो उठे। उन्होंने धनुष उठा लिया। जब राम ने अपने हाथ में धनुष लिया तो पहले तो धनुष बिजली-सा चमका फिर आकाश में मण्डलाकार हो गया। धनुष को उठाने, चढ़ाने व खींचने का काम इतनी तेजी से हुआ कि उपस्थित लोगों में से कोई नहीं देख पाया। क्षण भर में राम ने धनुष तोड़ दिया। तीनों लोक धनुष की टंकार से ध्वनित हो उठे। चौदहों भुवन शिव-धनुष टूटने की कठोर और तीव्र ध्वनि से भर गये। सूर्य के रथ के घोड़े घबड़ाकर अन्य दिशाओं में भागने और चीत्कार करने लगे। पृथ्वी कांपने लगी। शेष, वराह, कच्छप सभी कसमसा उठे। देवता, राजा, मुनि धनुष की तीव्र ध्वनि सुन तत्काल इस निश्चय पर पहुंचे कि किसी ने अवश्य शिव-धनुष का खण्डन किया है। राम के बाहुबल रूपी समुद्र की थाह लेने के लिए शिव का धनुष जहाज के समान था। इस जहाज पर मोह के वशीभूत हो जिन लोगों ने पहले पदार्पण किया, वे उस समुद्र में डूब मरे।

राम ने धनुष दो टुकड़ों में तोड़कर पृथ्वी पर फेंक दिया। विश्वामित्र रूपी पवित्र समुद्र में राम-प्रेम रूपी अथाह जल भरा हुआ था। राम रूपी चन्द्रमा को देख इस प्रेममय समुद्र में पुलकावली रूपी लहरें उठने लगीं। आकाश से दुदुंभी की ध्वनि होने लगी। देव स्त्रियां नृत्यगान करने लगीं। ब्रह्मा, सिद्ध, देवता और बड़े-बड़े मुनिगण राम की प्रशंसा कर उन्हें आशीर्वाद देने लगे। धनुष-भंग-स्थल पर नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों और मालाओं की वर्षा होने लगी। किन्नर-किन्नरियां आनंद से भरकर मंगल गीत गाने लगीं। सारा विश्व जय-जयकार से गूंज उठा। वंदीजन, मागध और सूतगण प्रशस्तिगान करने लगे। नाना प्रकार के दान-पुण्य होने लगे एवं मणि-माणिक्य न्यौछावर किए जाने लगे। अनेकानेक वाद्य बजने लगे। युवतियां मंगल गीत गाने लगीं। सूखते हुए धान पर जैसे पानी पड़ गया हो वैसे ही जनक सहित सभी लोग चिंता छोड़ सुखी हो गए। जल में तैर कर थके हुए मनुष्य को पैर रखने का सहारा मिल गया। सीता का अवर्णनीय सुख ऐसा था जैसे चातकी को स्वाति का जल मिल गया। लक्ष्मण राम को ऐसे देखने लगे जैसे चकोर चन्द्रमा को निरखता है।

चतुर सखीं लखि कहा बुझाई। पहिरावहुं जयमाल सुहाई।।
सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई।।

गुरु शतानंद की आज्ञानुसार धीरे-धीरे सीता राम के पास आइं। सुन्दर और बुद्धिमती सखियां मंगल गीत गा रही थीं। अपनी सखियों के बीच सीता छवियों के मध्य महाछवि-सी सुशोभित थीं। उनके कोमल हाथों में वरमाला शोभायमान थी। उस वरमाला में विश्वविजय की शोभा झलक रही थी। उनके शरीर में संकोच, पर मन में अतीव उत्साह था और उनका गूढ़ प्रेम लोगों के ज्ञान से परे था। जब सीता ने राम को देखा तो वे चित्र के समान एकटक उन्हें निहारती ही रह गयीं। सीता की एक मुंहबोली सखी ने उनकी मोहावस्था को पहचान लिया और कहा, सुंदर वरमाला पहनाओ! सुनते ही प्रेम वशीभूत सीता ने दोनों हाथों में माला उठायी पर भाव-विह्वल होने के कारण पहना नहीं पा रही थीं। उनके हाथ में वरमाला ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे मृणाल समेत दो कमल अत्यंत संकोच के साथ चन्द्रमा को माला समर्पित कर रहे हों। इस प्रीतिपूर्ण उत्साह को देखकर सखियां उछाह से भर मंगल गीत गाने लगीं। सीता ने राम के गले में वरमाला डाल दी। राम के गले में सीता द्वारा डाली गई वरमाला देख देवता आकाश से पुष्प वृष्टि करने लगे। जैसे कुमुदनी सूर्य को देखकर संकुचित हो जाती है, उसी तरह अन्यान्य राजा लोग संकुचित हो गए।

शंकर के धनुष के टूटने की खबर सुनकर भृगुवंश रूपी कमल को प्रफुल्लित करने के लिए सूर्य के समान परशुराम रंगभूमि में पधारे। परशुराम को देखते ही



राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा। कर कुठारु आगे यह सीसा।।
जेहि रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी। मोहि जानिअ आपन अनुगामी।।

जैसे बाज के झपट्टा मारने से समस्त पक्षी छिपने लगते हैं, उसी तरह सभी राजा संकुचित हो उठे। परशुराम का शरीर भव्य था। ललाट पर त्रिपुंड विराज रहा था, सिर पर जटा थी। क्रोध से मुख लाल हो उठा था। भौंहें तनी हुई थीं। आंखें क्रोध से अंगार हो रही थीं। वे कुपित थे। चौड़ी छाती पर जनेऊ और माला थी। कमर में वल्कल वस्त्र और तरकस बंधा था। मृग चर्म धारण किया था। हाथ में धनुष-बाण तथा चौड़े स्कन्ध पर फरसा था। परशुराम का वेश साधु का था पर करनी अत्यन्त कठोर थी। वीर रस ही मानो परशुराम का रूप धारण कर राजाओं के बीच आ गया हो। परशुराम का विकराल स्वरूप देखकर सभी राजा प्रकंपित हो उठे। उन्हें अपना-अपना परिचय देते हुए दण्डवत करने लगे। परशुराम जिसकी ओर स्वाभाविक दृष्टि से भी देखते, वह समझता कि अब खैर नहीं। सीता समेत जनक ने परशुराम को प्रणाम किया और आशीर्वाद प्राप्त किया। तत्क्षण अपनी सखियों सहित सीता अंत:पुर में चली आई। विश्वामित्र राम-लक्ष्मण सहित परशुराम के पास आये और उन्हें राम-लक्ष्मण से परिचित कराया। परशुराम ने आशीर्वाद दिया और कामदेव के दर्प को नष्ट-भ्रष्ट करने वाले राम की छवि को रत्न-राशि की तरह निहारने लगे। परशुराम ने जनक से पूछा कि भीड़ कैसी है? उन्हें धनुषयज्ञ का ज्ञान नहीं था। तत्काल परशुराम ने रंगभूमि की ओर देखा। शंकर का धनुष खण्ड-खण्ड होकर धरती पर बिखरा हुआ था। क्रोध से उतावले हो परशुराम कहने लगे कि जड़ जनक! बताओ कि धनुष किसने तोड़ा? धनुष तोड़ने वाले को शीघ्र दिखाओ। नहीं तो मैं राज्य उलट दूंगा। भय से प्रकंपित जनक कोई उत्तर न दे सके। सभी दर्शक नारी-पुरुष मन ही मन चिंतित हो उठे। सीता की मां सुनयना पछताने लगीं कि ईश्वर ने सारी बनी-बनायी बात बिगाड़ दी। सीता का प्रत्येक क्षण युग के समान बीत रहा था। हर्ष और विषाद से परे राम तब परशुराम से बोले—

'हे नाथ! शंकर-धनुष तोड़ने वाला आपका ही कोई दास है। मुझे क्या आज्ञा है?' राम के निवेदन पर क्रोध से तड़प कर परशुराम ने कहा कि सच्चा सेवक वह होता है जो सेवा करे।

परशुराम की क्रोध भरी वाणी सुनकर लक्ष्मण ने उन पर विभिन्न प्रकार के कटाक्ष किए। उन्होंने बचपन में बहुत-सी धनुहियों के तोड़ने की बात कही जिससे परशुराम बहुत क्रोधित हुए तथा अपने परशु के स्वभाव का वर्णन किया। लक्ष्मण ने परशुराम को फिर छेड़ दिया कि आप मुझे फरसा दिखाकर फूंक से पहाड़ उड़ाने जैसा कार्य कर रहे हैं। मैंने मात्र ब्राह्मण समझकर आपको छोड़ा है अन्यथा रघुवंशी किसी से भी तिरस्कृत नहीं होते। विनम्र राम ने मुनि के क्रोध को शान्त किया तथा बालक लक्ष्मण को क्षमा करने के लिए कहा। परशुराम के द्वारा गुरु-ऋण की बात करने पर लक्ष्मण ने फिर कटाक्ष किया कि आप मातृ-पितृ-ऋण से मुक्त होने के पश्चात गुरु-ऋण से मुक्त होना चाहते हैं। इसलिए किसी हिसाब करने वाले को बुला लीजिए जिससे मैं आपका हिसाब चुकता कर दूं। लक्ष्मण के उत्तर से परशुराम बहुत क्रोधित हुए परन्तु राम ने उन्हें शीघ्र ही शान्त कर दिया। राम की गूढ़ बातों से परशुराम को राम के परमेश्वर स्वरूप का ज्ञान हुआ। राम से टूटे धनुष को खिंचवाकर अपनी शंका का समाधान कर राम-लक्ष्मण की प्रशंसा करते हुए परशुराम ने वन को प्रस्थान किया।

गुरु विश्वामित्र के आदेशानुसार हर्षित मन से दशरथ ने राम को युवराज पद पर प्रतिष्ठित करने की आयोजना की। उन्होंने विश्वामित्र से कहा कि मेरा शरीर आगे रहे या न रहे इसलिए मेरे जीवित रहते राम का राजतिलक हो जाये तो मुझे कोई चिंता नहीं रहेगी। विश्वामित्र ने कहा कि राम पवित्र प्रेम के वशीभूत हैं। वह दिन शुभ और वह क्षण मंगलमय होगा जब राम युवराज होंगे। राजतिलक की तैयारी कीजिए।

गुरु की आज्ञा पाकर दशरथ ने सेवकों तथा अपने मंत्री सुमंत को बुलवाया। हर्षित मन से उन्हें राज्याभिषेक की तैयारी करने का आदेश दिया। मंत्री सुमंत प्रसन्न हो उठे। उनकी प्रसन्नता की बढ़ती हुई लता को सुंदर डाल का सहारा मिल गया। वेदों में वर्णित विधि-विधान से मंगल तीर्थों का जल, तोरण, कलश, मणि-माणिक्य आदि साज-सज्जा के संकलन से राज्याभिषेक की तैयारी होने लगी। सारी अयोध्या में मंगल की लहर छा गयी। जगह-जगह संगीत आयोजित होने लगे। भरत अपने ननिहाल में थे। राम और जानकी अंग फडकने से शुभ शकुन अनुभव करने लगे। वे इन शकुनों को भाई के आगमन का संकेत समझकर प्रसन्न हो गये। भरत से प्रिय इस संसार में राम के लिए कोई नहीं था। वे भरत के विषय में रात-दिन वैसे ही सोचते रहते जैसे कछुवा अपने अंडों की चिंता करता है। रनिवास में जब यह



सुनहुं प्रानप्रिय भावत जी का। देहुं एक बर भरतहि टीका।।
मांगउ दूसर बर [illegible] मोरी।।

समाचार पहुंचा तो ऐसा हर्ष छाया जैसे चन्द्रमा को देख समुद्र में उत्ताल तरंगें उठने लगती हैं। अनुपम प्रेममयी स्थिति रनिवास की हो गयी।

वशिष्ठ ने राम को बताया कि तुम्हारे राज्याभिषेक की तैयारी हो रही है। तुम अभिषेक के लिए तैयारी करो। राम ने मन में सोचा कि हम चारों भाई एक साथ उत्पन्न हुए, साथ खेले, साथ ही सोये, यज्ञोपवीत, कर्णविध एवं विवाह-संस्कार साथ ही सम्पन्न हुए, पर रघुवंश में यह अनुचित कार्य हो रहा है कि केवल बड़े भाई का राजतिलक हो रहा है। राजतिलक की उत्साह से तैयारी होने लगी। प्रसन्नचित्त लक्ष्मण राम से मिलने आये।

कैकेयी की दासी मंथरा अत्यंत कुटिलबुद्धि थी। सरस्वती ने उसकी मति मार कर उसे अपयश की पिटारी बना दिया था। नगर सजा था। चतुर्दिक सुंदर मंगल गीत हो रहे थे। जब राम के राजतिलक का उसे आभास हुआ तो उसके हृदय में ईर्ष्या की ज्वाला जलने लगी। विवेकहीन मंथरा सोचने लगी कि जैसे भी होगा राम का राजतिलक नहीं होने दूंगी। अनिष्ट करने के लिए केवल रात भर का समय था। मंथरा की स्थिति उस कुटिल भीलनी-सी थी जो किसी भी तरह पेड़ से शहद का छत्ता उखाड़ना चाहती हो। वह रोती-कलपती कैकेयी के पास गयी। कैकेयी ने उसकी उदासी का कारण पूछा। वह लम्बी सांस लेकर त्रियाचरित्र रच आंसू बहाने लगी। कैकेयी ने कहा कि तू बहुत बढ़-चढ़कर बात करने वाली है। लगता है कि लक्ष्मण ने तुम्हें कुछ दण्ड दिया है। पापिष्टिनी मंथरा कुछ न बोली। विषभरी सर्पिणी की तरह फुंफकार कर सांस लेने लगी। उसकी यह स्थिति देखकर भयभीत कैकेयी ने कहा कि तुझे क्या हो गया है? दशरथ, राम, सीता, लक्ष्मण कुशलतापूर्वक तो हैं न?

यह सुनकर कुबरी के मुंह में जैसे कांटा चुभ गया। उसने कहा कि कुशल तो आज सिर्फ राम की है। कौशल्या के लिए ईश्वर अनुकूल हो गया है। जाकर अपनी आंखों से देखिये। मैं तो उस उत्साह को देख कर क्षुब्ध रह गयी। भरत ननिहाल में हैं। आपको किस बात की चिंता? आप सोचती हैं कि दशरथ आपके प्रेम बंधन में बंधे हैं। सुन्दर सेज और मुलायम गद्दे पर राजरानी की तरह आप निद्रा-निमग्न हैं परन्तु महाराज दशरथ की कुटिल चतुराई आप नहीं समझ रही हैं।

मंथरा की मलिन मन की मीठी बातें सुनकर कैकेयी क्रोध से बरस पड़ीं। डांट कर कहा कि यदि फिर कभी इस तरह की फूट डालने वाली बात की तो तुम्हारी जीभ खिचवा दूंगी। क्रोध शांत होने पर कैकेयी ने उसे मनाते हुए कहा कि मंथरा, तुम बड़ी मधुर वाणी बोलती हो। मैं स्वप्न में भी तुम पर कुपित नहीं हो सकती। वह बड़ा ही मंगलदायक और शुभ क्षण होगा जब राम का राजतिलक होगा। बड़ा भाई मालिक और छोटा सेवक, यह सूर्यवंश की परंपरा है। कल राम का राजतिलक है। तू जो मांग, वह इस महोत्सव पर दूंगी। राम को सभी माताएं अपनी मां कौशल्या के समान ही प्रिय हैं। राम के प्रेम की मैंने परीक्षा कर ली है। उनके राजतिलक से मुझे क्यों क्षोभ होगा? कैकेयी ने मंथरा से कहा कि तुम्हें भरत की सौगंध है, कपट छोड़ कर सत्य कहो। तुम इस शुभ अवसर पर दुःखी क्यों हो? देवमाया के वशीभूत मंथरा ने कैकेयी के हृदय में सौतिया डाह उत्पन्न कर भावी अनिष्ट का भय भी दिखाया, जिसमें भरत बंदी होंगे तथा उसे (कैकेयी को) दूध की मक्खी के समान फेंक दिया जाएगा। मंथरा का यह दांव पूरा उतरा तथा कैकेयी ने उसे अपनी हितचिंतक समझकर उससे उपाय पूछा। मंथरा ने उसे कोपभवन में जाकर दशरथ से धरोहर के रूप में विद्यमान दो वर मांगने को कहा। एक वर के अधीन राम को चौदह वर्ष का वनवास तथा दूसरे के अधीन भरत का राज्याभिषेक।

उधर उत्साह और अभिलाषा से रामराज्य की तैयारी हो रही थी, इधर यह सब हो गया। संध्या के समय दशरथ कैकेयी के राजभवन में प्रसन्नतापूर्वक पहुंचे। यह जानकर कि कैकेयी कोपभवन में है, दशरथ के पैर जड़ हो गये। मन सिकुड़ गया। इन्द्र के समान दशरथ की शक्तिशाली भुजाओं से अनेक सम्राट भयभीत रहते थे। वही महाराज दशरथ कैकेयी के क्रोध का समाचार सुनकर सूख गये। कामदेव ने त्रिशूल, वज्र और तलवार की धार से कभी न घायल होने वाले दशरथ पर प्रणय-बाणों से प्रहार कर दिया। भयभीत दशरथ कैकेयी के पास आए। उसकी दशा देखकर उन्हें पीड़ा हुई। शरीर के आभूषण धरती पर बिखरे पड़े थे। एक फटा-पुराना वस्त्र पहन कर विधवा का वेश बना रखा था। दशरथ ने पूछा कि प्राणप्रिये! तुम रूठी क्यों हो? महाराज दशरथ ने स्नेह से उसका स्पर्श करना चाहा परन्तु क्रुद्ध नागिन की तरह उसने महाराज के हाथ हटा दिये। सर्पिणी रूपी

कैकेयी की वरदान की इच्छा दो जिह्वाएं थीं और वरदान विषदंत। वह सर्पिणी डसने के लिए दशरथ का मर्मस्थान खोज रही थी। होनहार के वशीभूत दशरथ ने रानी की इस कुपित भंगिमा को उसका मान समझ लिया। दशरथ ने पूछा— हे सुमुखि! कोयल के समान सुमधुर स्वरवाली! गजगामिनी कैकेयी! अपने क्रोध का कारण बताओ? दशरथ कहने लगे कि तुम्हारा किसने अहित किया है? किसके दो सिर हो गये हैं? यमराज किसको अपना ग्रास बनाना चाहता है? यदि कोई देवता भी हो तो उसे रणक्षेत्र में पराजित करूं। कीड़े-मकोड़ों की तरह स्त्री-पुरुषों की तो कोई बात नहीं। संतति, कुटुम्ब, राजा, प्रजा सभी तुम्हारे वश में हैं। मैं राम की शपथ लेकर कहता हूं कि मैं कपट नहीं करता। हंसकर जो भी तुम कहोगी वही होगा। शरीर पर आभूषण धारण करो। इस सुंदर समय का सदुपयोग करो।

मतिभ्रष्ट कैकेयी दशरथ की बातों पर हंस पड़ी। आभूषण सजाने लगी। दशरथ रूपी हरिण को फंसाने के लिए बहेलिए की तरह कैकेयी फंदा तैयार करने लगी। दशरथ ने पुलकित हो कर कहा कि नगर में आनंद के बाजे बज रहे हैं। तुम्हारी इच्छा पूरी हो रही है। कल राम को युवराज पद दे रहा हूं। तुम मांगलिक अवसर पर आनंद लेने के लिए सुसज्जित हो जाओ। यह सुनकर कैकेयी का हृदय पके बलतोड़ फोड़े की तरह दरक उठा। जैसे चोर स्त्री छिपकर रोती है, उसी तरह कैकेयी ने अपनी पीड़ा छिपा ली। उसकी इस नीच चाल को दशरथ न समझ सके क्योंकि कैकेयी को करोड़ों कुटिलों की शिरोमणि मंथरा ने पट्टी पढ़ायी थी। दशरथ कैकेयी के त्रियाचरित्र के अगाध सागर में बहने लगे। अपने नेत्र और मुख मोड़कर हंसती कैकेयी बोली कि प्रिय! बार-बार आप मुझसे पूछते हैं तो कह रही हूं कि कभी आपने दो वरदान मुझे देने का आश्वासन दिया था। उसे प्राप्त करना ही संदेहास्पद है। दशरथ ने कहा कि तुम रूठती हो तो बड़ी प्रिय लगती हो। तुम्हारा अर्जित वरदान मैं समझ गया। मेरे भुलक्कड़ स्वभाव के कारण दोनों वरदान अभी भी सुरक्षित हैं। दो के बदले चार वरदान मांगो। रघुवंश की यह परम्परा है कि प्राण भले ही जायें पर वचन नहीं तोड़ते। असत्य से बढ़कर कोई पाप नहीं है। करोड़ों पाप मिलकर भी एक असत्य से कम हैं। सत्य समस्त पुण्यों की जड़ है। उस पर मैंने राम की सौगंध ली है। तुम वरदान मांगो।

सुनहुं प्रानप्रिय भावत जी का। देहुं एक बर भरतहि टीका।।
मांगउं दूसर बर कर जोरी। पुरवहुं नाथ मनोरथ मोरी।।

कैकेयी ने बड़ी कुटिलता के साथ मुस्करा कर कहा कि प्राणनाथ! मेरे मन को प्रसन्न करने वाला पहला वरदान भरत को राजतिलक दीजिए और दूसरा वर यह मांग रही हूं कि तपस्वी का वेश धारण कर चौदह वर्ष राम वन में रहें। कैकेयी की ऐसी अप्रत्याशित वाणी सुनकर महाराज उसी तरह शोक-विह्वल हो उठे जैसे चन्द्रमा को देख कर चकवा। कुछ कहते नहीं बना। बटेर पर जैसे बाज ने प्रहार किया। दशरथ की मुखभंगिमा ऐसी हो गयी जैसे ताड़ के पेड़ पर बिजली गिर गयी हो। दशरथ ने मस्तक पर हाथ रख आंखें मूंद लीं और सोचने लगे कि हस्तिनी कैकेयी ने मेरे मनोरथ रूपी कल्पवृक्ष को उखाड़ फेंका। उसने अयोध्या को उजाड़ दिया और एक स्थायी विपत्ति की रचना कर दी। किस अवसर पर क्या हो गया? स्त्री पर विश्वास कर मैं इस तरह मारा गया जैसे योगी की साधना को सिद्धि के सुअवसर पर अविद्या ने नष्ट कर दिया हो। दशरथ मन-ही-मन पश्चाताप करने लगे। कुटिल कैकेयी कुपित हो गयी। कहने लगी कि क्या भरत आपकी संतान नहीं हैं? क्या मैं खरीद कर लायी गई हूं? मेरी मांग तीर की तरह आपको चुभ रही है। क्यों नहीं समझ-बूझ कर वचन दिया था? आप रघुवंश की सत्यनिष्ठा के प्रतीक हैं। मुझे उत्तर दीजिए। आपने वर देने को कहा था, मत दीजिए, सत्य छोड़ दीजिए। क्या आपने सोचा था कि में चबैना मांगूंगी। शिवि, दधीचि और बलि ने अपने वचन के पालन के लिए वैभव और शरीर तक त्याग दिया। कैकेयी जले पर नमक छिड़क रही थी। दशरथ मन ही मन सोचने लगे कि इसने बड़ा कुठांव घात किया। क्रोध से कैकेयी ऐसी जल रही थी मानो खांडे की धार। उस निष्ठुर धार पर कुबरी ने तेज सान दे दी थी।

दशरथ ने देखा कि तीव्र व्यंग्य प्रहार से कैकेयी मेरी जान ले लेगी। दशरथ ने उससे कहा कि तुम्हें ऐसा विभ्रम कैसे हुआ? मैं शंकर की शपथ ले कर सत्य कहता हूं कि भरत-राम दोनों मेरे नेत्र हैं। कल सवेरे ही मैं भरत-शत्रुघ्न को ननिहाल से बुलाने के लिए राजदूत भेजूंगा। सुंदर मंगलमय मुहूर्त देख डंके की चोट पर भरत को राज्य दूंगा। राम को राज्य का लोभ नहीं है। भरत को वे प्राण से भी

बढ़ कर मानते हैं। राजनीति के अनुसार बड़े-छोटे का विचार करके मैं राम का राजतिलक कर रहा था। मैं राम की सौगंध खाकर कहता हूं कि राम की मां कौशल्या ने मुझसे कुछ नहीं कहा। यह सब मैं स्वयं कर रहा था। अब तुम क्रोध छोड़ो। कुछ दिनों के बाद भरत युवराज होंगे। लेकिन दूसरा वरदान मांग कर तुमने मुझे उलझन में डाल दिया है। उसी आग से मेरा हृदय जल रहा है। राम साधु हैं। उन्होंने क्या अपराध किया है? तुम स्वयं उनकी प्रशंसा करती रही हो, उनके प्रति स्नेहशील रही हो। राम अपने शत्रुओं के भी प्रतिकूल नहीं जाते; फिर माता कैकेयी के विरुद्ध वे कैसे सोच सकते हैं? प्रियतमे! क्रोध छोड़ो। अब तुम न्याय-बुद्धि ने वरदान मांगो ताकि मैं नेत्र भर प्रिय भरत का राजतिलक देख सकूं। जल के बिना मछली, मणि के बिना सर्प भले ही जीवित रह ले, लेकिन मैं राम के बिना जीवित नहीं रह सकता।

दशरथ की वाणी कैकेयी की क्रोधाग्नि में घी की आहुति थी। उसने कहा कि आप चाहे करोड़ों उपाय करें, लेकिन मैं आपकी माया में नहीं फंसना चाहती। मुझे वरदान दीजिए या इनकार कीजिए, प्रपंच अच्छा नहीं लगता। राम साधु हैं। आप भी साधु हैं। कौशल्या बड़ी अच्छी हैं। मेरा जैसा भला कौशल्या ने सोचा, उसका उचित बदला उन्हें दूंगी। कुटिल कैकेयी ने दशरथ से कहा कि अच्छी तरह समझ लीजिए कि यदि सवेरा होते ही राम तपस्वी का वेश धारण कर वन नहीं चले गये तो मैं मर जाऊंगी। आपको अपराध लगेगा। इतना कहकर कुटिल कैकेयी क्रोध की उमड़ती नदी की तरह खड़ी हो गयी। भरत का राज्यारोहण और राम का वन जाना उस नदी के दो किनारे थे। कैकेयी का हठ नदी की धारा थी। मंथरा की कुमंत्रणा नदी-भवंर थी। कैकेयी रूपी वह क्रुद्ध नदी किनारे के दशरथ रूपी वृक्ष को जड़ से उखाड़ती-पछाड़ती विपत्ति रूपी समुद्र की ओर निर्द्वन्द्व बढ़ती जा रही थी। दशरथ को विश्वास हो गया कि कैकेयी साक्षात मृत्यु-नटी बनकर मेरे सिर पर नाच रही है। उन्होंने पत्नी के पांव पकड़ लिये और प्रार्थना की कि सूर्य-वंश को काटने के लिए कुल्हाड़ी मत बनो। तू मेरा सिर मांग ले लेकिन मुझे राम के विरह में मत मार। दशरथ अत्यंत कातर वाणी में राम-राम रटने लगे। मस्तक पीटने लगे। चेतनाहीन हो गयें। मदमस्त हाथी द्वारा उखाड़ फेंके गये वृक्ष की तरह दशरथ का शरीर निढाल हो गया। गला सूखा गया। मुख से शब्द नहीं निकल रहे थे।

घाव पर मानो जहर छिड़कते हुए कैकेयी ने व्यंग्य किया कि जो अन्त में ऐसा करना था तो मुझसे 'मांगो-मांगो' क्यों कह रहे थे? शांत क्यों हो गये? या तो आप अपनी बात से मुकरिये या फिर वचन का पालन कीजिए। आप सत्यव्रती बनते हैं। आपके लिए स्त्री, पुत्र, प्रजा तिनके के समान हैं। कैकेयी कठोर मर्मघाती व्यंग्य का प्रहार करने लगी।

दशरथ ने तड़पते हुए कहा कि तेरा दोष नहीं है। मेरी मृत्यु ही पिशाच बनकर तुम्हें लग गयी है। भूल कर भी भरत राज्य नहीं चाहते। यह मेरे पापों का फल है। राम राज होंगे। सब भाई उनके सेवक होंगे। परन्तु मेरा पश्चात्ताप और तुम्हारा कलंक नहीं मिटेगा। जो चाहो वही करो। मेरे सामने से अपना मुख हटा लो! मैं फिर हाथ जोड़ कर कहता हूं कि अभागिनी! अंत में पछतायेगी। तांत के लिए गो हत्या मत कर। कैकेयी को समझाते हुए दशरथ जमीन पर गिर छटपटाने लगे। किन्तु चतुर कपटी कैकेयी मशान जगाने वाली भैरवी की तरह अचल थी। दशरथ पंखहीन पक्षी जैसे हो गए। वे ईश्वर से विनती करने लगे कि अब सूर्य का उदय न हो। जीवन-मरण की विषम परिस्थितियों में उलझे हुए दशरथ की सारी रात बीत गयी। सवेरा हो गया। राजद्वार पर तरह-तरह के बाजे बजने लगे। गवैये संगीत की तान पर गीत गा रहे थे। यह सब दशरथ को बाण के समान लग रहा था। राजद्वार पर भीड़ लगी थी। सूर्योदय हो जाने पर भी दशरथ की निद्रा न टूटने के कारण अयोध्या के लोग चिंतित हो उठे।

दशरथ प्रातःकाल जब देर तक न जागे तब सभी आश्चर्यचकित हो उठे। उदास वातावरण देखकर सुमंत महल में जाने से भयभीत होने लगे। राजद्वार उन्हें मानो खाने को दौड़ रहा था। चारों तरफ विपत्ति और विस्मय का साम्राज्य था। सभी मौन थे। सुमंत हिम्मत बांध कर दशरथ और कैकेयी के कक्ष में पहुंचे। वहां की दशा देख कर वह सूख गये। दशरथ के चेहरे का रंग उड़ गया था और वे जड़ से उखड़े कमल की तरह धराशायी पड़े थे। कैकेयी ने अशुभ वाणी में कहा कि महाराज को रात भर नींद नहीं आयी। राम-राम रटते रहे। राम को शीघ्र बुलाइये। समाचार फिर पूछना। सुमंत रानी की दुष्ट चाल समझ कर लौट पड़े।

उनके पांव धरती पर नहीं पड़ रह थे। दशरथ राम को बुलवाकर न जाने क्या कहें? वे मुंह लटकाये बाहर आये। सीधे राम के पास गए। राम पिता के समान सुमंत का आदर करते थे। राम को अपने साथ लेकर वे दशरथ के पास चल पड़े। सभी लोग बिलख रहे थे।

राम ने देखा कि सिंहनी सदृश कैकेयी को देखकर पिता दशरथ गजराज की भांति सहमे हुए हैं। उनके अंग-प्रत्यंग शिथिल पड़े हैं। उनकी दशा मणिविहीन सर्प-सी है। राजरानी कैकेयी साक्षात् मौत की घड़ियां गिनने वाली मृत्यु नदी के रूप में दशरथ के समक्ष बैठी हुई थी। मधुर शब्दों में राम ने कैकेयी से पूछा कि मां! इस दुःख का क्या कारण है? कैकेयी ने कहा कि महाराज तुम्हें बहुत स्नेह करते हैं। इन्होंने मुझे दो वरदान देने को कहा था। मैंने वरदान मांगे। इनका हृदय संकुचित हो गया। इधर पुत्र का स्नेह, उधर राज्य की चिंता। इस आपत्ति में तुम महाराज की आज्ञा का पालन करो और उनका कठिन क्लेश दूर करो। कैकेयी नेत्र फाड़कर कटु वचन कहती रही। उसकी धनुषरूपी जीभ से छूटे हुए कटु वचन रूपी बाण राम के हृदय को बेधने लगे। निष्ठुर कैकेयी बैठी थी। ऐसा लगता था, साक्षात् कठोरपन ही वीर रूप धारणकर धनुर्विद्या सीख रहा हो। राम ने प्रसन्नता से कहा कि मां! जो पुत्र माता-पिता के वचन का पालन करने वाला होता है वह बड़ा भाग्यशाली होता है। माता-पिता को संतोष देने वाले पुत्र इस संसार में कहां होते हैं?

सुनु जननी सोइ सुतु बड़ भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी।।
तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा।।

मुझे वन में मुनियों से मिलकर प्रसन्नता होगी। पिता की आज्ञा और तुम्हारी सम्मति से सब प्रकार मेरा हित होगा। प्राणों से प्रिय भरत राज्य पायेंगे। यदि मैं ऐसे सुअवसर पर वन न जाऊंगा तो मूर्खराज कहलाऊंगा। कल्पवृक्ष को छोड़ कर रेंड़ की सेवा करने वाला और अमृत छोड़ विष मांगने वाला भी ऐसा अवसर नहीं छोड़ सकता। मुझे दुःख इस बात का है कि महाराज व्याकुल हैं। छोटी-सी बात से पिता को इतना बड़ा दुःख! पिताजी अत्यंत धैर्यशाली एवं गुणों के समुद्र हैं। उन्होंने बड़ी भारी भूल की जो किसी को कुछ नहीं बताया। तुम्हें मेरी शपथ है, सब सत्य विवरण बताओ। कुटिल कैकेयी राम के सरल वचनों को भी कपटपूर्ण सोचती हुई, झूठा स्नेह जताती हुई बोली कि मैं महाराज और तुम्हारी शपथ खाकर कहती हूं कि मैं और कोई कारण नहीं जानती। राम! तुम माता-पिता तथा भाइयों को सुख देने वाले और अपने बड़ों की आज्ञा का पालन करने वाले हो। तुम पिता से यही कहो कि जिस पुण्य से तुम्हें मेरे जैसा पुत्र मिला है उसका निरादर मत करो। कैकेयी ने राम को अत्यंत मधुर वाणी से समझाया। राम को मां कैकेयी की सभी बातें अच्छी लगीं। देवनदी गंगा में गंदे से गंदा पानी भी मिलकर शुद्ध हो जाता है।

दशरथ की मूर्च्छा दूर हुई। राम का स्मरण करते हुए दशरथ की आंखें खुलीं। सुमंत ने उन्हें पकड़कर बैठाया। राम ने पिता का चरण-स्पर्श किया। जैसे पागल सर्प को खोई हुई मणि पुनः मिलने पर जो प्रसन्नता होती है उसी तरह प्रसन्न होकर दशरथ ने राम को गले से लगा लिया। दशरथ कुछ न बोल सके। राम को स्नेह करने लगे। वे मन ही मन सोचने लगे कि राम वन न जाते तो ठीक था। वे विकल होकर शिव का स्मरण करने लगे। शंकर से प्रार्थना करते हुए उन्होंने कहा कि मेरा यश चाहे नष्ट हो जाए, स्वर्ग न मिले—यह सब मुझे स्वीकार है पर राम आंखों से ओझल न हों। वे सोचते रहे। कुछ न बोले। उनका मन पीपल के पत्ते की तरह डोल रहा था। राम ने परिस्थिति के अनुसार मधुर वाणी में कहा कि मेरा लड़कपन समझकर मेरी बात सुनिये। इतनी छोटी-सी बात के लिए दुःखी क्यों हैं? मुझे माता कैकेयी से सब बात ज्ञात हो गई है। मुझे आज्ञा दीजिए। मेरा जन्म लेना सार्थक हो गया। जिसे माता-पिता प्राणप्रिय हैं उसकी मुट्ठी में अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष हैं। मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। मैं माता से विदा मांगकर आपकी आज्ञा से वन जाऊंगा।

राम वहां से लौट आये। कानों-कान यह दुखद समाचार सारे नगर में फैल गया। नगर के लोग शोक-व्याकुल हो गये। वन में लगी आग के ताप से जले वृक्षों और लताओं के सदृश सभी जल रहे थे। सब लोग सिर धुन रहे थे। सभी के मुख मलिन थे। आंखें आंसुओं से भीगी थीं। हृदय में शोक नहीं समा रहा था। जैसे करुणा रस की सेना डंका बजाकर अयोध्या में उतर आयी हो। लोग कैकेयी को गालियां देते हुए कोस रहे थे कि छाये हुए मकान में उसने आग लगा दी। वह अपने ही हाथों अपनी आंखें निकालकर देखना चाहती है, अमृत छोड़ विष मांग रही है। लोग सोचने लगे

कि कैकेयी रघुवंश रूपी बांस-वन के लिए आग बन गयी। डाली पर बैठ कर वह जैसे पेड़ को ही काट रही थी। सुख में दु:ख का वातावरण उत्पन्न हो गया। राम को कैकेयी सदा प्राणों से बढ़कर मानती थी। आज क्यों उसने यह कुटिलता की? स्त्रियों का स्वभाव गूढ़ और भेदभरा होता है।

ईश्वर ने क्या सुनाकर क्या कर दिया? अब आगे क्या दिखाना चाहता है? लोग कह रहे थे कि महाराज जो कुछ कर रहे हैं वह सोच-समझ कर नहीं कर रहे हैं। स्त्री के वश में उनके ज्ञान, गुण, विवेक विलीन हो गये हैं। अपने कान बंद कर लोग दांतों तले उंगली दबाये हुए थे। किसी ने शंका की कि इस षड्यंत्र में भरत की सम्मति है लेकिन तभी दूसरे ने उसे रोककर कहा कि भरत राम को प्राणों से बढ़ कर मानते हैं। ऐसी शंका करने से तुम्हारे पुण्य नष्ट हो जाएंगे। चन्द्रमा से आग के अंगारे बरस सकते हैं परन्तु भरत राम के विरुद्ध कभी नहीं सोच सकते।

अनेक शुभेच्छु हितैषी महिलाएं कैकेयी को समझाने लगीं कि तुम राम को इतना मानती हो, क्यों उन्हें वनवास दे रही हो? सीता पति का साथ नहीं छोड़ेंगी। भरत राम के बिना राज्य नहीं करेंगे। दशरथ राम के बिना जिन्दा नहीं रहेंगे। भरत को अयोध्या का राज्य दे दो लेकिन राम को वन मत भेजो। राम धर्म धारण करने वाले हैं। तुम वन की अपेक्षा गुरु-गृह में राम को भेजने का वर मांगो। राम वन जाने योग्य नहीं हैं। तुम शीघ्र ही ऐसा कोई उपाय करो जिससे अयोध्यावासियों का शोक और संताप मिट जाए। अयोध्या राम के बिना ऐसी ही है जैसे सूर्य के बिना दिन, प्राण के बिना शरीर और चन्द्रमा के बिना रात रहती है। कुटिल कुबरी की सिखायी कैकेयी सब कुछ समझाने के उपरांत भी एक न मानी। क्षुधित सिंहनी जैसे हिरणियों को देखती है वैसे ही कैकेयी सीख देने वाली नारियों को घूरकर देखने लगी। सभी नारियां उसकी बुद्धिहीनता पर पछताती हुई लौट आयीं। कैकेयी ने इतना कुटिल काम किया जो कोई भी न कर पाता। लोग दु:ख की अग्नि से जलने लगे। राम के अभाव में लोगों की स्थिति जल से रहित सरोवर के जलजीवों-सी हो गयी थी। लोग संतप्त थे।

राम कौशल्या के पास आये। मुख पर प्रसन्नता की छवि छायी हुई थी। नये पकड़े गए हाथी-से राम के लिए राजतिलक बेड़ी थी। वन-गमन की आज्ञा को बंधनमुक्त होने का अवसर समझकर वह बहुत हर्षित थे। राम ने माता का चरण स्पर्श किया। बार-बार कौशल्या उन्हें स्नेह करने लगीं। भिखारी को जैसे कुबेर की पदवी मिल गयी थी। मां ने राम से राजतिलक का मंगलकारी लग्न काल पूछा और कहा कि तुम जाकर जल्दी स्नान कर लो, फिर पिता के पास जाना। माता कौशल्या की स्नेह वाणी सुन कर धैर्यवान राम मधुर वाणी में बोले कि पिता ने चौदह वर्ष का वनवास दिया है। मां! मुझे प्रसन्नचित वनगमन की आज्ञा दो। स्नेह-वश असमंजस में मत डालो। चौदह वर्ष पिता की आज्ञा से वन में रहकर पुन: मैं आपके चरणों का दर्शन करूंगा।

ये शब्द कौशल्या को तीर-से लगे। वर्षा के पानी बिना जैसे जवास जल गया हो वैसे ही कौशल्या सूख गयीं। सिंह की आवाज सुनकर जैसे हिरणी व्याकुल हो जाती है वैसे ही कौशल्या व्याकुल हो उठीं। जैसे प्रथम वर्षा का फेन खाकर मछली व्याकुल हो जाती है, वैसे ही मां कौशल्या कंपित हो उठीं। किसी तरह धैर्य धारण कर कौशल्या ने पुत्र का मुख निहारते हुए कहा कि तुम तो पिता के प्रिय थे, उन्होंने वन जाने की आज्ञा क्यों दी? सूर्यवंश को जलाकर नष्ट करने के लिए कौन अग्नि बन गया? सुमंत के पुत्र ने कौशल्या से सब कुछ कह दिया। कौशल्या मूक हो गयीं। वे न राम को रोक सकती थीं न जाने को कह सकती थीं। विधाता की सारी बातें उल्टी हो गयीं—लिखना था चन्द्रमा लिख दिया राहु। सांप और छछूंदर-सी कौशल्या की गति हो गयी। वे यदि पुत्र को रोकतीं तो धर्म जाता। भाइयों में विद्रोह होता। दूसरी ओर राम के वन जाने से भी बड़ी हानि थी। वे चिंता में डूब गयीं। राम और भरत को समान जानकर विवेकशील कौशल्या छाती पर हाथ रखकर राम से बोलीं कि तुमने बहुत अच्छा किया। पिता का आज्ञा-पालन पुत्र का सबसे बड़ा धर्म है। दु:ख इस बात का है कि महाराज दशरथ और सारी प्रजा तुम्हारे अभाव से क्लेश पायेगी। केवल पिता का आदेश है तो माता पिता से बड़ी होती है, यह समझ कर वन मत जाओ। यदि दशरथ और कैकेयी दोनों की आज्ञा है तो उसका पालन करो। वन के देवी-देवता तुम्हारी माता-पिता की तरह देखभाल करें। जंगल में पशु-पक्षी तुम्हारे चरणों की सेवा करें। वानप्रस्थ आश्रम में तो सबका वन जाना उचित ही है लेकिन तुम्हारी किशोरावस्था देखकर दु:ख होता है। अयोध्या अभागी वन भाग्यवान है। यदि तुम्हारे साथ अयोध्या छोड़ वन चलूं तो तुम्हारे मन में संदेह होगा कि मां मोहवश रोकना चाहती है। तुम्हारे जैसा

सबका प्राणप्रिय वन जाने का निश्चय करता है और मैं सुनकर पछताती हूं। कैसी विडंबना है? तुम वन जाओ। मैं हठ नहीं करती। मां को भूल न जाना। देवता और पितृगण तुम्हारी उसी तरह रक्षा करें जैसे आंखों की रक्षा पलकें करती हैं। मछली की भांति अयोध्या के लोग वन की अवधि रूपी जल की प्रतीक्षा करेंगे, सबका पुण्य क्षय हो गया। कठोर काल विरोधी हो गया। अनेक तरह से बिलखती कौशल्या राम के चरणों पर पछाड़ खा गिर पड़ी। वे दुःख से भरी थीं। राम ने अनेक प्रकार से मां को संतोष दिया।

यह खबर जानकी को भी ज्ञात हुई। वह भागी हुई कौशल्या के पास पहुंचीं। पति पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाली रूप-राशि सीता सोचने लगीं कि राम वन जा रहे हैं। सशरीर इनके साथ मैं जाऊंगी या केवल प्राण जायेंगे? संकोच से झुकी सीता अपने पैर के अंगूठों से धरती खोदने लगी। सीता की पायलें प्रार्थना कर रही हैं कि सीता के चरण कभी हमारा परित्याग न करें। सीता को रोती देखकर कौशल्या ने राम से कहा कि सीता परिवार के लिए अत्यंत प्रिय और सुकुमारी है। जनक की पुत्री, दशरथ की पुत्रवधू सीता तुम्हारी पत्नी है। इस सुन्दर, रूपवती, गुणवती, शीलवती पुत्रवधू को मैंने अपनी आंखों की पुतली बना कर पाला है। मैंने कल्पलता की तरह स्नेह-जल से सींच कर इसका पालन किया है। फलने का जब समय आया तो ईश्वर रूठ गया। पलंग, गोद और हिंडोला छोड़ सीता ने कभी धरती पर पांव नहीं रखा। वह हमारी संजीवनी है। सीता को दीपक की बाती उकसाने को भी हमने कभी नहीं कहा। सीता तुम्हारे साथ जाना चाहती है। क्या कहते हो? चन्द्रमा की किरणों का रसपान करने वाली चकोरी सीता सूर्य से कैसे आंखें मिला सकती है? जंगल में हाथी, राक्षस, शेर और अन्य हिंसक जीव घूमते रहते हैं। विष की फुलवारी में संजीवनी बूटी-सी सीता कैसे रहेगी? विलास-सुख से सर्वथा अपरिचित कठोर स्वभाव की कोल-भील किशोरियां वन में रहती हैं। जीवन में सब कुछ त्याग चुकी तपस्विनियां वन के योग्य हैं। सीता वन में कैसे रहेगी? वह बंदर की तस्वीर देख कर डर जाती है। देवलोक के सुन्दर सरोवर के तट के अत्यंत कोमल वन में विचरण करने वाली यह राजहंसिनी क्या छिछली तलैयों के योग्य है? जो तुम कहो वही शिक्षा मैं सीता को दूं। मेरी समझ से सीता घर में रहें तो मुझे बड़ा अवलंब मिल जायेगा।

मर्यादित राम माता के समक्ष सीता से कुछ भी कहने से सकुचा रहे थे। फिर भी कुसमय जान सीता से ससंकोच बोले कि यदि सबकी भलाई चाहती हो तो घर में ही रहो। सास-सुसर की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं। जब मां मेरी स्मृति में व्याकुल हो जाएं तो कोमल वाणी द्वारा पौराणिक कथाएं कह कर उन्हें सन्तोष देना। तुम्हें यहां माता के हित के लिए छोड़ रहा हूं। ऐसा करने से तुम्हें गुरु तथा वेदों के बताये धर्म का फल मिलेगा। हठ करने से, पहले भी गालव मुनि और राजा नहुष जैसे लोग कष्ट पा चुके हैं। फिर भी मैं पिता की आज्ञा का पालन कर शीघ्र लौटूंगा। दिन जाते देर नहीं लगती। यदि तुम हठ करोगी तो कष्ट भोगोगी। जंगल भयानक हैं। धूप और जलवृष्टि का निरंतर प्रहार होगा। रास्ते में झाड़-झंखाड़ और कंकड़ों पर नग्न पांव चलना होगा। न जाने कितनी डरावनी गुफाएं, उफनती नदियां पार करनी पड़ेंगी। जंगल के रास्तों में भालू, रीछ ऐसी भयानक बोली बोलते हैं कि धैर्य चुक जाता है। धरती पर सोना, छाल पहनना, मिल जाने पर जंगली फल खाना—तुमसे कैसे यह सब संभव होगा? जंगल में कपटी वेश धारण कर घूमते राक्षस मनुष्यों का भोजन कर जाते हैं। वन में अनेक विपत्तियां हैं। विषैले सर्प तथा स्त्री-पुरुषों को बंदी बनाने वाले राक्षस रहते हैं। धैर्य डिग जाता है। तुम तो स्वभाव से भीरु हो। हंसगामिनी सीता! तुम वन के योग्य नहीं हो। लोग मुझे कलंकी कहेंगे। मानसरोवर के जल में पली हंसिनी खारे समुद्र के जल में कैसे रहेगी? आम के टिकोरों से लदे वन में विचरण करने वाली कोयल करील के जंगल में कैसे रह सकती है? गुरु और स्वामी की शिक्षा जो नहीं मानता उसे बड़ा नुकसान होता है।

प्रियतम की मधुर वाणी सुनकर सीता के नेत्र छलछला आये। राम का उपदेश जानकी को, चकवी के लिए चांदनी रात की तरह कष्टप्रद लगा। जानकी सोच में पड़ गयीं। उन्हें दुःख था कि प्रियतम उन्हें छोड़ कर जाना चाहते हैं। सीता हृदय में धैर्य धारण कर कौशल्या का चरणस्पर्श कर बोलीं कि मां मुझे क्षमा करो। प्रियतम ने मुझे वन न जाकर यहीं रहने की हितपूर्ण शिक्षा दी। लेकिन मैंने तो सोच लिया है कि पति वियोग-सा कोई दुःख नहीं है। आप के अभाव में स्वर्ग मेरे लिए नरक है। माता, पिता, सास, ससुर, गुरु, पुत्र, जहां तक स्नेह का सम्बन्ध है, सब ठीक है।

लेकिन पति के अभाव में ये सभी रिश्ते स्त्री के लिए सूर्य से अधिक ताप देते हैं। पति के बिना शरीर, धन, राज्य सभी पीड़ादायक हैं।

प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं। मो कहुं सुखद कतहुं कछु नाहीं।।
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी।।

प्रियतम! जैसे जल के बिना नदी और प्राण के बिना शरीर हो वैसे ही पति के बिना स्त्री है। शरद ऋतु के विमल चन्द्रमा की तरह आपके मुख को देखने से मुझे सारे सुख प्राप्त हो जाएंगे। जंगल मेरा घर होगा। पशु-पक्षी मेरे परिवार-जन होंगे। पत्तों की बनी झोंपड़ी मेरी स्वर्गलोक की कुटिया होगी। वन के देवी-देवता सास-सुसर की तरह मेरी रक्षा करेंगे। कुश का बिछौना कामदेव की शैया-सा सुखद होगा। जंगल के फल अमृत से होंगे। पहाड़ अयोध्या के महलों-सा होगा। मैं वन के सभी कष्ट, पीड़ा, भय और संताप को सुख समझूंगी। पर आपके वियोग के अनुताप को मैं कैसे सहन करूंगी। कृपानिधान! मुझे कोई दु:ख नहीं होगा। मुझे आप अपने साथ ले चलिये। और क्या कहूं? आप दया के समुद्र हैं और सबके मन के वासी हैं। क्या आप सोचते हैं कि आपके वन से लौटने तक मैं जीवित रहूंगी?

प्रत्येक क्षण आपके साथ जलती राह पर चलकर भी मुझे थकावट नहीं आयेगी। क्योंकि आपके कमलवत् चरणों का मैं दर्शन करती रहूंगी। मैं सब तरह से आपकी सेवा करूंगी। पसीने से श्रमश्लथ आपके श्यामल शरीर को देखने से मुझे दु:ख के बारे में सोचने का अवकाश कहां रहेगा? चरण धोकर वन में आंचल से हवा करूंगी। मैं समतल भूमि पर पत्ते बिछाकर रात-दिन आपके चरणों की सेवा करूंगी। आपकी छवि बारम्बार देखूंगी। तप्त तीव्र वायु के झकोरे मुझे नहीं सतायेंगे। जहां तक राक्षसों और दुष्टों का प्रश्न है, आप जैसे पुरुष सिंह की पत्नी को खरगोश और सियार जैसे दुष्ट व्यक्ति देखने का साहस कैसे करेंगे? मैं सुकुमारी हूं और आप वन जाने योग्य हैं? मेरा हृदय आप्लावित हो रहा है। मैं आपका वियोग नहीं सह सकूंगी। दु:सह वियोगावस्था में जानकी को दु:खी देखकर राम सोचने लगे कि यदि उसे छोड़ दिया तो दु:ख में प्राण त्याग देगी। राम ने कहा कि सोच छोड़ो, मेरे साथ वन चलने की तैयारी करो।

पुन: राम ने मां का चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद पाया। कौशल्या ने कहा कि राम, शीघ्र लौटकर प्रजा को नव जीवन देना। मुझ निष्ठुर मां को वन में भूल मत जाना। क्या फिर मेरे वे दिन लौटेंगे जब तुम दोनों की मनमोहक जोड़ी अपनी आंखों से देखूंगी? वह शुभ दिवस और क्षण न जाने कब आयेगा जब पुन: तुम्हारा चन्द्रमुख देख पाऊंगी? पता नहीं तुम्हें फिर कब मैं रघुवर! लाल!! वत्स!!! पुत्र!!!! कह कर बुलाऊंगी? स्नेह परिपूर्ण कौशल्या इतनी व्याकुल हो गयीं कि वहां उपस्थित सभी लोग मौन हो गये। राम ने उन्हें समझाया। जानकी ने सास का चरणस्पर्श करते हुए कहा कि सेवा के समय मुझे वन जाना पड़ रहा है। मेरी इच्छा पूरी नहीं हो पायी। आप व्याकुल न हों। कर्म की कठोर गति अकारण आ पड़ी है। इसमें मेरा कोई दोष नहीं। कौशल्या द्रवित हो गयीं। जानकी को सीने से लगाकर उन्होंने आशीर्वाद दिया कि गंगा-जमुना में जब तक लहरें प्रवाहित हों तब तक तुम्हारा सुहाग अचल, अमिट रहे। सीता ने कौशल्या की चरण-वंदना की और आशीर्वाद प्राप्त किया।

लक्ष्मण को जब यह सब ज्ञात हुआ तो उदास, घबड़ाये हुए, कंपित शरीर और नेत्रों में जल भर उन्होंने कसकर राम के चरण पकड़ लिये। जल से बाहर निकाली गई मछली की तरह लक्ष्मण राम को देखने लगे। वे सोच रहे थे कि क्या हमारे सारे सुख और पुण्य क्षय हो गये? राम ने देखा कि शरीर और मन सबसे नाता तोड़कर लक्ष्मण हाथ जोड़ खड़े हैं। शील, सरलता और आनंद के सागर राम ने अत्यंत स्नेहमयी वाणी में कहा कि परिणाम में होने वाले आनन्द को सोचकर अभी प्रेम-वश विचलित न होओ। तुम कातर क्यों हो? जो लोग माता-पिता, गुरु और स्वामी की शिक्षा का पालन करते हैं उन्हीं का जन्म सफल है। तुम यहीं सबकी सेवा करो। भरत हैं नहीं। मेरे अभाव में सभी दु:खी हैं। तुम यहीं रह कर सब को सुख दो। जिस राजा के राज्य में प्रजा दु:खी होती है वह राजा नरकगामी होता है। राम की बातें सुनकर लक्ष्मण व्याकुल हो उठे। कमल पर जैसे तुषार पड़ गया। लक्ष्मण प्रेम से भरे उत्तर न दे सके। लक्ष्मण ने राम के चरण पकड़ कर कहा कि मैं सेवक हूं, आप स्वामी हैं। आपने मुझे बहुत अच्छा उपदेश दिया। परन्तु मैं कायर हूं। आपका उपदेश-पालन मुझे कठिन प्रतीत हो रहा है। जो श्रेष्ठ पुरुष धर्म को धारण कर सकें वही शास्त्र और नीति का पालन करते हैं। मैं तो आपके स्नेह में पला शिशु हूं। मैं सत्य कहता हूं। विश्वास कीजिए, मैं माता-पिता, गुरु किसी को नहीं



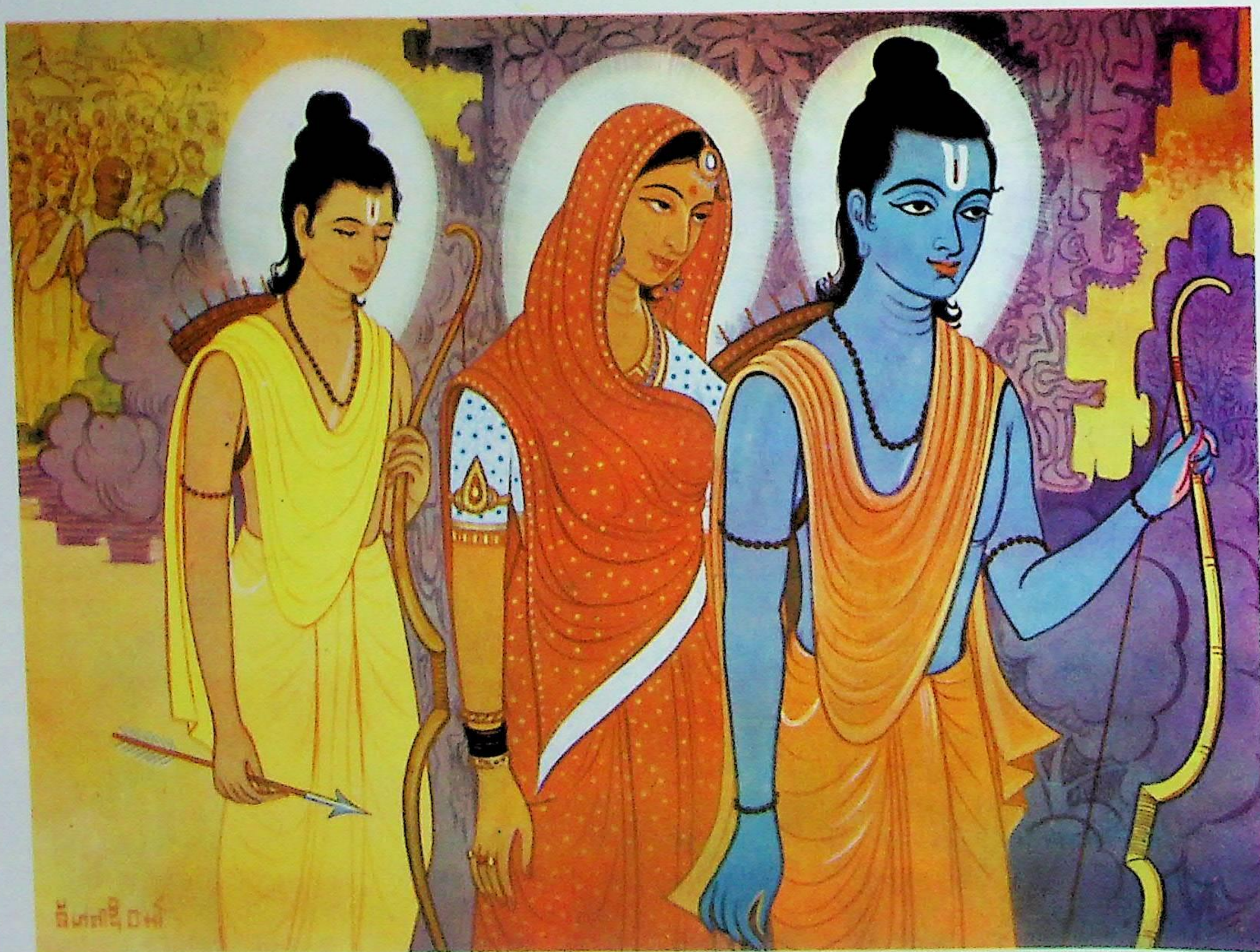
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू। काह करिअ कछु सूझ न काहू।।
राम[illegible] सिरु नाई।।

जानता। जहां तक इस संसार में अपने सगे, स्नेही, प्रेमी और विश्वासी का प्रश्न है मेरे सब कुछ आप हैं। धर्म, ज्ञान और नीति का उपदेश उन्हें देना चाहिए जिन्हें कीर्ति, ऐश्वर्य और सद्गति का मोह हो। लेकिन जो मनसा, वाचा, कर्मणा आपके चरणों का सेवक हो, क्या उसे त्यागना उचित है?

राम ने कहा, अच्छा जाओ! माता से आज्ञा लो और वन चलो। राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण का पछतावा दूर हो गया, जैसे अंधे को आंख मिल गयी हो। वे हर्षित मन माता सुमित्रा के पास गये। लक्ष्मण ने माता का चरण-स्पर्श किया परन्तु उनका मन राम-सीता के पास था। उचटे हुए चित्त से माता ने लक्ष्मण को देखा। लक्ष्मण ने सब कुछ कह सुनाया। यह सब सुन कर सुमित्रा ऐसी सहम गईं जैसे चारों ओर आग लगी देख हिरनी सहम गई हो। लक्ष्मण चिंतित हो सोचने लगे कि पता नहीं मां स्नेहवश वन जाने की आज्ञा देंगी या नहीं। राम-सीता के स्वाभाविक सौंदर्य और व्यवहार तथा राम के प्रति दशरथ के प्यार के बारे में सोचकर सुमित्रा ने माथा पीट लिया। सोचने लगीं कि पापिन कैकेयी ने यह कैसा धोखा दिया? प्रतिकूल अवसर देख कर सुमित्रा ने मन को बांध कर पुत्र से कहा कि सीता तुम्हारी मां और राम पिता हैं। वे हर प्रकार से तुम्हें स्नेह करते हैं। जहां सूर्य उदित हो, वहीं दिन है। जहां राम का निवास हो वहीं अयोध्या है। गुरु, माता-पिता सबकी प्राण से बढ़कर सेवा करनी चाहिए। राम स्वार्थ रहित हैं। राम तो प्राणप्रिय, हृदय के भी जीवन हैं। जितने भी प्रिय और पूजनीय रिश्ते हैं, वे राम से ही हैं। सोच छोड़कर तुम वन जाओ। अपने जन्म लेने का लाभ उठाओ। सुमित्रा लक्ष्मण से कहने लगीं कि जिस पुत्र का राम-चरणों के प्रति अगाध अपनत्व है, उसी की माता सौभाग्यवती है। बांझ होना और प्रभुभक्ति से हीन पशु-पुत्र उत्पन्न करना व्यर्थ है। तुम्हारा भाग्य उदय हुआ है। राम वन जा रहे हैं। स्वप्न में भी द्वेष, क्रोध, ईर्ष्या, मद और मोह के वशीभूत मत होना। सभी विकारो को छोड़ कर मन, वचन, कर्म से राम-सीता की सेवा करना। वन सब प्रकार से सुख देने वाला होगा। तुम्हारे साथ माता-पिता स्वरूप राम-सीता हैं। राम को वन में किसी प्रकार भी कष्ट न होने देना। मेरी यही शिक्षा है। सुमित्रा ने हर्षित मन से लक्ष्मण को आशीर्वाद दिया। लक्ष्मण माता के चरणों का स्पर्श कर, फंदा तुड़ा कर भागे निश्शंक हिरण की तरह राम के पास पहुंच कर आनंदित हो उठे।

पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगतु जासु सुत होई।।
नतरु बांझ भलि बादि बिआनी। राम बिमुख सुत तें हित जानी।।
तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं।।
रागु रोषु इरिषा मदु मोहू। जनि सपनेहुं इन्ह के बस होहू।।
सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई।।
तुम्ह कहुं बन सब भांति सुपासू। संग पितु मातु राम सिय जासू।।
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू। सुत सोई करेहु इहइ उपदेसू।।

नगर भर में चर्चा थी कि ईश्वर ने क्या कर दिया? लोगों का शरीर शिथिल था। मन में वेदना का ज्वार था। मधुमक्खियों से जैसे शहद छीन लिया गया हो, ऐसी स्थिति सबकी हो गयी थी। सभी बुरी तरह बेसुध थे। 'राम आये हैं' कह कर सुमंत ने दशरथ को उठा कर बैठाया। सीता, लक्ष्मण, राम को देख कर दशरथ व्याकुल हो उठे। वियोग की वेला में बार-बार उन्हें हृदय से लगाने लगे। दशरथ भावाभिभूत हो कुछ बोल नहीं पा रहे थे। शोक के कारण हृदय बैठ रहा था। वाणी मौन हो गयी थी। पिता के चरणों में शीश नवा कर राम ने वन जाने के लिए विदा मांगते हुए कहा कि मुझे आशीर्वाद दीजिए। हर्ष के समय शोक कैसा? आप पुत्र के मोह के कारण यश, कीर्ति मत गंवाइये। यह शब्द सुन कर दशरथ स्नेह से भर उठे और कहने लगे, हे राम! मुनि तुम्हें सारी सृष्टि का स्वामी कहते हैं। शुभ-अशुभ कर्मो का यथायोग्य परिणाम भुगतान ही पड़ता है। जैसा कर्म किया जाता है, वैसा ही फल मिलता है। लेकिन ऐसा क्यों होता है कि अपराध कोई करता है, सजा कोई और काटता है? आपकी विचित्र लीला जानी नहीं जाती। दशरथ ने अनेक उपाय किये कि किसी तरह राम मान जायें, परन्तु उन्होंने देख लिया कि धैर्यवान विवेकी राम किसी तरह नहीं रुकेंगे। उन्होंने सीता को हृदय से लगाया। वन के भीषण कष्ट की चर्चा कर सीता को सास-ससुर के पास रहने को कहा। परन्तु राम के प्रति अनुरागिनी सीता के लिए न अयोध्या सुखदायी, न वन दुःखमय। सुमंत की पत्नी तथा गुरुपत्नी ने उन्हें समझाया कि अपने सास-ससुर, गुरु की आज्ञा का पालन करो! वन मत जाओ। सीता को यह शीतल, हितकारी शिक्षा वैसे ही अच्छी नहीं लगी जैसे चकवी को शरद ऋतु की चांदनी नहीं भाती।



राम बियोग बिकल सब ठाढ़े। जहं तहं मनहुं चित्र लिखि काढ़े।।
नगर सफल बनु गहबर भारी। खग मृग बिपुल सकल नर नारी।।

लोग बिकल मुरुछित नरनाहू। काह करिअ कछु सूझ न काहू।।
रामु तुरत मुनि बेषु बनाई। चले जनक जननिहि सिरु नाई।।

कैकेयी तमतमाती हुई आयी। उसके हाथों में मुनियों के शरीर पर धारण करने वाले वस्त्र, माला, मेखला तथा कमण्डल था। कैकेयी ने राम से कोमल शब्दों में कहा कि दशरथ के लिए तुम प्राण से बढ़कर हो। इसलिए तुमसे वे अलग नहीं होंगे। उनकी कीर्ति, मोक्ष भले ही नष्ट हो जाये पर वे तुम्हें वन जाने के लिए कभी नहीं कहेंगे। कैकेयी के वचन दशरथ को बाण के समान लगे। कहने लगे कि इतना होने पर भी अभागे प्राण नहीं जाते। सभी घबड़ा उठे। ऐसी विषम परिस्थितियों में क्या करना चाहिए? किसी को कुछ नहीं सुझाई पड़ रहा था। तुरंत मुनि का वेश धारण कर माता-पिता को सिर नवाकर पत्नी सीता, अनुज लक्ष्मण के साथ ब्रह्मणों और गुरु को प्रणाम कर सभी लोगों को चेतनाहीन कर वन चल पड़े। उन्होंने गुरु वशिष्ठ से विदा लेते हुए कहा कि मेरा सब प्रकार से तभी कल्याण होगा जब पिता सुखी हों। वही उपाय कीजिये जिससे अयोध्यावासी और माताएं दुःखी न हों। राम ने हर्षित होकर गुरु-वंदना की और गणेश, पार्वती की पूजा कर चल पड़े। पुरवासी आर्तनाद करने लगे। अयोध्या में शोक छा गया।

दशरथ की मूर्च्छा दूर हुई। चेतना लौट आयी। दशरथ ने सुमंत से कहा कि राम वन गये पर मेरे प्राण नहीं जा रहे हैं। न जाने कौन सुख और आनंद देखने के लिए प्राण रुके हैं। अब किस बात की देरी? न जाने प्राण शरीर क्यों नहीं त्याग रहा है? दशरथ ने धैर्यपूर्वक कहा कि सुमंत, तुम रथ लेकर राम के साथ जाओ। सुंदर सुकुमार और पुष्प से भी अधिक कोमल सीता को रथ पर चढ़ा, वन का दर्शन करा, दो-चार दिन में वापस लौट आना। अडिग, सत्यवादी, धैर्यशील राम-लक्ष्मण यदि न लौटें तो उनसे हाथ जोड़ कर कहना कि जानकी को अयोध्या लौटा दो। जब जानकी जंगल के भीषण त्रास से पीड़ित हों तो, अवसर पाकर उनसे कहना कि तुम्हारे सास-ससुर ने मुझ से कहा है कि वन में बहुत कष्ट है। तुम कभी नैहर जनकपुरी और कभी ससुराल अयोध्या में, जहां इच्छा हो, रहना। यदि सीता लौट आईं तो भी मेरे प्राण बच सकते हैं। अन्यथा मेरी मृत्यु होगी। ईश्वर ही मुझसे रूठा हुआ है। मुझे राम-लक्ष्मण और जानकी को लाकर तुरंत दिखाओ। इस प्रकार विलाप करते हुए राजा बेहोश हो गये।

राम बियोग बिकल सब ठाढ़े। जहं तहं मनहुं चित्र लिखि काढ़े।।
नगरु सफल बनु गहबर भारी। खग मृग बिपुल सकल नर नारी।।

सुमंत जल्दी से रथ तैयार कर अयोध्या के बाहर आए। राम-लक्ष्मण और सीता अयोध्या से बाहर जा चुके थे। सुमंत ने दशरथ की आज्ञा का पालन कर उन्हें रथ पर चढ़ाया। अयोध्या को मस्तक नवा कर सुमंत चल पड़े। अयोध्या को अनाथ कर वन जाते हुए राम के साथ सभी लोग हो लिये। सभी को राम सांत्वना देने लगे। फिर भी लोग लौटकर फिर-फिर पीछे-पीछे चले आते और दौड़कर जल्दी से राम के पास पहुंच जाते। चारों तरफ अंधकारपूर्ण रात्रि फैलने लगी और अयोध्या का सारा समाज हिंसक जन्तु की तरह परस्पर एक-दूसरे को देखकर भयभीत होने लगा। सारे घर श्मशान बन गये थे। कुटुम्ब के लोग भूत-प्रेत लग रहे थे। पुत्र और हितैषी मित्र भी यमराज के दूत प्रतीत हो रहे थे। उपवन कुम्हला गये। नदी और तालाब का जल सूख गया। अगणित हाथी, घोड़े, क्रीड़ा करने वाले मृग, नगर के सभी पशु, पपीहा, मोर, चकवा, कोयल, तोता, मैना, सारस, हंस इत्यादि राम के वियोग में निर्जीव चित्र की तरह जीवित थे। अयोध्या रूपी वन के समस्त जीव-पशु, पक्षी व्याकुल हो उठे। कैकेयी अयोध्या रूपी वन की ऐसी किरातिनी सिद्ध हुई जिसने दसों दिशाओं में आग लगा दी। राम-विरह के अग्नि-ताप को कोई भी न सह सका। सभी जलने लगे। सबने मन ही मन सोचा कि राम, लक्ष्मण और जानकी के बिना जीवन में कोई सुख नहीं है। राम के अभाव में अयोध्या में रहने का कोई तुक नहीं है। इस प्रबल इच्छा के वशीभूत लोग अयोध्या की समस्त सुख-सुविधा को तिलांजलि देकर राम के रथ के पीछे-पीछे चल पड़े। सबको राम के चरणकमल प्रिय थे। जिन्हें राम के चरणों में प्रेम हो, उन्हें विषय-भोग कैसे वश में कर सकते हैं! बाल, वृद्ध सभी राम के पीछे हो लिये।

राम ने पहली रात्रि तमसा नदी के किनारे बिताई। अयोध्या के जन समाज के प्रेम को देख कर राम दयार्द्र हो उठे। जनसमूह की पीड़ा से वे करुण हो उठे। उन्होंने अत्यंत मधुर, धर्मोपदेश तथा नीतिपूर्ण बातें कह कर सबको समझाया पर प्रेम से छके लोग कैसे लौटते? लोगों का शील-स्नेह राम को असमंजस में फंसाये हुए

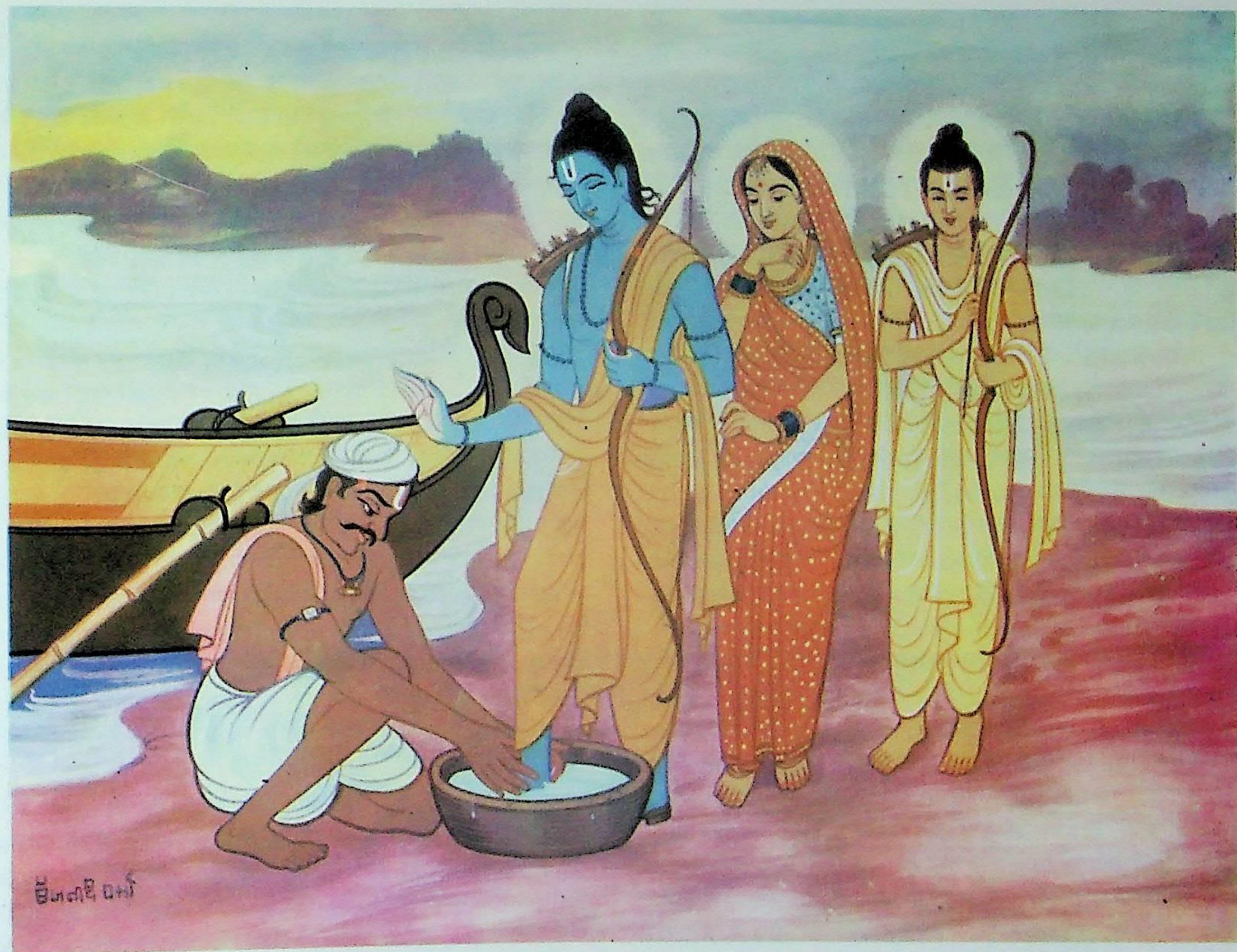
था। दु:खी और थके लोग सो गये। जब रात्रि के दो पहर बीत गये तब राम ने सुमंत से कहा, जिससे रथ के पहियों के चिन्ह का पता न लग सके, वैसे ही रथ हांकिये, अन्यथा बात बनेगी नहीं। शंकर का स्मरण कर राम-लक्ष्मण और जानकी रथ पर आरूढ़ हुए। रथ के पहियों के चिन्ह का कोई पता न पा सके, ऐसी सावधानी से सुमंत ने रथ हांका।

भोर होने पर लोग जगे। कोलाहल मच गया। रथ चला गया! राम चले गये!! रथ के पहियों के चिन्ह तक न थे! जैसे मूल्यवान वस्तुओं से लदा जहाज समुद्र में डूब जाने से वणिक समाज व्याकुल हो जाता है, वैसे ही लोग विकल हो गये। वे सोच रहे थे कि वन में कोई क्लेश न हो इसलिए राम ने हमें छोड़ दिया। हमसे अच्छी तो मछलियां हैं जो बिना जल के जीवित नहीं रहतीं। ईश्वर ने हमें राम का वियोग दिया तो उसे हमारे प्राण भी ले लेने चाहिए थे। चौदह वर्ष का असह्य दु:ख! किस तरह लोगों के प्राण बचें! राम के दर्शन के लिए लोग व्रत करने लगे। चकवा-चकई सूर्य दर्शन के लिए जैसे तरसते हैं वही स्थिति अयोध्यावासियों की हो गयी। राम समेत सभी को लेकर सुमंत श्रृंगवेरपुर आ पहुंचे। गंगा नदी को देख राम ने रथ से उतरकर हर्ष के साथ प्रणाम किया। गंगा आनंद और कल्याण-मूला हैं। वह सभी दु:खों का नष्ट करने वाली हैं। गंगा की महिमा से संबंधित अनंत पौराणिक कथाओं का बखान करते राम गंगा की तरंगों को निरखने लगे। गंगा के स्नान से मार्ग का समस्त श्रम दूर हो गया। गंगा का जल पीकर सभी लोग आनंद-विह्वल हो उठे।

जब निषादराज को राम के आगमन का समाचार मिला तो उसने प्रसन्न होकर अपने बंधु तथा प्रियजनों को बुला लिया। सभी लोग जंगली फल-फूल बहंगियों में लादकर राम से मिलने चले। निषाद राम के पास आया। राम ने उसे अपने समीप बैठाकर कुशल-क्षेम पूछा। गुह बोला कि आपके चरणकमल देख कर ही कुशल है। मैं बड़भागी हो गया। मेरा सारा परिवार आपका सेवक है। आप मुझ पर कृपा कर श्रृंगवेरपुर में चरण रखिये ताकि मेरी प्रतिष्ठा और सम्मान बढ़े। राम ने कहा कि तुम ठीक कहते हो। पर पिता ने मुझे चौदह वर्षों तक मुनियो का व्रत और तापस वेश धारण कर वन में रहने की आज्ञा दी है। मेरा गांव में रहना अनुचित है। गांव के लोग परस्पर चर्चा करने लगे कि मां-बाप कैसे निर्दयी हैं जिन्होंने ऐसे बालकों को जंगल भेज दिया? कोई कहता, दशरथ ने अच्छा किया कि इसी बहाने हमें इनके दर्शन हुए। निषादराज ने मनोहारी, सुहावने शीशम के पेड़ के नीचे राम को टिका दिया। उसने संवरी कुशा और कोमल पत्तों का बिछौना बिछाया। उनके समक्ष दोनों में मीठे और स्वादिष्ट फल भर-भर कर रखे। राम ने सभी के साथ कंद, मूल, फल का आहार ग्रहण किया। लक्ष्मण उनके पांव दबाने लगे।

राम को सोया हुआ समझ कर लक्ष्मण उठे और सुमंत से भी सोने की प्रार्थना कर बीरासन में धनुष-बाण धारण किये पहरा देने लगे। निषादराज ने अपने विश्वासी पहरेदारों को जगह-जगह नियुक्त कर दिया। तरकस बांध धनुष पर बाण चढ़ा कर वह लक्ष्मण के पास बैठ गया। राम को सोता हुआ देखकर निषादराज प्रेमविह्वल तथा दु:खी हो उठा। वह लक्ष्मण से बोला कि दशरथ का राजभवन इन्द्र के राजदरबार से बढ़कर है। वहां मणियों से पटी हुई छत पर कामदेव के हाथों द्वारा बनाये हुए हर प्रकार के विचित्र उपवन और सुगंधित भोज्य पदार्थ से परिपूर्ण सुंदर भवन हैं। वहां मणियों के दीपाधार में दीपक जलते हैं। सुंदर पलंग पर दूध के फेन के समान अत्यंत निर्मल और कोमल बिछावन हैं। राम और जानकी वहीं सोते थे और अपनी शोभा के आगे रति और कामदेव का भी गर्व हरते थे। वही राम आज घास के पत्तों के बिछौने पर निर्वसन सोये हैं। आंखों से नहीं देखा जाता। सभी लोग प्राणों से बढ़कर जिनकी रक्षा किया करते थे वही राम और जानकी आज धरती पर पड़े हैं। विधाता को यही स्वीकार है। कर्म ही प्रधान है। राम और जानकी क्या वन के योग्य हैं? कैकेयी सूर्यवंश के वटवृक्ष को कुल्हाड़ी से काटने वाली राक्षसी है। उसकी बुद्धिहीनता ने सारे संसार को दु:खी कर दिया। निषाद दु:ख से विह्वल हो गया।

लक्ष्मण ने ईश्वर की लीला का रहस्य समझाकर निषादराज का मोह-भंग कर दिया। सवेरा हो गया। राम जागे। नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर लक्ष्मण सहित उन्होंने बरगद के दूध से अपनी केशराशि की जटा बनायी। सुमंत की आंखें छलछला आयीं। मुख सूख गया। उन्होंने हाथ जोड़ कर राम से कहा कि दशरथ ने रथ लेकर आप के साथ जाने के लिए कहा था और उनकी आज्ञा थी कि राम, सीता और लक्ष्मण को वन दिखाकर और गंगा स्नान कराकर मैं अयोध्या लौटा लाऊं।



केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा।।
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा।।

आपकी क्या आज्ञा है? सुमंत अबोध शिशु की तरह बिलख पड़े और कहने लगे कि राम! अयोध्या के स्वामी दशरथ को जिसमें दुःख न हो, वही उपाय कीजिये।

राम ने कहा, शिवि, दधीचि और हरिश्चन्द्र आदि ने धर्म-रक्षा के लिए न जाने कितने कष्ट सहे। वेद, शास्त्र और पुराण सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं मानते। उस सत्य को जिस सरलता से मैंने पाया है उसे ही त्याग दूं तो सारे संसार में मेरी अपकीर्ति फैलेगी। अपकीर्ति करोड़ों मृत्यु से बढ़कर प्रतिष्ठित व्यक्ति को संताप देती है। पिता से मेरा प्रणाम कहियेगा और प्रार्थना कीजियेगा कि मेरी चिंता तनिक भी न करें। हमारी तरफ से आप ऐसा उपाय कीजिये कि उन्हें तनिक भी सोच एवं दुःख न पैदा हो। राम-सुमंत के वेदनापूर्ण संवाद सुनकर निषादराज और उसके हमजोली दुःखी हो गये। लक्ष्मण ने कुछ कड़े शब्द कहे परन्तु राम ने उन्हें मना कर दिया। राम ने सुमंत से कहा कि लक्ष्मण की कटु बातें पिता से मत कहियेगा। सुमंत ने सीता को लौटा लाने की दशरथ की आर्त-प्रार्थना राम को बतायी। राम ने पिता का संदेश कई बार समझाकर सीता से कहा कि यदि तुम अयोध्या लौट जाओ तो सबकी चिन्ता दूर हो जायेगी।

सीता ने राम से परम स्नेह से कहा कि प्रियतम! शरीर को छोड़कर उसकी छाया कहां जा सकती है? चन्द्रमा को छोड़ कौमुदी कहां जायेगी? फिर जानकी सुमंत से बोलीं कि आप ससुर की तरह हैं। मेरा उत्तर देना अनुचित है। मुझे समझिये। अपने से अलग न मानिये।

पति से अलग जितने भी सम्बन्ध हैं, सब निरर्थक हैं। मैं उस ऐश्वर्यशाली जनक की कन्या हूं जिसकी चरण रखने की चौकी बड़े-बड़े सामन्तों के मुकुटों की मणियों से बनी है। मेरे पिता के घर ईश्वर का दिया सब कुछ है पर स्वामी बिना सब बेकार है। मेरे श्वसुर चक्रवर्ती सम्राट हैं। इन्द्र से बढ़कर उनका सम्मान है। अयोध्या मेरी ससुराल है। परन्तु रामचरण-रज बिना वहां स्वप्न में भी सुख नहीं मिलेगा। वन में दुर्गम रास्ते, झाड़-झंखाड़, कठोर भूमि, हिंसक जीव, वेगवती नदियां, कोल-किरात सभी राम के साथ मुझे सुख देंगे, इसलिए आप जाकर मेरे सास-ससुर से कहिएगा कि हम हर प्रकार से सुखी हैं। मेरी तनिक भी चिन्ता न करें। वीरों में अग्रणी, धनुर्धारी प्रियतम राम और देवर लक्ष्मण मेरे साथ हैं। मुझे न कोई भ्रम है, न दुःख, न थकावट। मेरे लिए भूलकर भी चिता न करें।

सीता की यह शीतल वाणी सुनकर सुमंत की स्थिति मणि खो बैठे सर्प-सी हो गयी। उनकी वाणी मौन हो गयी। वे अकुला कर रो उठे। राम ने सुमंत को प्रबोध दिया कि आप शांत रहिये। पर शांति न मिली। उनका चित्त न जाने किन-किन भयानक आकृतियों और भ्रमों की कल्पना करने लगा। अनेक यत्न करने पर भी सब निरर्थक हो गया! कर्म की गति टालना कठिन है। सुमंत राम, सीता-लक्ष्मण के चरणों में मस्तक झुकाकर सारी पूंजी हारे हुए व्यवसायी की तरह लौट पड़े।

सुमंत को लौटाकर राम गंगा के किनारे आ गए। केवट से नाव लाने को कहा पर केवट तट पर नाव न लाकर बोला कि मैं आपका भेद समझ गया हूं। आपकी चरणकमल की धूलि निर्जीव वस्तुओं को मनुष्य बना देने वाली जड़ी है। यदि मेरी नौका भी गौतम की पत्नी अहल्या जैसी बन जाएगी तो मैं लुट जाऊंगा। इसी काठ की नाव के सहारे मैं परिवार का भरण-पोषण करता हूं। मेरा और कोई दूसरा रोजगार नहीं है। मैं इधर-उधर की बहस नहीं करता। प्रभु! यदि आप पार जाना ही चाहते हैं तो मुझे अपने कमलवत् चरणों को धोने की आज्ञा प्रदान कीजिये। मैं आपके कमलवत् चरणों को धोकर नाव पर चढ़ा कर पार उतारने का किसी प्रकार का पारिश्रमिक भी नहीं चाहता। मैं आपकी और दशरथ की सौगंध खाकर कहता हूं कि भले ही क्रोध में लक्ष्मण मुझे बाण से बींध दें लेकिन, नाथ! जब तक मैं आपके चरण नहीं धो लूंगा तब तक पार नहीं उतारूंगा। केवट की प्रेमभरी अटपटी बातें सुनकर करुणानिधान राम लक्ष्मण तथा जानकी की ओर देख हंसने लगे।

केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भर लेइ आवा।।
अति आनंद उमगि अनुरागा।. चरन सरोज पखारन लागा।

राम ने प्रसन्नचित्त होकर कहा कि तुम वही करो जिससे तुम्हारी नाव नष्ट न हो जाए। शीघ्र ही जल लाकर पांव धोकर हमें पार उतारो। देर हो रही है। जिस राम के नाम का स्मरण करने से मनुष्य इस भवसागर से पार उतर जाता है और जिस राम ने वामन भगवान के रूप में तीन पग से कम में ही सारी धरती नाप ली, वही राम गंगा पार उतरने के लिए केवट से प्रार्थना कर रहे थे। गंगाजी की बुद्धि भी राम के इस सामान्य व्यक्ति के-से संवादों से भ्रमित हो गयी, लेकिन राम के चरण-नख देखकर

उनका मोह टूट गया और वह हर्षित होकर चरणों के स्पर्श की इच्छा से हिलोरें लेने लगीं। राम की आज्ञानुसार केवट कठौती में पानी भर लाया और अत्यंत आनंद, श्रद्धा और उमंग भरे प्रेम से भरकर राम के चरणों को धोने लगा। फूल बरसाते देवगणों के लिए भी केवट का पुण्य ईर्ष्या की वस्तु बन गया। पद पखारकर, चरणामृत पीने का सौभाग्य पाने के महान् पुण्य के द्वारा पूर्वजों तथा परिवार की मोक्ष नियत करने के बाद केवट अत्यंत हर्षित चित्त से राम को गंगा के पार ले गया।

सीता, लक्ष्मण और निषादराज सहित राम नौका से उतरकर गंगा के पार रेतीले तट पर खड़े थे। मांझी ने प्रणाम किया। राम संकुचित हो उठे कि मैंने इसे पारिश्रमिक नहीं दिया। अपने प्रियतम राम की मनोभावना को तत्क्षण लखने वाली सीता ने अपनी रत्नजटित अंगूठी उतारी। राम ने पारिश्रमिक रूप में उसे मुद्रिका देना चाहा। उसने व्याकुल हो चरण पकड़ लिये। केवट ने कहा कि मैं सब कुछ पा गया। मेरी दरिद्रता, अवगुण और दुःख सब विलीन हो गए। मैंने बहुत दिनों तक मजदूरी की लेकिन आज ही ईश्वर ने सच्चा पारिश्रमिक दिया है। स्वामी! आपकी दया से अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। लौटते समय जो कुछ दीजिएगा, प्रसाद समझ कर उसे मस्तक पर धारण करूंगा। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी निषाद ने कुछ न लिया। तब राम ने उसे निर्मल भक्ति का वरदान प्रदान किया।

राम ने शंकर का पार्थिव पूजन किया। सीता ने हाथ जोड़कर गंगा से प्रार्थना की कि मां! मेरी मनोकामनाएं पूरी करो। मैं सकुशल लौटकर पुनः आपकी अभ्यर्थना करुंगी। सीता की प्रेमभरी वाणी सुनकर गंगा के निर्मल जल से श्रेष्ठ वाणी हुई। गंगा ने कहा कि जानकी! तुम्हारा प्रभाव सर्वविदित है। वैदेही, तुम्हारी कृपा दृष्टि मात्र से लोग चक्रवर्ती सम्राट हो जाते हैं। सारी ऋद्धि-सिद्धियां तुम्हारी दासी हैं। मेरी प्रार्थिनी बनकर तुमने मुझे बड़प्पन दिया है। मैं आशीर्वाद देती हूं कि अपने प्रियतम और देवर के साथ कार्य परिपूर्ण कर सकुशल अयोध्या लौटो। गंगा का मंगलमय आशीर्वाद सुनकर सीता प्रसन्न हुईं।

राम ने निषादराज से कहा कि अब तुम अपने घर लौट जाओ। उसका मुंह सूख गया। वह बड़ा गिड़गिड़ाया और प्रार्थना करने लगा कि आपके साथ दो-चार दिन रहकर रास्ता दिखाकर लौट जाऊंगा। आप लोग जिस वन में रहेंगे वहां सुन्दर कुटी बनाऊंगा। प्रेमी निषादराज को लेकर राम चल पड़े। उसने अपना सारा साज-समाज विदा कर दिया। गणेश तथा शंकर का स्मरण करते गंगा को सिर नवा राम वनमार्ग पर चल पड़े। जंगल में एक पेड़ के नीचे राम जानकी सोये। लक्ष्मण और निषादराज पहरेदार का कार्य करते रहे।

प्रातः काल राम दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर तीर्थराज प्रयाग पहुंचे। सब तीर्थों के राजा प्रयाग का मंत्री सत्य है। श्रद्धा पत्नी है। श्रीवेणीमाधव हितैषी मित्र हैं। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों पदार्थों से राजभंडार परिपूर्ण है। यह क्षेत्र अत्यंत पुण्यमय है। यहां की धरती सुंदर है। प्रयाग का क्षेत्र दुर्गम तथा गढ़ सुदृढ़-सुंदर है। स्वप्न में भी आक्रमणकारी उसको नष्ट नहीं कर सकते। सम्पूर्ण तीर्थ इसकी वीर सेना के समान हैं जो पाप की सेना को नष्ट करती है। गंगा, यमुना, सरस्वती की पुण्य त्रिवेणी तीर्थराज का राजसिंहासन है। अक्षयवट उसका छत्र है। गंगा और यमुना की निर्मल तरंगें श्वेत और श्याम हैं जिनको देखकर सारी पीड़ा और अभाव समाप्त हो जाते हैं। पुण्यवान योगी मुनि तीर्थराज प्रयाग की सेवा करते हुए अपना मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं। वेद आदि ग्रंथों ने भी तीर्थराज प्रयाग की कीर्ति और यश की अमिट महिमा का गान किया है। पापों के पुंज रूपी हाथी को प्रयागरूपी सिंह नष्ट कर देता है।

इस मनमोहक तीर्थस्थल को देख राम अत्यंत आनंदित हो उठे। राम सीता, लक्ष्मण और निषादराज से तीर्थराज प्रयाग की महिमा का बखान करने लगे। प्रयाग के सुंदर उपवन को देखकर राम आनंदविभोर हो उठे। उन्होंने त्रिवेणी का दर्शन कर अपना कल्याण किया। त्रिवेणी में स्नान करने के बाद राम ने शंकरऔर अन्य देवताओं की शास्त्रवर्णित रीति से पूजा की।

तब प्रभु भरद्वाज पहि आए। करत दंडवत मुनि उर लाए।।
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई। ब्रह्मानंद रासि जनु पाई।।

राम भरद्वाज मुनि के पास सीता लक्ष्मण तथा निषादराज सहित आये। उन्होंने भरद्वाज को प्रणाम किया। मुनि ने उन्हें अपने हृदय से लिपटा लिया। भरद्वाज की प्रसन्नता का पारावार नहीं था। उन्हें आनंद का खजाना मिल गया। राम को



तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दंडवत मुनि उर लाए।।
मु[illegible]नु पाई।।

आशीर्वाद दे मन ही मन भरद्वाज सोचने लगे कि ईश्वर ने आज जीवन भर के पुण्यों का मूर्तिमान फल दे दिया। भरद्वाज मुनि ने राम को सुंदर आसन दिया और विधिवत उनका स्वागत-सम्मान किया। उन्होंने अमृत के समान स्वादिष्ट फल-फूल का भोजन कराया। आश्रम में मार्गश्रम से मुक्ति प्राप्त कर राम, लक्ष्मण और जानकी सुख का अनुभव करने लगे।

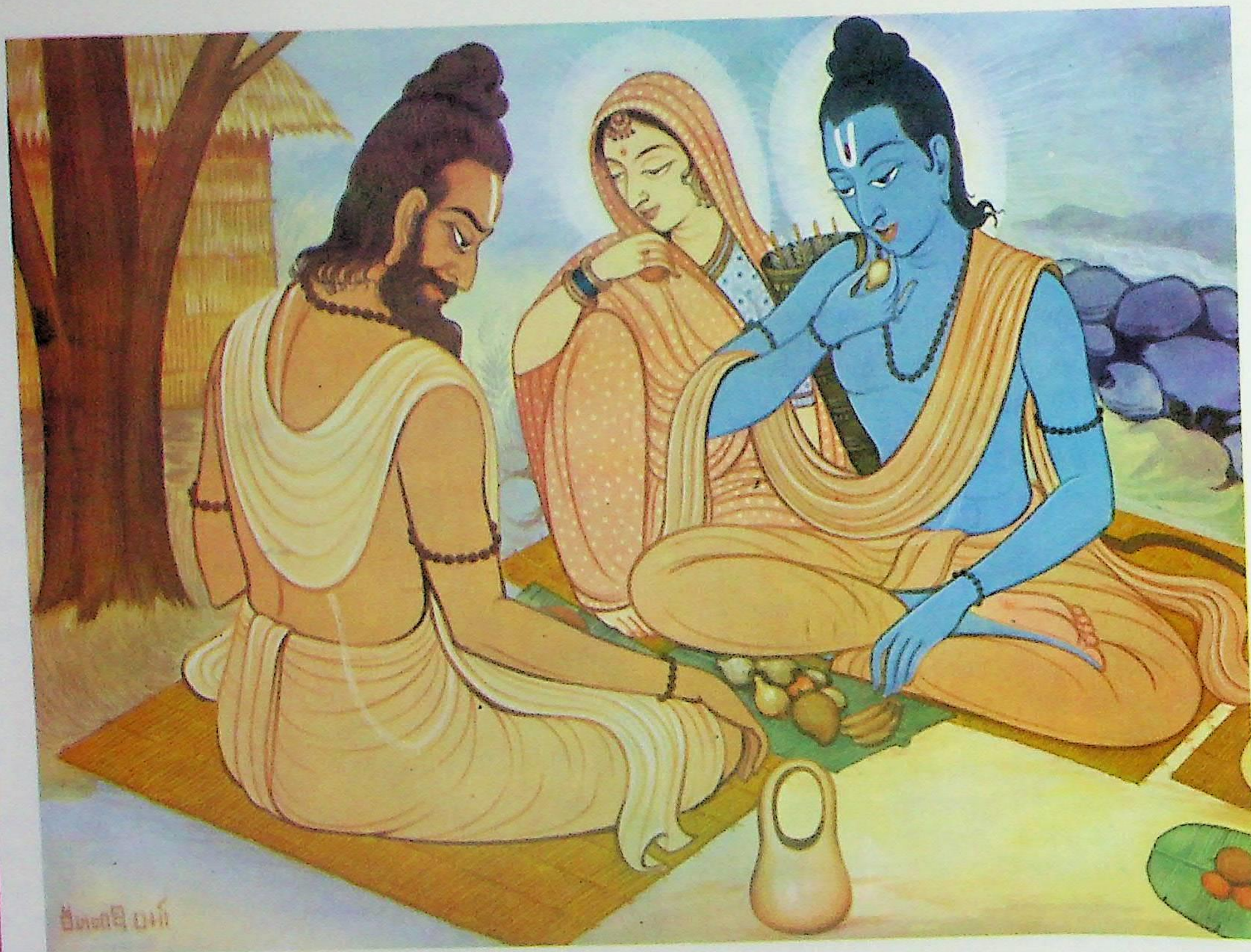
भरद्वाज ने अत्यंत कोमल वाणी में कहा कि राम! आज आपके दर्शन प्राप्त कर मेरे समस्त तप, तपस्या, तीर्थ-व्रत सफल हो गये। मुझे जन्म-जन्मान्तर के लिए जप, योग और वैराग्य का पूर्ण लाभ मिल गया। आपके दर्शन से बढ़कर संसार में दूसरा कोई सुख नहीं। मेरी आकांक्षाओं की पूर्ति हो गई। मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मेरा जन्म सफल हो जाए। कर्म, वाणी और मन से पवित्र मनुष्य जब तक मात्र राम का भक्त नहीं बन जाता तब तक अनेकानेक यत्न करके स्वप्न में भी उसे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

भरद्वाज ऋषि की आनंदमयी भक्ति-भावना से राम संकोच में पड़ गए। भरद्वाज मुनि की कीर्ति की अनेकानेक प्रकार से राम प्रशंसा करने लगे। राम ने कहा कि मुनीश्वर! जिसे आप आदर दें, वही गुणों का भण्डार हो जाता है। परस्पर राम और भरद्वाज एक दूसरे की अनिवर्चनीय विनम्र प्रशंसा करते रहे। जब प्रयाग के लोगों को यह ज्ञात हुआ कि भरद्वाज के आश्रम में राम, सीता, लक्ष्मण आये हैं तब सभी मुनि एवं संत वहां आ गए। राम ने सभी मुनियों को प्रणाम किया। प्रसन्न चित्त लोग राम का दर्शन कर सुफल प्राप्त कर रहे थे। सुंदरता की सराहना करते हुए लोग उन्हें आशीर्वाद देने लगे। प्रातःकाल राम, लक्ष्मण, जानकी और निषाद मुदित मन से भरद्वाज को मस्तक झुकाकर वहां से आगे बढ़े। राम ने भरद्वाज से आगे जाने का मार्ग पूछा। भरद्वाज ने कहा कि आपके लिए प्रत्येक मार्ग सुगम है। राम को मार्ग दिखाने के लिए पचासों शिष्य तैयार हो गए परन्तु भरद्वाज ने केवल चार पुण्यवान शिष्यों को राम के साथ मार्ग बताने के लिए भेजा।

जब राम किसी गांव के समीप से होकर निकलते तो गांववासी उल्लसित हो उनके दर्शन करते और वे उनके साथ हो जाते। वे जीवन का फल पाकर सनाथ हो जाते। उनका मन राम के साथ ही जाता, मात्र शरीर को साथ लेकर वे दुःखित हो वापस लौटते। राम ने अपनी अगम भक्ति का वरदान देकर भरद्वाज के शिष्यों को लौटा दिया। तट से पार उतरकर यमुना में स्नान किया। तटवासी स्त्री-पुरुष अपना-अपना काम-धाम छोड़ कर दौड़ पड़े। उन तीनों की छवि और सुंदरता को देखकर वे अपना भाग्य सराह रहे थे। सभी मन में उनका परिचय जानने के लिए उत्कंठित हुए। एक वयोवृद्ध ने राम को पहचान लिया। लोगों को मालूम हुआ कि दशरथ की आज्ञा से वे वन आए हैं। लोग सोचते कि दशरथ और कैकेयी ने यह अच्छा नहीं किया। गांव की स्त्रियां परस्पर वार्ता करने लगीं कि सखि! वे मां-बाप कितने निष्ठुर हैं जिन्होंने ऐसे सुन्दर बच्चे वन में भेज दिये? राम-लक्ष्मण-सीता के सौंदर्य को देखकर सभी स्नेह से भाव-विभोर हो उठे। राम के अनेक प्रकार से समझाने पर निषादराज अपने घर लौट आया।

आगे रामु लखनु बने पाछें। तापस बेष बिराजत काछें।
उभय बीच सिय सोहति कैसे। ब्रह्म जीव बिच माया जैसे।
बहुरि कहउं छबि जसि मन बसई। जनु मधु मदन मध्य रति लसई।।
उपमा बहुरि कहउं जियं जोही। जन बुध बिधु बिच रोहिनि सोही।।
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता। धरति चरन मग चलतिं सभीता।।
सीय राम पद अंक बराएं। लखन चलहिं मगु दाहिन लाएं।।
राम लखन सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहिं जाई।।
खग मृग मगन देखि छबि होहीं। लिये चोरि चित राम बटोहीं।।
जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ।
भव मगु अगमु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ।।
मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाए। कंद मूल फल मधुर मंगाए।।
सिय सौमित्र राम फल खाए। तब मुनि आश्रम दिए सुहाए।।

राम मार्ग में सुन्दर वन, तड़ाग और पर्वतों को देखते हुए वाल्मीकि के आश्रम में आए। उनका सुहावना आश्रम सुंदर पर्वत, वनों और शीतल जल वाले स्थान पर बना था। तड़ाग में कमल मुस्करा रहे थे। रस विभोर भौंरों का गुंजार हो रहा था। पशु-पक्षियों के कोलाहल से वातावरण उल्लसित था और शत्रुता त्याग सभी आनंद ले रहे थे। यह सब दृश्य देखकर राम हर्षित हो उठे। वाल्मीकि राम की अगवानी के लिए उत्साह से पैदल आगे बढ़े। राम ने प्रणाम किया। वाल्मीकि ने



मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाए। कंद मूल फल मधुर मगाए।।
सिय सौमित्र [illegible] मुनि [illegible] ए सुहाए।।

आशीर्वाद दिया। राम की रूप-छवि देखकर उनके नेत्र संतुष्ट हुए। मुनि ससम्मान राम को आश्रम में लाये। वाल्मीकि ने अपने महान अतिथियों को कंद-मूल-फल खिलाया और विश्राम के लिए सुन्दर आसन प्रदान किया। मंगलमूर्ति राम को देखकर वाल्मीकि अत्यंत आनंदित थे। करबद्ध राम ने मुनि से निवेदन किया कि मुनीश्वर! आप तीनों काल की गति जानते हैं। सम्पूर्ण विश्व के कार्यकलाप आपके लिए हथेली पर रखे बेर की तरह स्पष्ट हैं। वनवास की सारी विगत कथा राम ने सुनाई। उन्होंने कहा कि मुनिराज! पिता की आज्ञा, माता की इच्छा, भाई भरत का राजतिलक तथा मुझे आपका दर्शन; यह सब मेरे पुण्यों का प्रभाव है। आपके चरणों के दर्शन कर मेरे सारे दुःख दूर हो गये। आप जहां आज्ञा दें और जहां किसी संत तपस्वी को कष्ट न हो, वहां कुटी बना कर रहूं। दुष्ट राजाओं से तपस्वी पीड़ित हैं। वे सभी बिना आग के भस्म होंगे। तपस्वी की प्रसन्नता मंगलकारी है। उनका क्रोध करोड़ों परिवारों को भस्मीभूत कर देता है।

वाल्मीकि ने कहा, आपने पूछा कि पर्णकुटी छाकर कहां रहूं? यह कहने में संकोच हो रहा है कि आप कहां नहीं हैं? मैं आपको कैसे स्थान बता और दिखा सकता हूं?

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। विधि हरि संभु नचावनिहारे।।
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा। औरु तुम्हहि को जाननिहारा।।
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई।।
तुम्हरिहि कृपा तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन।।
चिदानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी।।
नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा।।
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे।।
तुम्ह जो कहहु करहु सबु सांचा। जस काछिअ तस चाहिअ नाचा।।

वाल्मीकि की इस अभ्यर्थना भरी वाणी से राम संकुचित होकर मन ही मन मुस्काने लगे। मुनि ने राम को विभिन्न निवास बताते हुए कहा कि आप भाई लक्ष्मण तथा पत्नी सीता के साथ उनके हृदयों में रहें जिनके समुद्र-से कान आपकी पवित्र कथारूपी नदियों क जल से निरंतर भरकर भी पूरे तृप्त नहीं होते, जिनके नेत्र चातक बनकर रामरूपी मेघ के दर्शन को लालायित रहते हैं, जो लोग नदी समुद्र आदि बड़ी-बड़ी जलराशियों को निरर्थक समझकर राम के सौंदर्य रूपी जल की एक बूंद से तृप्त हो जाते हैं, उनके हृदय-सदन में लक्ष्मण, सीता संहित निवास करें। राम! तुम्हारा यश निर्मल मानसरोवर है। उस मानसरोवर हृदय में जिसकी जिह्वा हंसिनी बनकर आपके चरित रूपी मोतियों का चयन करने की सामर्थ्य रखती है, उस हृदय में आप निवास करें। राम! जिसकी नासिका आपके प्रसाद का नित्य सुवासः ग्रहण करे, आपको अर्पित करने के बाद भोजन करे और जो वस्त्र-आभूषण आपको अर्पित करने के बाद धारण करे, गुरु, देवता और तपस्वी को देखकर जो गृहस्थ विनीत और नतमस्तक हो जाए, प्रतिदिन आपके चरणों की पूजा करे, आप को छोड़ कर और किसी का विश्वास न करे, जिसके चरण आपके तीर्थों से होकर जायें, जो नित्य रामनामरूपी मंत्रराज का पाठ करे, सपरिवार आपकी पूजा करे, अतिथि को भोजन कराकर भिखारियों को दान दे, तर्पण, हवन आदि करे, गुरु को अपने से भी श्रेष्ठ समझकर उनका सर्वाधिक सम्मान करे, जिनकी आकांक्षा एकमात्र आपकी भक्ति पाने की हो, उनके मन-मंदिर में आप सीता सहित निवास करें। जिनका मन काम, क्रोध, मोह, लोभ, कपट और दम्भ के वश में न हो उनके हृदय में आप निवास करें। जो सबके प्रिय बनकर सबके हितकारी हों, दुःख, सुख, प्रशंसा, निन्दा से परे हों, जो समदर्शी, सत्यवादी और मृदुभाषी हों, जो शरणागत जागते-सोते आपके हों, आपको छोड़ जिनका कोई आश्रय नहीं; उनके हृदय में आप निवास करें। जो दूसरी स्त्री को माता के समान, दूसरे के धन को जहर के समान समझते हों, जो दूसरों की संपत्ति देखकर हर्षित हो उठें और किसी की विपत्ति को देखकर दुःखी हो जाएं; जिन्हें आप प्राण से बढ़कर प्रिय हों, उनके हृदय में निवास करें। जिनके मित्र, माता-पिता और गुरु सब आप ही हों, उनके मन-मंदिर में सीता सहित आप निवास करें। जो सज्जनों के लिए कष्ट मोल लें, जिनकी नीति-निपुणता समाज में प्रतिष्ठित हो, उनका मन आपका निवास स्थान है। जो अपने दोषों और आपके गुणों को जानते हों, आप पर पूरा विश्वास रखते हों, जिन्हें आपके भक्त प्रिय हों उनके हृदय में सीता सहित रहिए। जाति-पांति, धन, धर्म, सम्मान, प्रिय परिवार और अत्यंत आनंद देने वाला भवन सब कुछ छोड़कर जो रात-दिन आपकी ही सेवा में तल्लीन



लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत।।

हों और जो स्वर्ग, नर्क, मोक्ष को समान मान कर मनसा-वाचा-कर्मणा केवल आपके आश्रित हों; उनके हृदय में ही आप निवास कीजिये। जिनको कुछ नहीं चाहिए, जिन्हें आपसे स्वाभाविक प्रेम है; ऐसे जीवन्मुक्त सज्जनों का हृदय ही आपका उचित घर है।

ज्ञान, नीति की अलौकिक वाणी से मुनि वाल्मीकि ने राम के मन को मोहित कर लिया और बोले—अब मैं आपको इस नरलीला के अनुरूप सुखदायक आश्रम बताता हूं। सुहावने पर्वत, सुंदर वन, हाथी-शेरों से परिपूर्ण चित्रकूट में आप निवास करें। अनुसूया के तपोबल से वहां पवित्र नदी मंदाकिनी प्रवाहित होती है। वहां अत्रि आदि योग, जप, तप में पारंगत श्रेष्ठ मुनि रहते हैं। इसलिए उनके साथ में आपके रहने से चित्रकूट पर्वत गौरवान्वित होगा। चित्रकूट की अनेक प्रकार की महिमा का गान वाल्मीकि ने किया।

लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत।।

चित्रकूट के रमणीय स्थान पर घास-फूस की अत्यंत सुंदर छोटी-सी कुटिया में लक्ष्मण, सीता के साथ राम सुशोभित हुए। लग रहा था, राम कामदेव हैं, सीता रति हैं और लक्ष्मण ऋतुराज वसंत। चित्रकूट में अनेक दिग्पाल, नाग और किन्नर आए। राम ने सभी को प्रणाम किया। देवगण दर्शन पाकर प्रसन्न हुए। देवताओं ने पुष्पवर्षा करते हुए कहा कि आपको पाकर हम अब सनाथ हुए। देवताओं ने अपना सारा कष्ट राम को सुनाया और प्रसन्न होकर लौट गये। जब मुनियों को ज्ञात हुआ कि राम चित्रकूट में निवास कर रहे हैं तो वे उनके दर्शन के लिए आये। राम को उन्होंने आशीर्वाद दिया। मुनियों ने उन्हें हृदय से लगा लिया। राम ने सबका उचित सम्मानकर विदा किया। मुनिगण निर्द्वन्द्व चित्रकूट में रहने लगे।

राम के शुभागमन का समाचार जब जंगल वासियों और कोल-किरातों ने पाया तो वे इतना पसन्न हुए जैसे उन्हें नवों निधियां प्राप्त हो गयीं। खुशी से वे राम के दर्शन करने के लिए दौड़ पड़े। वे दोनों हाथों में जंगली फल-फूल भर-भर कर ऐसे चले जैसे दरिद्र सोना लूटने को दौड़ रहे हों।

जिन-जिन लोगों ने दोनों भाइयों को देखा था वे परस्पर उनकी चर्चा कर रहे थे। वे राम के समक्ष जंगली फल श्रद्धा से रखते, मनावन करते हुए मंत्रमुग्ध हो उन्हें देखते रहते। दर्शकों का अनुराग अवर्णनीय था। उनका शरीर प्रेम से रोमांचित था। राम समझ गये कि सभी मेरे प्रेम में मोहित हैं। उन्होंने अपनी प्रिय वाणी से सबका सम्मान किया। उन्होंने राम से कहा कि हमारा भाग्योदय हुआ कि आप वन में आये। वन, पर्वत सभी धन्य हुए। जहां-जहां आपके चरण पड़े, वे स्थान धन्य हैं। अपने रहने के लिए आपने यह सुंदर स्थान चुना है। यहां सब ऋतुएं सुख देने वाली होंगी। हाथी, शेर, बाघों से आपकी सब प्रकार हम रक्षा और सेवा करेंगे। हमें वन, जंगल, खोह के गुह्य मार्गों का सारा रहस्य ज्ञात है। हम आपको शिकार खिलवायेंगे और सुंदर झरने दिखलायेंगे। हम आपके सेवक हैं। निस्संकोच हमें आज्ञा दीजिए। राम इन कोल-किरातों की बात ऐसे सुन रहे थे जैसे पिता बालकों की बातें सुनता है। ज्ञानी लोग अच्छी तरह जानते हैं कि राम प्रेम के भूखे हैं। राम ने अपनी मधुर वाणी से सबको संतुष्ट कर विदा किया। राम के वन में रहने के बाद जंगल मंगलमय हो गया। अनेक प्रकार के वृक्ष फूलने-फलने लगे, वृक्षों पर सुंदर लताओं के मंडप छा गये। कल्पवृक्ष-से सुन्दर ये पेड़ मानो नंदन वन छोड़ चित्रकूट आ गये हों। भौंरे गुंजार करने लगे। शीतल, सुगंधित और मंद वायु प्रवाहित होने लगी। नीलकण्ठ, कोयल, तोता, चकोर, पपीहा तथा तरह-तरह के पक्षी कर्ण-प्रिय शब्द बिखेरने लगे। हाथी, सिंह, बन्दर और हिरन सभी परस्पर शत्रुता त्यागकर सुख से वन बिहार करने लगे। चित्रकूट की शोभा देख देववनों सहित सभी वन ईर्ष्या करने लगे। गंगा, सरस्वती, यमुना, नर्मदा, गोदावरी आदि नदियां और समुद्र की तरगें और निर्झर सब मंदाकिनी के अहोभाग्य पर सिहरने लगे। उदयाचल, अस्ताचल, हिमालय, सुमेरु पर्वत सभी चित्रकूट का गुणगान करने लगे। विन्ध्याचल पर्वत प्रसन्नता से पागल हो उठा। उसे बिना काम ऐसी बड़ाई मिली। चित्रकूट विंध्य पर्वत-माला में है। चित्रकूट के पशु-पक्षी, लता-वृक्ष सब ने पुण्यराशि राम की छवि देखी। समस्त नेत्रवान जीव शोकरहित हो गए और जन्म लेने का लाभ पा गए। राम की चरणधूलि का स्पर्श कर जल, पर्वत, वृक्ष आदि परमपद के अधिकारी हो गये। चित्रकूट के वन, पहाड़ आदि स्वाभाविक कल्याणमय सौंदर्य से पवित्रतम हो गए। क्षीरसागर और अयोध्या को छोड़कर सीता और लक्ष्मण के साथ जहां-जहां राम रहे उन जंगली स्थानों की शोभा का वर्णन हजार मुख वाले लाखों शेषनाग भी नहीं कर सकते।

राम और जानकी के चरणों को निरंतर निरखते हुए लक्ष्मण दोनों का स्नेह स्वयं प्राप्त कर स्वप्न में भी माता-पिता, भाई, परिवार का स्मरण नहीं करते थे। सीता अपने प्रियतम राम के साथ सुखी थीं। क्षण-क्षण राम का मुखचन्द्र देखते हुए वह चकोरी की तरह प्रसन्न थीं। सीता का मन राम के चरणों में अनुरक्त था। वन उन्हें हजारों अयोध्या-सा सुखद प्रतीत हो रहा था। राम के साथ उन्हें पर्णकुटी बड़ी प्रिय लग रही थी। पक्षी और मृग मानो उनके परिवार के सदस्य थे। मुनि व उनकी पत्नियां सास-ससुर-सी थीं। जंगल के फल-फूल अमृत के समान स्वादिष्ट थे। कुश और पत्तों का बिछौना प्रियतम राम के साथ उन्हें कामदेव की शैया लगती। जिनके देखने मात्र से सामान्य जन भी लोकैषणाहीन हो जाए, उसका बिलासिता क्या बिगाड़ सकती है? राम के स्मरण मात्र से लोग भोग-विलास को तृणवत् त्याग देते हैं, इसलिए राम की प्रिया सीताजी के लिए यह त्याग कोई बड़ी बात नहीं है। लक्ष्मण और जानकी को अधिक से अधिक सुख मिले, राम वह सब कुछ करने को तत्पर थे। वे पुराण की रोचक कहानियां सुनाकर उनका मन मोहित करते थे। जब-जब राम को अयोध्या की स्मृति व्याकुल करती, तब-तब उनके नेत्रों से अश्रुपात होने लगता। वे माता-पिता को याद कर विह्वल हो जाते। उन्हें भरत की सेवा-परायणता की याद आती किन्तु कुसमय जानकर राम धैर्य रखते। उन्हें चिंतित देखकर कहीं पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण दुःखी न हो जाएं इसलिए राम पुराणों की कहानियां सुनाकर उन्हें भुलाये रखते। सीता के साथ पर्णकुटी में राम उसी तरह सुशोभित थे जैसे इन्द्राणी तथा जयंत के साथ अमरपुरी में इन्द्र। सीता और लक्ष्मण की रक्षा राम वैसे ही करते रहते थे जैसे पलकें पुतलियों की रक्षा करती हैं। वे भी राम की ऐसी सेवा करते थे जैसे नारी-पुरुष अपने शरीर की करते हैं। सुखपूर्वक राम चित्रकूट वन में निवास कर रहे थे।

जब मंत्री सुमंत अकेले ही आने का समाचार सुनाई पड़ा तो रनिवास में भयानक कोलाहल मच गया। सुमंत को राजमहल प्रेतों का डेरा प्रतीत हो रहा था। अत्यंत आर्त और उत्सुक रानियों ने विनम्र वाणी में सुमंत से पूछा परन्तु सुमंत ने उनकी ओर न देखा, न उनकी बातों पर ध्यान दिया। सुमंत केवल महाराज दशरथ के पास ही जाना उचित समझ रहे थे। दासियां उन्हें कौशल्या के रनिवास में ले गयीं। अमृतरहित चन्द्रमा की भांति दशरथ वहीं पड़े हुए थे। आसन तथा शैया-आभूषण से उदासीन दशरथ लंबी श्वास खींच रहे थे। वे इतने चिंतामगन और श्रीहीन थे जैसे राजा ययाति की तरह स्वर्ग से गिर पड़े हों। पंख-कटे जटायु के भाई सम्पाती की तरह दशरथ तड़प रहे थे और बार-बार राम! राम! प्रिय राम! लक्ष्मण! जानकी! पुकारने लगते थे। सुमंत के प्रणाम करते ही दशरथ ने पूछा– "राम कहां हैं?" पानी में डूबते को जैसे तिनके का सहारा मिल जाये उसी तरह सुमंत को छाती में भरकर दशरथ ने पूछा कि राम, लक्ष्मण और सीता कहां हैं? वे लौटे या वन चले गये? कौशल्या तथा सुमंत ने उन्हें धैर्य देने की बहुत कोशिश की परन्तु जब दशरथ को विदित हुआ कि राम नहीं लौटे तो उन्होंने राम! राम!! का उच्चारण करते हुए तड़प-तड़पकर अपने प्राण छोड़ दिए।

राजा के रूप, शील, बल और तेज का वर्णन करती शोकविह्वल दशरथ की पत्नियां विलाप कर रही थीं। वे अचेत हो जातीं और धरती पर गिर पड़ती थीं। नगरनिवासी गला फाड़कर रो रहे थे। लोग कहने लगे—आज धर्म की सीमा, गुण और रूप का भंडार रघुवंश का सूर्य अस्त हो गया। लोग विश्व भर को अंधा बना देने वाली कैकेयी को कोस रहे थे। वह शोकभरी रात्रि रोते-कलपते बीत गयी।

प्रातःकाल मुनियों का जमघट जुटा। वशिष्ठ मुनि ने पुराण और इतिहास के विविध प्रसंगों के उपदेश द्वारा लोगों का शोक-निवारण किया। एक नाव में तेल भरा गया। दशरथ का मृत शरीर उसमें रख दिया गया। राजदूत तुरंत भरत के पास ननिहाल गये। उन्हें यह कहने का आदेश था कि शत्रुघ्न सहित भरत को गुरु वशिष्ठ ने बुलाया है। घोड़ों से भी तेज चलने वाले दूत चल पड़े। जब से अयोध्या में अनर्थ शुरू हुआ तब से भरत को अपशकुन होने लगा था। रात में भयंकर स्वप्न देखते और जागने पर मन में अनेक भयानक कल्पनाएं जागृत होतीं। वे ब्राह्मणों को विशेष दान-पुण्य कर शंकर से कामना करते कि सभी कुशल-मंगल से रहें। नित्य प्रति शंकर से यही याचना करते। यही सब वह सोच रहे थे कि राजदूत पहुंचे। गुरु वशिष्ठ का आदेश सुनाया। तत्क्षण शंकर की वंदना कर भरत और शत्रुघ्न चल पड़े। वायु की गति को भी मात कर देने वाले रथ के घोड़े बड़ी तेजी से आगे बढ़े। वे नदी, पहाड़ और जंगलों को पार करते निरंतर अयोध्या की

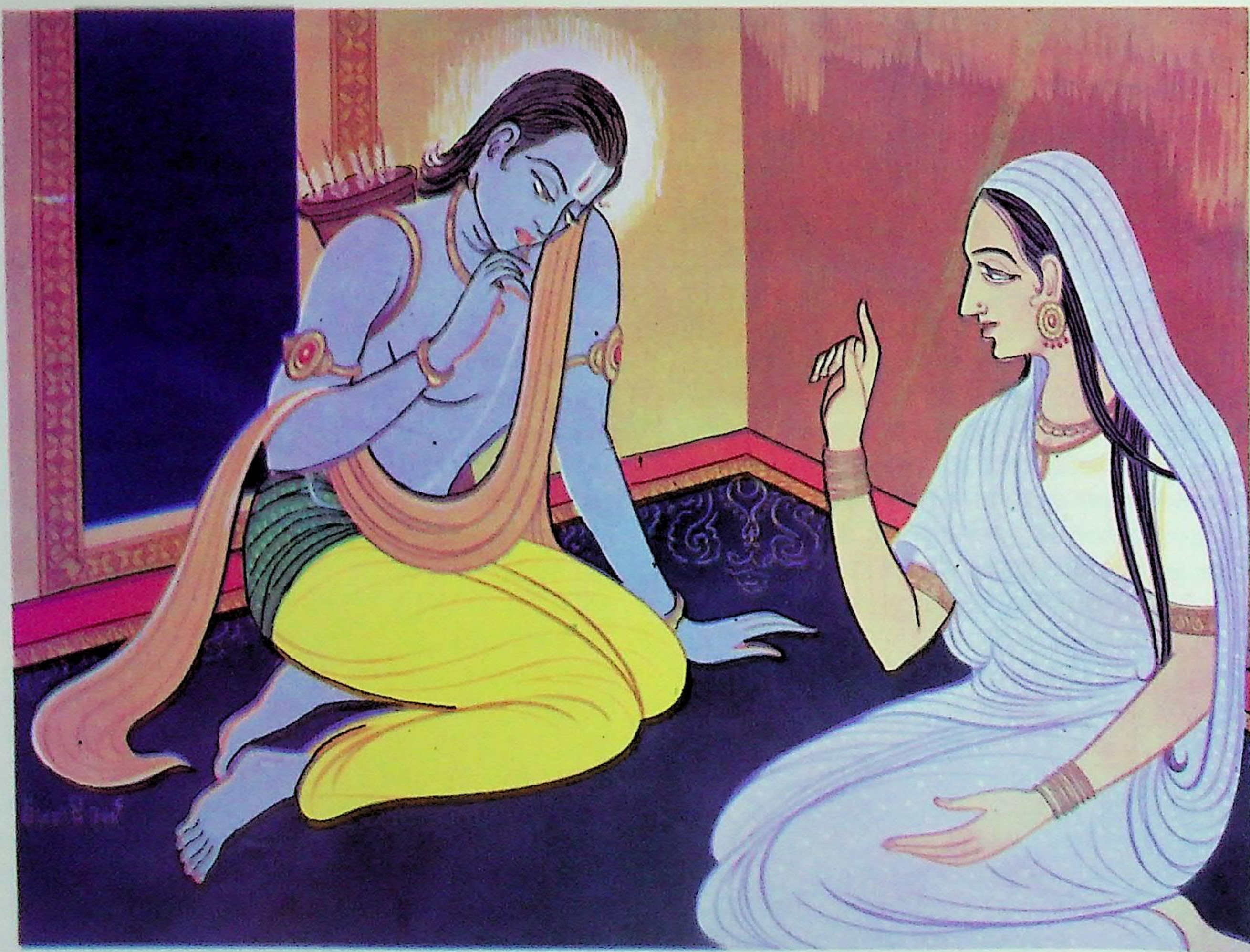
ओर बढ़े आ रहे थे। भरत के मन में था कि मैं जल्दी से जल्दी अयोध्या पहुंचूं। उनका एक-एक पल वर्ष समान बीत रहा था।

सुनि सुत बचन कहति कैकेई। मरमु पांछि जनु माहुर देई।।
आदिहु ते सब आपनि करनी। कुटिल कठोर मुदित मन बरनी।।

भरत अयोध्या आ गये। जगह-जगह अशुभ के प्रतीक कौए कांव-कांव कर रहे थे। गधे तथा सियार रो रहे थे। उनके मन में पीड़ा हुई। जड़-चेतन सभी पर भयावनी मौत की उदासी थी। पशु, पक्षी, हाथी, घोड़े तथा अन्य जीव-जन्तु राम के वियोग में ऐसे विकल थे कि देखे नहीं जा रहे थे। पुरवासी ऐसे लग रहे थे मानो सारी संपत्ति लुटा बैठे हों। लोग भरत के सामने पड़ते, धीरे से नमन कर आगे बढ़ जाते। भरत का मन विषाद और भय से भर गया। वे किसी से कुछ न बोले। रास्ते और बाजार इस तरह खामोश थे जैसे अयोध्या की दसों दिशाओं में आग लगी हो। भरत का आगमन सुन कर कैकेयी प्रसन्न हुई। वह अपने महल के राजद्वार पर भरत, शत्रुघ्न की आरती उतार कर स्वागत करती हुई उन्हें रनिवास में ले आई। भरत ने देखा कि परिवाररूपी कमलवन मानो पाले की बौछार से मुरझा गया है। जंगल में आग लगाकर कैकेयी किरातन की तरह प्रसन्न थी। अपने बेटे को मन मारे और सोच में देख कर उसने नैहर का कुशल पूछना शुरू किया। भरत ने कुशल-क्षेम बताकर घर का हालचाल पूछा। भरत ने पूछा कि राम कहां हैं? सीता और भाई लक्ष्मण कहां हैं? माताएं एवं महाराज दशरथ कहां हैं? भरत की वाणी सुनकर कैकेयी आंखों में कपट के आंसू भर कर भरत के कानों में तथा मन में शूल के समान चुभते वचन बोली कि सारी बात बन गयी है। मंथरा ने मेरी बड़ी सहायता की। ईश्वर ने कुछ विघ्न डाल दिया; महाराज की मौत हो गयी।

जैसे शेर की चिंघाड़ से हाथी सहम जाये, पिता की मौत सुनते ही भरत सहमकर धरती पर गिर पड़े। वे विलाप करते हुए भूमि पर पिता! पिता! का आर्तनाद करते गिर पड़े और कहने लगे, पिताजी! मैं अंतिम क्षणों में आपको न देख सका। अपनी गद्दी क्यों आपने मुझे सौंपी, राम को नहीं? धैर्य धरकर भरत चैतन्य हुए और पूछने लगे कि पिताजी का निधन कैसे हुआ? जैसे छाती को चीर कर उसमें जहर भरा जा रहा हो उसी तरह कैकेयी ने अपनी सारी करनी और विगत घटना कठोर कुटिल वाणी में भरत से कह सुनाई। राम का वन गमन सुन भरत पिता की मृत्यु भूल गए। सारे अनर्थ का मूल स्वयं को समझकर वह सकते में आ गये और मौन हो गये। कैकेयी जले पर नमक छिड़कती हुई-सी उन्हें समझाने लगी कि राजा की मृत्यु शोकयोग्य नहीं है। जीते-जी उन्होंने जीवन का सारा ऐश्वर्य प्राप्त किया और अंत में स्वर्ग चले गये। यह सत्य है। तुम चिंता छोड़ो। अयोध्या के राजसिंहासन पर आरूढ़ होओ। भरत धरती में गड़ गये। मां की यह वाणी पके घाव पर अंगारे की तरह थी। धैर्यपूर्वक सोचकर भरत इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि रघुकुल को नष्ट करने वाली पापिष्ठिनी कैकेयी है। वह उसे धिक्कारने लगे कि इस तरह की नीचातिनीच कूटनीति करनी थी तो पैदा होते ही मुझे क्यों नहीं मार डाला? पेड़ काट कर तूने पत्ते सींचे हैं और मछली को जिंदा रखने के लिए पानी उलीच डाला है। तुमने मेरे हित की इच्छा से मेरा सबसे बड़ा अहित कर डाला। मैं सौभाग्यशाली था जो दशरथ की संतान बना, राम-लक्ष्मण जैसे भाई मिले। लेकिन तुम्हारी जैसी अपराधिनी मां भी मुझे मिली। विधाता पर किसी का वश नहीं। जब तुम्हारे हृदय में इस बुरे भाव का यह विष-बीज पनपा तभी तेरी छाती क्यों नहीं फट गयी? इस तरह का वरदान मांगते हुए तुम्हारी जीभ नहीं गल गई? कीड़े नहीं पड़ गये? मृत्यु के समय ईश्वर बुद्धि नष्ट कर देता है। इसी से पिता जी ने भी तुम्हारा विश्वास किया। ईश्वर भी तुम जैसी नारी की गति नहीं पहचान सके। तुम अवगुण, कपट, दुर्गुण की खान हो। भरत ने कहा कि महाराज दशरथ धर्मपरायण, विनीत एवं निश्छल थे। वे तुम्हारे छली स्वभाव को नहीं जान सके। वे तुम्हारी चाल को नहीं समझ सके। सबके प्राणाधार राम ही तुम्हारे शत्रु हो गये। तुम हो कौन? तुम जो कुछ भी हो अपने मुंह में कालिख लगाकर बैठो। मेरे सामने से हट जाओ। मैं राम-विरोधिनी मां के गर्भ से उत्पन्न हूं। मुझसे बड़ा पापी कौन होगा? तुम पर आरोप लगाना तो व्यर्थ है।

माता कैकेयी की नीचता सुनकर शत्रुघ्न का शरीर क्रोध से जल उठा। वे परवश थे। उसी समय नये-नये वस्त्र-आभूषणों से सुसज्जित भद्दी कुबड़ी मंथरा प्रविष्ट हुई। उसे देखते ही शत्रुघ्न का क्रोध आपे से बाहर हो गया। जलते हुये आग में जैसे घी डाल दिया गया हो उसी तरह उनका मुख हो गया। शत्रुघ्न ने हुमचकर उसके कूबड़ पर लात धर दी। वह मुंह के बल जमीन पर गिरकर चिल्लाने लगी।



सुनि सुत बचन कहति कैकेई। मरमु पांछि जनु माहुर देई।।
आदिहु ते सब आपनि करनी। कुटिल कठोर मुदित मन बरनी।।

कूबड़ टूटा। सिर फट गया। दांत टूट गये। मुंह से रक्तस्राव होने लगा। मंथरा चिल्लाने लगी—हाय मैंने क्या बिगाड़ा? भला करके बुरा फल पाया। जलती हुई आंखों से शत्रुघ्न ने नीच मंथरा को देखा। धरती पर उसके बाल पकड़ कर खींचने लगे परन्तु दयालु भरत ने छुड़ा दिया।

दोनों भाई मां कौशल्या के पास पहुंचे। विकल विधवा कौशल्या मलिन वस्त्र धारण किए बैठी हुई थीं। दुःख से उनका शरीर टूट गया था। नंदन कानन की स्वर्णलता मानो पाले ने सुखा दी हो। कौशल्या भरत को देखकर बिलख कर दौड़ी। भरत विकल हो सुध-बुध खोकर मां के चरणों पर गिर पड़े और पूछने लगे कि मां! पिताजी, सीता एवं दोनों भाई कहां हैं? कैकेयी का संसार में क्यों जन्म हुआ? यदि हुआ तो वह बांझ क्यों नहीं रह गयी? कैकेयी के कुलकलंकी गर्भ से मैं अपकीर्ति का पात्र और प्रिय प्राणियों का विद्रोही उत्पन्न हुआ। मुझसे बड़ा अभागा कौन है, जिसके कारण आज यह महाशोक उपस्थित है। पिता स्वर्ग गये। राम वन में हैं। इन अनर्थों का एकमात्र मूल कारण मैं हूं। अयोध्यारूपी बांस का वन जलाने को मैं अभागा अग्निरूप बना। मैं ही सभी संताप, दुःख और दोषों का भागी हूं।

भरत की आर्तवाणी सुनकर कौशल्या की चेतना सम्भली। सरल ममतामयी कौशल्या ने भरत को इस तरह छाती से चिपटा लिया मानों राम लौट कर आ गये। शत्रुघ्न को भी उन्होंने प्यार किया। आंखों में आंसू छलछला आये। इस मिलन को देख लोग कहने लगे कि राम की मां क्यों न ऐसी स्नेहमयी हो, दोनों पुत्रों को प्यार से गोद में बैठा उनके आंसू पोंछ कौशल्या कहने लगी कि बेटा! इस कुसमय में शोक छोड़ो। धैर्य धारण करो। समय की सत्ता को सर्वोपरि समझकर किसी प्रकार की चिंता मत करो। किसी को दोष न दो। मुझसे ही ईश्वर रुष्ट हैं। फिर भी मैं अभी न जाने और कौन-कौन कर्म भोगने को जीवित हूं? दशरथ की आज्ञा पाकर राम ने आभूषण और राजसी वेशभूषा छोड़ वल्कल चीर धारण कर लिया। विवाद और हर्ष से परे राम प्रसन्नमुख सबको संतुष्ट करते हुए वन चले गये। सीता और लक्ष्मण राम के लाख चाहने पर भी नहीं रुके। सभी वन गये। मैं न तो उनके साथ गयी और न मेरे प्राण ही निकले। राम जैसा पुत्र पाकर भी मैं लज्जित हूं। राम के यशस्वी पिता स्वर्ग गये। हृदय पर पत्थर रखकर अभी भी मैं जिंदा हूं।

राजमहिषी कौशल्या की कोमल वाणी सुनकर भरत और सारा समाज विलाप कर उठा। राजमहल में आर्तनाद होने लगा। भरत और शत्रुघ्न को छाती से लिपटाकर कौशल्या ने अपनी ज्ञानपूर्ण वाणी से भरत को धैर्य दिया। वेद-पुराण की अनेक उक्तियां कह-कह कर उन्हें प्रबोध दिया। निश्छल भाव से करबद्ध भरत बोले कि मैं कैकेयी के इस पाप-कर्म में शामिल नहीं हूं। मैं विश्वासपूर्वक कह रहा हूं कि ब्राह्मणों के नगर तथा गौशाला जलाने से तथा माता-पिता, पुत्र, स्त्री और बालक की हत्या, मित्र और राजा को विष देने से जो पाप लगता है, यदि इस षड्यंत्र में मेरा दोष हो तो वही पाप मुझे लगे। विष्णु तथा शंकर को छोड़ जो भूत-प्रेत की आराधना करते हैं, उस दुर्गति को मैं प्राप्त करूं। वेद बेचने वाले, धर्म का निजी स्वार्थ के लिए दुरुपयोग करने वाले, चुगलखोर, निंदक, कपटी, कुटिल, लड़ाकू, क्रोधी, संसार-विरोधी, लालची और लंपट जो दूसरों की स्त्री और धन को कुदृष्टि से देखते हैं; मुझे उनकी कुगति मिले, यदि किसी भांति कैकेयी की चाल में मेरी सहमति रही हो। यदि मुझे इस षड्यंत्र का पहले से आभास हो तो मुझे उनकी गति मिले जो सत्संग लीन नहीं हैं, जो अभागे परमार्थ विमुख हैं, मानव शरीर प्राप्त करके भी जो भगवान का भजन नहीं करते, जिन लोगों को शंकर, विष्णु और ब्रह्मा प्रिय नहीं हैं और जो ठग, वेदों के विरोधी, छली, कुकर्मी हैं।

भरत की स्वाभाविक, सच्ची वेदनामयी वाणी को सुनकर कौशल्या कहने लगीं कि मनसा-वाचा-कर्मणा तुम राम को प्रिय हो। उनके लिए तुम प्राणों से बढ़कर प्यारे हो। 'राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे।

भले ही चन्द्रमा विष वमन करे, ओसबिन्दु आग बन जाये, जलजीव जल को छोड़ कर जीवित रहे, भले ही ज्ञान होने पर भी मोह न जाये, परन्तु तुम राम के प्रतिकूल नहीं हो सकते। जो लोग इस कांड में तुम्हारी ओर संदेह भी करेंगे उन्हें कभी सुख-संपदा नहीं मिलेगी। कौशल्या की मातृ-माता बरस पड़ी। उनके पयोधरों से दुग्ध की धारा प्रवाहित हो उठी। भरत को उन्होंने हृदय से लगा लिया। आंसू छलछला आये। रोते-कलपते रात बीत गई। वामदेव, वशिष्ठ और सभी प्रमुख लोगों को बुलाया गया। वशिष्ठ ने अवसर के अनुकूल परमार्थ और ज्ञान की बातें कहकर भरत को उपदेश दिया और कहा कि जो अवसर है उसके अनुसार कर्म करो। राजसभा में भरत ने आदेश दिया कि वैदिक रीति से

शव-स्नान कराया जाये। अत्यंत विचित्र अंतिम शव-विमान सजाया गया। सभी माताओं के चरण पकड़कर भरत ने उन्हें सती होने से रोका। सरयू के तट पर चंदन, अगरु और सुगंधित द्रव्यों की चिता सजी। तिलांजलि दी गयी। वेद-स्मृति और पुराणों में वर्णित विधि से भरत ने दशरथ का अंतिम संस्कार किया। वशिष्ठ की आज्ञानुसार शुद्ध हो जाने पर भरत ने अनेक प्रकार के मूल्यवान पदार्थों का दान किया। भरत ने अगणित गाय, घोड़े, हाथी, सवारियां, सिंहासन, आभूषण, अन्न, वस्त्र, धरती, धन और आवास ब्राह्मणों को पिता की सद्गति के लिए दान किये। पिता के मोक्ष के लिए जो कृत्य भरत ने किया वह लाखों वाणी द्वारा अकथ्य है।

सभी लोग राजसभा में एकत्र हुए। वशिष्ठ तथा सभी मंत्रियों ने हाथ जोड़कर भरत से प्रार्थना की कि पिता की आज्ञा का पालन कर राजकाज संभालिये। माता कौशल्या ने भी कहा कि गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करो। समय की गति देखकर विषाद मत करो। दशरथ स्वर्ग गये। राम वन में हैं। तुम इस प्रकार धीरज खो रहे हो। कुटुम्ब, प्रजा, मंत्री और सब माताओं के तुम्हीं जीवनाधार हो। विधाता की अकृपा और काल की कठोरता को देखो। गुरु की आज्ञा से प्रजा का पालन करो। अयोध्या का दुःख दूर करो। भरत ने माता, गुरु एवं मंत्री की चंदन-सी शीतल वाणी सुनी। माता की सरल आज्ञा सुनकर वह व्याकुल हो उठे। उनके आसूं न रुके। सभी लोग उन्हीं के समान भाव-विभोर होकर शरीर की सुध भूल गये। भरत के इस अपूर्व स्वाभाविक स्नेह के उदाहरण की सभी लोग प्रशंसा करने लगे।

भरत ने अमृत-सरीखी मृदु वाणी में प्रार्थना की कि गुरु ने मुझे उत्तम उपदेश दिया। उस उपदेश की सबने सराहना की। मां ने भी आदेश दिया है। मैं उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहता। आप लोगों ने उचित कहा है या अनुचित, यह सोचकर अपने सिर पर मैं पाप का बोझ नहीं ढोना चाहता। परन्तु मेरा हृदय इससे संतुष्ट नहीं है। मेरी भी प्रार्थना सुन लीजिए। मैं दुःखिया हूं, मुझे दोष मत दीजिए। पिता स्वर्ग गये। सीता-राम-लक्ष्मण वन में हैं। आप मुझे राज्य देकर मेरा हित चाहते हैं या अपना उद्देश्य पूरा कर रहे हैं? राम की सेवा के अतिरिक्त मेरी भलाई का कोई उपाय नहीं है। राम, जानकी के चरणों के दर्शन के बिना, यह शोकपूर्ण राज्य किस काम का है? राम के बिना राज्य ऐसा है जैसे कपड़ों के बिना गहने और वैराग्य बिना ज्ञान। रोगी के लिए सारे भोग निरर्थक हैं। सच्ची भक्ति के बिना मोक्ष कहां? प्राण के बिना शरीर कहां? राम के बिना मेरा राज्य कहां? कल्याण इसमें है कि अविलम्ब राम का दर्शन कर हम फिर आगे विचार करें। मुझ जैसे कठोर पापी को केवल प्रेमवश आप राजा बनाना चाहते हैं। मुझ जैसे निर्लज्ज राम-द्रोही दुर्बुद्धि को राजा बनाकर आप सुखी देखना चाहते हैं। आप लोग विश्वास करें या न करें धर्म, शील का जो ज्ञाता हो, उसे राजा होना चाहिए। यदि मुझे आपने जबर्दस्ती राज दिया तो पृथ्वी धंस जाएगी। राजा ने राम को वन दिया। राम के बिछुड़ते ही उनके प्राण गये। इन सभी आपदाओं का कारण मैं हूं। सबकी मैं सुन रहा हूं। मेरे भी प्राण राम के अभाव में क्यों नहीं निकल जाते? मेरे प्राण राम के प्रेमी नहीं, लोलुप हैं, धरती के भोगों के भूखे हैं, मेरा हृदय वज्र से भी अधिक कठोर हो गया है। कारण से कार्य सदा कठिन होता है। इसमें मेरा दोष नहीं। हड्डियों से वज्र तथा खान के पत्थर से लोहा अति कठोर होता है। वज्र और लोहा अपने कारणों से—हड्डी और पत्थर से कहीं कठोर होते हैं। ऐसे ही कैकेयी जैसी कुटिल मां से उत्पन्न मैं अति कठोर हूं। कैकेयी ने राम-सीता और लक्ष्मण को वनवास दिया। पिता को स्वर्ग भेजकर पुत्र का कल्याण किया। स्वयं अपयश व वैधव्य लिया। प्रजा को शोकमय कर दिया। मेरे सुंदर राजतिलक के लिए कैकेयी ने सबका अपकार किया है। राजतिलक देने की बात आप लोग भी कर रहे हैं? कैकेयी जैसी अभागिनी मां की कोख से उत्पन्न मैं इसी योग्य हूं? मेरी सारी बात तो ईश्वर ने ही बना दी है; आप सब पंच लोग मेरी सहायता क्यों कर रहे हैं? किसी के ग्रह खराब हों, साथ ही वायु-विकार हो और ऊपर से उसे बिच्छू भी डंक मार दे। फिर उसे शराब भी पिला दी जाए। ऐसे मनुष्य का क्या इलाज है? कैकेयी की कोख से जन्म लेने के नाते दशरथ का पुत्र और राम का छोटा भाई होने का सम्मान मुझे व्यर्थ मिला। मेरा राजतिलक करने को आप कह रहे हैं? प्रसन्नतापूर्वक कहिए। मेरे राजतिलक-सा अमंगलकारी प्रस्ताव आपको बहुत अच्छा लग रहा है। इससे बढ़कर अभाग्य क्या होगा? किसी का दोष नहीं। संशयशील और प्रेमवशीभूत आप जो कहें वही ठीक है। मेरे प्रति मां कौशल्या का सबसे अधिक सौहार्द है। मेरे दोषों को अनदेखाकर वह यह सब कह रही हैं। गुरु वशिष्ठ की हथेली पर सारा विश्व बेर के समान है। वे भी मुझसे राज्य कराना चाहते हैं। जब ईश्वर ही प्रतिकूल है तो गुरु भी प्रतिकूल हो गये। राम-जानकी को छोड़कर सभी कहेंगे कि

इस अनर्थ में मेरी सहमति नहीं। मुझे तो ये सब अप्रिय बातें सुननी ही हैं। आखिर कीचड़ वहीं होता है जहां पानी होता है। मुझे नीच कहे जाने या परलोक बिगड़ने का डर नहीं, मात्र एक ही दु:सह कष्ट है कि राम-सीता मेरे कारण दु:खी हैं। लक्ष्मण भाग्यशाली हैं। मैं तो राम को वनवास देने वाला हूं। भरत ने कहा कि जब तक राम का दर्शन नहीं होगा तब तक मेरे हृदय की ज्वाला नहीं शांत होगी। मुझे और कोई मत अच्छा नहीं लगता। प्रात:काल मैं राम के पास जाऊंगा। मैं भले ही पापी-अपराधी हूं, पर मुझे देखते ही राम क्षमा कर देंगे। वे प्रेम के वशीभूत और स्नेहागार हैं। उन्होंने दुश्मन का भी अहित नहीं किया। मैं तो फिर भी उनका अनुज हूं। आप लोग आदेश एवं आज्ञा दीजिए और ईश्वर से विनती कीजिए कि राम पुन: अयोध्या आ जायें। यद्यपि मैं दुर्बुद्धि मां की संतान हूं, फिर भी राम मुझे छोड़ेंगे नहीं। मुझे केवल उनका ही भरोसा है।

भरत की यह सत्य और स्पष्ट वाणी सुनकर सभी लोग स्नेहमग्न हो गये। मां, मंत्री, गुरु सभी स्नेहाभिभूत होकर भरत की प्रशंसा करने लगे। भरत से लोग कहने लगे कि भरत! तुम राम के लिए प्राणों से बढ़कर हो। वे लोग नीच हैं जो कैकेयी की मूर्खता के कारण तुम पर शंका करें। ऐसे लोग करोड़ों पुरखों सहित नरक में जायेंगे। जैसे मणि पर सर्प के विष का प्रभाव नहीं होता वैसे ही तुम्हें कैकेयी की कुटिलता प्रभावित नहीं कर सकती। राम के पास चलिए। बड़ी अच्छी मंत्रणा है। सभी के मन इस निर्णय से उल्लसित हो उठे, जैसे बादलों की उमड़-घुमड़ सुनकर मयूर नाच उठें। प्रात:काल चलने का निश्चय हुआ। राजसभा से लोग विदा हुए और कहने लगे कि यह बड़ा अच्छा हुआ। सभी वन-गमन की तैयारी करने लगे। जिसे घर की रखवाली के लिए अयोध्या रुकने को कहा जाता, उसे ऐसा लगता जैसे उसकी गर्दन दबायी जा रही हो। एक नागरिक ने कहा कि किसी को रुकने को न कहो। राम के दर्शन सुखद हैं। वह संपत्ति, सुख, सुहृद माता-पिता नष्ट हो जाएं जो राम से मिलने में बाधक हों। सवारियां सजने लगीं। लोग हर्षित हो उठे। कल राम के दर्शन के लिए चलना है। भरत ने निश्चय किया, अयोध्या का सारा लाव-लश्कर राम की संपत्ति है। यदि इसकी रक्षा का उचित प्रबंध नहीं करके इसे छोड़ जाऊं तो मेरा कल्याण नहीं। ऐसा सोचकर, स्वप्न में भी जो धर्म से न डिगें, ऐसे पवित्र सेवक बुलाए। उनको अच्छी तरह से अयोध्या की रक्षा का सारा प्रबंध सौंप दिया। नगर के सभी निवासी सूर्योदय के लिए पागल थे। सवेरा हो गया। सभी माताओं को दु:खी देखकर भरत ने पालकियां सजवाईं। बुद्धिमान मंत्री और सारा राज-समाज चला। वन में ही राम का अभिषेक करने के उद्देश्य से राजतिलक का सारा सामान साथ ले चले। प्रथम रथ पर वशिष्ठ पत्नी अरुंधती सहित तिलक-सामग्री लेकर चढ़े। ब्राह्मणों का समूह रथों पर आरूढ़ होकर चला। खूब सज-धजकर सुंदर नारियां चित्रकूट के लिए चल पड़ीं। सारे नगर का प्रबंध विश्वस्त कर्मचारियों को सौंपकर भरत वन की तरफ चल पड़े। लोग ऐसे चले जैसे जंगल में पानी देखकर हाथी-हथिनी उतावले हो तेजी से भागते हैं। भरत को पैदल देख कर सभी लोग पैदल चलने लगे। तब माता कौशल्या ने पालकी रोककर भरत को रथ पर सवार होने को कहा। भरत रथ पर आरूढ़ हुए। पहले दिन तमसा नदी, दूसरे दिन गोमती और सई के किनारे रुक कर प्रात: ही आगे चल पड़े और सभी श्रृंगवेरपुर आ गए।

निषादराज को जब ज्ञात हुआ कि भरत वन जा रहे हैं तो मन में कपट, संदेह और शंका करता हुआ वह सोचने लगा कि यदि भरत के मन में कुटिलता न होती तो सेना क्यों साथ लाते? भरत राम को धरती से उठाकर निष्कंटक राज करना चाहते हैं। भरत ने राजनीति का विचार नहीं किया। पहले तो सिर्फ कलंक लगा था, अब उनका जीवन भी समाप्त हो जाएगा। सारे देवताओं के साथ भी भरत राम को कभी जीत नहीं सकते। भरत के इस आचरण पर आश्चर्य क्या? कैकेयी रूपी विष-वृक्ष पर अमृत-फल कैसे उगेगा? कैकेयी का पुत्र क्यों नहीं कुटिल होगा? निषाद ने अपने समुदाय को आदेश दिया कि सभी लोग नाव पर सवार हो जाओ। सुसज्जित हो घाटों को रोको और भरत से लड़ने की तैयारी करो। परन्तु शीघ्र ही निषादराज की शंका का समाधान हो गया तथा उन्होंने भरत के आगमन-उद्देश्य को पहचान लिया।

वशिष्ठ को देख निषाद ने दण्डवत् किया। उसे आशीर्वाद मिला। वशिष्ठ ने भरत से कहा कि यह राम का प्रेमी है। राम का मित्र समझकर भरत ने रथ छोड़ दिया। प्रेम उमंग में वे मूक बढ़ते गये। निषाद ने मस्तक धरती पर नवाकर भरत को अपना पूर्ण परिचय दिया। उसे प्रणाम की मुद्रा में देखकर भरत ने उसे ऐसे स्नेह से छाती से लगाया जैसे लक्ष्मण मिल गये हों। दर्शक इस अमिट प्रेम-मिलन

की सराहना करने लगे। जिसे लोग नीच समझते थे, जिसकी छाया छूकर स्नान करते थे, भरत उसे हृदय से लिपटाये हुए थे। निषादराज को तो पहले ही राम के हृदय से लगकर समूचे वंश को पवित्र करने का सुअवसर मिल चुका था। वह अब कैसे अपवित्र माना जा सकता था? कर्मनाशा का जल गंगा में मिल जाए तो लोग सिर चढ़ाने लगते हैं। मूर्ख, पतित, चाण्डाल, शबर, कोल, किरात, यवन, खस आदि जंगली जातियां राम को स्मरण करते ही पवित्र हो गईं। राम ने सबको निर्मल भक्ति दी। सर्वव्यापक राम-नाम की महिमा जंगल में सुनकर अयोध्यावासी प्रमुदित हो उठे। भरत ने निषादराज से राम का हाल पूछा। अपने शरीर की सुध-बुध खोकर निषाद आनंद से भरत को टकटकी लगाये देखता रह गया। पूछने पर निषाद बोला कि आपके चरण-कमल देख कर मेरी तीनों कालों में कुशल है। मेरी करोड़ों पीढ़ियों का मंगल हो गया। वह कहने लगा कि जो राम के चरणों की वंदना नहीं करते उसे विधाता ने हत-भाग्य बनाया है। मैं कायर, बुद्धिहीन, अस्पृश्य हूं। राम ने मुझे अपनाकर भूषण बना दिया। निषादराज ने शत्रुघ्न को भी प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त किया। रानियों ने निषाद को लक्ष्मण-सा मानकर आशीष दिया।

मार्ग में भरद्वाज ऋषि के आश्रम में रात्रि-विश्राम कर भरत चित्रकूट पहुंचे। वहां वन-सम्पत्ति और पर्वत-श्रृंखलाओं का सुंदर-सुहावना स्वरूप देखकर गद्गद् हो गये। मुनियों की बहुत-सी कुटियां वहां थीं जिनका सौंदर्य अवर्णनीय था। मतवाले हाथी चिंघाड़ रहे थे। पपीहा, हंस, कोयल, चकवा, चकोर सभी अपनी प्रसन्न वाणी से वातावरण को सुंदर बना रहे थे। विभिन्न पशु-पक्षी आपसी वैरभाव भुला वन में विचरण करते थे। भौंरे गुनगुना रहे थे। मोर पंख फैलाये नाच रहे थे। वृक्ष तथा लताएं फल-फूलों से लदे थे। प्राकृतिक सुषमा से सम्पन्न विपिन में आनंद और मंगल की ज्योत्स्ना चतुर्दिक छायी हुई थी। जिस पर्वत पर राम विराजमान थे उसे देख भरत को लगा कि उन्हें अपनी तपस्या का फल मिल गया। निषादराज ने ऊपर पहुंचकर पाकर, जामुन, तमाल तथा आम के घने वृक्षों के बीच समस्त सुख देने वाला बृहद् वटवृक्ष दिखाया। नदी किनारे स्थित इन वृक्षों के पास राम की पर्णकुटी छायी हुई थी। राम-जानकी ने तुलसी के बिरवे रोपे थे। वट की छाया में जानकी ने वेदी बनाई थी, वहीं राम बैठकर मुनियों से पौराणिक चर्चाएं सुनते थे। भरत की आंखों से आंसू निकल पड़े। वहां की धूलि अपने मस्तक और आंखों पर मलते हुए भरत भावाभिभूत हो गये। सारे सिद्ध और साधक सोचने लगे कि यदि पृथ्वी पर भरत का आविर्भाव न होता तो अचल जड़ को कौन चैतन्य करता और चैतन्य को जड़ कौन करता।

आश्रम में प्रवेश करते ही भरत का सारा शोक-संताप दूर हो गया जैसे योगी को परमार्थ प्राप्त हो गया हो। लक्ष्मण राम के आगे खड़े थे। उनके सिर पर जटा, कमर में वल्कल और हाथ में धनुष-वाण था। मुनियों का समाज साथ लिये राम बैठे थे। राम का बाना मुनियों का था जैसे रति और कामदेव मुनि-वेश धारण कर शोभित हो रहें हो। राम अपने हाथों में धनुष-बाण फेर रहे थे। एक ही दृष्टि से हृदय की अशांति हर लेते। राम-सीता मुनियों की सभा में ऐसे शोभित थे मानो, ज्ञान की सभा में साक्षात् भक्ति और ईश्वर उपस्थित हों। शत्रुघ्न और अयोध्यावासियों सहित भरत प्रेम-विह्वल हो गये और 'स्वामी मेरी रक्षा कीजिए' कह कर धरती पर दंडवत कर गिर पड़े। लक्ष्मण ने भरत की वाणी पहचान ली और समझा भरत प्रणाम कर रहे हैं। भरत का मस्तक जमीन पर पड़ा था। लक्ष्मण का मन दुविधाग्रस्त हो गया। एक ओर भाई भरत से मिलने का उछाह, दूसरी ओर क्षणांश को भी सेवा से न हटने की इच्छा। वह राम की सेवा को ही अधिक महत्त्वपूर्ण मान सेवा में ही दत्तचित्त रहे, जैसे चढ़ी हुई पंतग कोई बरबस खींच ले। फिर बड़े ही विनम्र स्वभाव से लक्ष्मण नतमस्तक होकर राम से बोले कि भरत प्रणाम कर रहे हैं। राम प्रेम-व्याकुल हो गये। हड़बड़ी में कहीं वस्त्र, कहीं धनुष-बाण गिर पड़ा। भरत को उठाकर राम ने कसकर छाती से लगाया। इस दृश्य को देख लोग अपनी सुध-बुध खो बैठे। राम-भरत मिलन के प्रसंग का वर्णन कवियों के लिए असंभव है। भरत और राम के अगम्य प्रेम का वर्णन तो ईश्वर भी नहीं कर सकता। उन्होंने सीता के चरण-कमलों की धूलि को अपने मस्तक पर धारण किया। फिर राम सप्रेम शत्रुघ्न और निषादराज से मिले। प्रणाम करते लक्ष्मण से भरत बड़े प्रेम से मिले। लक्ष्मण ललककर शत्रुघ्न से मिले, फिर उन्होंने निषादराज को गले से लगाया। भरत-शत्रुघ्न ने सीता की चरणधूल सिर पर लगायी। सीता स्नेहवश सुध-बुध खो बैठीं उन्होंने मन ही मन आशीर्वाद दिया। दोनों भाइयों ने मुनिजनों को भी प्रणाम किया। सीता को अनुकूल पाकर

भरत के मन का भ्रम तथा शंका दूर हो गयी। निषादराज ने कहा कि वशिष्ठ के साथ सभी अयोध्यावासी आये हैं। वशिष्ठ के आगमन का समाचार सुनकर शत्रुघ्न को सीता के पास रोककर तीव्र गति से राम-लक्ष्मण उनके पास पहुंचे। लक्ष्मण सहित राम ने वशिष्ठ को प्रणाम किया। केवट ने भी दूर से ही वशिष्ठ को प्रणाम किया। उसे भी वशिष्ठ ने रामसखा जान छाती से लगा लिया। पाले से मुरझाई लता के समान राम ने माताओं को देखा। राम सबसे पहले कैकेयी से मिले और उन्हें सांत्वना दी। बाद में सभी माताओं से मिले और उन्हें 'काल गति ईश्वराधीन हैं' यह समझाकर संतुष्ट किया। राम ने अरुंधती तथा समस्त विशिष्ट महिलाओं को गंगा तथा पार्वती जैसा सम्मान दिया। कौशल्या ने राम को गोद में भर लिया। मां की अश्रुधारा ने उन्हें तर-ब-तर कर दिया। राम ने सबको आश्रम में आमंत्रित किया। सारी अयोध्या चित्रकूट में फैल गयी। सीता ने गुरु वशिष्ठ के चरण स्पर्श किये। उन्हें अरुंधती का भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सीता राजमाताओं को देखकर दुःखित हो उठीं। वे सादर सासुओं से मिलीं। करुणा छा गयी। सबके चरण स्पर्श कर सीता ने सदा सुहागिन होने का आशीर्वाद प्राप्त किया।

सबको बैठने का आदेश देकर वशिष्ठ ने दशरथ के स्वर्गवासी होने का समाचार दिया। प्रेम के कारण पिता का मरण सुन राम अत्यन्त दुःखी हो गये। इस कटु समाचार को सुन सीता, लक्ष्मण तथा सारा समाज रोने लगा। वशिष्ठ ने विविध प्रकार से राम को समझाया। सभी लोगों ने मंदाकिनी में स्नान किया। वेद की रीति के अनुसार राम ने वन में पिता की तर्पण-क्रिया की। दो दिन बाद राम ने गुरु से कहा कि सभी लोग बहुत दुःखी हैं। मेरा एक-एक पल युग के समान बीत रहा है। आप सबको लेकर अयोध्या लौट जाइये। राजधानी सूनी है। पिता नहीं हैं। वशिष्ठ ने कहा कि हम सब दुःखी हैं। इसलिए दो-चार दिन और तुम्हारा दर्शन कर विश्राम करना चाहते हैं। राम चुप हो गये। चित्रकूट में नागरिकों को दुःख था ही नहीं। अमृत के समान वहां झरने बह रहे थे। तालाबों में कमल खिले हुए थे। पक्षी मधुर ध्वनि कर रहे थे। दोनों हाथों में भरकर जंगल के कोल, किरात फल-फूल ला रहे थे। वे कुछ भी देने पर लेते नहीं थे और राम की गुहार लगाने लगते थे। वे कहते थे कि आप हमारे पाहुने हैं। वन आये हैं। हम आपको दे ही क्या सकते हैं? हमारी मित्रता तो ईंधन और पत्तों तक सीमित है। पाप में ही हमारी जिंदगी बीतती है। न पेट भरता है न वस्त्र मिलता है। राम के दर्शनों के प्रभाव से सारा दोष-दरिद्रता मिट गयी। कोल-किरातों का प्रेम देखकर अयोध्यावासी उनका भाग्य सराहने लगे। राम की कृपा से जैसे लोहे की नौका तैर रही थी। पल के समान दिन बीत रहे थे। सीता ने राजमाताओं को वश में कर लिया। कैकेयी पश्चात्ताप करने लगी। वह सोचने लगी कि किसी तरह पृथ्वी फट जाये और वह उसमें समा जाये। भरत चिंतित थे कि राम, पता नहीं अयोध्या चलेंगे या नहीं? राम का राज्याभिषेक कैसे हो, सभी यही सोच रहे थे। राम के सेवक भरत किसी निश्चय पर नहीं पहुंच पा रहे थे। सोचते-सोचते रात बीत गयी।

चित्रकूट की सभा में सभी एकत्रित हुए। वशिष्ठ ने कहा कि राम की महिमा अपरम्पार है। उनकी आज्ञा और रुचि से ही हमारा कल्याण होगा। राम का राज्याभिषेक सबको सुख देने वाला है। राम जैसे भी अयोध्या चलें, वही उपाय करना चाहिए। सबको यह नीतिमयी वाणी उचित लगी। कोई उत्तर नहीं दे रहा था। भरत ने प्रणाम करते हुए कहा कि रघुवंश में बड़े-बड़े सम्राट हुए। वे सभी रघुवंशी माता-पिता के रक्त से उत्पन्न हुए। शुभ-अशुभ ईश्वर के हाथ है। आपकी आज्ञा समस्त कल्याणों का मूल है। यह मेरा दुर्भाग्य है कि आप मुझसे उपाय पूछ रहे हैं। भरत पर गुरु का अपरम्पार स्नेह देखकर राम ने वशिष्ठ से कहा कि आपकी और पिता की शपथ खाकर कहता हूं कि भरत के समान संसार में कोई भाई नहीं हुआ। वह गुणवान हैं। मेरे छोटे भाई हैं। जो कुछ भरत कहें वही उचित है। वशिष्ठ ने भरत से कहा कि संकोच छोड़कर अपने हृदय की इच्छा भाई से कहो। जब भरत ने देखा कि सब कुछ मुझे ही संपन्न करना है तो चित्रकूट की सभा में खड़े हो गये। नेत्रों से जल प्रवाहित होने लगा। उन्होंने कहा कि मुझे जो कुछ कहना था, वह वशिष्ठ ने कह दिया। राम से जब मैं खेल में हार जाता था तो वे जबरन मुझे जिताते थे। उनको देखकर ही मैं तृप्त हो जाता हूं। यह अमिट प्रेम ईश्वर से न देखा गया। कैकेयी के बहाने भेद-भाव आ गया। मेरी मां कुटिल है। मैं कैसे सज्जन हूं? जैसे घोंघे से मोती और कोदों से धान पैदा नहीं होता वैसे ही कुटिल मां की संतान सरल नहीं होती। मैं अभागा पापों का फल भोग रहा हूं। मैं यह जानता हूं कि दशरथ की मृत्यु से प्रेम की प्रतिज्ञा सुरक्षित रह गई। माताएं दुःखी हैं। अयोध्यावासी शोक में विह्वल हैं। मैं इन सब कारणों का मूल हूं। राम सीता



भरत सील गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू।।
प्रभु करि कृपा पांवरीं दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।।

और लक्ष्मण को लेकर नंगे पांव वन चले आए, यह सुनकर भी मैं जिंदा रहा। निषाद का प्रेम देखकर भी मेरा कठोर हृदय फटा नहीं। जीते जी मैं जड़ की तरह सब कुछ सहता रहूंगा। मैं अपने दुःख से दुःखित हूं। भरत की इस तरह की शोकमयी वाणी सुनकर सभा शोकग्रस्त हो गयी। भरत को गुरु वशिष्ठ ने धैर्य दिया। राम उन्हें समझा कर कहने लगे कि व्यर्थ ग्लानि करते हो। समय की गति ईश्वर के हाथ है, उसमें जीव का दोष नहीं। तीनों कालों और तीनों लोकों के पुण्यात्मा पुरुष तुमसे निचले स्तर पर हैं। जो लोग किसी प्रकार का भी आरोप तुम पर लगायेंगे, उनका लोक-परलोक में सुख देने वाला है। बैर-प्रेम छिपाने से नहीं अमंगल को नष्ट कर लोक व परलोक में सुख देने वाला है। बैर-प्रेम छिपाने से नहीं छिपते। अपना हित-अनहित पशु-पक्षी भी पहचानते हैं। भरत! तुम्हें मैं अच्छी तरह जानता हूं। तुम मन की ग्लानि और शंकाएं छोड़ो। सारी स्थिति संभालो। जो तुम कहो मैं वही करूंगा। बताओ, क्या करूं? राम की यह विनय वाणी सुनकर सारा समाज हर्षित हो उठा।

भरत मन ही मन विचार करने लगे कि राम की आज्ञा-पालन में ही हित है। अपनी प्रतिज्ञा छोड़कर राम ने मुझे अमिट स्नेह दिया है और मेरा मान रखा है। सभी प्रकार मुझ पर राम ने विशेष कृपा की है। भरत ने करबद्ध कहा कि आप को अनुकूल जान अब मेरी सारी शंकाएं, सारा अज्ञान, सारा ताप नष्ट हो गया। मेरा डर आधारहीन था। राह भूल जाने पर सूर्य को दोषी नहीं ठहराना चाहिए। माता की कुटिलता, मेरा दुर्भाग्य, विधाता की विषम गति और काल की कठिनाई ने मुझे जैसे नष्ट ही कर दिया था। आपने शरणागत की रक्षा का अपना प्रण पाल कर मुझे बचा लिया। आप कल्पवृक्ष के समान हैं। आपके समीप पहुंच कर अच्छे-बुरे सभी को मनचाही वस्तु प्राप्त हो सकती है। गुरु और स्वामी का वास्तविक प्रेम देखकर मेरा क्षोभ दूर हो गया। क्षोभरहित चित्त से जो ठीक समझिये वैसी आज्ञा दीजिए जिससे मेरा हित हो। आपकी आज्ञा का पालन करने से कल्याण होगा। राजतिलक का सारा सामान साथ है। यदि आप उचित समझें तो मुझे शत्रुघ्न के साथ वन भेज दीजिए या मैं आपके साथ वन चलूं अथवा हम तीनों भाई वन चले जाते हैं। आप सीता को साथ ले अयोध्या लौट जाइये। हे देव! आपने मेरे ऊपर सारा बोझ डाल दिया है जबकि मैं न नीति जानता हूं, न धर्म, न विवेक। मेरा चित चंचल है। मैं अवगुणों का अथाह समुद्र हूं। आप सज्जन समझकर मेरी प्रशस्ति कर रहे हैं। आपका मन जो काम करने से प्रसन्न हो वही करें। आपकी आज्ञा का हम सभी पालन करेंगे। सारी आशंकाएं और बाधाएं मिट जायेंगी। भरत की वाणी सुन देवता मुदित हो गये। अयोध्यावासी दुविधा में पड़ गये। वनवासी तपस्वी भी आनंदित हुए। संकोचीं राम चुप रहे। उनका मौन देखकर सारी सभा संकोच में पड़ गयी।

उसी क्षण राजा जनक के चित्रकूट आगमन का समाचार लेकर राजदूत आए। राजदूत राम को मुनि के वेश में देख कर दुःखी हुए। राम ने जनक की कुशल-क्षेम पूछी। राजदूतों ने कहा, आपका आदर से पूछ लेना ही कुशल है। यों तो कुशलता तो दशरथ के साथ ही चली गयी। अयोध्या और जनकपुर दोनों अनाथ हो गये। दशरथ की मृत्यु से सभी शोक-विह्वल हो गये। सुख-दुःख से अप्रभावित जनक भी अन्य लोगों की तरह गहरे शोक में डूब गये। रानी के कुचक्र की बात सुन, जैसे मणिहीन सर्प अंधा हो जाता है वैसी ही विकट स्थिति जनक की हो गयी।

तत्काल जनक ने इस असमंजस की स्थिति को देखकर अपने चार कूटनीतिज्ञ राजदूतों को अयोध्या भेजा। उनको आज्ञा दी कि जाकर पता लगाओ कि भरत के मन में तो कोई दुर्भाव नहीं है। भरत चित्रकूट चल पड़े थे। वे दूत भरत और अयोध्या की सारी सूचनाएं जनक के पास ले गए। तत्पश्चात भरत के सद्गुण एवं सत्कार्यों को सुनकर समस्त जनकपुरी व्याकुल हो गयी। वे बिना विश्राम किये चित्रकूट चल पड़े और जब तक वहां नहीं पहुंचे, निरंतर चलते ही रहे। उन्होंने हम लोगों को यहां का समाचार लेने के लिए पहले से भेज दिया और स्वयं प्रयाग से चल पड़े हैं। जनक आये हैं, यह सुन कर सभी प्रसन्न हो गये। कुटिल कैकेयी ग्लानि से जलने लगी। सारे स्त्री-पुरुष मन ही मन यह विचार करने लगे कि हम लोग कुछ दिन और यहां रहेंगे। मनाने लगे कि राम और जानकी सम्राट और राजरानी बनकर अयोध्या को आनंद से परिपूर्ण करें। उजड़े हुए नगर को आबाद कर सारे समाज के साथ सुख से भरत राम को युवराज बनायें। ईश्वर से प्रार्थना करते हुए सभी मनाने लगे कि रामराज्य में ही हमारा निधन हो। अयोध्यावासियों के प्रेम के समक्ष मुनियों की वैराग्य और साधना भी निरर्थक थी। सभी लोग राम-दर्शन करते और मर्यादाकुशल राम सबको यथायोग्य सम्मान देते। सभी

राम के सहज स्वभाव और कोमलवाणी की चतुर्दिक चर्चा करने लगे। जनक का आगमन सुनकर राम और लक्ष्मण उत्कंठित मन से जनक की अगवानी के लिए आगे बढ़े। पूरे समाज के साथ जनक प्रेमोन्मत्त बढ़े आ रहे थे। वे अनुरक्त थे। परस्पर सादर दण्ड-प्रणाम हुआ। भाइयों के साथ राम जनक से मिले और उन्हें सारे समाज सहित लेकर आश्रम की तरफ बढ़े। शांत-रस रूपी जल से पूर्ण समुद्र के समान विराट आश्रम था। जनक का समाज मानों करुणा भरी नदी थी जिसे मानो राम शांत-रस के समुद्र में मिलाने ले जा रहे थे। करुणा की वह नदी जैसे वैराग्य के किनारों को डुबाती हुई प्रवाहित हो रही थी। लोगों की शोकमयी वाणी मानो नदी में मिलने वाले नाले थे। श्वासोच्छवास शांतिसागर की उर्मियां थीं। अगाध शोक के किनारे तोड़ती धारा थी। इस नदी में भय और भ्रम रूपी भंवर था, विद्वान मल्लाह थे पर नाव खेने की कोई सामर्थ्य नहीं रखता था। कोल-किरात रूपी यात्री अपार नदी को देख रम गये थे। हरहराती हुई जनक समाज रूपी वह नदी जब चित्रकूट आश्रम के समुद्र से संयुक्त हुई तो मानो समुद्र में ज्वार उमड़ आया। अयोध्या और जनक का राज-समाज ज्ञान, धैर्य, और संयम छोड़कर शोक व्याकुल था। लोग दशरथ के रूप, गुण और स्वभाव की प्रशंसा कर रो रहे थे। शांति के समुद्र में डूब-उतरा रहे थे। क्या हो गया? जनक की खिन्न दशा और उनका अगाध प्रेम देखकर लोग दांतों तले उंगलियां दबाये हुए थे।

वशिष्ठ ने जनक को धैर्य धारण करने का आदेश दिया। ज्ञानी मुनियों ने जनक को अनेक प्रकार से समझाया। वटवृक्ष की विराट छाया में सब लोग मलिन मन, वियोग पीड़ा से व्यथित, बिना जल पिये पड़े हुए थे। शतानंद और वशिष्ठ ने अयोध्या और जनकपुरी निवासियों को प्राचीन धर्म और ज्ञान की कहानियां सुना कर सान्त्वना दी।

राम ने वशिष्ठ से कहा कि किसी ने भी अन्न ग्रहण नहीं किया। वशिष्ठ ने भी इस बात का अनुमोदन किया। आश्रम में अन्न ग्रहण करना उचित नहीं समझा गया। जंगलवासियों द्वारा लाये गये फल-फूलों से उनकी आत्मा तृप्त हुई। चिदानंद भगवान राम के सान्निध्य में चार दिन बीत गये। लोग सोचने लगे कि राम-सीता के बिना लौटना उचित नहीं; जहां इनके दर्शन हों, वहीं बसना उचित है।

सीता की मां सुनैना द्वारा भेजी हुई दासियां आयीं। कौशल्या ने उन्हें सम्मान दिया। सुनैना से मिलने पर सभी के नेत्रों में जल भर आया। सुनैना बोलीं—विधाता, निर्दोष-सुकुमार लोगों को कठोर दंड दे रहा है। चारों ओर अमंगल का साम्राज्य है, शुभ कहीं नहीं है। सुमित्रा बोली, विधाता कभी निर्माण और पालन करता है, कभी विनाश। बच्चों के खेल-सी विधाता की गति है। सभी लोग दु:ख-निमग्न हो गये। कौशल्या ने उत्तर दिया कि दोष किसी का नहीं। ईश्वर की गति कोई नहीं जानता। ईश्वर की आज्ञा सबके मस्तक पर है। संहार, उत्पत्ति, पालन सभी ईश्वर की आज्ञा से परिचालित होते हैं। भरत और दशरथ का स्मरण हम लोग सिर्फ अपने स्वार्थ से कर रहे हैं। सुनैना ने कौशल्या की सत्य वाणी का समर्थन किया। कौशल्या ने कहा कि राम, सीता और लक्ष्मण वन जायें, इसका परिणाम अच्छा ही होगा। मुझे तो मात्र भरत की चिता है। मैंने ईश्वर की कृपा और आपके आशीर्वाद से चार पुत्र एवं चार पुत्रवधुएं पायी हैं। मैं सबकी शपथ खाकर कहती हूं कि भरत की महानता, विद्या, विवेक, भक्ति, विश्वास और परहित का वर्णन करने में उसी प्रकार मेरी जिह्वा असमर्थ है जैसे सीपी समुद्र को उलीचने में। भरत कुल-दीपक हैं।

दशरथ भी यही मानते थे। जैसे सोने की परख कसौटी पर और मनुष्य की परख दु:ख पड़ने पर होती है इसी तरह भरत की भी परीक्षा हो चुकी। लोग शोक विह्वल हो गये। धैर्य धारणकर कौशल्या ने मिथिला की राजरानी सुनैना से कहा कि आप जनक से कहिए कि लक्ष्मण घर जाएं और भरत राम के साथ वन में रहें। यदि यह व्यवस्था हो जाए तो सबका दु:ख-शोक दूर हो सकता है। सुमित्रा ने कहा कि रात के दो पहर बीत गये। आप सभी लोग आराम करने जाइये। कौशल्या बोलीं—अब आप डेरे पर चलिए। अब या तो ईश्वरेच्छा है या जनकराज सहायक हैं।

सुनैना ने उनके चरण पकड़कर कहा कि रघुकुल की महारानी और राम की मा होते हुए यह विनय उचित ही है। महापुरुष अपने से नीचों का भी आदर करते हैं। आग धुएं को और पहाड़ तृणों को माथे पर धारण करते हैं। राजा जनक तो मनसा-वाचा-कर्मणा आपके सेवक हैं। आपकी क्या सहायता कर सकते हैं? दीपक सूर्य की क्या सहायता करेगा? देवताओं को सुखी कर राम लौट आयेंगे। बाद में अयोध्या



कह रिषिबधू सरस मृदुबानी। नारिधर्म कछु ब्याज बखानी।।
धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपद काल परिखिअहिं चारी।।

का राज करेंगे। प्रजा एवं अयोध्यावासी सभी सुखी रहेंगे—यह सब याज्ञवल्क्य मुनि के सत्य कथन हैं।

सीता को लेकर सुनैना आश्रम में चल पड़ीं। जानकी को तपस्विनी के वेश में देखकर सभी लोग शोकाकुल हो गये। जनक ने सीता को गले लगाया। सीता की व्याकुलता का बांध टूट गया। जनक ने कहा कि पुत्री! तुमने पिता और पति दोनों के कुलों को पवित्र बना दिया। तुम्हारी कीर्ति गंगा नदी से भी अधिक महिमामयी है और करोड़ों ब्रह्माडों में बह रही है। तुम्हारी कीर्ति-नदी ने न जाने कितने तीर्थ स्थापित कर दिये। संकोच के मारे सीता धरती में गड़ने लगीं। मन ही मन सोचने लगीं कि यहां रात में रहना अच्छा नहीं। रात में सीता अपने प्रियतम की कुटी में लौट आयीं।

चतुर रानी सुनैना ने मधुर-वाणी में सोने में सुगंध व अमृत में चन्द्रमा से सार लेकर भरत के व्यवहार का वर्णन किया। सुनकर जनक गद्गद् हो उठे। जनक ने कहा कि भरत का चरित्र सांसारिक जन्म-मरण से मुक्ति प्रदान करने वाला है। धर्म, राजनीति और ब्रह्मज्ञान की मेरी सीमाएं भरत की महिमा की छाया तक छू सकने में असमर्थ हैं। भरत का यश, धर्म, शील, गुण और विमल ऐश्वर्य गंगा की धारा से पवित्र और अमृत से भी बढ़कर मधुर है। भरत निरुपम तथा गुणों की खान हैं। किस वाणी से उनकी कीर्ति और यश का बखान किया जा सकता है? भरत की महिमा को वाणीबद्ध करना असंभव है। सूखी धरती पर मछली भले ही चलने लगे पर भरत की अमिट महिमा का वर्णन असंभव है। उसे तो राम को छोड़कर और कोई नहीं जानता। जनक ने कहा कि सभी लोग चाहते हैं कि लक्ष्मण घर और भरत वन जाएं परन्तु भरत और राम का आपसी प्रेम बुद्धि और विचार से परे है। राम जहां समरसता की सीमा हैं, वहीं भरत स्नेह और ममता की सीमा हैं। सुनैना और जनक परस्पर राम और भरत के गुणों की रात भर चर्चा करते रहे। भरत के गुणगान में रात एक क्षण के समान बीत गयी।

राम दूसरे दिन वशिष्ठ के पास आये और विनम्र भाव से बोले कि सभी माताएं और सारे अयोध्या-निवासी शोकविह्वल हो दुःख भोग रहे हैं। जनक भी राज-समाज सहित क्लेश पा रहे हैं। आप जो उचित समझें वही करें। आपके हाथों ही सबका कल्याण है। राम की वाणी सुनकर पुलकित वशिष्ठ बोले कि राम! तुम्हारे अभाव में जनकपुरी और अयोध्या दोनों राज-समाज नरक के समान हैं। तुम प्राणों के प्राण हो। जीवन और सुख के दाता हो। तुम्हें छोड़कर जिन्हें घर सुहाता है ईश्वर उनके विपरीत हैं। वह सुख, धर्म और कर्म राख के समान है जिसमें आपके चरण-कमलों का प्रेम न हो, वह योग कुयोग और वह ज्ञान अज्ञान है जहां आपकी प्रधानता न हो। तुम्हारे अभाव में सबका मन दुःखी है। किसके हृदय में क्या है वह छिपा नहीं है। आप जो आज्ञा देंगे सभी उसका पालन करेंगे। राम को निहारते हुए स्नेहसिक्त वशिष्ठ जनक के पास आये। उन्होंने राम का सहज शील स्वभाव कहा। वे जनक से बोले कि आप ऐसी आज्ञा दीजिए कि जिससे सबका हित हो। आप पवित्र, ज्ञानी, महान और धैर्यशाली हैं। इस असमंजस की स्थिति को समाप्त करना केवल आपके वश में है। वशिष्ठ की वाणी सुनकर जनक प्रेम-विह्वल हो गये। उनकी दशा देख जैसे ज्ञानऔर वैराग्य को भी वैराग्य हो गया। वे मन में सोचने लगे कि मैंने चित्रकूट आकर अच्छा नहीं किया। दशरथ ने राम को वन भेजा और प्रेम में जीवन न्यौछावर कर दिया। हम वन से आगे के वन में भेजकर जीते जी लौट जाएंगे। यह हमारे प्रेम की न्यूनता है। तपस्वी, मुनि और ब्राह्मण सभी व्याकुल हो गये। धैर्य धरकर जनक भरत के पास आये। भरत से कहा कि राम का स्वभाव और धर्म सब तुम जानते हो। वे स्नेही और संकोची हैं। अब तुम जो आज्ञा दो वही राम से कहें।

भरत पुलकित हो उठे। धैर्य धारण कर जनक से बोले कि आप पिता के समान प्रिय और पूज्य हैं। माता-पिता से भी अधिक हितकारी गुरु वशिष्ठ हैं। विश्वामित्र आदि मुनिजन हैं। आप स्वयं ज्ञान के समुद्र हैं। हे स्वामी! मुझे तो बच्चा, सेवक व अनुगामी मान आज्ञा दें। मैं न बोलूं तो मलिन और बोलूं तो बावला कहलाऊंगा। मेरा कुछ भी कहना छोटे मुंह बड़ी बात होगी। ईश्वर को मेरे प्रतिकूल जान क्षमा करें। संसार में सेवा-धर्म सबसे कठिन है। स्वामी के आदेश का पालन और अपने स्वार्थ में कट्टर विरोध है। स्वार्थ और प्रेम अंधे हाते हैं। दोनों ही स्थितियों में मेरा बोलना ठीक नहीं। स्वामी! मेरे तथा सबके हित में जो ठीक हो वह आप कीजिए। भरत का संक्षिप्त कथन सुगम और अगम, सुंदर, कोमल और कठोर है, उनमें अक्षर थोड़े हैं पर अर्थ गूढ़ तथा व्यापक है। शीशे में अपनी परछाईं जैसे नहीं पकड़ी जा सकती, वैसे ही भरत की वाणी का रहस्य नहीं जाना जा सकता।

जनक, भरत, मुनिजन एवं समस्त राज-समाज राम के आश्रम में आया।

देवता चिंतित थे कि न जाने क्या हो? इन्द्र ने तो यहां तक कहा कि यदि सब पंचों ने मिलकर माया न रची तो राम प्रेम और संकोचवश कहीं अयोध्या न लौट जायें। सभी सरस्वती की शरण में गये और भरत की बुद्धि फेरने की प्रार्थना की। सरस्वती ने कहा कि भरत-से रामभक्त की बुद्धि तो ब्रह्मा, विष्णु की माया भी नहीं फिरा सकती। भरत के हृदय में सीता-राम का निवास है। जहां सूर्य चमक रहा हो वहां अंधकार कैसे प्रवेश कर सकता है? ऐसा कह सरस्वती ब्रह्म-लोक चली गईं।

समस्त राज-समाज राम के समक्ष बैठा हुआ था। वशिष्ठ ने सारी सभा को सम्बोधित करते हुए अत्यंत सहज-सटीक वाणी में कहा कि मेरी राय है कि राम जो आज्ञा दें वही सब लोग करें।

राम ने कहा कि जहां आप और जनक उपस्थित हों वहां मेरा कुछ भी कहना हास्यास्पद है। आप दोनों जो कहेंगे, वह मुझे शिरोधार्य होगा। सभी लोग भरत का मुंह देखने लगे। जनक और सारी सभा को संकोच में देख और असमंजसमयी परिस्थिति का साक्षात्कार कर भरत ने करबद्ध निवेदन किया, प्रभु! आप मेरे पिता, माता, मित्र, गुरु तथा स्वामी हैं। मेरे परम हितैषी तथा अंतर्यामी हैं। आप सरल, श्रेष्ठ स्वामी, शील की खान, सबके रक्षक, सर्वज्ञ और विवेकशील हैं। गुण ग्राहक और दुर्गुणों को नष्ट करने वाले हैं। आप-सा महान स्वामी और मुझ-सा नीच सेवक कोई नहीं है। अपने मोह को न रोक सकने के कारण पिता की आज्ञा टाल कर आपकी इच्छा के प्रतिकूल सारे समाज को लेकर मैं यहां आ गया हूं। संसार में आपकी इच्छा के परे न कुछ देखा न सुना। एकमात्र मैं ही ढिठाई कर रहा हूं। परन्तु प्रभु ने धृष्टता को भी स्नेह और सेवा मान लिया। हे ईश्वर! अब मुझे आज्ञा दीजिए।

भरत सील गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू।।
प्रभु करि कृपा पांवरीं दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।।

अनेक प्रकार से भरत को समझाकर राम ने संतुष्ट किया। राम भरत के प्रेम के वशीभूत थे। राम ने कृपा करके सारे समाज की उपस्थिति में भरत को अपने खड़ाऊं दिये। भरत ने उन्हें बड़े आदर से अपने सिर पर धारण कर लिया। भरत ने अनुभव किया कि राम-चरणों के दोनों खड़ाऊं प्रजा के प्राणों की रक्षा के लिए दो पहरेदार थे। भरत के स्नेह रूपी रत्न को रखने के सुंदर पात्र थे और जीव के साधन के लिए मानो राम-नाम के दो अक्षर थे। रघुकुल की रक्षा के दो किवाड़ थे और श्रेष्ठ कर्मों के लिए दो हाथ थे। सीता और राम के अयोध्या में रहते जो सुख मिलता था, उसी सुख की कल्पना भरत ने इस अवलम्ब-सी खड़ाऊं मिलने पर की।

राम और लक्ष्मण ने जनक को मस्तक झुकाया और उनकी विनय भाव से बड़ाई करते हुए कहा कि आप कृपा-कर वन आये। आप को बड़ा कष्ट हुआ। अब आप नगर लौट जाइये। जनक ने आशीर्वाद दिया। राम और लक्ष्मण अपनी सास के पास गये। उनका आशीर्वाद लिया। विश्वामित्र, वामदेव और समस्त परिवार के लोगों तथा सारे समाज और मंत्रियों को राम ने विदा किया। राम ने कैकेयी के चरणों की वंदना की। बड़े प्रेम से कैकेयी से मिलकर उनका सारा संकोच और लज्जा मिटाते हुए उनकी पालकी सजाकर राम ने लौटा दिया। सीता ने सासुओं को प्रणाम किया। सासुओं ने आशीर्वाद दिया। दोनों ओर प्रबल प्रेम भावना हिलोरें ले रही थी। बार-बार दोनों भाई माताओं से गले मिले फिर राम ने उन्हें समझाकर पालकी पर चढ़ा दिया। सीता-राम की मूर्ति हृदय में बसाए लोग परबस-से चले जा रहे थे। हाथी, घोड़े थके हुए मन मारे लौट रहे थे। राम, लक्ष्मण और जानकी ने वशिष्ठ और अरुंधती के चरणों की वंदना की।

राम, सीता, लक्ष्मण सुंदर वटवृक्ष की छाया में बैठकर अपने प्रियजनों के प्रेम-वियोग में बिलखने लगे। पुरवासियों की चर्चा करते हुए जिस अमर प्रेम और विश्वास को राम ने दिखाया उससे चित्रकूट के चर-अचर सभी उदास हो गये। उधर सभी लोग बेहाल, राम की चर्चा करते हुए चले जा रहे थे। बिना खाये-पिये गंगा पार की। तमसा नदी को पारकर वे लोग किसी तरह चौथे दिन अयोध्या आ गये। जनक सारा राज-काज सुव्यवस्थित कराकर मिथिला चले गये। सभी लोग राम के दर्शन के लिए साधना और तपस्या करने लगे। सारे राज कर्मचारी अपने-अपने कार्यों में लग गये। ब्राह्मणों को बुलाकर भरत ने कहा कि आप जो सर्वोचित कार्य कराना ठीक समझें, आज्ञा दीजिए। सबको व्यवस्थित कर भरत शत्रुघ्न सहित वशिष्ठ के पास आकर बोले कि यदि आपकी आज्ञा हो तो

नियमपूर्वक कहूं। वशिष्ठ ने कहा जो तुम करोगे, वही उचित धर्म होगा। ज्योतिषी ने शुभ समय शोध कर राम की चरण-पादुका को राजसिंहासन पर बैठाया।

भरत नंदीग्राम में पर्णकुटी बनाकर निवास करने लगे। भरत राम की तरह मुनियों जैसा वस्त्र पहनकर धरती में गड्ढा बनाकर रहते थे। ऋषितुल्य जीवन-यापन करते थे। भरत भूषण-वस्त्र त्याग कर मन तथा वाणी से राम का स्मरण करने लगे। अयोध्या में विरक्त होकर भरत उसी तरह से रह रहे थे जैसे चंपा के बाग में भौंरा। राम के प्रेम-पात्र भरत के लिए यह बड़ी बात न थी। तपस्या से भरत का शरीर दुर्बल होने लगा। लेकिन बल और शोभा पूर्णतः बनी रही। राम के प्रति उनका प्रेम निरंतर बढ़ता जा रहा था। शम, दम, संयम, नियमादि भरत के मन रूपी निर्मल शरदाकाश में तारों के समान थे। राम के प्रति विश्वास ध्रुवतारा था, चौदह वर्ष की अवधि पूर्णिमा की रात्रि के समान थी। राम की याद मानो आकाश-गंगा थी। राम-प्रेम ही निष्कलंक चन्द्रमा था। जो अपने समाज (नक्षत्रों) सहित सुशोभित था। भरत का रहन-सहन, विवेक, कार्य, ऐश्वर्य और निर्मलता का वर्णन करते श्रेष्ठ कवि सकुचाते थे। उनका वर्णन तो शेष, गणेश व सरस्वती के लिए भी अगम्य था। भरत चरण-पादुका की आज्ञा लेकर राज-काज चलाते थे। राम-सीता का स्मरण कर भरत पुलकित हो जाते। जिह्वा राम नाम रटती रहती। लक्ष्मण राम सीता घोर जंगल में थे। अयोध्या में भरत तपस्या की कसौटी पर अपने को कस रहे थे। भरत का पवित्र आचरण महापापी कलियुग के क्लेश को समाप्त करने वाला तथा भवसागर से पार उतारने वाला है।

एक बार राम ने जंगल से पुष्प चुनकर अपने हाथों से हार बनाया और रुचिपूर्वक सीता को पहनाया। स्फटिक शिला पर सीता-राम विराजमान थे। देवराज इन्द्र का मूर्ख पुत्र जयंत कौए का रूप धारण कर राम की शक्ति की थाह लेने चला, जैसे चींटी समुद्र की थाह लेना चाहे। जयंत सीता के चरण में चोंच मारकर भागा। सीता के चरणों से रक्त प्रवाहित होने लगा। राम को जब पता चला तो उन्होंने जयंत को देखा और धनुष से बाण संधान कर दिया। दयालु और स्नेही राम से मूर्ख जयंत ने छल किया। मंत्रसिद्ध बाण जयंत के पीछे लग चला। जयंत भागता रहा। इन्द्र के पास गया। परन्तु पिता ने राम-विरोधी को शरण में नहीं रखा। राम के विद्रोही के लिए माता मृत्यु के समान, पिता यमराज की तरह तथा अमृत विष के समान हो जाता है। राम से विमुख मनुष्य के लिए सारा संसार आग से भी बढ़ कर तपाने वाला है।

कोमल हृदय नारद से जयंत का दुःख नहीं देखा गया। उन्होंने उसे तुरन्त राम के पास जाकर क्षमा-याचना करने की राय दी। राम के पास जाकर जयंत पैरों पर गिर पड़ा और कहने लगा, मैं आपकी अतुलित शक्ति से अपरिचित था। मेरी रक्षा कीजिए। राम के अमोघ बाण ने जयंत की एक आंख फोड़ कर उसे काना कर छोड़ दिया।

राम ने चित्रकूट में रहकर अनेक दिवस बिताये। वे एकांत चाहते थे। भीड़ और परिचय से बचना चाहते थे। इसलिए राम, लक्ष्मण, सीता मुनियों से विदा लेकर चित्रकूट से चलकर अत्रि मुनि के आश्रम में आ गये। अत्रि मुनि पुलकित शरीर राम की ओर दौड़ पड़े। राम के दण्डवत करते ही अत्रि ने उन्हें हृदय से लगाया और प्रेमाश्रुओं से दोनों ही भीग गये। आश्रम में लाकर उन्हें स्वादिष्ट फल-फूल का भोजन कराकर सम्मानित किया।

कह रिषि बधू सरस मृदु बानी। नारिधर्म कछु ब्याज बखानी।।
धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपद काल परिखअहिं चारी।।

सुशील और विनीत भाव सम्पन्न जानकी ने अत्रि-पत्नी अनुसूया के चरणों का स्पर्श किया। अनुसूया प्रमुदित हो गयीं। सीता को अपने पास बैठाया। उसने सदा सुंदर और नये रहने वाले आभूषण और वस्त्र सीता को पहनाये। अनुसूया ने कहा कि हे सीता! पिता, भाई सब एक समय तक हित करते हैं। परन्तु पति निरंतर अनेकानेक आनन्द देने वाला है। धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री की विपत्ति के आड़े क्षणों में परीक्षा होती है। वृद्ध, रोगग्रसित, अंधे धनहीन तथा बहरे पति का भी अपमान करने पर स्त्री नरकगामी होती है। इस संसार में चार प्रकार की पतिव्रता स्त्रियां हैं। उत्तम पतिव्रता नारी के मन में ऐसा भाव रहता है कि संसार में कोई भी दूसरा पुरुष (पति के अतिरिक्त) स्वप्न में भी नहीं है। मध्यम वर्ग की स्त्रियां परपुरुष को भाई, पिता या पुत्र की भांति देखती हैं। जो स्त्री धर्म का आश्रय लेकर कुल-मर्यादा का निरंतर ध्यान रखती है और पति पर निष्ठा रखती है, वह निकृष्ट पतिव्रता है। जो स्त्री परपुरुष के संग का अवसर न पाने के कारण भय से पवित्र रहती है उसे

अधम कहा जाता है। जो नारी अन्य पुरुष से भोग-विलास करती है वह घोर नरक में जाती है। क्षण भर के सुख के लिए वह मूर्ख करोड़ों युग तक दुख सहती रहती है। जो स्त्री पतिव्रत धर्म धारण करती है वह बिना किसी दुखद परिस्थिति का सामना करती हुई परमगति को प्राप्त होती है। पति के प्रतिकूल चलने वाली नारी युवावस्था में ही विधवा हो जाती है। सहज पवित्र नारी को पति की सेवा करने से ईश्वर की गति प्राप्त होती है। पतिव्रत धर्म व उसका यश चारों वेदों में लिखा है। सीता! तुम्हारे नाम का स्मरण कर स्त्रियां पतिव्रत धर्म का पालन करेंगी। राम तुम्हें प्राणों से बढ़कर प्रिय हैं। यह उपदेश तो मैं संसार के लिए दे रही हूं।

यह सुनकर जानकी अत्यंत प्रसन्न हुईं। उन्होंने पुनः अनुसूया का चरण-स्पर्श किया। राम ने अत्रि से कहा कि आपकी आज्ञा हो तो दूसरे वन की ओर प्रस्थान करूं। अपना सेवक समझकर मुझ पर कृपा कीजिये।

अत्रि ने कहा कि ब्रह्मां, शंकर सनकादि जैसे तत्ववेत्ता जिस ईश्वर की कृपा के लिए तरसते हैं वही बिना कारण के प्रेम करने वाले दीनबंधु प्रभु राम मुझसे ऐसे विनीत वचन कह रहे हैं। इसीलिए चतुर लक्ष्मी ने सभी देवताओं को छोड़कर आपको वरा। सर्वश्रेष्ठ ईश्वर क्यों न इतना शीलवान हो? मैं कैसे कहूं कि आप अन्य किसी वन में जायें? यह कहकर उनकी वाणी एकाएक रुक गयी। आंखों से आंसू बहने लगे। अत्रि सोचने लगे कि ऐसा कौन पवित्र तप किया था जिससे जप, योग, धर्म सफल हुआ? राम का सुंदर यश कलियुग के पापों का नाश करने वाला तथा मन को वश में रखने वाला है। उसमें न ज्ञान है, न योग, न जप। पापपूर्ण तथा धर्म, ज्ञान, योग व जप से हीन लोग भी कलियुग में शोक छोड़कर राम को भजते हैं।

अत्रि के चरणों पर मस्तक झुकाकर राम वन की ओर चल पड़े, आगे-आगे राम, उनके पीछे लक्ष्मण और बीच में सीता ऐसी सुशोभित हो रही थी जैसे ब्रह्म और जीव के बीच में माया।

राम दूसरे वन के लिए चल पड़े। जंगल, पर्वतं, नदी के किनारे-किनारे राम अगे बढ़ते रहे। मेघ छाया करते थे। रास्ते में विराध नामक राक्षस मिला। राम ने उसे मार डाला। वह दिव्य रूप पा गया। तत्पश्चात राम शरभंग मुनि के आश्रम में आये। राम को प्रत्यक्ष पाकर शरभंग का जीवन धन्य हो गया। श्रेष्ठ मुनि शरभंग के नेत्र रूपी भंवरे राम रूपी मुख-कमल-मकरंद का छक कर रसपान करने लगे। शरभंग ने राम से कहा कि आप शंकर के मानस राजहंस हैं। ब्रह्मलोक जा रहा था। परन्तु आपके आगमन का शुभ समाचार सुनकर निरंतर आपका रास्ता निहार रहा था। मैं साधनहीन हूं। आपने अपना सेवक समझकर मुझ पर दया की। यह मुझ पर विशेष कृतज्ञता नहीं, वरन आपने अपनी दीनदयालुता की विरद प्रतिज्ञा को ही पूरा किया। जब तक इस शरीर को छोड़कर मैं मुक्ति न पा जाऊं तब तक आप मेरे कल्याण के लिए हमारे आश्रम में रहिए। अपना सारा जप-तप प्रभु को देकर शरभंग मुनि ने अमिट भक्ति का वर प्राप्त किया और तत्काल चिता सजाकर उस पर बैठ गये। नील मेघ-श्यामल शरीर वाले राम सीता और लक्ष्मण सहित मेरे हृदय में निवास करें, ऐसा कहते हुए शरभंग ने शरीर त्याग दिया और इस असार संसार से मुक्त होकर वैकुण्ठ लोक प्राप्त किया।

निसिचर हीन करउं महि भुज उठाई पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाई सुख दीन्ह।।

शरभंग के भस्मीभूत अवशेष को देखकर मुनि लोग राम की प्रशंसा करने लगे। राम अगले वन की ओर बढ़ने लगे। अनेक मुनिगण उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। चारों ओर बिखरी हड्डियों को देखकर दयार्द्र होकर राम मुनियों से पूछने लगे कि ये हड्डियों कैसी हैं? मुनि लोग बोले कि आप तो सब कुछ जानते हैं। हमसे क्यों पूछ रहे हैं? राक्षसों ने मुनियों का भक्षण किया है। उन्हीं के अस्थि-अवशेष यहां पर पड़े हैं। यह दुःखद समाचार सुनकर राम ने भुजा उठा कर प्रण किया कि इस धरती को राक्षसों से रहित कर दूंगा। सभी मुनियों के आश्रमों में जाकर राम ने उन्हें सुखी किया। अगस्त्य के एक सुशील शिष्य सुतीक्ष्ण राम के अनन्य भक्त थे। जब उन्होंने सुना कि राम लक्ष्मण सहित आ रहे हैं तो वह आनंद में भरकर दौड़ पड़े। उन्हें यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि राम लक्ष्मण सहित उस जैसे मूढ़ पर दया करेंगे। सुतीक्ष्ण ने सोचा कि मैंने तो जप-तप किया नहीं था, न राम के प्रति मन में दृढ़ भक्ति है, बस एक ही आधार है कि राम तो नितांत निराश्रय के आश्रय हैं। यह सोच सुतीक्ष्ण राम के गुणों को गा-गाकर नृत्य करने लगे। उसकी अविरल और अमिट भक्ति-भावना देखकर उसके हृदय में बस गये। मुनि अविचल समाधि अवस्था में पहुंच गए। राम ने उन्हें अपना राम रूप छिपा



निसिचर हीन करउं महि भुज उठाइ पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह।।

कर चतुर्भुज रूप दिखाया। मुनि की समाधि टूट गयी। वह व्याकुल हो गये। आंखें खोलीं तो सामने राम-सीता और लक्ष्मण खड़े थे। सुतीक्ष्ण डण्डे की तरह राम के चरणों पर गिर पड़े। राम ने उन्हें गले से लगाया। उनसे गले मिलते ही राम इस प्रकार सुशोभित होने लगे जैसे तमाल का वृक्ष सोने से मिल रहा हो। उन्होंने राम को अपने आश्रम में लाकर उनका पूजन किया। सुतीक्ष्ण ने कहा कि भगवान! मेरी प्रार्थना सुनिये। आपकी महिमा अपरम्पार है और मैं अल्पबुद्धि हूं, आपकी महिमा के समक्ष मेरी बुद्धि सूर्य के प्रकाश के सामने जुगनू की तरह है। हे नीलकमल की माला से श्यामवर्ण, वल्कल वस्त्र धारण करने वाले, धनुष-बाण धारी राम! मैं आपको प्रणाम करता हूं। आप मोह रूपी वन को जलाने के लिए दावानल हैं। राक्षस रूपी हाथी को हराने के लिए आप सिंह के समान हैं। रक्तकमल वर्ण नेत्र वाले, सुन्दर वेश वाले, सीता के नेत्र-चकोर के लिए चंद्रमा-सदृश, शंकर के विशाल मानसहंस राम! आप संशय रूपी सर्प को नष्ट करने को गरुड़ के समान हैं। संसार के दुखों को मिटाने वाले राम! आप निर्गुण और सगुण से परे हैं। अखण्ड पृथ्वी का भार उतारने का दायित्व आपका है। क्रोध, मोह तथा काम संसार रूपी समुद्र को पार करने के लिए आप सेतु हैं। आप शक्ति के धाम हैं। आपका नाम कलियुग के मूल को नष्ट करने वाला है। आप सब के हृदय में निरन्तर वास करने वाले हैं। सीता, लक्ष्मण सहित वन में विचरण करने वाला आपका रूप अनुपमेय हैं। मैं सेवक हूं और आप मेरे स्वामी हैं, यही भावना निरंतर मेरे मन में बनी रहे। यही आशीर्वाद प्रदान कीजिए।

राम पुलकित हो गये। उन्होंने कहा कि मैं प्रसन्न हूं। वर मांगो। सुतीक्ष्ण बोले, मैं सच-झूठ का भेद नहीं जानता, न मैंने कभी वर की याचना की। आप को जो अच्छा लगे, मुझे दे दीजिए। राम ने सुतीक्ष्ण को अनन्य भक्ति व ज्ञान का वर दिया। सुतीक्ष्ण बोले—जो आपने वर दिया, वह मैंने पा लिया। अब मेरी आकांक्षा सुनिये। आप सीता, लक्ष्मण सहित चन्द्रमा के समान मेरे मन रूपी आकाश में निरंतर विराजमान रहें। सुतीक्ष्ण भी राम के साथ गुरु-दर्शन को चल पड़े। अनुपम भक्ति का वर्णन करते-करते अगस्त्य मुनि का आश्रम आ गया।

सुतीक्ष्ण ने पहले जाकर अगस्त्य को राम के आगमन की सूचना दी। राम के आगमन का समाचार सुनते ही अगस्त्य मुनि दौड़े आये। राम को देखते ही उनकी आंखों में प्रेमाश्रु छा गये। दोनों भाई मुनि अगस्त्य के चरणों पर गिर पड़े। तत्पश्चात मुनि ने कुशल-क्षेम पूछी और कहा कि मैं अत्यंत भाग्यशाली हूं। वहां जितने भी अन्य मुनि थे, वे राम के दर्शन से आनंदित हो उठे। राम ऋषियों के समूह में शरद ऋतु के पूर्ण चन्द्रमा के समान बैठे थे। ऋषिगण चकोर की भांति राम के मुख-चन्द्र को निरख रहे थे। राम ने ऋषियों से कहा कि मैं किस कारण वन में आया हूं, यह किसी से छिपा नहीं है? आप लोग बतायें कि मैं किस प्रकार मुनि-द्रोहियों का नाश करूं? अगस्त्य ने कहा कि आपने मुझसे ही क्या सोचकर यह प्रश्न किया। आपकी महिमा बहुत बड़ी है। आपके भजन के प्रभाव से ही आपकी माया के संबंध में कुछ जानता हूं। आपकी माया गूलर के वृक्ष के समान है। ब्रह्मांड-समूह उसके फल हैं। चराचर जीव-जन्तु इन फलों में बसने वाले कीड़े हैं। जो अपने उस सीमित संसार के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते, उन ब्रह्मांड रूपी फलों का भक्षक काल भी आपसे भयाकुल है। आप तीनों लोक के स्वामी हैं और मुझसे सामान्य मनुष्य की तरह पूछते हैं। मेरे हृदय में सदा सीता और लक्ष्मण सहित वास करें, यही वर मांगता हूं। पास ही दण्डक वन में अत्यंत मनोहर पंचवटी नामक स्थान है। वहां आप कृपाकर रहिए और मुनियों की रक्षा कीजिए। राम पंचवटी में पहुंच गये। मार्ग में गीधराज जटायु मिला। उससे मित्रता करके राम गोदावरी तट पर पर्णकुटी बनाकर रहने लगे। गोदावरी के तट पर राम के निवास से मुनिगण सुखी रहने लगे। सरिता, ताल अद्भुत आभा से सुशोभित हो उठे थे। पशु-पक्षियों का समूह उन्मत्त हो उठा।

एक दिन राम सुखपूर्वक आसीन थे। लक्ष्मण ने निश्छल भाव से ज्ञान, वैराग्य, माया तथा भक्ति का स्वरूप और ईश्वर तथा जीव के भेद के बारे में उनसे पूछा।

राम ने लक्ष्मण से कहा कि एकाग्र चित्त होकर सुनो। अहंकार या 'मेरे' और 'तेरे' का भाव ही माया है। समस्त जीव उसी के वश में हैं। इन्द्रियों के विषय में जहां तक मन दौड़ता है, उस सभी को माया समझो। माया के भी दो भेद हैं—विद्या और अविद्या। अविद्या दुखकारी है। अविद्या के वशीभूत जीव भवसागर में पड़ा है। विद्या ईश्वर से प्रेरित होकर जगत की रचना करती हैं। यह गुणों से परिपूर्ण है। जहां अहं का जरा भी भाव नहीं है वहां ज्ञान है। जो सभी जीवों में समान भाव से ब्रह्म को देखता है वही विरक्त है। ऐसा वैरागी आठों सिद्धियों और तीनों



लछिमन अति लाघवं सोइ नाक कान बिन कीन्हि।
ताके कर रावन कह मनौ चुनौती दीन्हि।।

गुणों को तृणवत् छोड़ देता है। जो माया, ईश्वर और अपने स्वरूप को नहीं जानता, वही जीव है। कर्मानुसार बंधन और मोक्ष देने वाला, सबसे परे माया का प्रेरक ही ईश्वर है। धर्माचरण से वैराग्य तथा वैराग्य से ज्ञान होता है। वेदों में ज्ञान को मोक्षदायी कहा गया है। सुखदायिनी भक्ति से तो मैं शीघ्र ही प्रसन्न हो जाता हूं। मेरी भक्ति स्वतंत्र है। उसे किसी अवलम्ब की आवश्यकता नहीं। ज्ञान-विज्ञान भी उसीके अधीन हैं। भक्ति अनुपमेय सुख का मूल है। संत जन जब अनुकूल होते हैं तभी भक्ति जागृत होती है। भक्ति-भाव प्राप्त होने का सरल साधन बताता हूं। सुनो–विद्वानों के चरणं में प्रेम करने और वैदिक रीति से अपने कार्य में रत रहने से विषयों से वैराग्य उत्पन्न होता है। तभी धर्म से प्रेम उत्पन्न होता है। श्रवण आदि नौ प्रकार की भक्तियों को दृढ़ता से धारण करने से मेरी लीलाओं के प्रति प्रगाढ़ प्रेम पैदा होता है। जो संत-चरणों में प्रेम रखें, मनसा, वाचा, कर्मणा ईश्वर-भजन करें, गुरु, माता-पिता, बंधु, पति और देवता–सब कुछ मुझे समझें, मेरे गुणों का स्मरण करते हुए जिनका हृदय गद्गद हो जाएं, और जो काम-क्रोध मोह, मद के वश में न हों, मैं केवल ऐसे ही प्राणियों के वशीभूत हूं। जिनको सभी प्रकार मेरा ही आश्रय है, जो निष्काम भाव से मेरा चिंतन करते हैं, मैं उनके हृदय में विश्राम करता हूं। इस भक्ति-योग को सुनकर लक्ष्मण ने हर्षित हो प्रभु-चरणों में प्रणाम किया। सत्य-असत्य की अनेक बातें कहते हुए पंचवटी में राम, सीता, लक्ष्मण साथ-साथ रहने लगे।

लछिमन अति लाघवं सोइ नाक कान बिनु कीन्हि।
ताके कर रावन कहं मनौ चुनौती दीन्हि।।

रावण की बहन शूर्पणखा अत्यंत दुष्ट और भयानक स्त्री थी। एक बार टहलते हुए वह पंचवटी आ गयी। राम-लक्ष्मण को वहां देखकर काम-पीड़ित हो उठी। शूर्पणखा अत्यंत आकर्षक और मोहिनी सुंदरी बनकर राम के पास आयी और बोली कि इस संसार में मुझ जैसी स्त्री और तुम्हारे जैसा पुरुष कोई दूसरा नहीं है। ब्रह्मा ने बड़े चिंतन के बाद हम दोनों का सृजन किया है। आकाश, पाताल, मृत्यु-लोक में कहीं भी मेरे योग्य पुरुष नहीं है। इसी कारण आज तक मैं कुंआरी हूं। तुम्हें देख कर मेरा मन रीझ गया है। राम ने सीता की ओर देखकर उस सुंदरी से कहा कि मेरा छोटा भाई पत्नीविहीन है। शूर्पणखा लक्ष्मण की ओर वासनाप्रेरित होकर बढ़ी। लक्ष्मण ने उसे अपने शत्रु की बहिन समझकर कहा कि मैं राम का दास हूं, पराधीन की पत्नी बनकर तुम्हें संतोष नहीं मिलेगा। राम सामर्थ्यवान हैं। और अयोध्या-नरेश हैं। वह कुछ भी कर सकते हैं। सेवक को सुख, भिखारी को मान, व्यसनी को धन, व्यभिचारी को शुभ गति, लोभी को यश तथा अभिमानी को चारों फल–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–कभी नहीं मिल सकते। इन प्रवृत्तियों से ग्रसित व्यक्ति के लिए ये सभी तत्व प्राप्त होना आकाश से दूध प्राप्त करने के समान कठिन है। मदमस्त शूर्पणखा लक्ष्मण के बहकावे में आकर फिर राम के पास लौट आयी। राम ने उसे दुबारा लक्ष्मण के पास भेज दिया। लक्ष्मण ने शूर्पणखा से कहा कि तुम्हें वही अपनी पत्नी बना सकता है जो निर्लज्जता की सीमा ही तोड़ दे। कुपित शूर्पणखा विकराल राक्षसी का रूप धारणकर राम के पास भागी गई। उसकी भयावनी मूर्ति देखकर सीता भयभीत हो उठीं। आंखों ही आंखों से राम ने लक्ष्मण को इशारा किया। क्षण भर में ही लक्ष्मण ने उसके कान-नाक काट लिये। इस प्रकार जैसे लक्ष्मण ने रावण को युद्ध की चुनौती दे दी। शूर्पणखा नाक-कान के अभाव में कुरूपा हो गयी। उसके शरीर से रक्तस्राव होने लगा। वह विलपती-कलपती खर-दूषण के पास आयी और कहने लगी–"तुम्हारा सब पौरुष बल कहां गया? तुम्हें धिक्कार है कि तुम्हारे रहते मेरी यह दशा हुई। शूर्पणखा ने खर-दूषण को सारी बातें बतायीं। खर-दूषण झुण्ड की झुण्ड सामूहिक सेना लेकर इस तरह पंचवटी की ओर दौड़े मानो पंखधारी काजल के पहाड़ों का समूह दौड़ रहा हो। सभी भयावनी सूरत वाले राक्षस कई प्रकार के हथियारों से लैस होकर सवारियों पर बैठे। उन्होंने अशुभ शूर्पणखा को अपने आगे बैठा लिया। अत्यंत भयानक अपशकुन हो रहे थे। किन्तु राक्षस मृत्यु के वशीभूत थे। राक्षस सैनिक वीरभाव से दर्प में चूर हो गरज रहे थे, आकाश में उड़ रहे थे। आपस में वे कहते कि इन दोनों भाइयों को जीवित पकड़कर फिर जान से मार डालो और उनकी स्त्री को छिन लो। सेना के आगमन से उड़ रही धूल से आकाश में बादल छा गये।

ऐसी विकट स्थिति देखकर राम ने लक्ष्मण से कहा कि सीता को लेकर गुफा में चले जाओ और सजग रहना। धनुष-वाणधारी लक्ष्मण गिरि-कंदरा में सीता

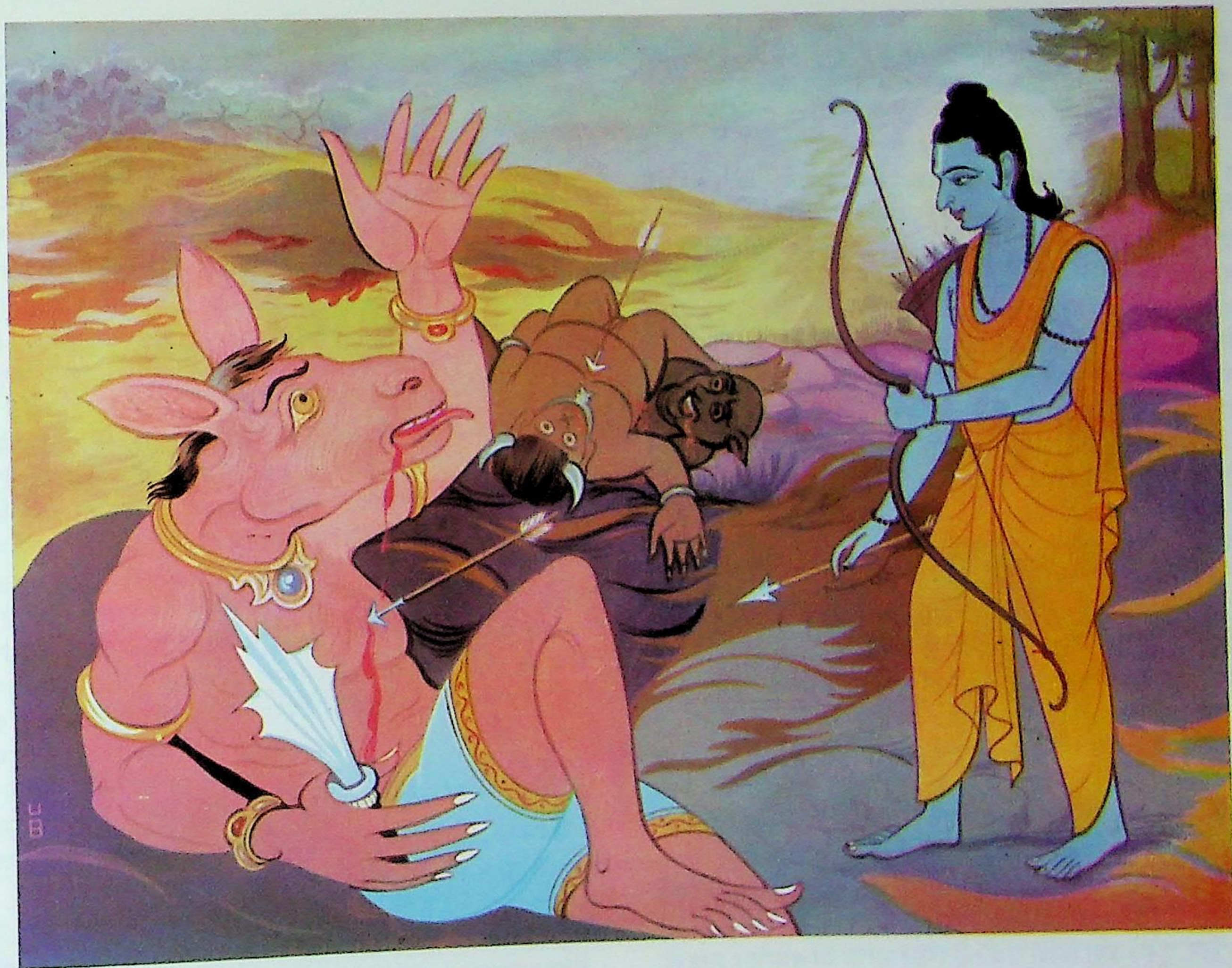
समेत चले गये। शत्रु-दल समीप आता जा रहा था। उस समय राम का स्वरूप दर्शनीय था। अपनी जटाजूट सम्हालते कठोर धनुष पर वाण चढ़ाए राम ऐसे सुशोभित हो रहे थे जैसे पन्ने के पर्वत पर करोड़ों बिजलियों से दो विषधर संघर्ष कर रहे हों। कमर में तरकस, लम्बी भुजाओं में धनुष और धनुष पर वाण धारण किये राम सिंह की भांति राक्षस सेना रूपी हाथियों को घूर रहे थे। जैसे प्रातः कालीन सूर्य को अकेला पा दैत्य आ घेरते हैं उसी तरह राम की ओर इशारा कर राक्षस 'धरो! पकड़ो!' की आवाज करने लगे। अपूर्व शक्तिशाली राम का सौंदर्य राक्षसों की सेना एकटक देखती रह गयी। वह आक्रमण न कर सकी। खर-दूषण ने अपने सेनापति से कहा कि राम तो मनुष्यों के आभूषण प्रतीत होते हैं। मैंने मनुष्य, देवता, मुनि, न जाने कितनों को आज तक देखा, मारा और पराजित किया परन्तु ऐसी सुंदरता कहीं किसी में नहीं दिखायी दी। इन्होंने मेरी बहन को नाक-कान विहीन अवश्य कर दिया, परन्तु फिर भी ऐसा सुन्दर पुरुष वध योग्य नहीं है। जिस स्त्री को इन्होंने छिपा रखा है उसे हमें दे दें और दोनों भाई जान बचाकर घर चले जायें।

दूतों ने खर-दूषण का संदेश राम को सुनाया। राम ने हंसकर जवाब दिया कि हम क्षत्रिय हैं। वन-वन तुम्हारे जैसे दुष्ट पशुओं के शिकार की खोज में हम घूमते रहते हैं। हम अति शक्तिशाली दुश्मन को देखकर भी भयाकुल नहीं होते। एक बार काल से भी लोहा लेने की मुझमें ताकत है। हम यद्यपि मनुष्य हैं परन्तु राक्षस वंश का नाश कर मुनियों की रक्षा कर रहे हैं। यदि शक्ति न हो तो घर भाग जाओ। जो लोग रणक्षेत्र में पीठ दिखाते हैं हम उन पलायनवादियों पर प्रहार नहीं करते। रणक्षेत्र में कपट करना तथा शत्रु पर दया तो बहुत बड़ी कायरता है।

राम की कही हुई सारी बातें शीघ्र ही दूतों ने खर-दूषण को जाकर सुना दीं। उनके हृदय में क्रोधाग्नि जलने लगी। खर-दूषण ने कहा कि उन्हें जल्दी पकड़ो। अत्यंत भयानक राक्षस योद्धा टूट पड़े। धनुष, वाण, कृपाण आदि अस्त्रों को लेकर वे राम पर प्रहार के लिए दौड़े। राम ने अत्यंत भयानक और कठिन धनुष-टंकार किया। उस टंकार ध्वनि से राक्षसों की ज्ञान-चेतना शून्य हो गयी। जब राक्षस चैतन्य हुए तो अनेकानेक तरह से राम पर अस्त्रों की वर्षा करने लगे। राम ने राक्षसों के अस्त्र-शस्त्रों को तिल की तरह टुकड़े-टुकड़े कर दिया। राम ने फुफकारते हुए सर्प-से वाणों का प्रहार किया। युद्ध में राक्षस भी राम पर क्रोध से भरकर वाणों की वर्षा करने लगे। परन्तु शक्तिशाली राम ने खर-दूषण की विराट सेना को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। राक्षस रणक्षेत्र से पीठ दिखाकर भागने लगे। खर-दूषण और त्रिशिरा, तीनों भाई क्रोध से सैनिकों से बोले कि रणक्षेत्र से जो भी भागेगा उसे हम जान से मार डालेंगे। सभी राक्षस मृत्यु निश्चित समझकर पुनः राम पर प्रहार करने लगे। शत्रुओं को कुपित देखकर राम ने साध-साध कर बाण छोड़ना शुरू किया। राक्षस एक-एक कर मरने लगे। उनके हाथ, पांव कट-कट कर पृथ्वी पर छिटकने लगे। तीर लगते ही राक्षस हाथी की तरह चिंघाड़ते और पहाड़ की तरह खण्ड-विखण्ड होकर धराशायी हो जाते। किसी तरह फिर से शक्ति साध कर उठते। आकाश में चतुर्दिक राक्षसों की भुजाएं, मस्तक और धड़ उड़ रहे थे। गीदड़, चील और कौए भी भयावनी बोली बोलते। भूत, प्रेत, पिशाच रक्तपान के लिए खप्पर जुटाने लगे। योगिनियां नृत्य कर रही थीं। बड़े-बड़े योद्धा राम के वाण के प्रहार से धरती पर गिर रहे थे और संभलकर फिर उठते थे। मृतकों की अंतड़ियां पकड़कर गिद्ध उड़ रहे थे।

राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान।
करि उपाय रिपु मारे छन महुं कृपानिधान।।

त्रिशिरा, खर-दूषण आदि भयानक योद्धा अपनी सेना की दीनदशा देखकर राम की ओर बढ़े। पुनः शक्ति संचय कर विविध प्रकार के शस्त्रों से सुसज्जित अगणित राक्षसों को लेकर राम पर प्रहार करने लगे। परन्तु राम ने उनका सारा प्रयत्न असफल कर दिया। राम ने दस-दस वाणों से राक्षसों के सेनापतियों पर आक्रमण किया। पृथ्वी पर गिरते ही राक्षस सेनापति माया रचने लगते। राम अकेले उस बड़ी सेना का जिस कौशल से संहार कर रहे थे, वह अद्वितीय और अवर्णनीय था। राम अकेले चौदह हजार राक्षसों की सेना से लड़ रहे थे। देवता यह देख व्याकुल हो गये। देवताओं को सभय देख राम ने कौतुक किया। राक्षस परस्पर एक-दूसरे को राम समझ कर मारने लगे। वे राम-राम कहकर शरीर त्यागने और मोक्षपद प्राप्त करने लगे। अपनी माया रचकर राम ने क्षण-भर में शत्रुओं का नाश कर डाला। देवता हर्षित होकर पुष्पवर्षा करने लगे। खर-दूषण



राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान।
करि उपाय रिपु मारे छन महुं कृपानिधान।।

जैसे शक्तिशाली योद्धाओं को राम ने पराजित कर दिया। गुफा से सीता को लेकर लक्ष्मण भी आ गये। प्रेम से सीता राम के शौर्यशाली सुंदर सांवले शरीर को निहारने लगीं। उनकी आंखें नहीं अघा रही थीं। सीता और राम पंचवटी में रहते हुए प्रतिदिन अनेक प्रकार के आमोद-प्रमोद करने लगे।

खर-दूषण का विनाश देखकर उत्तेजित शूर्पणखा रावण के पास पहुंचकर उसे भड़काने लगी। कुपित हो वह रावण से बोली कि तुमने राज्य और राजकोश की चिंता छोड़ दी है। रात-दिन मद्यपान कर सोते रहते हो। तुम्हें पता ही नहीं कि दुश्मन सिर पर मंडरा रहा है। नीतिज्ञ और विज्ञ कहते हैं नीति के बिना राज्य और धर्म के बिना धन, ईश्वर को अर्पित किए बिना सद्कार्य, विवेक के बिना विद्याध्ययन निष्फल होता है। अहितकारी परामर्श से सम्राट, अंहकार से ज्ञान, मद्यपान से लज्जा, विनय के बिना प्रीति और दर्प होने से गुण नष्ट हो जाते हैं। शत्रु, रोग, आग, पाप, स्वामी और सर्प को छोटा नहीं मानना चाहिए। शूर्पणखा ऐसा कहकर विलाप करती हुई व्याकुल हो गयी। शूर्पणखा ने कहा कि तुम्हारे जीते मेरी ऐसी दुर्दशा हुई। सभी राज-सभासद व्याकुल हो उठे और शूर्पणखा को सहारा देकर संभालने लगे।

लंका के स्वामी रावण ने कहा कि क्यों नहीं बतातीं कि तुम्हारे कान और नाक किसने काटे? शूर्पणखा ने कहा कि अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र वन में शिकार खेलने आये हैं। उन्होंने इस धरती को राक्षसों से विहीन करने का निश्चय किया है। वे दोनों राजकुमार देखने में बालक हैं पर काल से भी कठोर हैं। वे धैर्यवान हैं, धनुर्विद्या में पारंगत हैं और अनेक गुणों से युक्त हैं। दोनों भाई अत्यधिक शक्तिशाली और प्रतापी हैं। वे दुष्टों का वध कर देवता-मुनियों को सुख दे रहे हैं। सौंदर्य और शोभा से वे महिमा-मण्डित हैं। उनका नाम राम-लक्ष्मण है। उनके साथ एक सुंदर नारी है। विधाता ने उस स्त्री की रचना जैसे अपने हाथ से की है। सैकड़ों, करोड़ों रति उसके अनिंद्य सौंदर्य के सामने पानी भरती हैं। उसी राम के छोटे भाई लक्ष्मण ने मेरे नाक-कान काट लिये। मेरा आर्तनाद सुन कर खर-दूषण सेना सहित आये और युद्ध में उनसे लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

रावण ने जब खर, दूषण तथा त्रिशिरा की वीरगति प्राप्ति का समाचार सुना तो उसका अंग-प्रत्यंग जलने लगा। उसने शूर्पणखा को अपनी शक्ति का बोध कराया और अपने राजमहल में गया। चिन्ता से रात में उसे नींद नहीं आयी। वह सोचने लगा कि संसार में मेरे अधीनस्थ सेवकों के समान न देवता हैं, न मनुष्य, न राक्षस, न नाग और न पक्षी। खर और दूषण मेरे समान शक्तिशाली थे। ईश्वर ही उन्हें मार सकता था। यदि ईश्वर ने इस धरती का बोझ उतारने और देवताओं को आनंद देने के लिए अवतार लिया है तो मैं उनसे हठ करके रणक्षेत्र में लोहा लूंगा। उनके बाणों के प्रहार से जब मेरे प्राण छूटेंगे तभी मेरी मुक्ति होगी। यदि वे ईश्वर नहीं सामान्य हुए तो उन्हें पराजित कर उनकी स्त्री छीन लूंगा।

लक्ष्मण वन में फल-फूल लेने गये थे। राम ने जानकी से कहा कि प्रिये! अब मनोहारी मनुष्य लीला करूंगा। जब तक मैं राक्षसों के समूह को नष्ट न कर लूं तब तक के लिए तुम अग्नि में प्रवेश कर जाओ। सीता ने अग्निसमाधि लेकर अपनी दूसरी सजीव मानव-मूर्ति स्थापित कर दी। यह रहस्य लक्ष्मण को भी न ज्ञात हुआ।

उधर स्वार्थलीन रावण मस्तक झुकाये हुए मारीच के पास पहुंचा। नीच का झुकना दुखद है, जैसे अंकुश, सर्प और बिल्ली का झुकना। दुष्ट के अमृत वचन भी उसी तरह भयदायक हैं जैसे बिना ऋतु के फूल का पुष्पित होना। मारीच ने रावण से पूछा कि तुम व्यग्र क्यों हो? अकेले क्यों आये हो? अहंकारी रावण ने मारीच को सारी बातें बताईं और कहा कि तुम कपट रचना से अपने को स्वर्ण मृग बनाओ जिससे मैं उस राजकुमार की पत्नी का हरण कर सकूं। मारीच ने रावण से कहा कि राम मनुष्य नहीं हैं। वे समस्त जीव-जड़ से परिपूर्ण संसार के ईश्वर हैं। उनसे दुश्मनी मत करो क्योंकि उन्हीं से जीवन और मृत्यु का उत्स प्रवाहित होता है। राम विश्वामित्र के यज्ञ की रखवाली करने गये थे। उनके वाण-प्रहार से मैं सौ योजन दूर जा गिरा था। इसलिए उनसे दुश्मनी मोल लेना ठीक नहीं। मैं उन दोनों भाइयों को भयवश यहां-वहां देखता रहता हूं। यदि वे मनुष्य हैं तब भी वे बड़े शौर्यशाली योद्धा हैं। उन्होंने ताड़का-सुबाहु को मारा; शिव धनुष का खण्डन किया। खर-दूषण आदि को भी उन्होंने मारा।

यह सुनते ही रावण के शरीर में क्रोधाग्नि प्रजवलित हो उठी। उसने मारीच को अपशब्द कहते हुए डांटा कि तुम मुझे गुरु जैसी शिक्षा देने चले हो। मुझसे भी बढ़कर संसार में कोई योद्धा है?



प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी। धाए रामु सरासन साजी।।
निगम नेति सिव ध्यान न पावा। मायामृग पाछे सो धावा।।

मारीच ने अपने हृदय में सोचा कि शस्त्रधारी, भेदिया, स्वामी, मूर्ख, धनवान, भाट, कवि और रसोइये से विरोध करने में भलाई नहीं होती। रावण की बात मानने या न मानने--दोनों ही स्थितियों में मारीच की मृत्यु निश्चित थी। राक्षस के हाथों मरने से अच्छा तो राम के बाणों से मरना था। ऐसा सोचकर तत्काल वह रावण के साथ चल पड़ा। राम के प्रति उसके मन में अगाध प्रेम था। वह गद्‌गद था कि प्रिय राम के दर्शन होंगे। वह सोचने लगा कि राम का दर्शन-सुख प्राप्त कर मैं मुक्ति-लाभ करूंगा। सीता, राम और लक्ष्मण के चरणों में मैं अपना मन तल्लीन करूंगा। उनका तो क्रोध भी मोक्षप्रद है। उनकी भक्ति ईश्वर को भी वश में कर लेती है। धनुष-बाण लिये हुए, धरती पर दौड़ते हुए राम को बार-बार देखूंगा। मेरा जीवन धन्य होगा।

पंचवटी के समीप वन में रावण पहुंचा। मारीच ने सुंदर कपट-मृग का बाना धारण किया। मणियों से खचित अपना स्वर्ण शरीर बनाया। सीता ने उस आकर्षक स्वर्ण हिरण को देखा। उन्होंने राम से कहा कि रघुकुल तिलक! इस हिरण का चर्म अत्यंत सुंदर होगा। इसका वध कर चर्म लाइये। सब कारण जानने वाले राम, देवताओं का कार्य (रावण का वध) पूरा करने के लिए हर्षित हो उठे। राम कमर कसकर हाथ के धनुष पर सुंदर बाण साधकर लक्ष्मण को समझाने लगे कि देखो गहन वन में चारों ओर राक्षस विचरण करते हैं। समय की गति को देखकर ध्यान से सीता की रक्षा करना।

प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी। धाए रामु सरासन साजी।।
निगम नेति सिव ध्यान न पावा। मायामृग पाछें सो धावा।।

राम को देखकर स्वर्ण हिरण कुलाचें मारने लगा। राम उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़े। वेद और शंकर द्वारा अगम्य राम छली मृग के पीछे दौड़ने लगे। वह कभी राम के समीप से गुजरता तो कभी दूर भाग जाता, फिर कभी सामने प्रकट हो जाता तो कभी छिप जाता। वह गहन जंगल में राम को अपने पीछे दूर ले भागा। राम ने साध कर कठिन बाण का निशाना मारा। वह आर्तनाद कर भूमि पर गिर पड़ा। उसने पहले लक्ष्मण का नाम लिया फिर मन में राम का स्मरण करने लगा। मरते समय उसने अपना असली रूप धारण कर राम का सप्रेम स्मरण किया। राम ने उसके अन्तर्मन की भावना को पहचान कर उसे परम मोक्ष दिया। दुष्ट मारीच को मार कर राम लौट पड़े। उनके हाथों में धनुष, कमर में तरकस था।

लक्ष्मण! हा लक्ष्मण!! की आर्तवाणी सुनकर सीता भयभीत हो लक्ष्मण से कहने लगीं कि तुम्हारे भाई संकट में हैं। जल्दी भागो। लक्ष्मण ने कहा, जिनकी भौंहों के संकेत मात्र से सारी सृष्टि विलीन हो सकती है उन पर संकट कैसा? तब सीता अत्यंत तीखे शब्द कहने लगीं। राम की प्रेरणा से लक्ष्मण का मन भी विचलित होने लगा। लक्ष्मण वन, दिशा और देवताओं को सीता की रक्षा का भार सौंपकर घोर जंगल में राम की खोज में चल पड़े।

रावण ने सीता को अकेली देखा। वह संन्यासी का रूप धारण कर सीता के समीप आया। जिस रावण के भय से सभी देवता, राक्षस ऐसे भयार्त रहते थे कि दिन में अन्न नहीं खाते थे और रात में उन्हें नींद तक नहीं आती थी, वही दसशीश रावण कुत्ते की तरह इधर-उधर देखता हुआ चोरी करने के लिए आगे बढ़ा। कुमार्ग पर पैर रखते ही व्यक्ति के तेज, बल और बुद्धि समाप्त हो जाते हैं। रावण ने सीता से अनेक प्रकार की कहानियां कह कर सीता को राजनीति, प्रेम और भय दिखाया। सीता ने कहा कि संन्यासी! तुम तो दुष्टों की तरह बातें करते हो। तब रावण ने अपना असली रूप धारण कर अपना नाम बताया। सीता ने धैर्य न छोड़ते हुए कहा, अरे दुष्ट रावण! खड़ा रह। प्रभु आने ही वाले हैं। जैसे तुच्छ खरगोश सिंह की पत्नी को प्राप्त करना चाहे, उसी प्रकार तू भी काल के वशीभूत हो गया है। यह सुनकर रावण क्रुद्ध हो गया, परन्तु मन ही मन सीता के चरणों की वंदना की। उसने बलपूर्वक सीता को रथ पर बैठा लिया और आकाश की ओर चल पड़ा, किन्तु राम के भय से उससे रथ हांका नहीं जा रहा था।

सीता ने कहा कि रघुकुल राम ने न जाने किस अपराध के लिए मेरी सुधि विस्मृत कर दी। लक्ष्मण! तुम्हारा कोई दोष नहीं। मैंने तुम पर अविश्वास किया, मुझे उसका फल मिल रहा है। सीता विलाप कर रही थीं। उन्हें चिन्ता थी कि मेरी विपत्ति दयालु राम को कौन सुनायेगा। सीता का दुख देख जड़-चेतन सभी व्याकुल हो उठे। राम की पत्नी सीता की वेदनामयी वाणी सुनकर गिद्धराज जटायु ने उन्हें पहचान लिया। उसने देखा कि नीच म्लेच्छ रावण के हाथ में कपिला गाय-सी सीता पड़ गयी हैं। वह बोला—पुत्री सीता! हृदय में धैर्य धारण करो। मैं इस

सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती के बेषा।।
जाके डर सूर असुर डेराहीं। निसि न नींद दिन अन्न न खाहीं।।

राक्षस का नाश करूंगा। रावण को ललकारते हुए उसने कहा, कि तू क्यों नहीं खड़ा रहता? क्या मुझे जानता नहीं? गिद्धराज को यम की तरह अपनी ओर बढ़ते हुए देखकर रावण अनुमान करने लगा यह या तो मैनाक पक्षी है या गरुड़। पर गरुड़ तो अपने स्वामी विष्णु सहित मेरी शक्ति को जानता है। फिर रावण ने देखा कि वह बूढ़ा जटायु है। मेरे हाथों मरकर यह शरीर त्यागेगा। गिद्धराज कुपित होकर बोला कि रावण! सीता को छोड़कर अपने हित के लिए लंका लौट जाओ, नहीं तो तुम्हारी बीसों भुजाएं राम की क्रोधाग्नि में भस्म हो जायेंगी। गिद्धराज रावण की ओर दौड़ा। उसने रावण के बालों को पकड़कर रथ से धरती पर पटक दिया। फिर उसने सीता को एक ओर बैठाया और रावण पर चोंच से प्रहार करने लगा। रावण को एक घड़ी तक मूर्च्छा आ गयी।

तब क्रोध से आगबबूला हो रावण ने अपने तीक्ष्ण कृपाण से जटायु के पंख काट डाले। जटायु राम की अद्भुत लीला का स्मरण करता हुआ धरती पर गिर पड़ा। भयभीत रावण पुनः सीता को रथ पर चढ़ाकर तेजी से आगे बढ़ चला। व्याघ्र रावण के वश में भयभीत हिरणी-सी सीता आर्तनाद कर रही थीं। सीता ने आकाश मार्ग से बन्दरों को पहाड़ पर बैठा देखकर अपने वस्त्र गिरा दिये। रावण आकाश मार्ग से सीता को लंका ले आया और अशोक वन में उन्हें बंदिनी बना दिया। सीता को विविध प्रकार से भय और प्रेम दिखाकर भी जब वह दुष्ट हार गया तो अंत में उसने अशोक वृक्ष के नीचे सीता के रहने की व्यवस्था की। जब स्वर्णमृग के पीछे राम दौड़े थे, जानकी उस छवि को आंखों में उतारकर राम का स्मरण करने लगीं।

राम वन से लौटे। अनुज लक्ष्मण को अपनी ओर आते देखा। वे चिंतित हो पूछने लगे कि लक्ष्मण! तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर सीता को अकेली छोड़ कर यहां क्यों आये? राक्षसों का समूह वन में विचरण करता है। मेरे मन में शंका हो रही है कि सीता आश्रम में नहीं है। लक्ष्मण ने राम के चरण पकड़े और हाथ जोड़ कर कहा कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं। सीता ने मुझे जबर्दस्ती भेजा।

राम-लक्ष्मण आश्रम में आये। जानकी को आश्रम में उपस्थित न पाकर राम सामान्य व्यक्तियों की तरह दीन होकर विलाप करने लगे। (राम विलाप करने लगे) हे गुणों की खान सीता! तुम रूप, शील, व्रत तथा नियमों में पुनीत थीं। लक्ष्मण ने भाई को बहुत समझाया। राम सीता को खोजते हुए लता, वृक्ष और पत्तों से पूछते रहे कि तुमने सीता को देखा है? वह कहने लगे—'हे पक्षी! मृगगण! हे भौंरो! क्या तुमने सीता को कहीं देखा है? वे विभिन्न पक्षियों और प्रकृति की विविध वस्तुओं से व्याकुल होकर सीता का पता पूछने लगे। राम बिलख रहे थे कि सीता! आज तुम्हारे न रहने से प्रकृति की सभी सुंदर वस्तुएं ऐसी मुदित हैं मानो उन्हें निष्कंटक राज्य मिल गया हो। तुम्हारे सौंदर्य के सामने इस सारी प्रकृति का सौंदर्य धूमिल था, इसलिए तुम्हारे ने रहने से ये सब प्रसन्न हैं। प्रकृति-प्रदत्त पदार्थ, जड़, जीवों की स्पर्द्धा तुम कैसे सह रही हो? प्रियतमे! तुम क्यों नहीं प्रकट हो रही हो? राम सामान्य मनुष्य की भांति विलाप कर रहे थे। वे अत्यंत व्याकुल थे। आगे चलकर राम ने गिद्धराज जटायु को घायल पड़ा देखा। राम के चरणों का स्मरण करता हुआ वह अंतिम श्वास ले रहा था। दयासिंधु राम ने अपना कोमल हाथ उसके मस्तक पर रख दिया।

आततायी रावण ने गिद्धराज पर घातक आक्रमण किया था। प्रहार की पीड़ा राम के स्पर्श से दूर हो गयी। धैर्य धारण कर गिद्ध ने कहा कि भगवान! रावण ने मेरी यह गति की है। वह दुष्ट जानकी को चुराकर दक्षिण दिशा की ओर ले गया। रावण के बंधन में बंदिनी सीता टिटहरी की भांति विलाप कर रही थीं। आपका दर्शन कर अब मेरे प्राण चलना चाहते हैं।

जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज ते गति पाई।।
परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहुं जग दुर्लभ कछु नाहीं।।

राम ने कहा कि पक्षिराज! तुम जीवन धारण करो। जटायु ने राम से निवेदन किया कि मृत्यु के समय मुख से यदि राम-नाम निकल सके तो नीच प्राणी मृत्यु के भय से मुक्त हो जाते हैं। आप साक्षात् मेरे सामने खड़े हैं। अब मैं किस अभाव की पूर्ति के लिए जीऊं। दयानिधान राम के नेत्रों से आंसू बहने लगे। वह कहने लगे कि तुमने अपने सत्कर्मों से दुर्लभ गति प्राप्त की। जिसके मन में परोपकार-भाव रहता है। उसे कुछ भी अप्राप्य नहीं है। तुम शरीर त्याग कर स्वर्ग लोक जाओ। स्वर्ग लोक में सीताहरण का वृत्तांत पिता दशरथ से मत कहना। यदि मैं वस्तुतः



जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज ते गति पाई।।
परहित बस जिन्हके मन माहीं। तिन्ह कहुं जग दुर्लभ कछु नाहीं।।

राम हूं तो दशमुख रावण को भी सुकुटुम्ब स्वर्ग भेजूंगा और वह स्वयं अपनी वाणी द्वारा पिता दशरथ से सारी कहानी कहेगा।

गिद्धराज ने शरीर त्यागकर चार विशाल भुजाओं वाले श्याम शरीर भगवान विष्णु का रूप धारण कर लिया। राम की स्तुति करने लगा—उपमारहित रूप वाले, निर्गुण तथा सगुण रूप तथा माया के प्रेरक राम! आपकी जय हो। आप रावण की भुजाओं को खण्ड-खण्ड करने के लिए प्रचण्ड वाण धारण करने वाले हैं। आपके नेत्र रक्तकमल से सुंदर हैं। आपका शरीर जल भरे बादल के समान श्याम है। आपकी विशाल भुजाएं संसार के भय का नाश करने वाली हैं। अजन्मे, अनादि आप अपरिमित बलशील, अव्यक्त, एक तथा अगोचर हैं। आप इंद्रियों से परे, वेदों से जानने योग्य, द्वंद्व को हरने वाले, विज्ञानघन हैं। आप पृथ्वी के आधार हैं। जो आपका स्मरण करते हैं आप उनको आनंदित करते हैं। हे निष्कामप्रिय, कामादि विकारों को नाश करने वाले राम! आपको प्रणाम है। वेद आपको निरंजन, व्यापक और अजन्मा मानते हैं। आपको मुनिगण ज्ञानं, ध्यान और तपस्या से प्राप्त करते हैं। ऐसे ईश्वर होकर आप जड़-चेतनमय विश्व को प्रकट होकर मोहित कर रहे हैं। जो अगम और सुगम हैं, निर्मल, विषम और सम हैं, जिनको योगी यत्नपूर्वक हृदय में देखते हैं, जिनकी कीर्ति आवागमन के चक्र को मिटाने वाली है, वे हमेशा दास के वश, रमानिवास राम! मेरे हृदय में बसें।

गिद्धराज राम की स्तुति करता हुआ स्वर्गलोक गया। राम ने वैदिक रीति से जटायु की अंत्येष्टि क्रिया की। कृपालु राम ने मांस-भक्षी गिद्ध को भी वह दुर्लभ गति प्रदान की जिसे योगीजन भी नहीं प्राप्त कर सकते।

राम-लक्ष्मण गहन जंगल में सीता को खोजते हुए आगे बढ़ते गए। लता-वृक्षों से आच्छादित गहन जंगल में चारों ओर पशु-पक्षी विचरण कर रहे थे। राम ने कबंध नामक राक्षस को अपने सामने देखा। राम ने उसका वध किया। मरते समय उसने कहा कि दुर्वासा ऋषि ने मुझे श्राप दिया था। आपके दर्शन से मेरा पाप मिट गया। राम ने उससे कहा कि विद्वानों, ऋषियों के द्रोही मुझे तनिक भी प्रिय नहीं। मनसा-वाचा-कर्मणा जो लोग ऋषियों की सेवा करते हैं, मुझ सहित सारे देवता उनके वश में रहते हैं। विप्र हर स्थिति में पूज्य हैं। राम ने अनेक प्रकार से उसे भागवत धर्म समझाया। तत्पश्चात वह सीधे स्वर्गलोक सिधार गया।

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुं आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारम्बार बखानि।।

शबरी के आश्रम में राम ने चरण रखा। मतंग ऋषि ने शबरी को वरदान दिया था कि ईश्वर तुझे दर्शन देंगे। 'राम घर आये हैं' यह जानकर शबरी प्रसन्नता से आत्मविभोर हो गयी। उसने देखा कि जटाजूटधारी, विशाल भुजाओं वाले, रक्त-कमल के समान नेत्रों वाले, वक्षस्थल पर पुष्पित माला धारण किये हुए राम मेरे समक्ष खड़े हैं। शबरी उनके चरणों पर लोट-पोट हो गयी। आनन्दातिरेक से उसकी जिह्वा से शब्द नहीं फूट रहे थे। चरणों में सिर नवाकर उसने आदरपूर्वक राम के पांव पखारना शुरू किया। बड़ी प्रसन्नता के साथ उसने अत्यंत सरस फल-फूल, कंद-मूल राम को अर्पित किए। राम ने बड़ी प्रसन्नता के साथ शबरी के फल-फूल ग्रहण किये। राम के समक्ष हाथ जोड़े खड़ी शबरी ने कहा कि मैं नीच जाति की जड़ हूं। अधमाधम स्त्री हूं। मंदबुद्धि हूं।

राम ने शबरी से कहा कि मैं केवल भक्ति को सर्वोपरि मानता हूं। भक्तिरहित मनुष्य जलहीन बादल-सा होता है। जाति-पांति, खानदान, धर्म, परिवार, गुण और चातुर्य आदि भक्ति के समक्ष कोई महत्व नहीं रखते।

राम ने सहज-सरल शबरी को नवधा भक्ति का स्वरूप समझाया। संतों की संगति, ईश्वर-चर्चा में रति, गुरु चरणों की सेवा, छल-कपट से परे हटकर ईश्वर का गुणगान, राम-मंत्र का जाप और मुझमें दृढ़ विश्वास, इन्द्रियनिग्रह कर सांसारिक प्रपंचों से वैराग्य, शीलवान सज्जन का धर्म पालन करना, सारे संसार में ईश्वर का रूप देखना और सज्जनों को ईश्वर से भी बढ़कर मानना, जो मिले उसी पर संतोष कर लेना, सपने में भी दूसरों में किसी प्रकार का दोष न देखना तथा मुझपर विश्वास रख सुख-दुख से परे होकर सबके प्रति छलहीन व्यवहार—यही नौ प्रकार की भक्ति है। जिस व्यक्ति में इनमें से एक भी भक्ति होती है, वह मेरा परम प्रिय है। हे देवि! तुम में तो ये सभी भक्तियां समाई हैं। योगियों के लिए जो गति दुर्लभ है वह आज तुझे प्राप्त हो रही है। सांसारिक जीव मुझे साक्षात देख कर सहज स्वरूप प्राप्त करता है।



कंद मूल फल सरस अति दिए राम कहुं आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥

फिर राम ने शबरी से पूछा कि क्या तुम गजगामिनी सीता के बारे में कुछ जानती हो? शबरी ने राम से कहा कि आप पंपासर जाइये और सुग्रीव से मित्रता कीजिए। उन्हें सीता का सारा समाचार मालूम है। आप सब कुछ जानते हुए मुझसे सीता का हाल पूछ रहे हैं? उसने बारंबार राम के चरणों की वंदना की, जो कुछ जानती थी, कह सुनाया। उसने राम के कमल-मुख को देखा। उनके चरणों को अपने हृदय में धारण कर लिया। योगाग्नि से अपने शरीर को भस्म कर शबरी राम के चरणों में लवलीन हो गयी। उसने मुक्ति का परमलाभ प्राप्त किया।

पंपा नामक सुंदर सरोवर के तट पर राम ने स्नान किया और एक सुंदर वृक्ष की छाया में लक्ष्मण के साथ बैठे। सभी देवता और मुनि राम की स्तुति कर अपने-अपने लोकों को लौट गये। राम लक्ष्मण को मधुर कहानियां सुनाने लगे। राम को जानकी के विरह में व्याकुल देखकर नारद के मन में बड़ा संकोच हुआ। नारद के शाप से राम नाना दुःख भोग रहे थे। नारद ने राम के दर्शन करने का निश्चय किया और सोचा कि ऐसा एकांत अवसर फिर नहीं आयेगा। ऐसा निश्चय कर हाथों में वीणा ले नारद पंपासर के तट पर आये। अत्यंत भावविह्वल होकर नारद रामचरित्र का गान कर रहे थे। राम ने नारद को उठा लिया और देर तक अपने हृदय से लगाये रखा। नारद का स्वागत कर राम ने उनकी कुशल-क्षेम पूछी। आदर के साथ लक्ष्मण ने नारद का चरण-प्रक्षालन किया।

नारद ने देखा कि राम अत्यंत प्रसन्न हैं। कमलवत् हाथों को जोड़कर विधिपूर्वक उन्होंने राम से विनती की और कहा कि परम उदार राम! आप सुन्दर, अगम्य, पर भक्तों को सुगम तथा वरदान करने वाले हैं। आप अंतर्यामी हैं। मैं केवल एक वरदान मांगता हूं, वही मुझे दीजिये। राम ने विनीत भाव से कहा कि नारद! आप मेरे गुणों से परिचित हैं। मैं भक्तों से छल नहीं करता। ऐसी कौन-सी वस्तु है जिसको आप नहीं मांग सकते? मेरे पास कौन-सी वस्तु है जो आपके लायक है? भक्त के लिए मेरे पास कुछ भी अदेय नहीं, यह विश्वास भूलकर भी न छोड़ना।

सुनि रघुपति के बचन सुहाए। मुनि तन पुलक नयन भरि आए।।
कहहु कवन प्रभु कै असि रीती। सेवक पर ममता अरु प्रीती।।

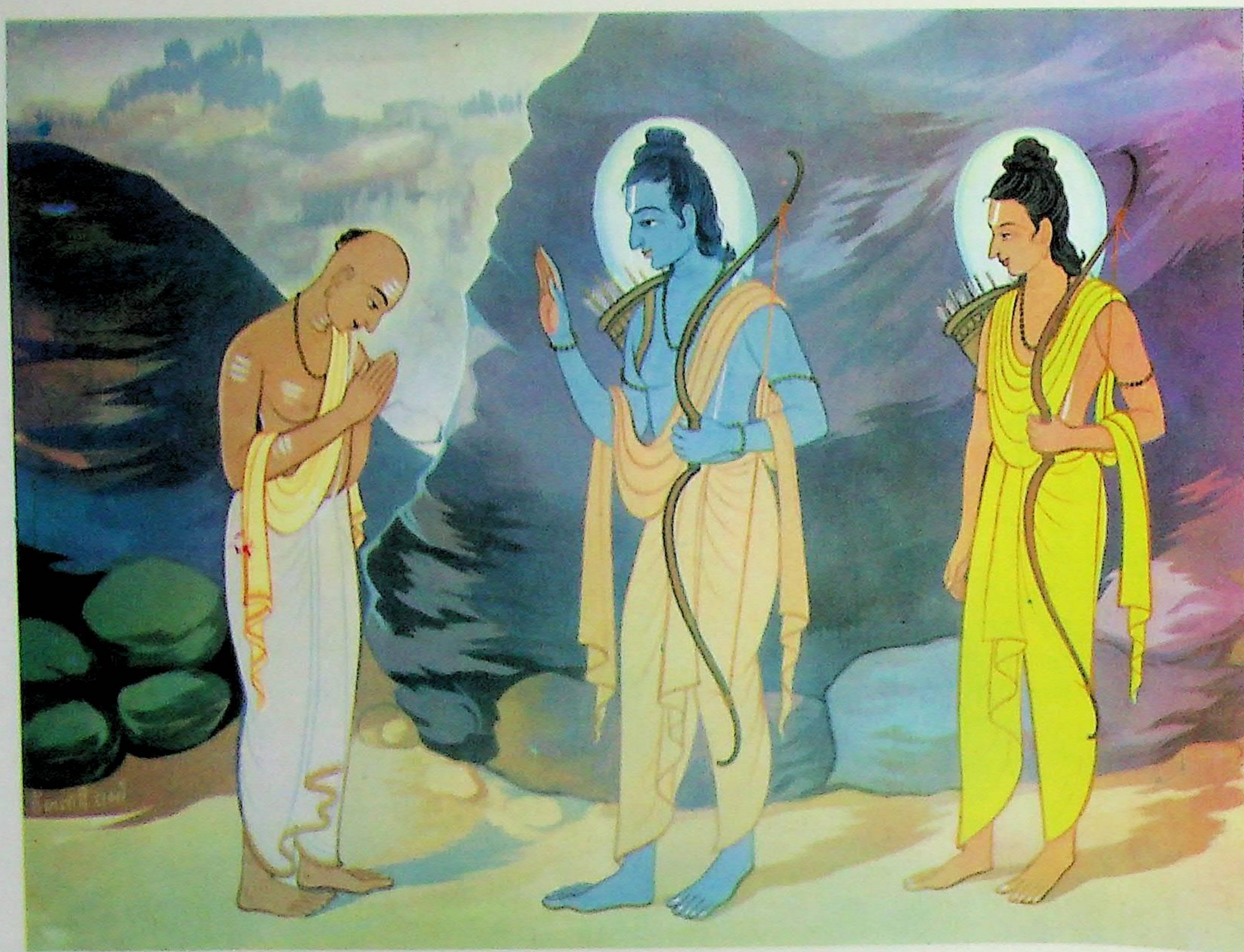
नारद ने हर्षित वाणी में कहा कि मैं ऐसा वरदान मांग रहा हूं जो मेरी धृष्टता है। वेदों ने आपके अनेक नामों को एक से बढ़कर एक माना है। फिर भी राम-राम सर्वश्रेष्ठ है और वह पाप रूपी पक्षियों के समस्त समूह के लिए बधिक के समान है। राम की भक्ति पूर्णिमा की रात्रि है। राम नाम चन्द्रमा तथा अन्य अनंत नाम तारों की तरह भक्तों के हृदय रूपी आकाश में निरंतर निवास करें, ऐसा वरदान दें। कृपासिंधु राम ने नारद से 'एवमस्तु' कहकर उन्हें मनचीता वरदान प्रदान किया। मन ही मन हर्षित हो नारद राम के चरणों पर झुक गये। अत्यंत आदर के साथ नारद राम से प्रार्थना करने लगे कि विज्ञान विशारद राम! आप संसार के पापों का नाश करने वाले स्वामी हैं। आप संतों के लक्षण मुझे समझाइये।

राम ने नारद से कहा कि मैं जिन संतों के वश में रहता हूं वे काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, दंभ—इन षट विकारों के विजेता, पाप और कामना रहित, अकिंचन, अपरंपार, ज्ञानी, पवित्र, सुख-रूप, इच्छारहित, चिंताहारी, सत्यनिष्ठ योगी, और सत्पथगामी हैं। ऐसे सावधान योगी सबका सम्मान करने वाले, अभिमानहीन, गंभीर, धर्म-नीति में आस्था रखने वाले, अत्यंत कुशल, गुणों के पुंज, भौतिक दुखों से परे और संदेहरहित हैं। ऐसे लोगों को मेरा चरण छोड़कर न घर प्रिय है, न शरीर। अपने गुणों को सुन सकुचाते हैं और दूसरे के गुणों के वर्णन से प्रसन्न होते हैं। संत समान भाव से प्रत्येक अवस्था में शांतिपूर्वक रहते हैं और सरल स्वभाव से प्रेम करते हुए नीतिविरुद्ध कोई काम नहीं करते। सज्जनों का मैं दास हूं। वे जप-तप और नियम से भक्ति करते हैं। क्षमा, दया, प्रसन्नता और राम-चरण में स्वार्थ रहित प्रेम ऐसे संतों में निरंतर बना रहता है। ऐसे ही संतजन यथार्थ ज्ञान से मण्डित होते हैं। दंभ, मान और मद का स्पर्श उन्हें नहीं होता। ऐसे जन निरंतर मेरी लीला कहते-सुनते और परोपकार करते रहते हैं। संतों के गुण का वर्णन सरस्वती और वेद भी नहीं कर सकते।

राम के चरणों में नारद ने मस्तक झुका दिया। उनके पैर पकड़कर वे बार-बार भक्ति प्रकट करते हुए ब्रह्मलोक चले गये। रावण के शत्रु राम के पवित्र चरित्र का वर्णन करने वाले लोग बिना विराग और जप-तप के ही सभी सुख प्राप्त करते हैं। इसलिए संत काम और दंभ त्यागकर निरंतर राम भजन करते हैं।



सुनि रघुपति के बचन सुहाए। मुनि तन पुलक नयन भरि आए।।
कहहु कवन प्रभु कै असि रीती। सेवक पर ममता अरु प्रीती।।



बिप्र रूप धरि कपि तहं गयऊ। माथ नाइ पूंछत अस भयऊ।।
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहुं बन बीरा।।

राम पंपासर से आगे बढ़ते ऋष्यमूक पर्वत के समीप जा पहुंचे। अपने मंत्रियों सहित सुग्रीव वहीं रहते थे। उन्होंने देखा कि असीमित शक्तिशाली राम उधर ही बढ़े आ रहे हैं। भयभीत होकर उन्होंने हनुमान से कहा कि दोनों ही पुरुष सुंदर और बलशाली हैं। तुम ब्राह्मण का रूप धारण करके उनके हृदय की बात समझो और मुझे संकेत से बताओ। यदि उन्हें बालि ने भेजा हो तो मैं ऋष्यमूक पर्वत छोड़कर भागूं।

बिप्र रूप धरि कपि तहं गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ।।
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु बन बीरा।।

ब्राह्मण का वेश धारणकर हनुमान राम-लक्ष्मण के समीप पहुंचे। मस्तक झुकाकर अभिवादन करने के बाद हनुमान ने पूछा कि हे श्याम और गौर वर्ण वाले वीर! आप कौन हैं? क्षत्रिय के वेश में वन में आप क्यों घूम रहे हैं? इस जंगल की कठोर धरती पर आप सुकोमल नग्न चरणों से किसलिए विचरण कर रहे हैं? आपका मनमोहक शरीर आकर्षक है। जंगल में धूप और लू के झकोरे क्यों झेल रहे हैं? आप नर-नारायण हैं अथवा ब्रह्मा, विष्णु, महेश में से कोई हैं? लगता है आप त्रिभुवन के स्वामी हैं और संसार की हित-साधना करने का निश्चय कर मनुष्य रूप में अवतरित हुए हैं।

राम ने कहा कि हम अयोध्या-सम्राट दशरथ के पुत्र हैं। अपने पिता की आज्ञा से हम वन आये हैं। मेरा नाम राम और इनका नाम लक्ष्मण है। मेरी सुकुमारी पत्नी साथ थी। मेरी पत्नी सीता को राक्षसों ने हर लिया है। हम पत्नी को खोजते हुए जंगल की गिरि-कंदराओं में भटक रहे हैं। आप कौन हैं? अपने सम्बन्ध में बताइये।

हनुमान ने राम को पहचान लिया और साष्टांग दण्डवत करने के लिए धरती पर गिर पड़े। राम का सुन्दर वेश देखकर भावविह्वल हनुमान बोलने तक में असमर्थ हो गये। धैर्य धारणकर हनुमान ने अपने स्वामी को देखा और उनकी स्तुति प्रारम्भ की।

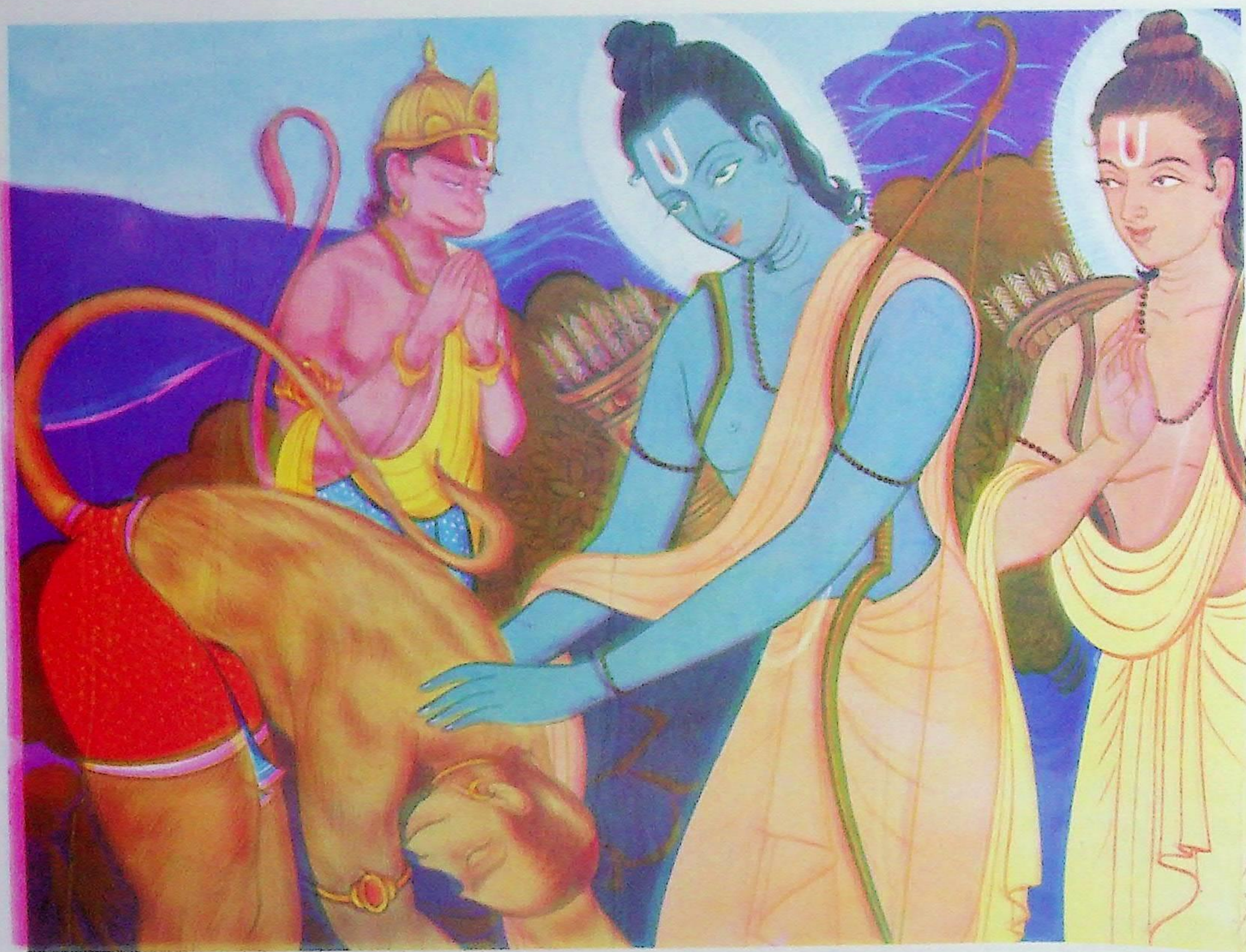
हनुमान ने कहा कि मैं आपका परिचय पूछ रहा हूं? परन्तु आप ईश्वर होकर भी मेरा परिचय क्यों पूछ रहे हैं? मैं तो माया के वशीभूत हूं। इसलिए आपको नहीं पहचान पाया। मैं कुटिल, अज्ञानी मोह के वश हूं, दूसरे आपने भी मेरी सुधि लेना छोड़ दिया। मैं अवगुणों से परिपूर्ण आपका सेवक हूं। आपकी माया से मोहित हूं। मैं आपकी शपथ खाकर कहता हूं कि भजन और स्मरण की विधि मुझे ज्ञात नहीं हैं। माता के सहारे पुत्र और स्वामी के सहारे सेवक जीवित रहता है। हनुमान आकुल होकर राम के चरणों पर गिर पड़े। वे ब्राह्मण-वेश त्यागकर वास्तविक रूप में प्रकट हो गये। उनके हृदय में प्रेम की भावना उमड़ने लगी। राम ने उन्हें हृदय से लगा लिया और भावविह्वल होकर अपने प्रेमाश्रुओं से सींचकर शीतल कर दिया।

राम ने कहा कि तुम अपने को कम क्यों समझते हो? तुम मुझे लक्ष्मण से दूने अधिक प्रिय हो। मुझे लोग समदर्शी कहते हैं। परन्तु मुझे तो अनन्य सेवक प्रिय हैं। हे हनुमान! अनन्य भक्त वही है, जो स्वयं को सेवक तथा चराचर जगत को स्वामी ईश्वर का रूप मानता है।

राम को अपने अनुकूल देखकर हनुमान का हृदय हर्ष से गद्गद हो गया और उनकी वेदना समाप्त हो गयी। हनुमान ने ऋष्यमूक पर्वत की तरफ संकेत करते हुए कहा कि उस पर्वत पर कपिराज सुग्रीव रहते हैं। वे आपके भक्त हैं। सीता की खोज में वे पूरी सहायता करेंगे। वे करोड़ों वानरों को सीता को खोजने भेजेंगे। वे अपने भाई बालि के भय से भयभीत हैं। उनसे आप मित्रता कीजिए। उन्हें निर्भय कीजिए। हनुमान ने राम-लक्ष्मण दोनों भाइयों को अपनी पीठ पर बिठाया और ऋष्यमूक पर्वत की ओर चल पड़े।

सादर मिलेउ नाइ पद माथा। भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा।।
कपि कर मन बिचार एहि रीती। करिहहिं बिधि मो सन ए प्रीती।।

सुग्रीव ने राम को देखा तो उन्हें अपना जन्म लेना बहुत सार्थक लगा। राम के चरणों में मस्तक नवाकर आदर से सुग्रीव मिले। मन ही मन सुग्रीव सोच रहे थे कि क्या राम मुझसे प्रेम करेंगे? हनुमान ने सीता-हरण और सुग्रीव के भय--दोनों पक्षों के वृत्तांत कह सुनाये और अग्नि की साक्षी देकर राम और सुग्रीव की मैत्री को दृढ़ कराया। राम और सुग्रीव का परस्पर दृढ़ प्रेम देखकर लक्ष्मण ने सारा विगत वृत्तांत सुग्रीव से कह सुनाया। सुग्रीव ने आंखों में आंसू भर कर कहा कि सीता



सादर मिलेउ नाइ पद माथा। भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा।।
कपि कर मन बिचार एहि रीती। करिहहिं बिधि मो सन ए प्रीती।।

अवश्य मिलेंगी। एक बार यहीं पर मैं अपने मंत्रियों के साथ बैठा हुआ विचार-विमर्श कर रहा था। उसी समय विवश सीता को विलाप करते आकाश-मार्ग से जाते हुए मैंने देखा था। राम-राम पुकारते हुए उन्होंने कुछ वस्त्र नीचे गिरा दिए।

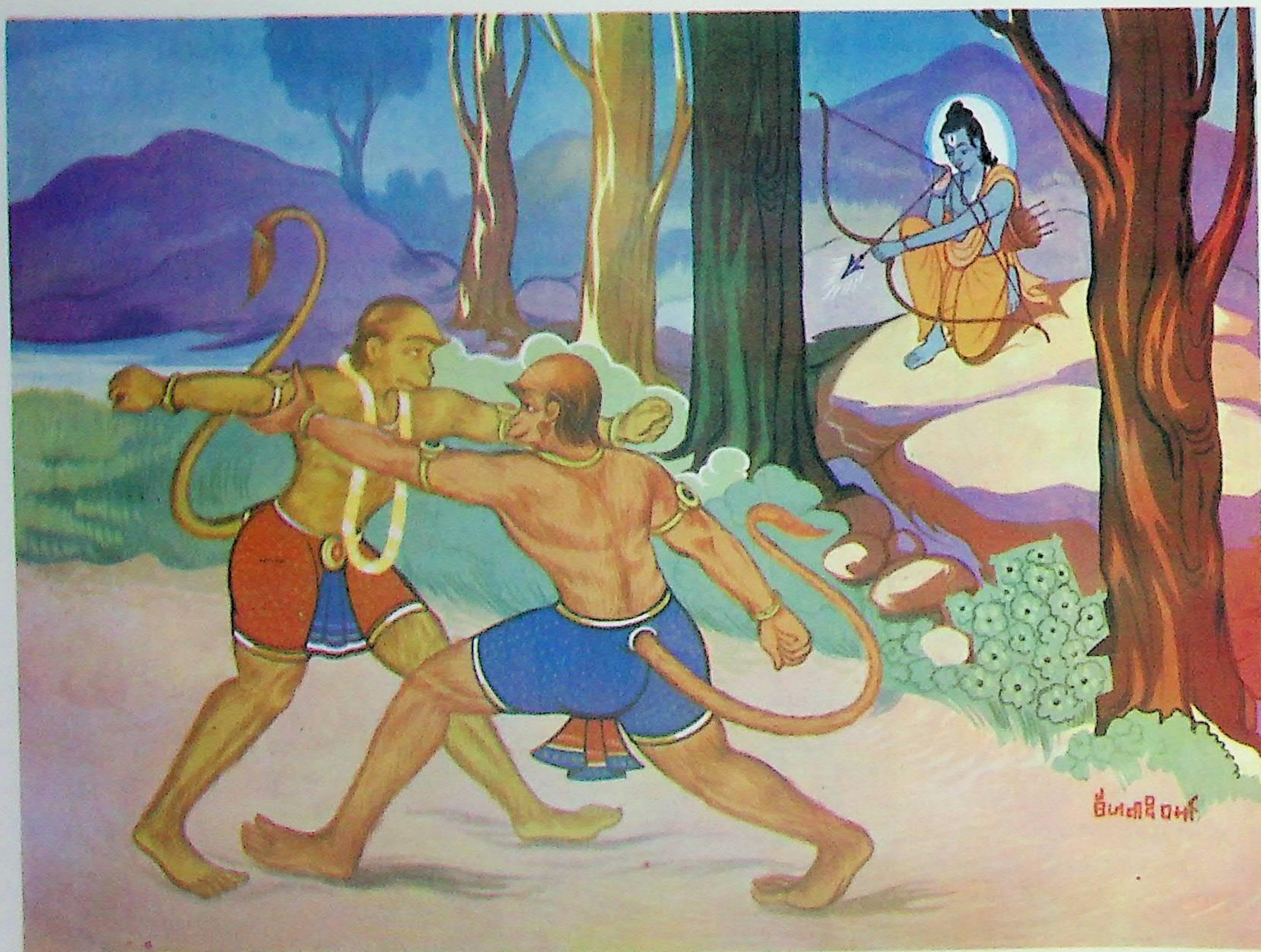
राम ने वस्त्र मांगे। सुग्रीव ने तत्काल वस्त्र दिये। राम ने सीता के वस्त्रों को अपने हृदय से लगा लिया और चिन्तामग्न हो गये। सुग्रीव ने राम से प्रार्थना की कि सीता की चिन्ता छोड़िए। धैर्य धारण कीजिए। सीता जैसे भी मिलें, वैसा प्रयास करूंगा।

राम हर्षित हो सुग्रीव से पूछने लगे कि यह तो बताओ कि तुम वन में क्यों छिपे हो? सुग्रीव ने कहा कि बालि और हम दोनों सगे भाई हैं। हम दोनों में अवर्णनीय भातृ-प्रेम था। मय दानव का पुत्र मायावी एक बार हमारे गांव आया। गांव के बाहर प्रवेश-द्वार पर उसने अर्धरात्रि में ललकारा और बालि पर आक्रमण करने के लिए दौड़ पड़ा। शत्रु के बल को न सह सकने वाला बालि मायावी पर प्रहार करने के इरादे से आगे बढ़ा। बालि को आगे आते देख वह भाग चला। मैं अपने भाई की सहायता के लिए पीछे-पीछे दौड़ा। मायावी गुह्य गुफा में जा प्रविष्ट हुआ। बालि ने मुझसे कहा कि मैं इसे जीवित नहीं छोड़ूंगा। यदि एक पखवाड़े तक मैं न लौटूं तो समझ लेना कि मैं मारा गया। पन्द्रह दिन बीत गए। एक महीने तक मैं उसकी प्रतीक्षा करता रहा। गुफा के द्वार से रक्तधारा प्रवाहित होने लगी। मैं चिन्ता में पड़ गया। मायावी ने मेरे भाई को मार डाला, अब मुझे भी मार डालेगा, ऐसा सोचकर गुफा में एक शिला लगाकर भाग चला। मंत्रियों ने मेरा जबर्दस्ती राजतिलक कर दिया।

जब बालि लौटा तो उसने समझा कि मेरी नीयत साफ नहीं है। बालि ने अपना सबसे प्रबल शत्रु समझकर मुझ पर प्रहार करना शुरू किया और मेरा सब कुछ छीन लिया। मेरी स्त्री को अपने वश में कर लिया। मैं बालि के भय से छिपा हुआ सभी भुवनों में घूमता रहा। इस पर्वत पर वह श्राप-भय से नहीं आता। सेवक का दुःख सुनकर गरीबों पर दया करने वाले राम की विराट भुजाएं आवेश से फड़कने लगीं। उन्होंने कहा कि सुग्रीव! सुनो, मैं एक ही तीर से बालि के प्राण हर लूंगा। यदि ब्रह्मा और शंकर भी उसकी रक्षा के लिए आयेंगे तो भी उसके प्राण नहीं बच सकते। जो मित्र के दुःख में दुःखी नहीं होता उसका दर्शन भयानक पाप है। जो मित्र अपनी पर्वत-सी वेदना को धूल-कण के समान और मित्र की धूल-सी पीड़ा को पर्वत के समान भारी समझता है, वही सच्चा मित्र होता है। जिनकी ऐसी स्वाभाविक बुद्धि नहीं है, वे मूर्ख क्यों हठ कर मित्रता करते हैं? मित्र का धर्म है कि वह बुरे मार्ग से हटाकर सद्मार्ग पर चलने को प्रेरित करे। मित्र के अवगुण छिपाकर उसके गुणों का वर्णन करे, परस्पर आदान-प्रदान में किसी प्रकार की शंका नहीं रखे। अपनी शक्ति के अनुरूप निरंतर मित्र की भलाई करे और संकट के समय सौ गुना स्नेह करे। वेद सच्चे मित्र के यही गुण कहते हैं। जो मित्र के सामने उसकी बड़ाई करता हो और परोक्ष में उसकी निंदा और अनभल करता हो ऐसे सर्प-सी टेढ़ी चाल चलने वाले कुमित्र को छोड़ देने में ही हित है। दुष्ट चाकर, कृपण सम्राट, कुलटा स्त्री और कपटी मित्र—ये सभी शूल के समान पीड़ा देने वाले हैं। तुम मेरी शक्ति पर विश्वास करो। मैं जैसे भी होगा तुम्हारा लक्ष्य पूरा करूंगा।

सुग्रीव ने कहा कि राम! बालि अत्यंत शक्तिशाली और धुरंधर पराक्रमी है। सुग्रीव ने बालि द्वारा मारे गये दुंदुभी राक्षस की अस्थियां और ताड़ के वृक्ष राम को दिखलाये। दुंदुभी की अस्थियां दिखाने से सुग्रीव का आशय था कि बालि ने उस नृशंस राक्षस की हत्या कर यहां फेंक दिया। किन्तु अब ये हड्डियां हिलाये नहीं हिलती हैं। ताड़ के सात वृक्षों को दिखाकर सुग्रीव ने बताया कि बालि इन्हें हिलाकर पत्रहीन कर देता है। जो इन्हें अपने बाणों से नष्ट कर सकेगा वही बालि को मार सकता है। राम ने बिना प्रयास के ही उन्हें ढहा दिया। राम की अपरिमित शक्ति देखकर सुग्रीव के हृदय का प्रेम दृढ़ हो गया। उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि राम बालि को मारेंगे। बार-बार वह राम के चरणों पर श्रद्धा से झुकने लगा।

प्रभु को देख सुग्रीव का विवेक जाग उठा। राम की कृपा से उनका मन स्थिर हो गया। उन्होंने राम से कहा कि सुख, संपति, परिवार और यश—इन सबको तिलांजलि देकर केवल आपकी सेवा करूंगा। ये तत्त्व भक्ति में बाधा डालने वाले हैं। संसार में सुख, दुःख, मित्र, शत्रु, द्वन्द्व आदि सब माया हैं। वास्तव में इनका कोई अस्तित्व नहीं है। बालि मेरा परम हितेच्छु भाई है क्योंकि उसी की कृपा से मुझे समस्त दुःखों के समूलनाशक राम मिले। यदि स्वप्न में भी बालि से मेरा युद्ध हो तो उससे मेरा मन संकुचित होगा। मैं कभी भी बालि से नहीं लड़ूंगा। राम! अब मैं



बहु छल बल सुग्रीव कर हिय हारा भय मानि।
मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि।।

बालि के प्रति युद्ध की इच्छा त्यागकर आपके चरणों में लवलीन रहूंगा। सुग्रीव से क्षणिक वैराग्य की बातें सुन राम विनोदपूर्वक मुस्कराने लगे।

राम ने सुग्रीव से कहा कि जो कुछ तुम कह रहे हो, वह सत्य है। परन्तु आज तक मेरी वाणी झूठी नहीं हुई। मैं बालि को मारकर तुम्हें सिंहासन प्रदान करूंगा। सुग्रीव बालि के पास जाकर गर्जना करने लगा। जब सुग्रीव निर्द्वन्द्व होकर हुंकारने लगा तो बालि की क्रोधाग्नि भड़क उठी। वह सुग्रीव पर प्रहार करने दौड़ा। पत्नी तारा ने बालि के चरण पकड़कर समझाया कि प्रियतम! तेज और बल के खान राम और लक्ष्मण से सुग्रीव की मित्रता हो गयी है। रणक्षेत्र में काल भी उनसे लोहा नहीं ले सकता। बालि ने भय से पीड़ित पत्नी तारा को समझाया कि राम तो समरस और समदर्शी हैं और यदि उन्होंने कदाचित मुझे मार भी दिया तो भी मैं कृतार्थ हो जाऊंगा।

भयानक दर्प में चूर बालि सुग्रीव को तिनके के समान समझकर चला। दोनों गुत्थम-गुत्था होने लगे। बालि ने सुग्रीव को घोर भय दिखाकर मुष्टिका प्रहार किया और तीव्र ध्वनि से हुंकार करने लगा। इस प्रहार से सुग्रीव विकल होकर भाग खड़ा हुआ। बालि के मुक्के की चोट सुग्रीव को वज्र जैसी लगी। सुग्रीव राम से कहने लगे कि नाथ! मैं पहले ही आपसे कह रहा था कि बालि मेरे लिए काल है, भाई नहीं।

बहु छल बल सुग्रीव कर हिय हारा भय मानि।
मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि।।

राम ने सुग्रीव को समझाया कि बालि और तुम्हारा—दोनों भाइयों का स्वरूप एक-सा है। मैंने इसी से प्रहार नहीं किया। राम ने सुग्रीव की पीठ पर हाथ फेरकर उसकी सारी पीड़ा दूर कर दी। उसके गले में फूलों की माला डाल अमोघ शक्ति प्रदान कर बालि से लड़ने के लिए विदा किया। दांव-पेंच से बालि सुग्रीव एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। राम सप्त ताड़ वृक्षों के पीछे से युद्ध देख रहे थे। बालि के शक्तिशाली प्रहार से सुग्रीव अन्त में भयभीत होकर हृदय से हार गया। तभी राम ने बालि के हृदय को साधकर तत्क्षण वाण प्रहार किया। राम के वाण प्रहार से बालि व्याकुल हो धरती पर गिरकर छटपटाने लगा। पुनः शक्ति संचय कर अपने समक्ष राम को देख उठ बैठा। मृत्यु-गोद में सो रहे बालि ने देखा, श्यामल वर्ण, सिर पर जटाजूट बांधे, हाथों में धनुष-बाण लिये राम प्रत्यक्ष खड़े हैं। बार-बार प्रभु को देख उनके चरणों में मन लगाकर अपनी दृढ़ भक्ति-भावना को दबाकर बालि ने तार्किक वाणी में कहा—"स्वामी! धर्म स्थापना के लिए आपका अवतार हुआ है। बहेलिये की तरह पेड़ की ओट में होकर मुझ पर प्रहार क्यों किया? यह क्या? मैं क्या आपका शत्रु हूं और सुग्रीव मित्र है? आप तो समदर्शी हैं!

राम ने बालि को समझाया कि सुन! छोटे भाई की पत्नी, बहन, पुत्रवधू और पुत्री –ये सब एक समान होती हैं। जो उन्हें वासना-तृप्ति की दृष्टि से देखता है, उसका वध करने में पाप नहीं लगता। तुम अभिमान में चूर थे। अपनी पत्नी तारा के सदोपदेश पर भी तुमने कान नहीं दिया। मेरी शक्ति सुग्रीव के साथ है। यह जानते हुए भी तुम अहंकार के वशीभूत सुग्रीव को मार डालना चाहते थे।

बालि ने कहा कि नाथ! आप पर मेरा चातुर्य नहीं चल सकता। जीवन के अंत में मैं आपकी शरण में आया। क्या मैं अब भी पापी हूं? हृदय-द्रावक वाणी सुनकर राम बालि के मस्तक पर हाथ फेरने लगे और कहा कि बालि! मैं तुम्हारा शरीर अचल कर देता हूं। उसमें पुनः प्राण प्रतिष्ठित होगा। बालि ने कहा कि राम! जन्म-जन्मांतर की साधना के बाद भी जीवन के अंतिम क्षण में बड़े-बड़े मुनियों के मुख से भी राम शब्द उच्चरित नहीं होता। जिनकी कृपा से तीन लोकों से सुहावनी काशी में शंकर सभी जीवों को सद्गति और अविनाशी मोक्ष देते हैं, वही राम साक्षात् मेरे नेत्रों के समक्ष खड़े हैं। क्या पुनः ऐसा सुअवसर मुझे मिलेगा? जिनके गुणों का वर्णन वेद 'नेति-नेति' कहकर करते हैं, यदाकदा मुनि लोग इन्द्रिय-निग्रह से प्राण और मन को एकाग्र कर एकाध क्षण के लिए जिस राम का दर्शन पाते हैं, वही राम मेरे समक्ष हैं। मुझे अहंकारी समझकर ही आप इस नश्वर शरीर को धारण करने को कह रहे हैं। लेकिन मैं ऐसा मूर्ख नहीं जो कल्पवृक्ष को जड़ से काटकर बबूल का पेड़ लगाऊं। राम! मुझ पर दया कीजिए। अपने कर्मों के वश जिस योनि में भी मैं जन्म लूं, वहीं आपके चरणों में अनुरक्त रहूं। मेरा पुत्र अंगद शक्ति और विनम्रता में मुझसे तनिक भी कम नहीं है। इसे अपना लीजिए। अपना दास बनाइये। राम के चरणों की छवि निरखते ही बालि की आत्मा शरीर से मुक्त

होकर इस प्रकार स्वर्गलोक गयी जैसे हाथी के गले में पड़ी पुष्पों की माला अनजाने में गिर गयी हो।

बालि स्वर्ग गया। बालि की पत्नी तारा, करुण विलाप करने लगी। उस विधवा के बाल बिखरे हुए थे,उसे देह की भी सुध नहीं थी। राम ने तारा को समझाया कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पांच तत्वों से नश्वर मानव शरीर निर्मित हुआ है। वही नश्वर शरीर तुम्हारे सामने पड़ा है और आत्मा अमर है। इसलिए रोने का कोई औचित्य नहीं। राम के उपदेश से तारा का ज्ञान जागृत हुआ और राम के चरणों में गिर उसने अविचल भक्ति का वर मांग लिया। राम सारे ब्रह्माण्ड को कठपुतली की तरह नचाने वाले हैं। राम ने सुग्रीव से वैदिक रीति से बालि का दाह-संस्कार कराया। राम के आदेश पर लक्ष्मण ने तत्काल सारे नगरवासियों और समस्त विद्वानों को बुलाकर सुग्रीव का राजतिलक किया और बालिपुत्र अंगद को युवराज-पद प्रदान किया।

जो सुग्रीव रात-दिन बालि के भय से चिंतित रहता था, उसे राम ने वानरों का नृपति बना दिया। संसार की यह रीति है कि देवता, मनुष्य, मुनि सभी स्वार्थ के कारण प्रेम करते हैं। ऐसा अकारण स्नेह तो राम ही कर सकते हैं। राम ने सुग्रीव को अनेक प्रकार से राजनैतिक शिक्षा दी और कहा कि चौदह वर्षों तक मैं अयोध्या नहीं जाऊंगा। ग्रीष्म ऋतु का ताप समाप्त हो गया। वर्षाकाल का आगमन हुआ है। मैं समीप ही पर्वत पर रहूंगा। युवराज अंगद सहित तुम अटल राज्य करो। जानकी को खोजने की भी व्यवस्था करो। सुग्रीव घर लौट आया। राम प्रवर्षण पर्वत पर टिके।

देवताओं ने पहले से ही प्रवर्षण पर्वत की गुफा को सजा रखा था। उस कुसुमित वन में मकरन्द-लोभी भौंरे गुंजार कर रहे थे। वहां फल, फूल, कंद, मूल और चिकने पत्तों का चतुर्दिक बाहुल्य था। उस अनुपमेय मनोहर गिरि-श्रृंग पर राम-लक्ष्मण रहने लगे। जंगल में मंगल हो रहा था। उज्ज्वल स्फटिक शिला पर राम-लक्ष्मण बैठे थे। राम ने भक्ति, वैराग्य और राजनीति की अनेक बातें लक्ष्मण को बताईं।

श्रीराम कहने लगे--वर्षा ऋतु के बादल छाये हुए हैं। बादलों को देखकर मदमस्त मयूर ऐसे नृत्य कर रहे हैं जैसे ईश्वर के भक्त को देख विरक्त गृहस्थ प्रफुल्लित हो जाता है।राम बोले--आकाश में बादल गरज रहे हैं और प्रिया सीता के बिना ऐसे में मेरा मन भयभीत हो रहा है। जैसे दुष्ट की प्रीति स्थिर नहीं रहती वैसे ही रह-रहकर बादलों से बिजली चमक कर शांत हो जाती है। विविध-ज्ञान प्राप्त कर जैसे विद्वान विनम्र हो जाते हैं वैसे ही पानी से भरे बादल पृथ्वी के नजदीक नीचे आकर बरसने लगते हैं। जैसे थोड़ा-सा धन पाकर दुष्ट इतराकर मर्यादा तोड़ देते हैं उसी तरह छोटी-छोटी नदियां जलाधिक्य से किनारों को तोड़ती बह रही हैं। आकाश से पृथ्वी पर गिरते ही पानी गंदला हो जाता है जैसे माया शुद्ध जीव से लिपटकर उसे व्याकुल कर देती है। सज्जन के पास जैसे सद्गुण स्वतः आ आते हैं वैसे ही जल सिमट-सिमट कर तालाब में एकत्रित हो रहा है। तृणाच्छादित धरती पर उसी तरह रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है जैसे पाखण्ड से सद्ग्रंथ छिप जाते हैं। जैसे ब्राह्मण वटु वेद-पाठ कर रहे हों वैसे मेंढक टर्र-टर्र कर रहे हैं। साधक का मन ज्ञान प्राप्त हो जाने से जैसे परिवर्तित हो जाता है वैसे ही वृक्ष नवीन पत्तों से अच्छादित हो गये हैं। अर्क और जवास उसी तरह पत्रविहीन हो गये हैं जैसे अच्छे राजा के राज्य में दुष्टों की शक्ति खत्म हो जाती है। जैसे क्रोधावेश से धर्म लुप्त हो जाता है वैसे ही बरसात में धूल नहीं दिखती। उर्वरा धरती ऐसे सुशोभित हो रही है जैसे परोपकारी का धन हो। रात के अंधेरे में जुगनू जमा हो जाते हैं, मानो दंभियों का समाज आ जुड़ा हो। चतुर कृषक वैसे ही खेती निरा रहे हैं, खरपतवार निकाल रहे हैं, जैसे विद्वान पंडित मोह, माया, दर्प छोड़ देते हैं। वृष्टि होने पर भी ऊसर धरती पर उसी तरह तृण भी नहीं उत्पन्न हो रहा है जैसे भक्त के हृदय में कभी वासना नहीं जागती। अनेक प्रकार के जंतुओं से पृथ्वी सुशोभित है जैसे सुराज्य में प्रजा समृद्ध होती है। कभी-कभी तीव्र वायु प्रवाहित होती है, उससे वर्षा के बादल छिन्न-भिन्न हो रहे हैं जैसे कुपुत्र के उत्पन्न होने से कुल-धर्म नष्ट हो जाते हैं। दिन में बादलों के आच्छादन से कभी गहन अंधकार हो जाता है और कभी सूर्य प्रकट हो जाते हैं जैसे कुसंग पाकर ज्ञान नष्ट हो जाता है और सत्संग पाकर फिर ज्ञान उत्पन्न हो जाता है।

रामचन्द्रजी ने कहा--वर्षा ऋतु बीत गई। शरद का सुहावना मौसम चारों ओर छा गया। वर्षा ने अपनी वृद्धावस्था का आभास चारों ओर फैले कांस के फूलों के रूप में दिया है। अगस्त्य नक्षत्र ने मार्ग के जल को वैसे ही सुखा दिया है जैसे लोभ संतोष को नष्ट कर देता है। नदी-सरोवर निर्मल जल से उसी तरह परिपूर्ण हो गये

जैसे मोह और मद से रहित मुनियों का हृदय निर्मल हो जाता है। जैसे ज्ञानी जन ममता का निग्रह कर लेते हैं, उसी तरह नदियों, तालाबों में बरसाती पानी सूख रहा है। शरद ऋतु का आगमन जानकर खंजन पक्षी वैसे ही आ गये जैसे अच्छे समय में पुण्य प्रकट हो जाते हैं। न धूल है न कीचड़; निर्मल धरती नीतिवान राजा की करनी-सी लगती है। जल की कमी के कारण मछलियां उसी तरह व्याकुल हो रही हैं जैसे मूर्ख गृहस्थ धन के अभाव में व्याकुल हो जाता है। बिना बादलों का निर्मल आकाश निष्काम भक्त-सा शोभित हो रहा है। शरद ऋतु में कभी-कभी कहीं-कहीं वृष्टि हो रही है जैसे किसी-किसी को ही मेरी भक्ति मिलती है। सभी लोग अपने-अपने कार्य में लग गये। अथाह पानी में मछलियां वैसे ही सुखी हैं जैसे ईश्वर भक्त को कोई कष्ट नहीं होता। कमलों के खिलने से सरोवर ऐसा लगता है जैसे निर्गुण ब्रह्म ने सगुण रूप धारण किया हो। दूसरों का वैभव देखकर जैसे ईर्ष्यालु दु:खी होते हैं वैसे ही चकवा रात को देखकर दु:खी हो जाता है। शरद ऋतु के ताप को चन्द्रमा उसी तरह नष्ट कर रहा है जैसे संतों के दर्शन से समस्त पाप टल जाते हैं। जैसे भक्त भगवान को देखता है उसी तरह चकोरों का समूह टकटकी लगाये चन्द्रमा को देख रहा है। जाड़े के भय से मच्छर और पतंगे वैसे ही नष्ट हो गये जैसे ब्राह्मण के द्रोह करने से कुल का नाश हो जाता है। वर्षा में पृथ्वी पर जो विषपायी जीव उत्पन्न हुए थे वे शरद ऋतु के आगमन से पुन: धरती में वैसे ही समाधिस्थ हो गये जैसे सद्‌गुण के मिलने से समस्त भ्रम समाप्त हो जाते हैं।

प्रकृति-वर्णन करते-करते राम को फिर सीता की याद आ गयी। वह लक्ष्मण से बोले—वर्षा बीतकर निर्मल शरद ऋतु भी आ गयी, परन्तु सीता का पता नहीं चला। एक बार जैसे ही पता चल जाए तो निमिष मात्र में काल को भी जीत कर सीता को ले आऊं। सुग्रीव ने भी राज्य, वैभव, सम्पत्ति, नगर और पत्नी पाकर मेरी स्मृति बिसरा दी। जिस बाण से मैंने बालि का वध किया था कल उसी से मूर्ख सुग्रीव को भी मारूंगा। लक्ष्मण ने राम को कुपित देखा तो वे धनुष पर बाण चढ़ाकर सुग्रीव का वध करने को तैयार हो गये। राम ने भाई को समझाया कि मित्र सुग्रीव को मात्र डरा-धमका कर ले आओ।

मन ही मन हनुमान ने सोचा कि राम के कार्य को सुग्रीव ने बिसरा दिया। हनुमान सुग्रीव के पास आये और चारों प्रकार की नीतियों—साम, दाम, दण्ड तथा भेद से उन्हें समझाया। हनुमान की बातों को सुनकर सुग्रीव भयभीत हो गये और कहने लगे कि भोग-विलास ने मेरा विवेक हर लिया था। हनुमान! जहां कहीं भी बंदरों का समूह है सर्वत्र दूतों को भेजो। वे बंदरों को यह संदेश दें कि पन्द्रह दिनों के भीतर जो मेरे पास नहीं आयेगा, उसे मैं मार डालूंगा।

हनुमान ने दूतों को बुलाया और भय, प्रीति और नीति की शिक्षा देकर सभी वानरों को विदा कर दिया। सुग्रीव की राजधानी में लक्ष्मण आए और कहा कि इस नगर को क्षण भर में जलाकर राख कर दूंगा। सभी लोगों को व्याकुल देख अंगद लक्ष्मण के पास आये। उनके चरणों पर मस्तक झुकाया। लक्ष्मण ने कहा कि तुम निर्भय रहो। जब सुग्रीव को ज्ञात हुआ कि लक्ष्मण क्रुद्ध हैं तब हनुमान से कहा कि मेरी पत्नी सहित लक्ष्मण के चरणों की वंदना कर उन्हें राजगृह में ससम्मान ले आओ। सुग्रीव ने मस्तक झुकाया। लक्ष्मण ने उन्हें गले लगा लिया। सुग्रीव ने कहा कि स्वामी लक्ष्मण! विषय से बढ़कर अन्य कोई मद नहीं। वासना क्षण भर में मुनियों को भी डिगा देती है। हनुमान ने बताया है कि पहले से ही स्थान-स्थान से वानरों के समूह को बुलाने के लिए दूतों को भेज दिया गया है। लक्ष्मण को आगे करके सुग्रीव, अंगद आदि वानर राम के पास आये। सुग्रीव ने राम से कहा कि मैं दोषी नहीं हूं। मैं प्रबल माया के बंधन से न छूट सका जो आपकी दया से ही टूट सकता है। देवता, मनुष्य और मुनि सभी काम के वशीभूत हैं। मैं तो वासनामय बंदर पशु हूं ही। स्त्री के कटाक्षों का असर जिस पर न हो, भयंकर क्रोध रूपी अंधेरी रात में भी जो जागता रहे, जो लोभ में नहीं फंसा, ऐसा व्यक्ति तो आपका ही स्वरूप हो सकता है। ऐसी क्षमता आपकी कृपा से ही आ सकती है, अभ्यास से नहीं।

राम ने सुग्रीव से कहा कि तुम मुझे लक्ष्मण के समान प्रिय हो। अब ऐसा उपाय करो कि सीता का पता चले। इसी बीच दसों दिशाओं से रंग-बिरंगे बंदरों का विराट समूह आ गया। वानर समुदाय से राम ने अलग-अलग कुशल क्षेम पूछी। सुग्रीव की आज्ञा से सभी बंदर पंक्तिबद्ध खड़े हो गये। वानराधिराज सुग्रीव ने बंदरों से कहा कि चारों दिशाओं में जाओ। एक महीने के बाद सभी लोग वापस आना। जो एक महीने में जानकी का पता लगाए बिना लौटेगा, उसे मैं मार डालूंगा। सुग्रीव ने अंगद, नल, नील आदि योद्धाओं को बुलाकर कहा कि तुम लोग



पाछे पवन तनय सिरु नावा। जानि काज प्रभु निकट बोलावा।।
परसा सीस सरोरुह पानी। कर मुद्रिका दीन्हि जन जानी।।

अत्यंत धैर्यशाली एवं प्रतिभासम्पन्न हो। सभी योद्धा एक साथ दक्षिण दिशा की ओर जाओ और सीता का पता लगाओ। मनसा, वाचा, कर्मणा ऐसा उपाय करो कि राम का कार्य सम्पन्न हो। धूप का पीठ से और अग्नि का सामने से सेवन करना चाहिए किन्तु स्वामी की सेवा तो निश्छल होकर मन, वचन, कर्म से करनी चाहिए। सब कुछ त्याग कर राम की सेवा करना ही जीवन का सच्चा फल है। प्रसन्नचित्त सभी वानर राम के चरणों पर मस्तक झुकाकर चल पड़े।

पाछें पवन तनय सिरु नावा। जानि काज प्रभु निकट बोलावा।।
परसा सीस सरोरुह पानी। करमुद्रिका दीन्हि जन जानी।।

हनुमान ने अंत में राम को प्रणाम किया। राम जानते थे कि हनुमान द्वारा ही उनका काम होगा। राम ने कमलवत हाथों से उनका मस्तक स्पर्श किया और सीता को अपनी स्मृति दिलाने के लिए अंगुली की अंगूठी उन्हें दे दी। राम ने हनुमान को विदा करते हुए कहा कि सीता को धीरज देना और मेरी शक्ति और वियोग की स्थिति का बोध कराकर लौटना। हनुमान प्रभु को हृदय में रख उनसे विदा लेकर चल पड़े। बन्दरों का सारा समुदाय नदी, तालाब, कंदराओं के चप्पे-चप्पे में जानकी को ढूंढ़ते हुए चल पड़ा। राम-भक्ति में विभोर हनुमान और सभी बन्दर शरीर की सुध-बुध भूल चुके थे।

बन्दरों का समूह गहन वनों से गुजरता हुआ धरती के चप्पे-चप्पे पर सीता की खोज करने लगा। मार्ग में राक्षस मिलते तो बंदर उन्हें चपेट कर मार डालते। अनेक प्रकार से सीता को खोजते हुए बन्दर आगे बढ़ रहे थे। यदि मार्ग में उन्हें कोई तपस्वी मिल जाता तो जानकी का पता पूछने के लिए उसे घेर लेते। सारे बन्दर प्यास से व्याकुल थे। कहीं जल नहीं मिल रहा था। हनुमान ने सोचा कि अब सभी प्यास से मर जाएंगे। पर्वत श्रृंखला पर चढ़कर उन्होंने धरती के अंदर एक कौतूहलपूर्ण गुफा देखी। वहां हंस, चकवा, चकवी उड़कर गुफा में प्रविष्ट हो रहे थे। बंदरों समेत हनुमान भी उसी गुफा में प्रविष्ट हुए। गुफा में उन्होंने एक सुन्दर वाटिका और तालाब देखा। वहीं एक मंदिर था जिसमें एक तपस्विनी विराजमान थी। हनुमान ने बन्दरों सहित दूर से ही उस नारी को प्रणाम किया। तपस्विनी से उनका हाल-चाल पूछा और उपवन के फल-फूल खाने और वाटिका का सुन्दर जल-पीने का आग्रह किया। भोजन पाकर वानर तपस्विनी के पास आये। उस तपस्विनी नारी ने कहा कि आंख मूंदकर गुफा के बाहर जाओ। चिंतित न होओ, सीता मिलेंगी। मैं अब भगवान राम के पास जाती हूं। एकाग्र चित्त सबने नेत्र बंद किये। पुनः जब नेत्र खुले तो देखा वे सभी समुद्र के तट पर हैं। वह तपस्विनी राम के पास चली गयी। राम ने उसे अनपायिनी भक्ति प्रदान की। तपस्विनी राम का आशीर्वाद प्राप्त कर उनके चरण-कमलों का ध्यान करती हुई बदरिकाश्रम चली गयी।

समुद्र तट पर एकत्र बंदर सोचने लगे कि निर्धारित समय बीत रहा है। सीता का कहीं पता नहीं लगा। सभी परस्पर विचार कर रहे थे कि सीता का पता लिए बिना वापस जाना अनुचित है। अंगद ने कहा कि दोनों तरह से ही हमारी मौत है। यदि सीता का पता लगाए बिना हम लौट गए तो सुग्रीव किसी को जिंदा नहीं छोड़ेंगे। पिता की मृत्यु के बाद ही सुग्रीव मेरा वध कर देते परन्तु राम ने ही मुझे बचा लिया। अंगद की यह करुण वाणी सुनकर सभी वीर कपि मौन हो गये। सभी के नेत्रों से अश्रुपात होने लगा। सभी ने निश्चय किया कि सीता को खोजे बिना हम नहीं लौटेंगे। जांबवान् ने अंगद को दुःखी देख उपदेशपूर्ण कथाएं कहीं। जांबवान् बोले कि अजेय, अजन्मा ब्रह्म श्रीराम को साधारण मनुष्य न मानो। हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं जिनको ब्रह्म राम में विश्वास है। अपनी इच्छा से राम ने अवतार लिया है। भक्तगण सभी प्रकार के मोक्षों को त्यागकर सगुण राम की सेवा में लीन रहते हैं।

आजु सबहि कहं भच्छन करउं। दिन बहु चले अहार बिनु मरउं।।
कबहुं न मिल भरि उदर अहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहिं बारा।।

जांबवान् की इस वाणी को पहाड़ की कंदरा में बैठे संपाती ने सुना। उसने बाहर बहुत-से वानरों को देखकर कहा कि बहुत दिनों के बाद ईश्वर ने मुझे बंदरों का आहार दिया है। मैं भूख से तरस रहा था। आज भगवान ने भरपूर आहार दे दिया। आज सभी को खाऊंगा। गिद्ध की डरावनी वाणी सुनकर सभी चिंतित हो उठे।

अंगद ने मन में विचारकर कहा कि जटायु का जन्म धन्य है। राम-हित में उसने प्राणोत्सर्ग कर दिया। वह भाग्यशाली है। भाई जटायु की मृत्यु तथा परम गति



आज सबहि कह भच्छन करउं। दिन बहु चले अहार बिनु मरउं।
कबहुं न मिल भरि उदर अहारा। आजु दीन्ह बिधि एकहिं बारा।।

पाने की शोक तथा हर्षयुक्त वाणी सुनकर संपाती बंदरों के समीप आ गया। उसे देख बन्दर भयभीत हो गये। संपाति ने उन्हें विश्वास दिलाकर जटायु का हाल-चाल पूछा। जटायु की कथा सुनकर संपाती ने अनेक प्रकार से राम की महिमा बखानी। उसने बंदरों से कहा कि मुझे समुद्र के किनारे ले चलो। पहले मैं अपने भाई का तर्पण करूंगा। बाद में सीता का पता बताऊंगा। सीता मिलेंगी। तर्पण करने के बाद संपाती ने कहा कि तरुणाई में हम दोनों भाई उड़ते हुए सूर्य के समीप पहुंच गये थे। सूर्य का तेज न सह सकने के कारण जटायु लौट आया। मैं दर्प में अंधा सूर्य के समीप बढ़ता गया। सूर्य के ताप से मेरे पंख भस्म हो गए और मैं धरती पर गिर पड़ा। धरती पर चन्द्रमा मुनि के दर्शन हुए। उन्होंने मुझे शिक्षा दी कि शरीर नश्वर है। मेरा दर्प समाप्त हो गया। चन्द्रमा मुनि ने बताया कि परमात्मा पृथ्वी पर मनुष्य रूप में अवतरित होंगे। राक्षसराज रावण उनकी पत्नी को चुरायेगा। उनकी खोज में दूत आएंगे, उनसे मिलकर ही मैं पवित्र हो सकूंगा। मुनि ने मुझ से कहा था कि सीता का पता बता देना। आज चन्द्रमा मुनि की वाणी सत्य सिद्ध हुई।

संपाती ने कहा कि त्रिकूट पर्वत पर लंका है। वहीं अशोक वाटिका में सीता चिन्तामग्न, बंदिनी हैं। अपनी अपार दृष्टि से मैं उन्हें देख रहा हूं। मैं वृद्ध हूं। जो विवेकशील हो और चार सौ योजन समुद्र का उल्लंघन कर सकें वही सीता के पास जा सकता है। मेरी अवस्था देख धैर्य रखो। राम कृपा से मेरा शरीर स्वस्थ हो गया। उसने बंदरों को धैर्य बंधाया और कहा कि स्वामी राम का नाम स्मरण कर पापी भी भवसागर पार कर जाते हैं। उनके दूतों की कायरता उचित नहीं है।

संपाती चला गया। सभी बंदर अपनी शक्ति आंकने लगे। परन्तु समुद्र लांघने को कोई तैयार नहीं था।

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना।।
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान बिधाना।।

जांबवान् ने कहा कि अब जवानी का जोश नहीं रहा। मेरी शक्ति समाप्त हो चली है। जब राम वामन रूप में अवतरित हुए थे तब मुझमें यौवन की शक्ति थी। तब दो घड़ी में ही बलि को बांधते समय भगवान के बढ़े शरीर की सात प्रदक्षिणाएं कर ली थीं। सीता के समीप पहुंचने में मैं अब असमर्थ हूं। अंगद ने कहा कि मैं समुद्र लांघ सकता हूं परन्तु लौटने में शंका है।

जांबवान् ने अंगद से कहा कि तुम राजकुमार हो। योग्य हो। तुम्हारा जाना राजनीति के प्रतिकूल है। शक्ति के स्रोत हनुमान को संबोधित कर जांबवान् ने पूछा, तुम क्यों चुप्पी साधे हो? तुम वायु से भी शक्तिशाली पवन-सुत हो। विद्या, बुद्धि और विज्ञान के आगार हो। संसार में ऐसा कौन-सा काम है जो तुम्हारे लिए कठिन है?

यह सुनते ही हनुमान ने पर्वताकार शरीर धारण किया। उनका वर्ण तप्त स्वर्ण-सा हो उठा। वे पर्वतों के सम्राट प्रतीत हो रहे थे। सिंहनाद कर हनुमान ने कहा, मैं इस अथाह सागर को खिलवाड़ में पार कर सकता हूं। त्रिकूट पर्वत को उठाकर सारी सेना के साथ रावण को बंदी बनाकर वीरगति प्रदान कर सकता हूं। मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं क्या करूं?

जांबवान् ने कहा कि तुम सीता की सारी स्थिति देखकर लौट आओ। राम अपनी शक्तिशाली भुजाओं के पराक्रम से वानरों की सामूहिक सेना को साथ लेकर रावण का संहार करेंगे।

जांबवान् का सदादेश सुन मन ही मन हनुमान बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने सभी बंदरों से कहा कि भाइयो! इसी समुद्र के तट पर कंद-मूल-फल खाते हुए सभी तब तक मेरी प्रतीक्षा करना जब तक मैं सीता को देख न आऊं। मुझे विश्वास है कि सीता-दर्शन का कार्य सफल होगा; क्योंकि मेरा मन अत्यन्त प्रफुल्लित हो रहा है। सबके समक्ष नतमस्तक हो, राम का स्वरूप हृदय में धारण कर हनुमान कौतूहल के साथ समुद्र के तट पर स्थित एक सुंदर पहाड़ पर निर्द्वन्द्व चढ़ गये। उस पर्वत की सर्वोच्च श्रृंखला पर खड़े हनुमान ने हुंकार कर उछाल भरी। उनकी तेज उछाल के धक्के से पर्वत पाताल में धंस गया। राम के अमोघ शक्तिशाली वाण की गति से हनुमान बढ़े। समुद्र ने उन्हें रामदूत समझकर मैनाक पर्वत को उनके श्रम का परिहार करने को कहा। हनुमान ने मैनाक को हाथ से छुआ, फिर प्रणाम कर कहा कि जब तक राम-कार्य सिद्ध नहीं कर लेता तब तक मुझे विश्राम कहां?

जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा।।
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मांगी बिदा ताहि सिरु नावा।।

देवताओं ने हनुमान की शक्ति-परीक्षा लेने के लिए सर्पधात्री सुरसा को समुद्र-मार्ग पर भेज दिया। उसने हनुमान से कहा कि मुझे इच्छानुसार आज तुम आहार मिले हो। हनुमान ने सुरसा से कहा कि मैं राम-कार्य से लंका जा रहा हूं। कार्य सिद्ध कर जब लौटूंगा तो तुम्हारे मुख में प्रवेश करूंगा। मां! मेरे मार्ग में बाधक मत बनो। परन्तु सुरसा ने हनुमान को निहारते हुए कहा कि ऐसा नहीं होगा। हनुमान ने कहा, फिर मुझे क्यों नहीं निगलती हो? हनुमान को निगल जाने के लिए सुरसा ने योजन चौड़ा मुख फैलाया। हनुमान ने अपना आकार दुगुना कर लिया। उसने सोलह योजन मुख विस्तार किया। तत्क्षण हनुमान बत्तीस योजन हो गए। सुरसा ज्यों-ज्यों अपना बदन बढ़ाती, त्यों-त्यों हनुमान दुगुना रूप विस्तार करते गये। जब सुरसा ने सौ योजन मुख का विस्तार किया तब हनुमान ने अत्यन्त लघु रूप धारण किया और सुरसा के मुख में प्रवेश कर बाहर निकल आये और मस्तक नवाकर विदा ली।

सुरसा ने कहा कि मैं तुम्हारी बुद्धि, विवेक तथा शक्ति समझ गयी। उसने हनुमान को आशीर्वाद दिया और चली गई। प्रसन्न हो हनुमान आगे बढ़े। समुद्र में एक और भी भयानक राक्षसी थी जो माया का प्रपंच रचकर नभचारी पक्षियों और जीव-जन्तुओं की छाया-जल में जकड़ लेती थी, जिससे वे उड़ नहीं सकते थे। आकाश में उड़ने वाले समस्त पक्षियों को वह खा जाती थी। हनुमान के साथ भी उसने यही प्रपंच रचा। उसकी इस कपट-लीला को हनुमान ने भांप लिया। हनुमान ने उसे मारकर समुद्र में फेंक दिया और समुद्र पार कर लंका में पहुंचे।

लंका पहुंचकर हनुमान वन की हरीतिमा और शोभा निरखने लगे। वे उस नवीन शस्य-श्यामला पहाड़ी धरती को देखकर प्रसन्न हो उठे। सामने दीख रहे विशाल पर्वत पर चढ़कर हनुमान ने लंका के दुर्ग को निरखा। रावण का अत्यंत ऊंचा दुर्ग था। चारों ओर सागर की उत्ताल तरंगें अट्टहास कर रही थीं। सोने के परकोटे अद्भुत कांति बिखेर रहे थे। लंका नगरी में चारों ओर सुंदर चौराहे, बाजार, रास्ते और गलियां थीं। अनगिनत हाथी, घोड़े, खच्चर, रथ और पैदल सैनिकों का विस्तृत समूह था। अत्यंत शक्तिशाली राक्षसों की चतुरंगिणी सेना थी। सुंदर वन, उपवन, फुलवारी, तालाब, कुएं और वाटिकाएं थीं। मनुष्य, किन्नर, देवता और गंधर्वों की सुंदर कन्याएं मुनियों के भी मन को मोहित करने में समर्थ थीं। पर्वत समान विराट शरीर वाले शक्तिशाली वीर हुंकार कर रहे थे। अगणित पहलवान अखाड़े में मल्लयुद्ध कर रहे थे। सावधानी के साथ विकट शरीर वाले निर्भीक योद्धा नगर की चारों दिशाओं पर पहरा दे रहे थे। हिंसक राक्षस मनुष्य एवं पशुओं का भक्षण कर रहे थे।

लंका की चतुर्दिक संरचना देखकर हनुमान ने निश्चय किया कि अत्यंत लघु रूप धारणकर रात्रि के समय लंका में मैं प्रविष्ट होऊंगा। हनुमान मच्छर के समान छोटा रूप बनाकर राम का स्मरण करते हुए लंका नगरी में प्रविष्ट हुए। लंकिनी नाम की राक्षसी ने हनुमान से कहा कि मेरी उपेक्षा करके कहां जा रहे हो? तुम्हें शायद ज्ञात नहीं कि लंका के चतुर्दिक जो चोर हैं, वही मेरे आहार हैं। हनुमान ने लंकिनी पर तीव्र मुष्टिका प्रहार किया। वह खून उगलती बेहोश होकर गिर पड़ी। होश में आने पर भयभीत होकर उस राक्षसी ने कहा कि ब्रह्मा ने मुझे वरदान दिया था कि किसी कपि के प्रहार से जब मैं व्याकुल होऊंगी तभी राक्षसों का सर्वनाश होगा। मैं पुण्यशालिनी हूं कि राम-दूत के दर्शन हुए। स्वर्ग और मोक्ष को एक तुला पर रख दिया जाए तो भी सत्संग से प्राप्त आनंद के पासंग के बराबर भी नहीं है। लंकिनी ने हनुमान से कहा कि तुम लंका में प्रविष्ट हो अपना काम करो। राम को निरंतर स्मरण रखना। उनकी कृपा से शत्रु और विष, मित्र और अमृत के समान प्रभावकारी होते हैं। समुद्र गाय के खुर में समा जाता है। अग्नि शीतल हो जाती है। राम की कृपा से सुमेरु पर्वत का भारीपन धूलकण-सा हल्का हो जाता है।

लंकिनी से विदा ले लघुरूपधारी हनुमान राम का स्मरण करते हुए लंका में प्रविष्ट हुए। उन्होंने प्रत्येक गृह में अगणित योद्धाओं को देखा। हनुमान रावण के अति विचित्र महल में प्रविष्ट हुए। रावण निद्रानिमग्न था। जानकी दुर्ग में कहीं भी नहीं थीं। समीप ही सुहावना मंदिर-सा घर था। जिसकी बाहरी दिवालों पर राम के शस्त्रों के चित्र अंकित थे और बाहर तुलसी का बिरवा लहरा रहा था। हनुमान आश्चर्यचकित रह गए। रावण की इस राक्षस-नगरी में कौन सज्जन पुरुष वास करता है? हनुमान गृह-शोभा निरखते रहे। विभीषण की निद्रा खुली और उन्होंने राम-नाम स्मरण किया। सुनकर हनुमान हर्षित हो उठे। उन्होंने इस साधु पुरुष से संपर्क का निश्चय किया। ब्राह्मण वेश धारण कर हनुमान विभीषण के पास गये।

विभीषण ने हनुमान से जिज्ञासा की कि क्या आप ईश्वर-भक्त हैं? क्योंकि आपको देख मेरा प्रेम उमड़ पड़ा है। अथवा आप स्वयं रामचन्द्र ही हैं, जो मुझे कृतार्थ करने आये हैं। हनुमान ने सारी परिस्थितियां विभीषण से कह सुनाईं। राम का गुण सुनते ही विभीषण का मन मग्न हो गया। उन्होंने हनुमान से कहा कि दातों के बीच जैसे जिह्वा बंदिनी है वैसी ही मेरी भी स्थिति इस लंका में है। क्या राम मुझ पर कृपा करेंगे? मैं तामसी-वृत्ति से ग्रसित राम-भक्ति से हीन हूं। आप जैसे संत का अकस्मात् दर्शन हुआ। इससे मुझे विश्वास हो गया है कि यह राम का ही अनुग्रह है। अवश्य मुझे राम मिलेंगे। हनुमान ने कहा कि राम सच्चा प्रेम करने वालों को सदा अपना लेते हैं। मुझमें कौन-सी महानता है? प्रातःकाल मेरे नाम का स्मरण करने पर मनुष्य को उस दिन भोजन भी नहीं मिलता। राम का स्मरण करते ही हनुमान गद्गद हो गये। राम-भजन के अतिरिक्त दूसरी कोई गति नहीं है, यह जानते हुए भी जो राम को विस्मृत कर देते हैं उनकी बड़ी दुर्गति होती है। राम का गुणगान करते हुए दोनों ने परम शांति प्राप्त की। हनुमान ने माता सीता के दर्शन की जिज्ञासा प्रकट की। विभीषण ने हनुमान को जानकी का पता बताया। विभीषण से विदा मांग लघु रूप धारणकर हनुमान आगे बढ़े।

हनुमान अशोक वन में पहुंचे। माता सीता को देखकर मन ही मन प्रणाम किया। रात के चार पहर बीत गये थे। हनुमान ने सीता का शरीर चिन्ता से कृश देखा। सिर पर जटाओं की एक वेणी लटकी हुई थी। प्रतिक्षण राम के गुणों का जाप कर रही थीं। चिंतित जानकी के नेत्र अपने चरणों पर झुके थे। उनका मन राम के चरणों में लीन था। सीता की दयनीय स्थिति देखकर हनुमान बहुत दुःखी हुए। वृक्ष की ओट में छिपे हनुमान सोच नहीं पा रहे थे कि क्या करूं?

उसी समय रावण ने बहुत-सी सुन्दर स्त्रियों के संग अशोक वाटिका में प्रवेश किया। दुष्ट रावण ने साम, दाम, भय और भेद दिखाकर जानकी को समझाया-बुझाया। रावण ने कहा कि सुकुमारी और चतुर जानकी! मैंने प्रतिज्ञा कर ली है कि मंदोदरी आदि समस्त रानियों को तुम्हारी दासी बनाकर रखूंगा। एक बार इधर मेरी ओर देखो।

तिनके की आड़ लेकर जानकी ने राम का स्मरण किया। निर्भीक होकर सीता ने कहा कि दसमुख! क्या जुगनू की रोशनी से कमल की पंखुड़ियां मुस्करा सकती हैं? दुष्ट रावण! तुम राम के वाणों की तीक्ष्णता नहीं जानते? अकेली पाकर मुझे चुरा लाये हो। तुम नीच, अधम और बेशर्म हो। तुम्हें लज्जा नहीं लगती? सीता की वाणी से राम को सूर्य और अपने को जुगनू के समान सुनते ही रावण आग-बबूला हो गया। उसने म्यान से तलवार खींच ली और क्रोध से जलते हुए बोला कि सीता! तुमने मेरा अपमान किया है। तुम्हारी ग्रीवा को कृपाण-प्रहार कर धड़ से अलग कर दूंगा। सीता ने कहा कि रावण! मेरे गले में श्याम कमल की माला-सी सुंदर तथा हाथी के सूंड के समान राम की भुजाएं पड़ेंगी या तुम्हारी भयानक तलवार। सीता रावण से बोली कि राम-विरह से दग्ध मेरा शरीर तुम नष्ट कर दो। हे चंद्रहास! तेरी धार प्रबल और तीक्ष्ण है। तू मेरे दुःखों की जलन को अपनी शीतल धार से दूर कर दे। यह व्यंगोक्ति सुनकर रावण सीता को मारने के लिए दौड़ा। उसकी पटरानी मय दानव की कन्या मंदोदरी ने रावण को समझाया कि नारी पर प्रहार करना अनीति है। रावण मान गया। रावण ने समस्त भयानक राक्षसियों को बुलाकर आदेश दिया कि तुम लोग सीता को अनेक प्रकार से त्रास दो। यदि महीने भर में कहा न माने तो अपनी सर्वनाशी तलवार से इसे समाप्त कर दूंगा। यह कहकर रावण अपने राजमहल में लौट गया।

अशोक वाटिका में पिशाचिनियों का समूह भयानक प्रपंच रचकर सीता को त्रास देने लगा। इन राक्षसियों में अत्यंत विवेकशील और निपुण, राम-चरणों में निरंतर प्रेम रखने वाली त्रिजटा भी थी। उसने समस्त राक्षसियों को बुलाकर अपना स्वप्न सुनाया और कहा कि सीता की सेवा कर अपना भला करो। मैंने स्वप्न में देखा है कि सोने की लंका एक बंदर ने जला दी है और उसने रावण की सेना को विनष्ट कर दिया है। रावण के दसों मुख और बीसों भुजाएं कट गयी हैं और वह गधे पर सवार दक्षिण दिशा की ओर नग्न जा रहा है। लंका का राज्य विभीषण को मिल गया है। लंका में राम का चतुर्दिक यशगान हो रहा है। राम ने सीता को बुला लिया है। मैं सच कहती हूं कि दो-चार दिन में मेरा स्वप्न सत्य सिद्ध होगा। त्रिजटा की स्वप्न की बातें सुनकर सारी राक्षसियां भयभीत हो गयीं और जानकी के चरणों पर गिर पड़ीं। मन ही मन सीता चिंतित थीं कि एक माह के उपरांत रावण अवश्य मेरा वध कर देगा। सीता ने त्रिजटा से कहा कि मां! तुम मेरी चिरसंगिनी हो। कोई उपाय बताओ। सीता ने कहा कि मेरा वियोग चरमसीमा को पार कर



तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर।।
चकित चितव मुंदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदय अकुलानी।।

गया है। लकड़ियां इकट्ठी कर चिता सजाओ। उसी चिता में अग्नि-समाधि लूंगी राम के प्रति मेरा प्रेम सत्य सिद्ध कर दिखा दो। रावण का बरछी-सा प्रहार करने वाला व्यंग्य मैं नहीं सुन सकती।

जानकी को चिन्तामग्न समझ त्रिजटा ने उनके चरण स्पर्श कर कहा कि राम के प्रताप, बल और यश के रहते आप ऐसी बात क्यों कहती हैं? चिता जलाने के लिए इस अर्द्ध रात्रि में आग कहां मिलेगी? त्रिजटा अपने घर चली गयी। सीता ने सोचा कि विधाता ही मुझसे रूठ गया है। आकाश में तारे प्रत्यक्ष अंगारे बन उगे हुए हैं, परन्तु एक भी नक्षत्र धरती पर नहीं पतित हो रहा है। अग्नि से परिपूर्ण चन्द्रमा भी मुझ अभागिन पर अग्निवर्षा नहीं कर रहा है। सीता ने अशोक वृक्ष से कहा कि तुम्हीं अपने नाम की सार्थकता सिद्ध करो। तुम्हारे किसलय अग्नि-समान हैं। उन्हीं पत्रों से अग्नि प्रदान करो जिससे मेरे विरही जीवन का अंत हो जाए।

तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुन्दर।।
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष विषाद हृदय अकुलानी।।

विकट परिस्थितियों से जूझती हुई सीता का प्रत्येक क्षण कल्प के समान बीत रहा था। ऐसे में हनुमान का आगमन ऐसा ही था जैसे करुणा के बीच साक्षात् वीर रस आ जाये। उन्होंने मन में दृढ़ संकल्प कर राम द्वारा प्रदान की गयी अंगूठी धरती पर गिरा दी। सीता उस मुद्रिका को लेने के लिए इस प्रकार बढ़ीं मानो वृक्ष से अंगारा गिरा हो। जानकी राम-नाम अंकित उस अंगूठी को देखकर एक ही साथ हर्ष और विषाद से ग्रस्त हो उठीं। उन्होंने मन ही मन सोचा कि अजेय राम को कौन जीत सकता है? क्या माया-प्रपंच रचकर यह अंगूठी गिरायी गयी है? वृक्ष की ओट से हनुमान ने राम के विशद गुणों का वर्णन प्रारम्भ किया। जानकी ध्यान-मग्न हो सुनने लगीं। हनुमान ने आदि से अंत तक राम की विगत अज्ञात कहानी कह सुनाई। सीता ने कहा कि कानों में जो राम की अमृत कथा सुना रहा है, वह मेरे समक्ष क्यों नहीं आता? हनुमान सीता के समक्ष आ गये। सीता ने इसे राक्षसी माया समझकर मुख फेर लिया।

हनुमान ने अपना परिचय देते हुए कहा कि मां जानकी! मैं राम-दूत हूं। राम की अंगूठी मैं ही लाया हूं। सशंकित सीता ने पूछा कि नर और बंदर का साथ कैसे हुआ? हनुमान ने सीताहरण के बाद की सारी कथा कह सुनाई। हनुमान की प्रेममयी वाणी सुनकर जानकी के मन को विश्वास हुआ और उन्होंने निश्चित जान लिया कि मनसा-वाच-कर्मणा हनुमान राम के सुयोग्य सेवक हैं। वे राम-विरह में लवलीन थीं। उनके नेत्र सजल हो गये। उन्होंने कहा कि मैं विरह-सागर में डूब रही थी। तुम जलयान बनकर आये हो। लक्ष्मण और प्रियतम राम की कुशल कहो। राम अत्यंत कोमल और दयालु हैं। फिर क्यों उन्होंने मेरे प्रति कठोर निष्ठुरता धारण कर ली है? वे अपने भक्तों को सुखी रखते हैं। हनुमान! क्या फिर कभी मेरे अभागे नेत्रों को राम का कोमल श्याम शरीर दर्शन देकर शीतल कर सकेगा? सीता को व्याकुल देख हनुमान मृदु स्वर में बोले—''मां सीता! लक्ष्मण, राम पूर्ण सकुशल हैं। वे केवल आपके वियोग में दुःखी हैं। अपना मन छोटा मत कीजिए। राम का प्रेम आपके प्रति आपसे दूना है। धैर्य धारण कर राम का संदेश सुनिए। राम ने भाव-विह्वल हो मुझे संदेश दिया है कि सीता के वियोग में मेरे लिए सभी पदार्थ विपरीत हैं। चन्द्रमा की शीतल ज्योत्स्ना मुझे सूर्य की किरणों की तरह ताप देती है। कमल-वन भालों के जंगल हो गये हैं। आकाश से गिरने वाली पावस की बूंदें तप्त पानी की तरह बरसती हैं। जो वस्तुएं हितप्रद थीं, वे पीड़ादायक हो गयी हैं। शीतल सुरभित मंद वायु-सर्प श्वास-सी विषैली हो गई है। दुःख का भार वर्णन से हल्का नहीं होता। मेरी वेदना को कोई नहीं जानता। प्रियतमा जानकी या मेरा मन ही मेरे प्रेम को जानता है। मन निरंतर जानकी के पास रहता है। जानकी के अतिरिक्त मेरा मन और कुछ नहीं जानता।

सीता शरीर की सुधबुध खो बैठीं। हनुमान ने समझाया कि मां! हृदय में धैर्य रखो। राम के प्रभुत्व पर विश्वास करो। निराशा छोड़ो। राक्षसों का समूह पतंगा है। राम-वाण अग्नि है। मां! राक्षसों को भस्म समझो। यदि राम को आपका पता होता तो वे अब तक आने में देर नहीं करते। रामवाण रूपी सूर्य के उदित होते ही राक्षस समूह रूपी अंधकार नष्ट हो जाएगा। मां! मैं राम का दूत हूं। मैं आपको अभी अपने साथ ले चल सकता हूं। परन्तु स्वामी की आज्ञा नहीं है। कुछ दिन और धैर्य धरो। बंदरों का समूह लेकर राम आयेंगे। वे राक्षसों का वध कर तुम्हें ले जायेंगे। सीता ने कहा कि हनुमान! राक्षस भयानक योद्धा हैं। मुझे संदेह है कि रावण पराजित होगा।

संदेह की बात सुनते ही हनुमान ने अपना विराट रूप धारण किया। जानकी ने देखा कि साक्षात स्वर्ण हिमालय खड़ा है। सीता को पूर्ण विश्वास हो गया। पुनः हनुमान ने बंदर का रूप धारण कर लिया। हनुमान ने कहा कि बंदर बुद्धिहीन और शक्तिहीन होते हैं लेकिन राम के प्रभाव से छोटे पक्षी भी गरुड़ का भक्षण कर सकते हैं। भक्ति, तेजस्विता और ओज से युक्त हनुमान की वाणी सुनकर सीता को संतोष हुआ। जानकी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि तुम अजर, अमर, गुणों के समूह बनो। रघुकुल नायक राम तुम पर कृपालु रहें। यह सुनकर हनुमान सीता के चरणों में बार-बार मस्तक झुकाकर कहने लगे कि मां! मैं धन्य हो गया। आपका आशीर्वाद अमोघ है। हनुमान ने कहा कि माता! इस बाग के फल-फूल सुंदर और अच्छे हैं। इन्हें देख मेरी भूख और भी बढ़ गयी है। सीता ने कहा कि इस जंगल की रखवाली निशाचर करते हैं। हनुमान ने कहा कि मुझे उनका भय नहीं है। आप आज्ञा दें तो फल भक्षण करूं। हनुमान की शक्ति, विवेक, कुशलता देखकर जानकी ने हनुमान को आज्ञा दी कि राम के चरणों में विश्वास करके जाओ और फल खाओ।

हनुमान सीता को प्रणाम कर लंका के अत्यंत सघन वन में प्रविष्ट हुए। उन्होंने फल खाए और पेड़ों को तोड़ना शुरू कर दिया। बहुत से महाबली रावण के योद्धा उस वन की रखवाली कर रहे थे। उन्होंने हनुमान को टोका। अनेक राक्षसों का उन्होंने वध कर दिया।

कुछ योद्धा जान बचाकर रावण के यहां गुहार लगाने लगे कि नाथ! एक बंदर आया है, उसने अशोक वाटिका का विध्वंस कर दिया। उसने गदराये फलों को खाया और बहुत-से वृक्षों को धराशयी कर दिया। वाटिका के राक्षसों को उसने तबाह कर धरती पर पटक दिया। यह अशुभ समाचार सुनकर रावण ने उस बंदर से निपटने के लिए बहुत-से योद्धाओं को भेजा। उन योद्धाओं को देखकर हनुमान ने भयंकर गर्जना की। हनुमान ने राक्षसों को मार डाला। कुछ अधमरे राक्षस रावण के पास चिल्लाते हुए पहुंचे। अंत में रावण ने अपने पुत्र अक्षयकुमार को आज्ञा दी। वह अपने सेनापतियों और योद्धाओं को लेकर चल पड़ा। हनुमान ने अपनी तरफ अक्षयकुमार को आते देखकर एक विराट वृक्ष उखाड़ कर उस पर प्रहार किया और युद्ध के लिए ललकारा। हनुमान ने थोड़ी देर में ही उसे वीरगति देते हुए भयानक ध्वनि में गर्जना की। हनुमान ने अगणित राक्षसों को मार डाला। बहुत-से निशाचारों को मसल दिया। कई राक्षसों को धूल-धूसरित कर दिया।

बचे हुए राक्षसों ने रावण के यहां गुहार लगाई कि नाथ! वह बड़ा ही शक्तिशाली बंदर है। अक्षयकुमार की मृत्यु का पता जब रावण को लगा तो वह अत्यंत कुपित हुआ। फिर उसने अपने दूसरे पुत्र महाशक्तिशाली मेघनाद को भेजा। रावण ने उससे कहा कि वानर की जान मत लेना। उसे बांधकर ले आना। रणक्षेत्र में इन्द्र को पराजित करने वाला अतुलित बलशाली मेघनाद भाई के प्रतिशोध के लिए क्रोधाग्नि में जलते हुए चल पड़ा। हनुमान ने देखा कि महाभयंकर योद्धा आया है। हनुमान ने गर्जना की और उस पर प्रहार करने के लिए एक वृक्ष उखाड़ कर दौड़े। उन्होंने मेघनाद को रथ से नीचे गिरा दिया। हनुमान राक्षसों को पकड़कर अपने हाथों से रगड़ने तथा दबाकर मसलने लगे। वे राक्षसों का संहार करने लगे। राक्षसों को मारकर वह सीधे मेघनाद से लड़ने लगे। दोनों वीर दो मदमस्त हाथियों की तरह भिड़े थे। मेघनाद पर अपनी शक्तिशाली मुष्टिका का प्रहार कर हनुमान पेड़ पर चढ़ गये। क्षण-भर के लिए मेघनाद मूर्च्छित हो गया। चैतन्य होने पर उसने माया का प्रपंच रचा। परन्तु हनुमान उस प्रपंच में नहीं फंसे। मेघनाद ने हनुमान पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार किया। हनुमान मन ही मन सोचने लगे कि यदि मैं ब्रह्मास्त्र का अपमान करता हूं तो उसकी महिमा घट जायेगी। मेघनाद ने उन्हें मूर्च्छित कर दिया। मूर्च्छित होते होते भी वे राक्षसों का संहार करते रहे। मूर्च्छित दशा में हनुमान को नागपाश में आबद्ध कर मेघनाद रावण के पास ले चला। हनुमान राम-कार्य सम्पन्न करने के लिए ब्रह्मपाश में बंधे चले आये।

कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेहि बन खीसा।।
कीधौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही। देखउं अति असंक सठ तोही।।

बंधे बन्दर को देखने के लिए कौतूहल से भरे हुए सारे राक्षस रावण की सभा में दौड़े। हनुमान ने रावण की राजसभा देखी। रावण के दरबार का ऐश्वर्य वर्णनातीत था। उसके राजदरबार में अनेक देवता उपस्थित थे। सर्पों के मध्य



कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि के बल घालेसि बन खीसा।।
कीधौं श्रवनु सुनेहि नहिं मोही। देखउं अति असंक सठ तोही।।

जैसे गरुड़ निर्द्वन्द्व रहता है उसी प्रकार प्रतापशाली रावण के राजदरबार में हनुमान उपस्थित थे। दसमुख रावण ने बन्दर को देखकर अत्यंत कटु अपशब्द कहते हुए अट्टहास किया। अपने पुत्र अक्षयकुमार की हत्या करने वाले को प्रत्यक्ष देखकर उसके हृदय में प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हुई। रावण ने कहा कि बंदर! तू कौन है? तुम्हारे पीछे किसकी शक्ति है कि कुपित होकर तुमने उपवन का सत्यानाश कर दिया? लगता है कि तुमने अपने कानों से मेरी महिमा नहीं सुनी? राक्षसों ने क्या अपराध किया था जो उन्हें मारा? हनुमान ने उत्तर दिया कि रावण! शक्तिसम्पन्न ब्रह्माण्ड की सामूहिक रूप से रचना जो करता है, जिसकी शक्ति से ही ब्रह्मा सृष्टि, विष्णु पालन और शिव संहार करते हैं, जो देवताओं के हित-चिन्तन के लिए अनेकानेक शरीर धारण करते हैं, जो तुम्हारे जैसे दुष्टों को शिक्षा देने वाले हैं, जिन्होंने शंकर का कठोर धनुष भंग किया था और तुम्हारे समेत जनकपुर में सभी राजाओं का दर्प चूर कर दिया था, जो खर, दूषण, त्रिसरा और बालि जैसे अतुलित शक्तिशालियों का वध कर चुके हैं, जिनकी कृपा के अंश-मात्र से तुमने जड़-चेतन संसार को अपना दास बना लिया है और जिनकी प्राणप्रिय जानकी को तुम चुरा लाये हो, मैं उन्हीं राम का दूत हूं। मैं तुम्हारा ऐश्वर्य जानता हूं। सहसबाहु से तुम्हारा युद्ध हुआ था। रणक्षेत्र में बालि से पराजित होकर तुमने बहुत बड़ी ख्याति प्राप्त की थी। इन व्यंग्यात्मक शब्दों को रावण ने हंसकर टाल दिया।

हनुमान ने कहा कि महाराज! मुझे भूख लगी थी, अतएव मैंने फल खाए। बंदर स्वभाव से चंचल होता है, इसलिए मैंने वृक्ष तोड़े। अपना शरीर किसे प्यारा नहीं होता, इसलिए जिन्होंने मुझ पर प्रहार किया उन्हें मैंने भी मारा। फिर भी तुम्हारे पुत्र ने मुझे बंदी बना लिया। इसलिए मुझे बंदी रूप में खड़े रहने में कोई लज्जा नहीं है। मैं राम-कार्य की सिद्धि की आशा से यहां आया हूं, इसलिए अपने दर्प को छोड़ कर मेरी बात सुनो। अपने वंश की महिमा का ध्यान करके भ्रम त्यागो और भक्तों के भय को हरण करने वाले राम का स्मरण करो। देवताओं, राक्षसों और समस्त चराचर को खाने वाला काल भी जिसके भय से प्रकंपित रहता है उसके साथ तुम दुश्मनी मत करो। मेरे निर्देशानुसार उन्हें उनकी पत्नी जानकी सौंप दो। राम करुणा के सागर और दया के आगार हैं। शरणागतों के हितचिंतक और दुष्टों के शत्रु हैं। यदि तुम राम के शरणागत हो जाओगे तो तुम्हारे विगत दुष्कृत्यों को बिसराकर वे तुम्हें अपना लेंगे। तुम उन्हें अपने हृदय में स्थान दो और निर्द्वन्द्व होकर लंका के साम्राज्य-सुख का भोग करो। तुम्हारे नाना पुलस्त्य का यश निर्मल चन्द्रमा के समान है। उस उज्ज्वल वंश में तुम राहु मत बनो। जिस वाणी पर राम नाम अंकित न हो, वह निरर्थक है। तुम मोह और माया रूपी अंधकार को छोड़ दो। हे देवशत्रु! भूषणों से मंडित श्रेष्ठ नारी भी वस्त्रहीन अच्छी नहीं लगती। जो राम से विमुख है, उसका सर्वस्व, सम्पत्ति और प्रभुत्व नष्ट हो जाता है। जिन नदियों का अजस स्रोत नहीं है, वे वर्षा और बाढ़ बीत जाने पर फिर सूख जाती हैं। हे दसमुख रावण! मैं प्रणपूर्वक कहता हूं कि ब्रह्मांड में राम के विद्रोही की रक्षा करने वाला कोई नहीं पैदा हुआ। राम के दुश्मन को ब्रह्मा, विष्णु और शंकर भी नहीं बचा सकते। इस मोह से उत्पन्न अंधकारमय पीड़ादायक अज्ञान को त्यागो और रघुवंशरत्न, कृपा के समुद्र राम का स्मरण करो।

रावण के हितचिन्तन की भावना से हनुमान ने भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और नैतिकता की बहुत-सी बातें कीं परन्तु वह महाराक्षस दर्प से चूर अट्टहास कर बोला कि बंदर! आज हमें बड़ा ज्ञानी बंदर मिला है। रे मूर्ख! तेरी मृत्यु नजदीक है। तू मुझे शिक्षा दे रहा है।

हनुमान ने कहा कि सत्य ठीक विपरीत है। मृत्यु तुम्हारे सामने नाच रही है।

हनुमान की तीव्र व्यंग्य वाणी को सुनकर रावण क्रोधाग्नि से जल उठा। अपने सेनापतियों को आदेश दिया कि इस जड़ वानर का जीवन तत्काल समाप्त कर दो। बंधन में बंधे हुए हनुमान पर प्रहार करने के लिए सारे राक्षस दौड़ पड़े। इसी बीच विभीषण आये। उन्होंने प्रार्थना की कि राजनीति का धर्म है कि राजदूत की हत्या नहीं करनी चाहिए। बंदर को कोई दूसरा कठोर दण्ड दीजिए। सभी मंत्रियो और दरबारियों को विभीषण की राय उचित लगी। विभीषण की प्रार्थना सुनते ही रावण हंसकर बोला कि इस दूत बंदर का अंग-भंग करके इसे वापस भेजना चाहिए। रावण ने सबको अच्छी तरह से समझाकर कहा कि बंदर को पूंछ से सबसे ज्यादा प्रेम और ममता होती है। इसलिए तेल में कपड़ा डुबोकर इसकी पूंछ में लपेटो और आग लगा दो। दुष्ट बंदर पूंछहीन होकर लौटेगा और अपने राम को लेकर आएगा। जिनकी अब तक इसने प्रशंसा की, उनका प्रभुत्व मैं भी देखूंगा।



देह बिसाल परम हरुआई। मन्दिर ते मन्दिर चढ़ धाई।।
जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला।।

हनुमान मन ही मन मुदित हुए कि सरस्वती हमारी सहायता कर रही है। रावण की आज्ञानुसार मूर्ख राक्षस हनुमान की पूंछ में आग लगाने की व्यवस्था में जुट गये।

रावण ने आज्ञा दी कि हनुमान की पूंछ में आग लगाकर पुच्छविहीन कर दो। हनुमानजी अपनी लीला से पूंछ को बढ़ाने लगे। सारे राज्य और नगर में जितना भी वस्त्र, तेल और घी शेष था, वह सब हनुमान की पूंछ पर लपेट दिया गया। ढोल बजने लगे। नगर में हनुमान को घुमा-फिराकर उनकी पूंछ में आग लगा दी गयी।

देह बिसाल परम हरुआई। मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई।।
जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला।।

जलती हुई आग देखकर हनुमान ने अत्यंत लघु रूप धारण किया और बंधनमुक्त हो गये। बंधनमुक्त हनुमान लंका के स्वर्ण भवन की अटारियों पर कूदने लगे। राक्षसों की सुन्दर स्त्रियां यह देखकर भयभीत हो उठीं। राम की कृपा से उनचास पवन एक साथ प्रवाहित होने लगे। अट्टहास कर हनुमान ने छलांग लगाई। वे आकाश का स्पर्श करने लगे। हनुमान ने अत्यंत विराट व्यक्तित्व धारण कर लिया। वे अत्यधिक हल्के हो गये। वे एक महल से दूसरे महल पर दौड़ने लगे। सोने की लंका जलकर राख होने लगी। लंकावासी व्याकुल हो गये। आग की ज्वाला बिखरने लगी और 'हाय, हाय, माता! पिता!' की चिल्लाहट होने लगी। लोग कहने लगे कि यह बंदर नहीं, कोई देवता है। सज्जन पुरुष के कोप के कुप्रभाव का ऐसा ही भयानक दुष्परिणाम होता है। हनुमान ने पलभर में सोने की लंका जला दी। एक मात्र विभीषण का घर जलने से बच गया। अग्नि से उनका तनिक भी नुकसान नहीं हुआ। फिर उत्ताल समुद्र की लहरों पर हनुमान कूद पड़े।

अपनी पूंछ की अग्नि को समुद्र के जल से बुझा और अपना श्रम मिटाकर अत्यंत लघु रूप धारण कर हनुमान प्रेमपूर्वक अशोक वाटिका में जानकी के समक्ष जा खड़े हुए। हनुमान ने जानकी से कहा कि मां! जैसे राम ने अपनी स्मृति-चिन्ह के रूप में मुद्रिका दी थी, उसी तरह आप भी उन्हें देने के लिए कोई चिन्ह हमें दीजिए। जानकी ने अपने केश में बंधा शीशफूल हनुमान को दे दिया। राम के लिए संदेश देते हुए सीता ने कहा कि हनुमान! तुम पूर्णकाम भगवान राम से मेरा प्रणाम कहना। उनसे कहना कि दीनों पर दया करने की अपनी प्रतिष्ठा का स्मरण कर गहन विपत्तियों से मेरी रक्षा करें। हनुमान! इन्द्र के पुत्र जयंत ने जब कौए का रूप धारण कर मेरे चरणों पर प्रहार किया था तो कुपित राम के बाण से कोई भी उसकी रक्षा न कर सका। इस घटना का राम को स्मरण दिलाना। उन्हें अपने बाण की शक्ति का अवश्य स्मरण दिलाना। यदि एक माह में वे लंका नहीं आये तो मुझे जीवित नहीं पायेंगे। हनुमान! मैं अपने प्राण अब शरीर में कैसे धारण करूं? मेरे प्राणों के आश्रय बनकर तुम आये और अब तुम भी जा रहे हो। तुम्हें देखकर मेरे हृदय की वेदना शीतल हो गई थी। परन्तु अब फिर वही उदासी-भरे दिन और वही निराशा-भरी रातें होंगी।

जानकी को अनेक प्रकार से प्रबोध देकर हनुमान ने उन्हें धैर्य धारण कराया। उनके चरण-कमल पर अपना मस्तक झुकाकर हनुमान राम के पास चल पड़े। लंका से प्रस्थान करते समय हनुमान ने पूर्णध्वनि से महागर्जना की। उनकी तीव्र गर्जना सुनकर गर्भवती राक्षसियों का गर्भपात होने लगा। क्षण-भर में समुद्र को लांघ कर हनुमान किलकारी मारते हुए समुद्र के इस पार आ गये।

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयं लाइ सोइ लीन्ही।।
नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी।।

समुद्र के इस पार आकर बंदरों के मध्य हनुमान ने हर्षध्वनि की। हनुमान से मिलकर सभी बहुत प्रसन्न हुए। तड़पती मछली को जल मिल गया। सभी मुदित मन नये-नये वृत्तान्त पूछते-सुनते हुए राम के पास चल पड़े। अंगद के परामर्श से बंदर-भालू मधुवन के मधुर फलों का भक्षण करने लगे। रखवालों के रोकने पर घूंसे के प्रहार से सभी को भगा दिया। सुग्रीव के पास जाकर वे गिड़गिड़ाने लगे कि अंगद वन उजाड़ रहे हैं। सुग्रीव हर्ष से गद्‌गद हो उठे। उन्हें विश्वास हो गया कि बंदरों ने राम का कार्य संपन्न कर दिया, अन्यथा मधुवन के फल वे कदापि न खाते। सुग्रीव इसी संबंध में सोच रहे थे, तभी बंदरों का समूह सुग्रीव के चरणों में नत हुआ। सुग्रीव सभी से प्रेमपूर्वक मिले और कुशल-क्षेम पूछी। बंदरों ने उत्तर दिया कि स्वामी आपके चरणों की कृपा से हम सकुशल हैं। राम की कृपा से विशेष कार्य सम्पन्न हो गया। हनुमान ने ही सब कुछ सिद्ध किया। उन्होंने समस्त बंदरों



चलत मोहिं चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही।।
नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी।।

के प्राण की रक्षा भी की। यह सुखद संवाद सुन सुग्रीव हर्षित होकर हनुमान से बार-बार गले मिले। वे सभी बंदरों को साथ ले राम के पास चल पड़े।

राम ने देखा कि उत्साहित बंदरों का समूह सीता का पता लगाकर आ रहा है। वे भी हर्ष विभोर हो उठे। स्फटिक शिला पर विराजमान राम-लक्ष्मण के चरणों पर सभी बंदर गिर पड़े। राम सभी बंदरों से प्रेमपूर्वक मिले। राम ने कुशल-क्षेम पूछी। बंदरों ने उत्तर दिया कि आपके चरण-कमल के दर्शन से ही सब कुशल है। भविष्य में भी कुशल होगी।

जांबवान् ने राम से कहा—"आप जिस पर दया करते हैं उसका निरंतर कल्याण होता रहता है और वह सदैव सकुशल रहता है। सुर-नर-मुनि सभी आपकी कृपा मात्र से विशेष प्रसन्न रहते हैं। जिस पर आपकी कृपा होती है वही विजयी, विनयसंपन्न और गुणसागर है। त्रैलोक्य में उसका सुयश होता है। आपकी कृपा से ही सारे कार्य हुए। हमारा जन्म धारण करना सफल हो गया। हजारों मुख से भी हनुमान के अभूतपूर्व कार्य का वर्णन नहीं हो सकता। जांबवान् ने जानकी का पता लगाने में हनुमान के समस्त कृत्यों का विधिवत् वर्णन किया।

अपनी प्रियतमा जानकी तक हनुमान के पहुंचने की सारी कथा सुनकर मन ही मन प्रसन्न और हर्षोल्लसित राम हनुमान को छाती से चिपटाकर पूछने लगे कि सीता किस प्रकार जीवित है और कैसे अपने प्राणों की रक्षा कर रही है?

हनुमान ने कहा कि आपका नाम रात-दिन वहा पहरा देता है। आपका स्मरण कपाट है। जानकी दोनों नेत्र अपने चरणों में लगाये रहती हैं। यही कार्य उस कपाट का ताला है। फिर सीता के प्राण किस मार्ग से जाएं? आपको अपनी स्मृति सजीव कराने के लिए चलते समय उन्होंने चूड़ामणि दी। राम ने सीता की चूड़ामणि को छाती से लगा लिया। हनुमान ने बताया कि नेत्रों में अश्रुकण भरकर जानकी ने मुझे आदेश दिया था कि लक्ष्मण सहित राम का चरणस्पर्श कर कहना कि आप दोनों सखा और शरणागत के दुःखों का नाश करने वाले हैं? मैं मन-वचन और कर्म से आप की चरणानुरागिनी हूं। किस अपराध से मुझे त्याग दिया? हां, मेरा दोष अवश्य है कि आपसे बिछुड़ते ही प्राण नहीं चले गये। परन्तु शरीर से प्राणों को त्यागने में नेत्र बाधक हैं। मेरा शरीर रुई और श्वासपवन हैं। क्षण मात्र में विरह-अग्नि शरीर को जला सकती है। परन्तु राम दर्शन की लालसा संजोये मेरे नेत्र निरंतर आंसू बरसाते रहते हैं। उसी से विरह की अग्नि बुझ जाती है। शरीर नहीं जलने पाता। हनुमान ने कहा कि सीता की विकराल विपत्ति न कहना ही अच्छा है। करुणास्वामी! सीता का प्रत्येक पल कल्प के समान बीत रहा है। आप तत्काल चलिए और अपनी भुजाओं की अपराजेय शक्ति से दुष्टों के समूह को पराजित कर सीता को अपने साथ वापस ले आइये।

सीता की वियोगजन्य परिस्थितियों को सुनकर राम के नेत्रों में जल भर आया। राम ने कहा कि मन-वचन और शरीर से सीता मुझ पर आश्रित है। स्वप्न में भी उन पर विपत्ति नहीं आ सकती। हनुमान ने कहा कि स्वामी, आपके स्मरण और भजन में विघ्न पड़ना ही विपत्ति है। राक्षसों का कौन-सा बल है? रावण को पराजित कर आप जानकी को शीघ्र लायेंगे। राम ने हनुमान से कहा कि तुम्हारे समान मेरा हितेच्छु न कोई देवता है न मनुष्य, न मुनि। मैं तुम्हारी कृतज्ञता का कैसे प्रत्युपकार करूंगा? मेरा मन तुम्हारे उपकार का सामना नहीं कर सकता। मैं तुमसे उऋण नहीं हो सकता। राम हनुमान को बार-बारप्रेम से देख रहे थे। राम का शरीर पुलकित था। नेत्रों में प्रेमाश्रु छाये हुए थे। यह देखकर गद्गद हनुमान प्रेमाकुल होकर राम के चरणों पर 'हे भगवान! मेरी रक्षा करो!!' कहते हुए गिर पड़े। प्रेम में डूबे हनुमान को राम बार-बार उठाना चाहते थे। राम के कमलवत् हाथ हनुमान के मस्तक पर थे। जबर्दस्ती राम ने हनुमान को अपने हृदय से लगा लिया और उनका हाथ पकड़कर अपने पास बैठा लिया।

राम ने हनुमान से पूछा कि रावण द्वारा सुरक्षित लंका और उसके श्रेष्ठ दुर्ग को कैसे भस्म किया? निरभिमान हनुमान ने राम से कहा कि बंदर एक डाल से दूसरी डाल पर छलांग लगा सकता है। यही उसकी वीरता है। मैंने समुद्र पारकर राक्षसों को मार-मारकर सोने की लंका को भस्म कर दिया। मैंने अशोक वन उजाड़ दिया। यह सब आपकी शक्ति का प्रताप था। इसमें मेरा कोई प्रभुत्व नहीं था। आपकी कृपा जिस पर होती है उसके लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं है। ज्वलनशील रुई भी समुद्र की बाड़वाग्नि को आपकी कृपा से बुझाकर शीतल कर सकती है। मुझे अपनी सुखद, निश्छल भक्ति प्रदान कीजिए।

बंदरों का समूह राम की जय-जयकार कर प्रसन्नता से गर्जना करने लगा। राम ने कपिराज सुग्रीव से लंका चलने की तैयारी करने के लिए कहा। राम ने कहा कि

अब विलम्ब का कोई कारण नहीं है। वानरों को प्रस्थान की आज्ञा दो। शीघ्र ही सुग्रीव ने वानर सेनापतियों को बुलाया। अत्यंत शक्तिशाली वानरों का रंग-बिरंगा झुंड राम के चरणों में मस्तक झुकाने लगा। बलवान रीछ और बंदर गरजने लगे। राम ने सुसज्जित वानर-सेना पर दृष्टि डाली। राम की कृपा से श्रेष्ठ बंदर जैसे पंख वाले पर्वत हो गये। सुंदर, शुभ शकुन विचार कर प्रसन्नचित्त राम ने लंका के लिए प्रस्थान किया। अशोक वाटिका में बंदिनी जानकी का बांया अंग फड़कने लगा। जानकी को शुभ शकुन हुआ। इसके ठीक उलटे रावण को अपशकुन हुआ।

लंका के नागरिक हनुमान द्वारा लंका जलाये जाने से आतंकित थे। लोगों की भयपूर्ण बातें सुनकर रावण की पत्नी मंदोदरी ने रावण से निवेदन किया कि मेरा मत हैं कि लंका के हित में मंत्रियों को बुलाकर राम की पत्नी को वापस कर दीजिए। आपके कुल रूपी कमल वन के लिए सीता दुखद शीतरात्रि हैं। सीता को लौटाये बिना ब्रह्मा और शंकर भी आपकी रक्षा नहीं कर सकते। राम के बाण सर्प समूह हैं। राक्षसों की सेना मेंढक है। लंकावासियों के जीवन को राम के तीक्ष्ण बाण ग्रस लें, इससे पहले ही हठ छोड़कर उनकी रक्षा का उपाय कीजिए।

पत्नी मंदोदरी की बातें सुनकर प्रसिद्ध अहंकारी रावण ठठाकर कहने लगा कि स्त्रियां स्वभावतः डरपोक होती हैं। मंगल के समय उनका मन कमजोर होता है। वानरों की सेना का भक्षण कर राक्षस अपना जीवन-निर्वाह करेंगे। दिशाओं के लोकपाल मेरे भय से कांपते हैं और मेरी सम्राज्ञी डरे, यह कितना हास्यप्रद है? यह कहकर रावण ने मंदोदरी को छाती से चिपटा लिया। अपनी ममता में उसे बांधता हुआ रावण सीधे राजसभा में चला आया। मंदोदरी चिंतित हो उठी कि प्रियतम से ईश्वर ही प्रतिकूल है।

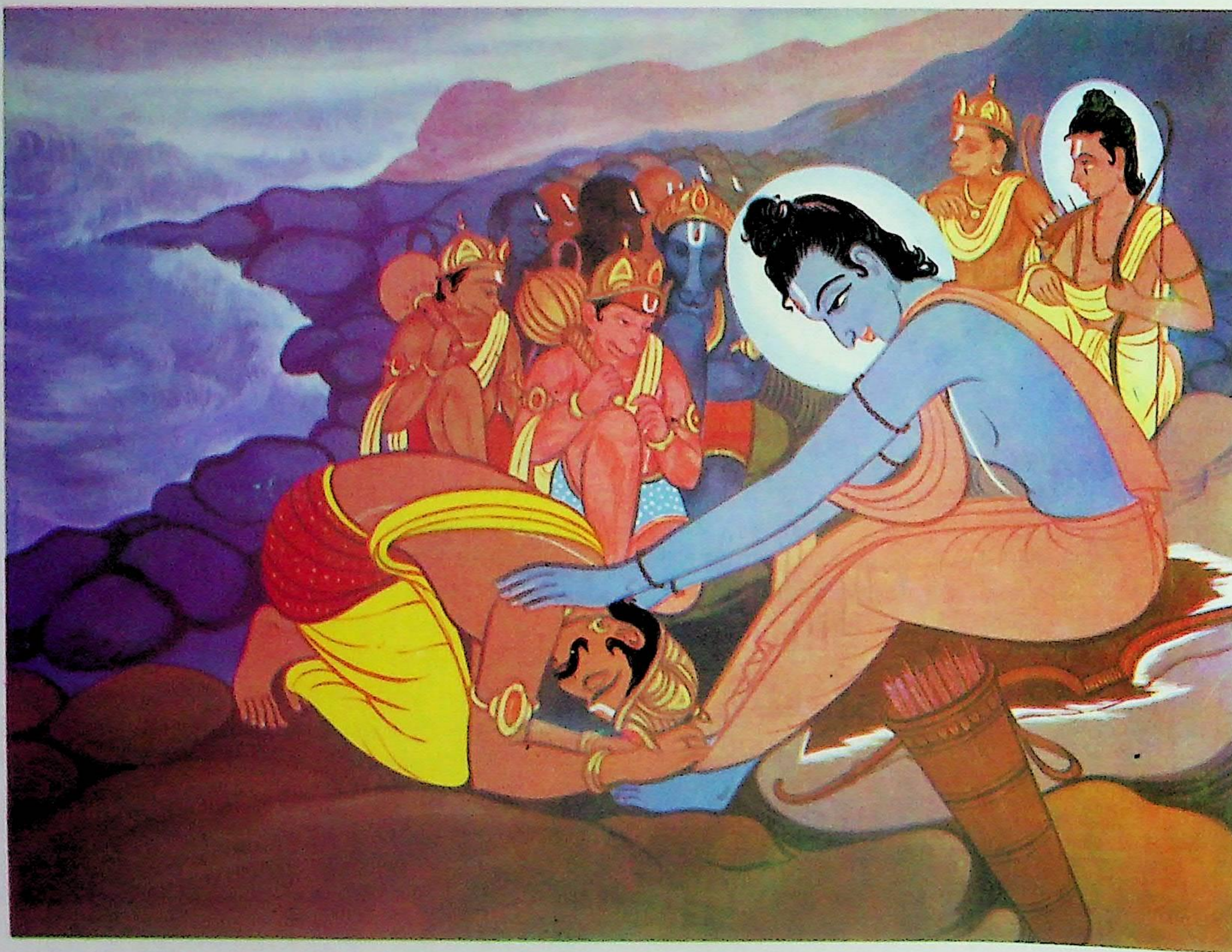
राजसभा में पहुंचते ही रावण को समाचार मिला कि शत्रु की सारी सेना समुद्र के तट पर आ गयी है। रावण ने मंत्रियों से परामर्श किया। सभी मंत्री हंसकर कहने लगे कि इसमें परामर्श की कौन-सी बात है? आपने देवताओं व राक्षसों को रणक्षेत्र में पराजित किया है, इन बंदरों व मनुष्य की कौन-सी गणना व परवाह है? जो मंत्री, वैद्य और गुरु—तीनों आश्रयदाता के कुपित होने के भय से कटु सत्य न कहकर प्रिय लगने वाली ठकुरसुहाती कहते हैं वे क्रमशः राज्य, शरीर और धर्म का शीघ्रातिशीघ्र नाश करते हैं। रावण के साथ भी यही घटा। मंत्रिगण सुना-सुना कर रावण की स्तुति करने लगे।

इसी अवसर पर विभीषण भी राजसभा में पहुंचा। उसने रावण के चरणों पर सिर झुकाया और आज्ञा पाकर बोला कि मेरी राय जानना चाहते हैं तो हित की बात यह है कि जो भी व्यक्ति अपना कल्याण-यश-विवेक-शुभगति और जीवन में विविध सुख चाहता हो, उसे चतुर्थी के चंद्रमा की तरह पराई स्त्री का मस्तक त्याग देना चाहिए। विभीषण ने बहुत प्रकार से राम की महिमा का वर्णन किया और रावण को राम-भजन करने की सलाह दी।

विभीषण के विवेकशील नीति-वचन सुनकर रावण की क्रोधाग्नि भड़क उठी। उसने गरजते हुए कहा कि मूर्ख! मैंने आज तक तुम्हें जिलाया परन्तु तुम्हें शत्रु की ही प्रशंसा अच्छी लगती है। बताओ! इस संसार में कौन है जिसे मैंने अपनी भुजाओं की शक्ति से पराजित नहीं किया? लंका में रहकर तपस्वियों से प्रेम करता है? उन्हीं के साथ रहकर उन्हें ही नीति बता। इस प्रकार की कटूक्तियां कहकर रावण ने अपने अनुज पर चरण-प्रहार किया। प्रहार के प्रत्युत्तर में बार-बार विभीषण ने रावण के चरण पकड़कर कहा कि आप मेरे पिता के समान हैं। मुझे मारा, ठीक किया परन्तु राम-स्मरण में ही हित है। यह कहते हुए विभीषण अपने मंत्री को लेकर आकाशमार्ग से राम के पास यह कहता हुआ उड़ चला कि राम सर्वव्यापक व समर्थ हैं। रावण की सभा काल के वशीभूत है। मैं राम की शरण जाता हूं। कोई मुझे दोषी न ठहराये।

विभीषण ने ज्यों ही रावण की राजसभा त्यागी, त्यों ही सभी राक्षस आयुहीन हो गये और रावण अभागा और श्रीहीन हो गया। विभीषण मन ही मन अनेक महत्वाकांक्षाएं संजोये राम के समीप चल पड़े। विभीषण सोच रहे थे कि आज मुझे भगवान राम के अरुण, कोमल व सुंदर चरण-कमलों के दर्शन होंगे। राम के जिन चरणों के स्पर्श मात्र से अहल्या का उद्धार हो गया, दंडक वन को पवित्र करने वाले तथा कपट मृग के पीछे भागने वाले राम-चरणों को जानकी ने अपने हृदय में धारण किया है, जो चरण शंकर के हृदय-सरोवर में विराजमान हैं, जिन चरणों की पादुका में भरत ने अपना चित्त लवलीन कर रखा है; मेरा अहोभाग्य है कि उन्हीं राम-चरणों को आज मैं अपने इन्हीं नेत्रों से देखूंगा।

अनेक सुखद मनोरथ करते हुए विभीषण समुद्र के इस पार राम की सेना के



अस कहि करत दण्डवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा।
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा। भुज बिशाल गहि हृदय लगावा।।

समीप आ पहुंचे। विभीषण को देखकर बंदरों ने समझा कि शत्रु रावण का भेजा हुआ कोई विशेष दूत आया है। बंदरों ने विभीषण को रोककर सुग्रीव को यह सूचना दी। सुग्रीव ने राम को बताया कि रावण का भाई आपसे मिलने आया है। राम ने पूछा कि तुम्हारी क्या राय है? सुग्रीव ने उत्तर दिया कि राक्षसों की माया अपरम्पार है। क्षण भर में विविध प्रकार का रूप धारण करने वाला यह छली न जाने क्यों आया है? लगता है, यह मूर्ख हमारा रहस्य ज्ञात करने आया है। इसे बंधन में रखना चाहिए। राम ने सुग्रीव के नीति-वचनों की प्रशंसा तो की पर साथ ही अपनी शरणागत-वत्सलता के कारण हनुमान व अंगद सहित सुग्रीव को विभीषण को बुलाने की आज्ञा भी दी।

सुग्रीव राम की जय-जयकार करते हुए अंगद व हनुमान के साथ विभीषण की अगवानी के लिए चल पड़े। बंदरों ने विभीषण को आगे करके सादर राम के समीप पहुंचा दिया। विभीषण ने नेत्रों को सुखद लगने वाले दोनों भाइयों की रूप-छवि को देखा। उसकी दृष्टि राम के अद्भुत सौंदर्य पर स्थिर हो उठी, वह अपलक ठिठक कर देखते रहे। उन्होंने देखा कि राम की विशाल भुजाएं हैं, लाल कमल के समान नेत्र एवं शरणागत को अभय प्रदान करने वाला श्याम शरीर है। सिंह के समान स्कंध और विशाल वक्षस्थल है। असंख्य कामदेवों के मन को मोहित करने वाला सुंदर मुख है। राम के रूप-सौंदर्य को देखकर विभीषण के नेत्र प्रेमाश्रुओं से भर गए। उनका शरीर रोमांचित हो उठा।

अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा।।
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा। भुज बिसाल गहि हृदयं लगावा।।

अपनी उमंग को नियंत्रित कर विभीषण ने कोमल वाणी में प्रार्थना की कि मैं रावण का अनुज राक्षस कुल में उत्पन्न हूं। जैसे उल्लू अंधकार से सहज स्नेह करता है, उसी तरह मुझे पाप प्रिय है। मेरा शरीर तामसी है। मैंने अपने कानों से आपकी प्रशस्ति सुनी है कि आप जन्म एवं मृत्यु के भय से जीवों को अभय प्रदान कर देते हैं। हे शरणागतों के रक्षक और दुःखियों का कष्ट दूर करने वाले राम! मेरी भी रक्षा कीजिए। मैं आपकी शरण आया हूं। सच्ची विनती कर के विभीषण ने राम को दंडवत किया। तुरंत अत्यंत हर्षित होकर राम उठे और विशाल भुजाओं में विभीषण को बांध कर अपने हृदय से लगा लिया। लक्ष्मण भी विभीषण से गले मिले। राम ने विभीषण को समीप बैठाकर निर्मल वाणी में पूछा कि परिवार सहित अपनी कुशल कहो। तुम बुरे स्थान पर रहते हो। रात-दिन दुष्टों के समूह से घिरे रहते हो, तुम कठिन भक्ति-धर्म कैसे निभाते हो? तुम अत्यंत विनयी और नीतिज्ञ हो। तुम्हारे समस्त व्यवहार से मैं परिचित हूं। विधाता दुष्टों का साथ न दे भले ही नरक में जीवन बिताना पड़े।

विभीषण ने उत्तर दिया कि राम आपके चरणों का दर्शन पाकर मैं सकुशल हूं। आपने अपना सेवक समझकर मुझ पर महती कृपा की। जीव को स्वप्न में भी शांति नहीं मिल सकती, न उसका कल्याण हो सकता है जब तक वह शोक, भय, विषय, कामना को तिलांजलि देकर केवल आपका स्मरण नहीं करता। जिसके हृदय में धनुष-बाण और तरकस धारण किये हुए राम निवास नहीं करते उस जीव के हृदय में लोभ, मोह, ईर्ष्या, दर्प, मद आदि अनेकानेक दुष्प्रवृत्तियां ही विराजमान रहती हैं। राग-द्वेष रूपी उल्लुओं को प्रसन्न करने वाली ममतामयी अंधेरी रात सभी जीवों के मन में तमिस्रा बनकर तब तक छायी रहती है जब तक आपके प्रताप का सूर्य मन में नहीं चमकता। हे प्रभु! सारे भय और आशंकाएं दूर हो गयीं। जिस पर आप अनुकूल हैं, उसे आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा भौतिक शूल आजीवन नहीं चुभते। मैं नीचातिनीच स्वभाव का राक्षस हूं। मैंने निरंतर अशुभ दुराचरण किया है। इस पर भी जिनका रूप मुनियों के ध्यान में भी नहीं आता, ऐसे प्रभु ने मुझे हृदय से लगा लिया। मेरा असीम सौभाग्य है कि मैंने ब्रह्मा और शंकर द्वारा सेवित राम के चरण-कमलों को अपने नेत्रों से देखा।

राम ने विभीषण को बताया कि कोई मनुष्य चाहे विश्वद्रोही भी हो, यदि वह मद, मोह, छल, प्रपंच का त्याग कर भयाकुल हो मेरी शरण में आ गया तो मैं उसे सज्जनों के समान प्रतिष्ठा देता हूं। जो व्यक्ति ममता रूपी बिखरे हुए धागों को बटकर अपने माता, पिता, भाई, स्त्री, शरीर, धन, मित्र, परिवार को संयुक्त डोर से बांध अपना मन मेरे चरणों में स्थिर कर लेता है, सभी सांसारिक संबंधों का अंतिम केन्द्र मुझे बना लेता है, जो समदर्शी है, संतुष्ट है, भय, शोक और हर्ष से परे है, ऐसा सज्जन मेरे हृदय में उसी तरह निवास करता है जैसे लोभी के हृदय में धन की कामना। तुम्हारे समान संत मुझे परम प्रिय हैं। मैं और किसी कारणवश शरीर नहीं

धारण करता। जो साकार ईश्वर के उपासक हैं, दूसरों के हितचिंतन में तल्लीन तथा दृढ़ता के साथ नियम और नीति का पालन करते हैं, बड़ों का आदर करते हैं, उनका मैं अपने प्राणों से अधिक सम्मान करता हूं। लंकाधिपति विभीषण! उपरोक्त सभी गुण तुम्हारे व्यक्तित्व में विद्यमान हैं। इसलिए तुम मुझे अत्यंत प्रिय हो।

वानरों का समूह राम की यह कृपामयी उक्ति सुनकर जय-जयकार करने लगा। विभीषण गद्गद हो उठे। अपार प्रेम से भरे बार-बार राम के चरण-कमलों पर वह लोटते हुए कहते लगे कि अंतर्यामी राम! मेरे हृदय की अवशिष्ट वासना भी आपके चरणों की प्रेम रूपी नदी में प्रवाहित हो गयी। अब शिव की मनभावनी, अपनी प्रिय भक्ति मुझे दीजिए। राम ने 'एवमस्तु' कहकर समुद्र का जल मगाया और कहा कि यद्यपि मैं जानता हूं कि तुम्हारी तनिक भी इच्छा नहीं है, परन्तु मेरा दर्शन निष्फल नहीं होता। ऐसा कहकर राम ने विभीषण का राजतिलक कर दिया। रावण का क्रोध विभीषण की सद्नीति रूपी वाणी के प्रचण्ड पवन से प्रज्वलित हो चुका था। उस प्रचंड अग्नि से विभीषण के प्राण बचाकर राम ने उसे लंका का अखंड राज्य प्रदान किया। अपने दस मस्तकों की बलि चढ़ाकर रावण को जो वैभव मिला था, वही वैभव विभीषण का राजतिलक कर राम ने बहुत संकोच सहित उन्हें प्रदान कर दिया।

राम ने विभीषण को सच्चा समझ कर अभयदान दिया। फिर राक्षस कुल का नाश करने वाले राम ने नीतिपूर्ण वाणी में कहा कि कपीश सुग्रीव! और लंका के स्वामी विभीषण! किस भांति गहरे समुद्र को पार किया जाए? अनेकानेक प्रकार के मगर, सर्प व मछलियों से अथाह समुद्र भरा है। इसे पार करना दुष्कर है।

विभीषण ने कहा कि आपका एक बाण ही सैकड़ों समुद्रों को शुष्क कर सकता है। परन्तु नीति के अनुसार पहले समुद्र से पार जाने के लिए निवेदन करना चाहिए। हे प्रभु! समुद्र आपके कुलगुरु हैं। यह सोचकर वह स्वयं उपाय बता देंगे। बिना किसी प्रयास के दैव के सहायक होने से आपकी सेना के सारे रीछ, वानर समुद्र पार पहुंच जाएंगे।

राम ने कहा कि मित्र! तुमने बड़ा अच्छा उपाय बताया। यदि विधाता मेरी सहायता करे तभी यह सम्भव है। लक्ष्मण को यह मति अच्छी न लगी। राम का निश्चय सुनकर वे दुःखी हुए। लक्ष्मण ने कहा कि दैव के भरोसे बैठना उचित नहीं है। मन में आप कुपित होकर समुद्र को सोख लीजिए। भाग्य का भरोसा तो कायरों के मन का अवलंब है। कर्महीन व आलसी ही भाग्य की रट लगाते हैं। लक्ष्मण को राम ने मुस्कराकर समझाया और कहा कि धैर्य रखो, जो तुम कहोगे वही करूंगा।

राम की प्रार्थना पर भी जड़बुद्धि समुद्र ने मार्ग नहीं दिया। राम ने रोष से भरकर कहा कि बिना भय के प्रीति नहीं होती। मैं धनुष से समुद्र सोखूंगा। अग्नि-बाण लाओ! मूर्ख से विनय, कपटी के साथ प्रेम, कृपण से उदार नीति, मायामलिन व्यक्ति को ज्ञान कथाएं, लोभी से वैराग्य-वर्णन, क्रोधी से शांति-वार्ता और विषयी व्यक्ति को ईश्वर की भक्ति के लिए प्रेरित करने का परिणाम ऊसर धरती पर बीज बोने जैसा है। राम ने तत्क्षण धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा कर अग्निबाण का संधान किया। लक्ष्मण को यह निर्णय अच्छा लगा। समुद्र के अंतस्तल में बडवाग्नि प्रज्वलित हो उठी। मगर और मछलियां व्याकुल हो उठीं।

घबड़ाकर समुद्र ब्राह्मण रूप धारण कर सोने के थाल में मणि और रत्न भरकर सादर राम के पास भेंट करने आया। करोड़ों उपाय से केला सींचा जाए पर काटने से ही वह फलता है। नीच विनती से नहीं, डांटने से ही झुकता है।

भयाकुल समुद्र राम के चरणों पर गिराकर प्रार्थना करने लगा कि प्रभु! मेरे सारे अवगुणों को विस्मृत कर मुझे क्षमा कर दीजिए। समस्त ग्रंथों का तात्विक निष्कर्ष यह है कि आपकी प्रेरणा से ही सहज जड़ आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी को सृष्टि संचालन में संलग्न होना पड़ा है। आप जिसे जैसी आज्ञा देते हैं उसी प्रकार का व्यवहार करने से वह सुखी होता है। आपने अच्छा किया, मुझे दण्ड देकर सचेत कर दिया। किन्तु आपने ही समस्त प्राणियों के सहज स्वभाव का निर्माण भी किया है। आपके प्रताप से मेरा जल सूख जाएगा। आपकी समस्त सेना समुद्र पार हो जाएगी। आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं होगा। आपको जो अच्छा लगे वही कीजिए।

शरणागत समुद्र की विनीत वाणी सुनकर मुस्कराते हुए राम ने कहा कि जैसे भी हमारी सेना उस पार लंका में उतर सके, शीघ्र ही वह उपाय करो।

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाई रिषि आसिष पाई।।
तिन्ह के पास किए गिरि भारे।। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे।।



नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाई रिषि आसिष पाई।।
तिन्ह के परस किए गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे।।

समुद्र ने कहा कि स्वामी! नील और नल दो सगे भाई आपकी सेना में हैं। लड़कपन में उन्होंने ऋषियों से यह आशीर्वाद प्राप्त किया है कि उनके स्पर्श मात्र से ही बड़े-बड़े पर्वत समुद्र में तैरने लगेंगे। मैं भी आपका स्वरूप हृदय में रखकर यथाशक्ति उनकी सहायता करूंगा। नल-नील द्वारा समुद्र बांधने पर तीनों लोकों में आपका सुयश प्रशस्त होगा। जिस बाण से आप मेरा वध कर रहे थे उसी से मेरे उत्तर-तट पर रहने वाले पापी राक्षसों का वध कीजिए। समुद्र के मन की पीड़ा को सुनकर राम ने तुरन्त उन राक्षसों का विनाश कर दिया। राम का ओज और शक्ति देख कर समुद्र हर्ष से गद्‌गद हो उठा। तत्पश्चात् उनके चरणों की वंदना कर वह चला गया।

लव, निमेष, परमाणु, युग और कल्प राम के प्रचण्ड बाण हैं और काल धनुष है। हे मन! तू ऐसे राम का भजन कर। समुद्र की विनीत वाणी सुनकर अपने मंत्रियों को बुलाकर राम ने कहा कि अब विलम्ब किसलिए? पुल तैयार करो जिससे सेना लंका में उतरे।

जांबवान् ने राम की प्रशस्ति की कि हे सूर्यकुल की यशःपताका रघुनाथ! आपका नाम ही सबसे बड़ा सेतु है। उसका स्मरण कर संसार रूपी सागर से मनुष्य तर जाता है। इस लघु समुद्र को पार करने में कितना समय लगेगा?

हनुमान ने कहा कि राम का वैभव बड़वाग्नि है। पहले भी राम के प्रताप ने समुद्र सोख लिया था परन्तु राम के शत्रुओं की स्त्रियों की निरंतर प्रवाहित अश्रुधारा से समुद्र फिर भर गया और उसका जल खारा हो गया। हनुमान की अनूठी बात सुनकर समस्त बंदर हर्ष से गद्‌गद हो उठे।

जांबवान् ने नल-नील दोनों भाइयों को बुलाकर पुल बांधने का आदेश देते हुए कहा कि मन ही मन राम की शक्ति का स्मरण कर पुल तैयार करो, कोई विशेष परिश्रम नहीं लगेगा। जांबवान् ने बंदरों को सामूहिक रूप से बुलाकर प्रार्थना की कि राम के चरण-कमलों को हृदय में रखकर सभी वानर-भालू खेल ही खेल में दौड़कर वृक्षों और पर्वत श्रृंखलाओं को समूल उखाड़ो। यह सुनकर किलकारी मारते, राम का जय-जयकार करते हुए समस्त बंदर, भालू पर्वत श्रृंखलाओं और वृक्षों को उखाड़कर नल-नील को देने लगे और वे अत्यंत कुशलतापूर्वक सेतु-निर्माण करने लगे। नल-नील बड़े-बड़े पर्वतों के टुकड़े गेंद की तरह रख रहे थे।

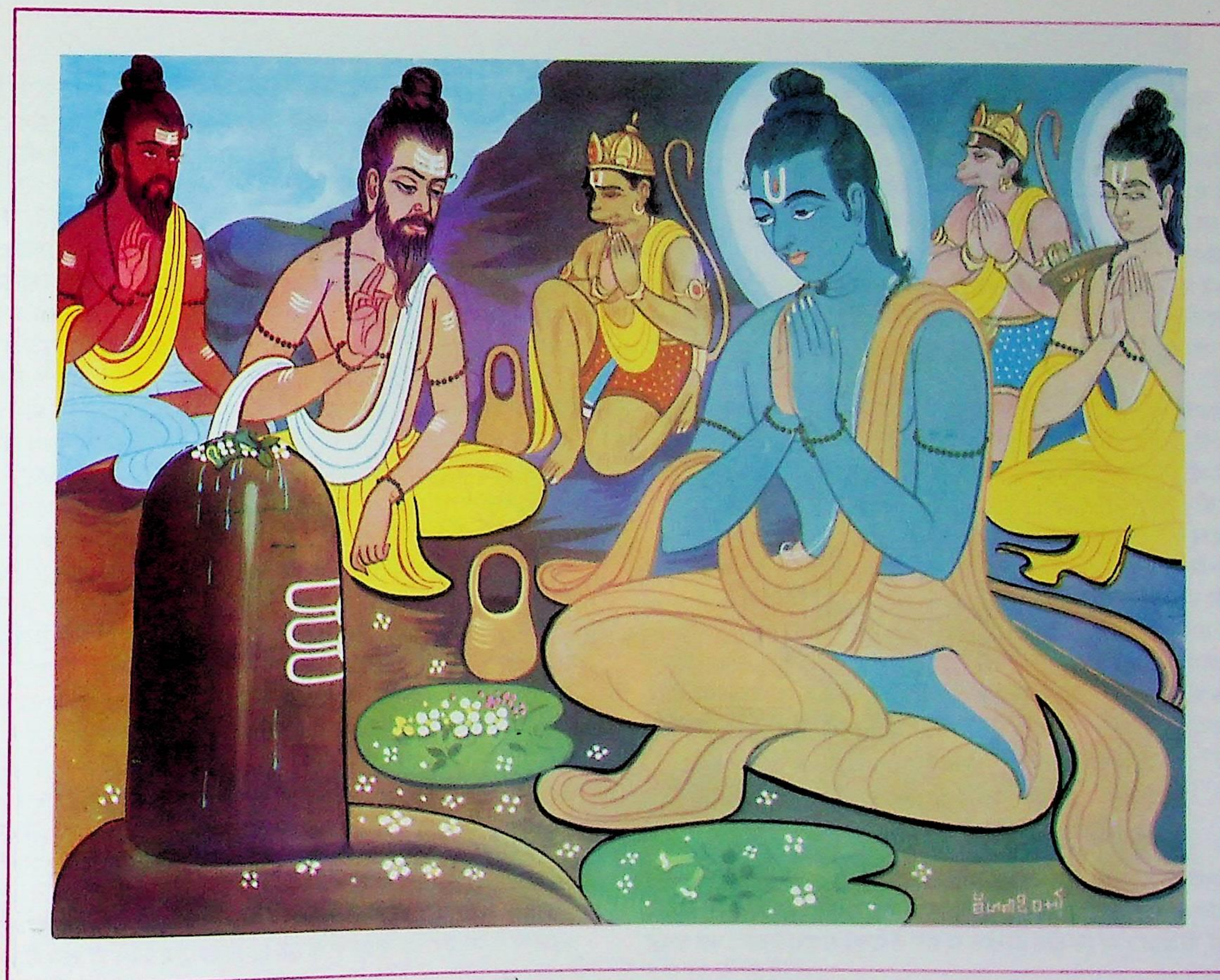
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा। सिव समान प्रिय मोहि न दूजा।।
सिव द्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपनेहु मोहि न पावा।।

राम की कृपा से ऊंचे पर्वतों और विशाल वृक्षों की सहायता से सुबुद्ध नल-नील के संरक्षण में समुद्र-सेतु की अत्यंत सुंदर और रम्य रचना देखकर प्रसन्नचित्त राम ने कहा कि यह अत्यंत रमणीय व उत्तम भूमि है। इसकी असीम महिमा का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। यहां मैंने शिवलिंग-स्थापना का संकल्प किया है।

राम की यह वाणी सुनकर सुग्रीव ने सभी श्रेष्ठ मुनियों को लिंग स्थापना की पूजा-क्रिया सम्पन्न करने के लिए दूत भेजकर सादर बुलवाया। राम ने प्रख्यात मुनियों की उपस्थिति में पवित्र रामेश्वर में वैदिक विधि से लिंग-स्थापना कर शंकर की पूजा की और कहा कि शंकर के समान अन्य कोई दूसरा मेरा श्रद्धेय नहीं। जो व्यक्ति शंकर से विद्रोह करता है और मेरा भक्त बनता है वह स्वप्न में भी मुझे नहीं प्राप्त कर सकता। शंकर-विमुख व्यक्ति व्यर्थ मेरी भक्ति चाहता है। ऐसा नारकीय मनुष्य मूढ़ और अल्प विवेकी है। जो लोग शंकर भक्त हैं परन्तु मेरे विद्रोही हैं या शंकर के भक्त नहीं मेरे भक्त हैं, वे अनेक कल्प तक घोर नरक यातना भोगते हैं। जो मनुष्य मेरे द्वारा स्थापित रामेश्वर का दर्शन करेंगे वे इस नश्वर काया से मुक्ति के बाद स्वर्ग लोक जाएंगे। जो व्यक्ति रामेश्वर की प्रतिमा का गंगाजल से अभिषेक करेगा, उस सौभाग्यशाली मनुष्य की आत्मा मुझमें विलीन हो जाएगी और उसे सायुज्य-मुक्ति प्राप्त होगी। जो ईर्ष्या, छल-कपट त्यागकर रामेश्वर की सेवा करेंगे उन्हें शंकर मेरी दृढ़ भक्ति प्रदान करेंगे। जो लोग मेरे द्वारा निर्मित रामेश्वर सेतु का दर्शन करेंगे वे बिना किसी परिश्रम के संसार रूपी समुद्र के पार हो जाएंगे।

रामेश्वर में शिवलिंग की स्थापना का गई। राम द्वारा शंकर के प्रति निवेदित श्रद्धामयी वाणी सबको प्रभावशाली लगी। रामेश्वर की प्रतिमा की स्थापना के समय एकत्र सभी मुनिगण अपने-अपने साधना-स्थलों पर लौट आये।

पानी में डूबने वाले पत्थर जहाज की तरह समुद्र पर तैरने लगे। यह न समुद्र की महिमा थी, न पत्थरों का गुण, न वानरों की करामात। राम के अजेय वैभव से समुद्र पर पत्थर तैर रहे थे।



लिंग थापि बिधिवत करि पूजा। सिव समान प्रिय मोहि न दूजा।।
सिव द्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपनेहु मोहि न पावा।।

वानर, भालू योद्धाओं की सामूहिक सेना गर्जना करती हुई बढ़ चली। सेतुबंध के तट पर खड़े राम समुद्र की विस्तृत जल-लहरियों को देख रहे थे। राम के दर्शन करने के लिए समुद्र के सभी जीव-जंतु लहरों के ऊपर सिर उठाये राम की छवि निरख रहे थे। अनेक तरह के मगर, घड़ियाल, दरियाई घोड़े विस्तृत आकार वाले समुद्र की छाती पर विचरण करते हुए राम की छवि के दर्शन कर तृप्त हो रहे थे। लहरों के ऊपर जल-जीवों की इतनी अधिक भीड़ हो गयी कि पानी का तल ही नहीं दिखायी पड़ रहा था। राम की आज्ञा से सेना पुल पार करने लगी। विराट वानरी सेना वर्णनातीत थी। सेतुबंध पर भयानक भीड़ थी। बहुत-से बंदर नभ मार्ग से उड़ते हुए लंका पहुंचने लगे। अनेक बंदर जल-जंतुओं की पीठ पर पांव रख आगे बढ़ रहे थे।

राम-लक्ष्मण बंदरों की कौतुक क्रीड़ा देखते हुए समस्त सेना के साथ समुद्र के पार लंका में उतरे। सैनिकों की भयानक भीड़ थी। राम ने लंका तट पर अपना डेरा डाला और सेना के बंदरों को आदेश दिया कि सुंदर फल-फूल खाओ। बंदर और रीछ दौड़ पड़े। राम की सेना के उपयोग के लिए ऋतु के विपरीत भी वृक्षों में बहुत-से फल लगे थे। बंदर-भालू फलों का स्वाद लेते हुए वृक्षों को झकझोर रहे थे और पर्वत-शिलाओं को लंका की ओर फेंक रहे थे। वे इधर-उधर घूमते-फिरते जिस किसी राक्षस को पाते उसे घेरकर परेशान करते और उनके नाक-कान काट राम का जय-जयकार करते।

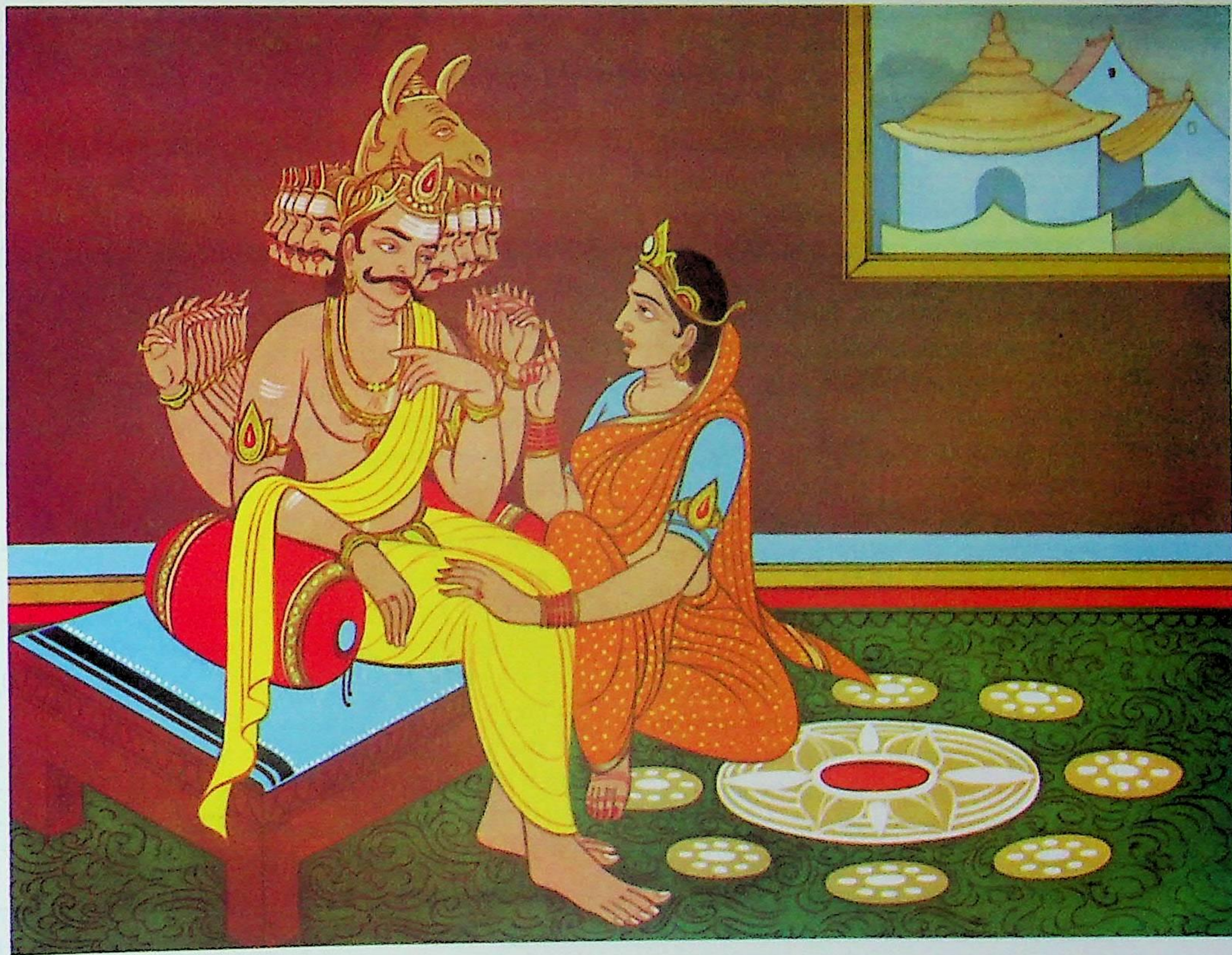
नाक-कान-विहीन राक्षसों ने रावण से दु:खद समाचार कह सुनाया। रावण ने सुना कि समुद्र बांध लिया गया। तपस्वी अपनी सेना के साथ लंका आ गये। रावण व्याकुल और चकित बार-बार बोलने लगा कि क्या वास्तव में समुद्र बांध लिया गया?

अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होहि अहिवात।।

जब रावण को ज्ञात हुआ कि समुद्र पर पुल बांध कर राम लंका में आ गए हैं तब अपनी व्याकुल मन:स्थिति छिपाए वह हंसता हुआ अपने अंत:पुर में आया। मंदोदरी को भी ज्ञात हुआ कि खेल ही खेल में राम ने समुद्र बंधवा लिया। वह अपने पति रावण को हाथ पकड़कर रंगमहल में ले आई। रावण के चरणों पर सिर नवा कर मंदोदरी आंचल पसारकर मधुर वाणी में बोली कि प्रियतम! क्रोध छोड़कर मेरी बात ध्यान से सुनिए। दुश्मनी उसी से करनी चाहिए जो विवेक और शक्ति से जीता जा सके। राम रूपी सूर्य के सामने आप टिमटिमाते जुगनू जैसे हैं। जिस भगवान ने विष्णु रूप में अत्यंत विकराल मधु और कैटभ आदि दैत्यों को मार डाला, नृसिह रूप धारण कर दिति के वीर पुत्र हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप का संहार किया, वामन का रूप धारण कर बलि को बंदी बनाया, परशुराम रूप में जिन्होंने सहस्रबाहु का वध किया; वही राम मनुष्य का रूप धारण कर पृथ्वी का पाप दूर करने के लिए अवतरित हुए हैं। धरती के जीव, काल और कर्म सभी उनके वशीभूत हैं। उनका विरोध मत कीजिए। राम की शरण में जाकर उनके चरण कमलों पर मस्तक झुकाइये और उन्हें जानकी लौटा दीजिए। अब आप अपने पुत्र का राजतिलक करके वानप्रस्थ जीवन बिताते हुए राम का भजन कीजिए।

मंदोदरी ने रावण को समझाते हुए कहा कि प्रियतम! राम दीनदयालु हैं। बाघ भी शरणागत पर प्रहार नहीं करता। अपने जीवन में आपने क्या नहीं किया? आपने अपने पौरुष से देवता, राक्षस, चर, अचर सभी को पराजित किया है। सज्जनों की नीति है कि चौथापन प्राप्त होने पर सम्राट को वानप्रस्थ आश्रम में जाकर सृष्टि के सृजनकर्ता, पालनकर्ता व संहारकर्ता राम का भजन करना चाहिए। विषय-विकार और समस्त मोह-ममता को त्यागकर राम की शरण में जाकर उन्हीं का स्मरण करना चाहिए। जिन राम के सान्निध्य की प्राप्ति हेतु मुनि लोग आजीवन साधना करते हैं और बड़े-बड़े राजा अपने राज्य को तिलांजलि देकर राजर्षि का जीवन यापन करते हैं, वही राम प्रत्यक्ष आपके पास आए हैं। इसलिए प्रियतम! आप मेरी सम्मति से अपनी पवित्र सुंदर यश: पताका को तीनों लोकों में विस्तीर्ण कीजिए। नेत्र में करुणा की गंगा-यमुना भरे हुए अपने पति रावण के चरणों को पकड़कर प्रकम्पित मंदोदरी ने प्रार्थना की कि प्रियतम! मेरा सुहाग तभी अचल रह सकता है जब आप राम का विरोध त्यागकर उनका स्मरण करें।

रावण ने व्याकुल मंदोदरी को धरती से उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। अहंकार से भरकर वह कहने लगा कि प्रियतमे! तुम व्यर्थ ही राम से भयभीत हो



अस कहि नयन नीर भरि गहिं पद कंपित गात।
नाथ भजहूं रघुनाथहि अचल होई अहिवात।।

गई हो। तुम्ही बताओ मेरे समान धरती पर और कौन योद्धा है? मेरे वश में सभी देवता, राक्षस और मनुष्य हैं। मैं वरुण, कुबेर, पवन, यम सभी दिक्पालों तथा मृत्यु व काल को भी अपनी शक्तिशाली भुजाओं से पराजित कर चुका हूं, फिर भय क्यों? मंदोदरी ने समझ लिया कि काल के वश होने से ही रावण को अभिमान हो गया है।

लंका के सुबेल पर्वत पर प्रात: काल राम जागृत होकर सभी मंत्रियों से परामर्श करने लगे कि अब आगे क्या करना चाहिए?

जांबवान् ने राम के चरणों पर मस्तक नवाकर प्रार्थना की कि सर्वज्ञाता, अंतर्यामी! विवेकशक्ति, तेज, धर्म और गुण के समूह राम! मेरा विवेक कह रहा है कि अंगद को दूत बनाकर रावण के पास भेजना चाहिए। जांबवान् के इस उचित मत का सभी ने समर्थन किया। राम ने तत्काल अंगद को संबोधित कर कहा कि हे बालिपुत्र! तुम बल, बुद्धि और गुणों के धाम हो। तुम मेरे काम से लंका जाओ। तुम्हें बहुत कुछ समझाने की जरूरत नहीं, तुम परम चतुर हो। रावण से तुम वही बात करना जिससे उसका कल्याण हो और हमारा कार्य सम्पन्न हो सके। राम की आज्ञा पाकर उनके चरणों की वंदना करते हुए अंगद ने कहा कि आपकी कृपा से ही कोई भी व्यक्ति गुणों का सागर हो जाता है और सभी कार्य स्वयं सिद्ध हो जाते हैं। आपने यह शुभ कार्य मुझे सौंप कर अमित सम्मान दिया है। प्रेम-पुलकित हर्षित मन से राम के चरणों की वंदना कर सबको नमस्कार कर अंगद चल पड़े।

लंका में प्रवेश करते ही रावण के पुत्र से उनकी भेंट हो गयी। बात ही बात में विवाद शुरू हो गया। दोनों में जवानी का जोश और अतुलनीय बल था। रावण के पुत्र ने अंगद पर पद-प्रहार किया। अंगद ने उसका पैर मरोड़कर धरती पर पटक कर मार दिया। राक्षसों का समूह इस विकराल योद्धा को देखकर छिपने लगा। भयवश वे आर्तनाद भी न कर सके। वे परस्पर एक-दूसरे को अपने मर्म की भावना भी नहीं बता रहे थे। रावण के पुत्र का वध हो जाने पर भी सभी मौन थे। सारी लंका में कोलाहल मच गया था कि जिस बंदर ने लंका जलायी थी वही फिर आ गया। सभी लोग चिंतित थे कि अब क्या होगा? बिना अंगद के पूछे सभी रावण के राज-दरबार का मार्ग उसे दिखा रहे थे। बंदर को देखकर सभी राक्षस भय से सूख रहे थे।

राम के चरण-कमलों का स्मरण करते हुए अंगद रावण के राजद्वार में आए और शक्तिशाली, वीर और धैर्यवान सिंह की तरह शान से चारों ओर निडर दृष्टिपात करने लगे। उन्होंने तुरंत अपने आगमन की सूचना एक राक्षस द्वारपाल से रावण के पास भेजी। रावण ने हंसकर कहा कि कहां का बंदर है? बुला लाओ। बहुत-से दूत अंगद को लेने दौड़े। मस्त हाथी की तरह झूमते हुए अंगद रावण के दरबार में आ पहुंचे। अंगद ने सजीव काजल के पर्वत के रूप में रावण को देखा। उसकी भुजाएं वृक्षों की शाखा और मस्तक पर्वत-शिखर के समान था। बहुत-सी लताएं उसकी रोम-राशियां थीं। उसके मुख, नाक, आंख, कान, पर्वत-श्रृंखला की गुफाओं के समान थे। शक्तिशाली वीर अंगद बिना किसी झिझक के रावण के राज-दरबार में पहुंच गए। रावण का समस्त राज-समाज अंगद के सम्मान में उठकर खड़ा हो गया। अंगद का यह सम्मान देख रावण बड़ा ही कुपित हुआ। जैसे शेर निधड़क हाथियों के झुंड में पहुंच जाए, उसी तरह निर्भीक अंगद राम का अतुलित वैभव हृदय में धारण कर मस्तक झुकाकर रावण की राजसभा में बैठ गया।

रावण ने पूछा कि बंदर तू कौन है? अंगद ने उत्तर दिया कि दसशीश! मैं राम का दूत हूं। मेरे पिता की और तुम्हारी मैत्री थी। भाई! मैं तुम्हारे हितचिंतन के लिए आया हूं। तुम उत्तम कुल में उत्पन्न महान पुलस्त्य ऋषि के नाती हो। शंकर की तुमने विधिवत पूजा-अर्चना की है। तुमने सभी कार्यों में सफलता प्राप्त की है। तुमने शंकर से सिद्धि वरदान प्राप्त किया है। तुमने समस्त सम्राटों को भी पराजित कर दिया है। राज-मद में भरकर तुम जगत्माता जानकी को चुरा लाए। अब तुम मेरे शुभ परामर्शानुसार आचरण करो। राम तुम्हारे सभी अपराध क्षमा कर देंगे। दांतों में तिनका दबा, गले में कुल्हाड़ी लटका अपने आत्मीयजनों व राजरानियों के साथ निर्भय जानकी को आगे करके आर्तनाद करते हुए रघुवंश शिरोमणि राम के पास चलो। शरणागत जानकर राम तुमको निर्भय कर देंगे।

क्रोध में भरकर रावण ने कहा कि बंदर के बच्चे! संभलकर बोलो। तुम नहीं जानते कि मैं देवताओं का शत्रु हूं। तुम अपना और अपने पिता का नाम बताओ। कैसे और किस सम्बन्ध से तुम्हारे पिता से मेरी मित्रता थी?

अंगद ने कहा कि मेरा नाम अंगद है और मैं बालि का पुत्र हूं। उनसे कभी तुम्हारी भेंट हुई थी?

संकुचित हो विगत परिचय का स्मरण कर रावण बोला कि हाँ, बालि नाम का एक बंदर था। अंगद, क्या तुम उसी बालि के लड़के हो? तुम कुलनाशक हो। अपने वंशरूपी बांस में तुम अग्नि पैदा हुए हो। गर्भ के समय ही तुम नष्ट क्यों नहीं हो गये? इस धरती पर तुम्हारा जन्म लेना व्यर्थ है। अपने मुंह से स्वयं को तपस्वियों का दूत कहते हो। बालि की कुशल कहो? वह कहां है?

अंगद ने कहा कि रावण! तुम भी स्वर्ग लोक में बालि के पास चले जाना और छाती से लगाकर वहीं उनकी कुशल पूछना। राम के विरोध से कौन-सा कल्याण होता है वह सब तुम्हें बालि बतायेंगे। अरे मूर्ख! जिस हृदय में राम की मूर्ति न हो उसी की बुद्धि पर भेद-नीति का प्रभाव पड़ सकता है। रावण! 'मैं अपने वंश का नाश करने वाला हूं और तुम कुल रक्षक हो', ऐसा तो अंधे-बहरे भी नहीं कहते। तुम्हें तो ईश्वर ने बीस आंखें और बीस कान दे रखे हैं। शंकर, ब्रह्मा, विष्णु और मुनियों का समूह जिस राम-चरण की सेवा के लिए तरसता है उसका दूत होकर मैं कुलबोरन हूं। ऐसी नीच बुद्धि होने पर भी तुम्हारा हृदय फटता क्यों नहीं?

यह सुनकर रावण कुपित हो बोला—अरे मूर्ख! तुम्हारी कठोर बातें मैं मात्र नीतिवान होने के कारण सह रहा हूं। अंगद व्यंग्य से बोले—तुम्हारा धर्म और नीति तो विख्यात है। दूसरे की पत्नी चुराई। कान-नाक कटी बहन देखकर भी धर्मवश उसको क्षमा कर दिया। हमें आप जैसे धर्मज्ञ के बड़े भाग्य से दर्शन हुए।

क्रुद्ध रावण ने विभिन्न प्रकार से अंगद के मन में भेद उत्पन्न करने का प्रयास किया। अंगद बोले कि मैं स्वयं तेरे विनाश के लिए सक्षम था, पर श्रीराम ने आज्ञा ही नहीं दी।

अंगद की यह कटु उक्ति सुनकर रावण मुस्कराकर बोला कि इतना झूठ बोलना तुमने कहां से सीख लिया? बालि ने कभी ऐसी गप्पें नहीं मारीं। लगता है, तपस्वियों से मिलकर तुम लबार हो गये हो।

कुपित होकर अंगद ने कहा कि रावण! मैंने तुम्हारी दसों जिह्वाएं नहीं उखाड़ीं—इसीलिए मैं लबार हूं? राम के प्रताप का स्मरण कर रावण की सभा में क्रोधित अंगद ने प्रतिज्ञापूर्वक अपने पैर जमा दिये और दृढ़ता से कहा कि मूर्ख! यदि तू मेरे चरणों को हिला दे तो मैं सीता को हार जाऊंगा। राम लौट जाएंगे।

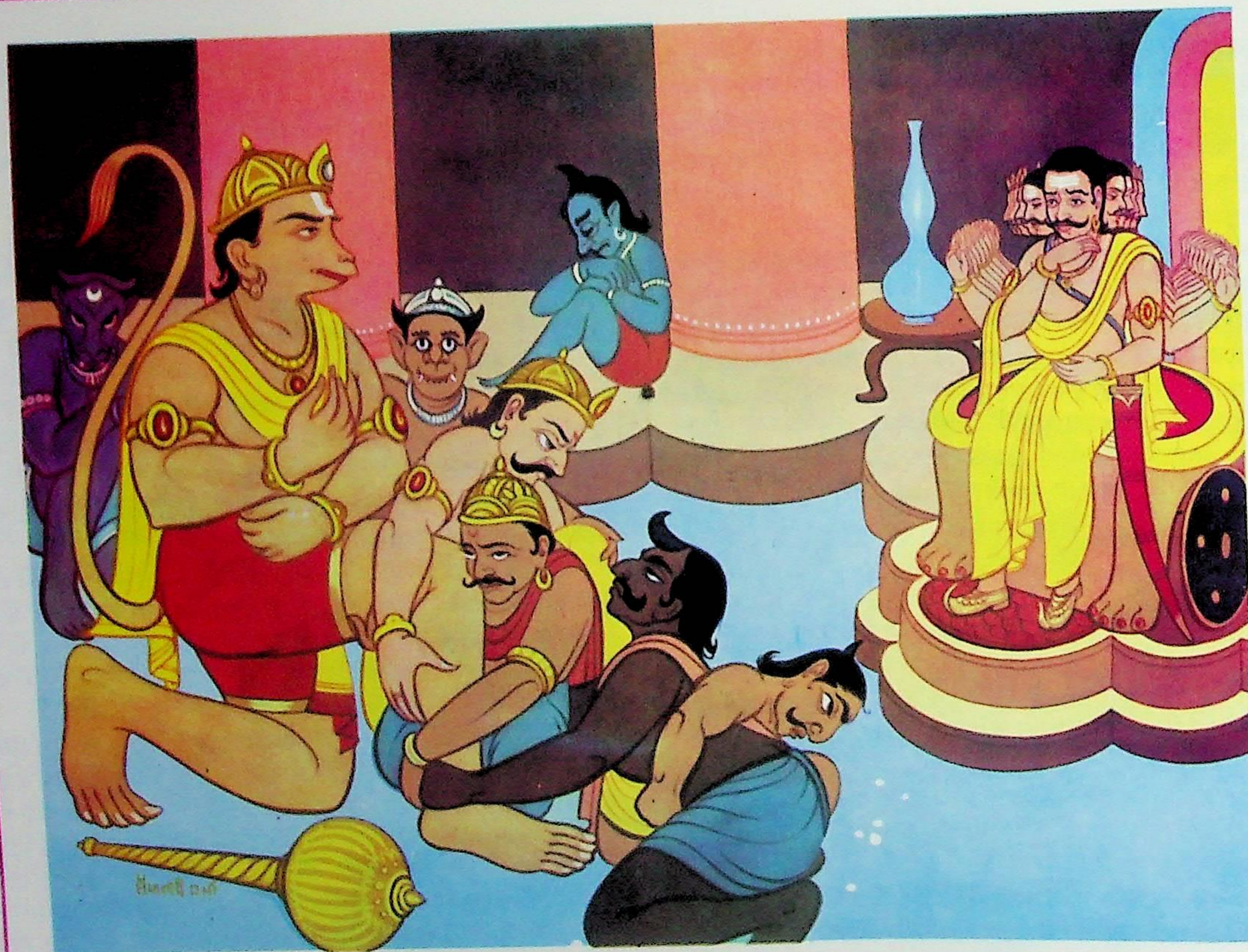
जौ मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी।।
सुनहु सुभट सब कह दससीसा। पद गहि धरनि पछारहु कीसा।।

रावण ने अपने वीरों से कहा कि बंदर का पैर खींचकर पछाड़ दो। मेघनाद आदि शक्तिशाली योद्धा बड़े यत्न से शक्तिपूर्वक झपटने लगे परन्तु अंगद का पैर तनिक भी नहीं हिल रहा था। सभी वीर मस्तक झुकाकर अपने आसन पर विराजमान हुए। बहुत-से राक्षस अंगद का पैर हिलाने लगे, परन्तु जैसे योगभ्रष्ट साधु मोह रूपी वृक्ष को नहीं उखाड़ सकते उसी तरह राक्षस अंगद के चरण भी नहीं हिला सके। मेघनाद जैसे अनेक शक्तिशाली योद्धा हर्षित मन से झपटे पर अंगद के दृढ़ चरण अटल रहे। लज्जा से मस्तक नवाकर राज दरबार के सारे राक्षस वीर बैठ गये। करोड़ों विघ्न आने पर भी जैसे साधु व्यक्ति धर्म-नीति नहीं त्यागते उसी तरह अंगद के चरण रावण के राज-दरबार में अटल थे।

रावण का दम्भ और मद तिरोहित हो गया। अंगद की शक्ति देखकर मन ही मन सभी ने पराजय स्वीकार कर ली।

अंगद के ललकारने पर रावण स्वयं उठा। रावण ने जब अंगद का चरण पकड़ा तब उसने कहा कि तुम्हारा उद्धार मेरे चरण पकड़ने से नहीं होगा। जाकर राम के चरण क्यों नहीं पकड़ते? रावण कटु व्यंग्य सुनकर अपनी समस्त श्री और ओज गंवा बैठा। वह मध्याह्न में दिखायी देने वाले चन्द्रमा की भांति निस्तेज हो गया। चिंता से मस्तक झुकाकर वह सिंहासनारूढ़ हो गया।

लंका के चारों दुर्गों पर बंदरों की सेना ने भयानक युद्ध छेड़ दिया। विश्वविजयी रावण के सेनापतियों के दांत खट्टे हो गये। राक्षसों ने आक्रमण का जमकर लोहा लिया। रणक्षेत्र में हनुमान और अंगद गरज रहे थे। राक्षसों ने माया से अंधकार फैलाकर वानर सेना में खलबली मचा दी। राम ने अपने प्रकाशपूर्ण अग्निबाण से भयानक अंधेरे को उसी तरह दूर कर दिया जैसे ज्ञान के प्रकाशित होते ही सारे अज्ञान दूर हो जाते हैं। राम की सेना के भालू-बंदर अग्निबाण के प्रकाश में श्रम और भयरहित हो प्रसन्नचित्त दौड़ने लगे। उनकी हुंकार से राक्षस भागने लगे। भालू-बंदर राक्षस योद्धाओं को पृथ्वी पर पटक देते थे और अपने आश्चर्यजनक



जौ मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं राम सीता मैं हारी।।
सुनहु सुभट सब कह दससीसा। पद गहि धरनि पछारहु कीसा।।

युद्ध-कौशल उन्हें दिखाते थे। वे राक्षसों के पैर खींचकर समुद्र में डाल देते थे। राक्षस जलचरों के आहार बन रहे थे। बहुत-से राक्षस मारे गये। अनेक घायल हुए। बहुत-से जान बचाकर दुर्ग में जाकर छिप गये। अपनी अपराजेय शक्ति से बंदर और रीछों ने शत्रु-समूह को विचलित कर दिया और गर्जना करने लगे।

रात हो गयी। चारों दुर्गों की बानरी सेना राम के समीप लौट आयी। युद्ध बंद हो गया। सभी सैनिकों का श्रम राम-दर्शन से दूर हो गया।

उधर रावण ने रात्रि में अपने मंत्रियों को बुलाकर रणक्षेत्र में मारे गये प्रमुख सेनापतियों की चर्चा करते हुए कहा—वानरों ने राक्षसों की आधी सेना नष्ट कर दी। शीघ्र बताइये कि आगे क्या करना है? रावण का नाना अत्यंत वृद्ध राक्षस माल्यवंत राज-दरबार का श्रेष्ठ मंत्री था। उसने अत्यंत नीतिमयी वाणी में रावण को शिक्षा देते हुए कहा—जब से तुमने सीता का हरण किया है तब से निरंतर लंका में अशुभ हो रहा है। वेद-पुराण राम की यशः प्रशस्ति करते हैं। उनसे विमुख होकर कदापि सुख नहीं प्राप्त हो सकता। राम ने हिरण्यकश्यप सहित हिरण्याक्ष को नष्ट किया। वही कृपासिंधु राम मनुष्य रूप में अवतरित हुए हैं। काल बनकर समस्त दुष्टों को भस्मीभूत करने वाले राम ज्ञानी और गुणी भी हैं। शंकर व ब्रह्मा उनकी सेवा करते हैं। बैर छोड़, जानकी को उन्हें लौटाकर राम का भजन करो। काल के वशीभूत रावण को यह नीतिमयी वाणी तीर की भांति चुभी। उसने माल्यवंत को डांटते हुए कहा कि अपना मुंह काला कर मेरी आंखों के सामने से हट जा। यदि तू वृद्ध न होता तो मैं तुझे मार डालता। माल्यवंत ने मन ही मन सोचा कि निश्चित रूप से राम इस दंभी-का वध करेंगे। वह रावण को कोसता हुआ राजसभा से चला गया।

अत्यंत क्रोधी मेघनाद ने कहा कि मेरी वीरता का करतब कल प्रातःकाल देखिएगा। मैं स्वयं अपने शौर्य का वर्णन नहीं करना चाहता।

रावण अपने पुत्र का निश्चय सुनकर निश्चित हुआ। उसने मेघनाद को दुलार से गोद में बैठा लिया। युद्ध की व्यूह-रचना किस प्रकार की जाए—यह सोचते-सोचते सवेरा हो गया। बंदरों की सैन्यवाहिनी ने पुनः लंका के चारों द्वारों पर कोलाहल कर प्रहार करना प्रारंभ किया। अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित राक्षसों ने दुर्ग से पर्वतों के शिखर ढहाने शुरू किये। अनेक शिखर गिराए गए। आग्नेयास्त्र तथा वज्र से भी अधिक घातक अस्त्रों का प्रयोग प्रारंभ हुआ। प्रलय-मेघ की तरह योद्धा गरजने लगे। विकट वानरी सेना के योद्धा राक्षसों से भिड़ते थे। उनका शरीर रण-श्रम से जर्जर हो उठा था फिर भी पहाड़ की शक्ति से वे निरंतर किले पर प्रहार करते थे। राक्षसों की मौत हो रही थी।

जब मेघनाद ने सुना कि बंदरों ने दुर्ग को चारों ओर से घेर लिया है तब डंका बजाता, दुर्ग से उतरकर बंदरों की सेना के सामने आया। रणक्षेत्र में मेघनाद ने ललकारा कि लोक-विख्यात धनुर्विद्या में पारंगत राम-लक्ष्मण कहां हैं? नल, नील, सुग्रीव, द्विविद और शक्तिपुंज अंगद व हनुमान कहां हैं? भ्रातृद्रोही विभीषण कहां है? आज मैं निश्चय ही सबका और दुष्ट भ्रातृ-द्रोही का वध करूंगा। मेघनाद ने कुपित होकर धनुष की प्रत्यंचा कानों तक खींचकर बाणों का संधान प्रारंभ किया। पंखयुक्त सर्पों की भांति अगणित बाण बरसने लगे। घायल होकर बंदर गिरने लगे; रणक्षेत्र से वे भागने लगे। बंदर युद्ध और वीरता के करतब भूल गये। एक भी ऐसा बंदर रणक्षेत्र में नहीं था जिसके प्राण सुरक्षित हों। मेघनाद के निरंतर बाण-प्रहार से बंदर पृथ्वी पर धराशायी होते रहे। विजयी मेघनाद सिंह के समान गर्जना करने लगा। समस्त वानर सेना को व्याकुल देखकर काल की तरह कुपित हनुमान ने एक बड़ी पर्वत-शिला उखाड़कर मेघनाद पर प्रहार कर दिया। पर्वत-प्रहार से मेघनाद का रथ, सारथी और घोड़े सभी धूल चाटने लगे। पर वह आकाश में उड़ गया। हनुमान ने बार-बार उसे ललकारा; परन्तु मेघनाद उनकी अतुलित शक्ति जानता था। वह उनके निकट नहीं आया।

उड़ता हुआ मेघनाद राम के पास गया और अनेक प्रकार के दुर्वचन और कटूक्तियां कहने लगा। उसने अनेकानेक शस्त्रों से राम पर प्रहार किया। राम ने खेल ही खेल में मेघनाद के घातक प्रहार विफल कर दिये। राम की सामर्थ्य, शक्ति एवं वैभव को देखकर मूर्ख मेघनाद लज्जा से गड़ गया, जैसे कोई सांप का बच्चा हाथ में लेकर गरुड़ को डराने का खेल करे, मेघनाद उसी तरह राम को डराने लगा। जिनकी शक्तिशाली माया के बंधन में शंकर एवं ब्रह्मा हैं, उन्हीं राम से मेघनाद प्रपंच रचने लगा। आकाश से उसने अंगारों की वृष्टि की। पृथ्वी से अकस्मात् जलस्रोत फूट पड़े। अनेक भयानक पिशाच और पिशाचिनियां मार-कट मचाने लगीं। मेघनाद अपनी माया के चमत्कार से विष्ठा, पीप, खून,

हड्डियों व केश-राशि की वृष्टि करने लगा। चारों ओर पत्थर बरस रहे थे। मेघनाद ने धूल बरसाकर ऐसा गहन अंधेरा कर दिया कि हाथ तक नहीं दिखायी दे रहा था। मेघनाद की माया से वानरी सेना व्याकुल हो उठी। बंदरों ने निश्चित जान लिया कि हम इसी तरह अभी मर जायेंगे। राम ने बंदरों को भयभीत देखकर बाण के प्रहार से मेघनाद की माया के प्रपंच को नष्ट कर दिया। बंदरों का प्रबल रण-उत्साह पुनः जागृत हो उठा।

राम की आज्ञा से अंगद तथा अन्य शक्तिशाली बंदरों को अपने साथ लेकर धनुष-बाणधारी लक्ष्मण मेघनाद से युद्ध करने चले। क्रोध से लक्ष्मण के नेत्र लाल थे। विशाल भुजाएं एवं चौड़ी छाती वाले लक्ष्मण रणक्षेत्र में आये। हिमगिरि के समान उज्ज्वल, गौरवर्ण लक्ष्मण का शरीर यौवन की लालिमा से युक्त था।

मेघनाद की सहायता के लिए रावण ने अस्त्र-शस्त्र से सज्जित योद्धाओं को भेजा। पर्वत, नख और वृक्ष रूपी अस्त्र-शस्त्र धारण किये बंदर राम की जय-जयकार करते हुए दौड़ रहे थे। प्रत्येक राक्षस से अलग-अलग बंदर भिड़े। दोनों ओर से विजय-कामना संजोये राक्षस और बंदर जान की बाजी लगाकर लड़ रहे थे। बंदर लात व घूंसों से राक्षसों पर प्रहार कर रहे थे। किटकिटा कर बंदर दांतों से राक्षसों को काट रहे थे। दृढ़ विजय-कामना से राक्षस भी बंदरों पर प्रहार करते एवं डांटते थे। रणक्षेत्र में चारों ओर मारो-पकड़ो-काटो का वीर-रव गूंज रहा था। समूचे ब्रह्मांड में लक्ष्मण और मेघनाद के युद्ध की प्रचंड ध्वनि व्याप्त थी। गड्ढे खून से भर गये थे। रणक्षेत्र ऐसा था मानो अंगारों के ढेर पर राख छाई हुई हो। जगह-जगह घायल वीर लाल पलाश के फूले हुए पेड़ की तरह थे।

वीर रस के ओजस्वी भाव से लक्ष्मण और मेघनाद दोनों योद्धा युद्धरत थे। वे एक-दूसरे को पराजित नहीं कर पा रहे थे। मेघनाद माया का प्रपंच रचकर अनीतिपूर्ण युद्ध करने लगा। लक्ष्मण का भी कुपित पौरुष जाग उठा। उन्होंने मेघनाद का रथ टुकड़े-टुकड़े कर दिया। सारथी घायल हो गया। लक्ष्मण ने अनेकों प्रकार से मेघनाद पर प्रहार किया। केवल उसके प्राण शेष रह गये थे।

मेघनाद ने सोचा अब प्राणों पर संकट आ पड़ा है। अतः उसने वीरघातिनी शक्ति से संवलित बाण का प्रहार किया। वह तीव्र बाण लक्ष्मण की छाती में लगा। वे मूर्च्छित हो गये। तब मेघनाद निर्भय होकर घायल लक्ष्मण के पास चला गया। उन्हें बंदी बनाने के लिए अगणित योद्धाओं के साथ उन्हें धरती से उठाने लगा, पर मूर्च्छित लक्ष्मण नहीं उठे। मेघनाद लज्जा से गडकर लौट गया।

संध्या होते ही दोनों ओर के सेनापति अपनी-अपनी सेनाएं संभालते हुए शिविर की ओर लौट पड़े। व्यापक बल-सम्पन्न, अजेय, सम्पूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी राम ने पूछा कि लक्ष्मण कहां हैं? हनुमान लक्ष्मण को मूर्च्छावस्था में उठाकर ले आये। मूर्च्छित लक्ष्मण को देखकर राम अत्यंत दुःखित थे।

जांबवान् ने कहा कि लंका में सुषेण वैद्य रहता है। उसे लेने कौन जाएगा? लघु रूप धारणकर हनुमान गये और सुषेण को उसके भवन सहित तत्क्षण उठा लाये। सुषेण ने राम के चरण-कमलों में मस्तक झुकाया और मूर्च्छा दूर होने की वनौषधि का पता हनुमान को समझाया। औषधि लाने के लिए तत्काल हनुमान राम के कमल-चरणों की वंदना कर चल पड़े।

भेदियों ने यह समाचार रावण को दिया। रावण कालनेमि के पास गया और उसने सारी परिस्थितियां कालनेमि से कह सुनायीं। बार-बार पश्चात्ताप करते हुए कालनेमि ने कहा कि देखते ही देखते जिस बंदर ने नगर जला डाला, उसका मार्ग कौन रोक सकता है? तुम झूठी मृगमरीचिका में पड़े हो। राम का भजन कर अपना कल्याण करो। ममता, मूढ़ता, माया तथा भेद-बुद्धि त्यागो। तुम अज्ञान की अंधकारमयी रात्रि में सो रहे हो। राम के नील-कमल-से नेत्र और उनकी श्यामल मूर्ति अपने हृदय में स्थापित कर जाग जाओ। राम काल रूपी सर्पों के भक्षक हैं। स्वप्न में भी उन्हें रणक्षेत्र में पराजित नहीं किया जा सकता।

उपदेशमयी बातें सुनकर कुपित रावण कालनेमि पर बरस पड़ा। कालनेमि ने सोचा कि इस राक्षस के हाथों मरने से तो उत्तम है कि रामदूत हनुमान के हाथों ही प्राण गंवाया जाय। उसने हनुमान के मार्ग पर आगे बढ़कर माया-प्रपंच की रचना की। उसने तत्काल सुंदर उपवन, बावली और मंदिर की संरचना कर दी। हनुमान ने उस मंगलमय सुहावने आश्रम को देखा। हनुमान ने उस आश्रम में मुनि की आज्ञा से जल पीने के बाद आगे बढ़ने का निश्चय किया। मुनि वेश में कपटी कालनेमि विद्यमान था। अपनी झूठी माया और प्रपंच में वह हनुमान का लक्ष्य भंग कर राम-कार्य का अहित करना चाहता था। हनुमान ने उसके समक्ष मस्तक झुकाया। कालनेमि रूपी मुनि ने हनुमान से कहा कि राम और रावण भयानक युद्ध

में रत हैं। निःसन्देह राम विजयी होंगे। यहां रहते हुए मैं यह सब अपनी प्रबल ज्ञान-दृष्टि से देख रहा हूं।

हनुमान प्यासे थे। अपनी प्यास बुझाने के लिए जल मांगा। मुनि ने उन्हें कमण्डलु दिया। हनुमान ने कहा कि इतने स्वल्प जल से मेरी पिपासा शांत नहीं होगी। मुनि ने कहा कि तालाब में तुरंत स्नान कर आओ तब तुम्हें मैं ज्ञान-दीक्षा दूंगा।

जब हनुमान स्नान करने के लिए तालाब के जल में प्रविष्ट हुए तब एक मकरी ने व्याकुल होकर उनके पैर पकड़ लिये। हनुमान ने उसे मार डाला। वह दिव्य शरीर धारण कर विमान में चढ़कर स्वर्ग जाने लगी। उसने हनुमान से कहा कि तुम्हारा दर्शन पाकर मैं निष्पाप हो गयी। ऋषि के शाप से मैं मकरी बन गयी थी। मैं सत्य कहती हूं कि यह मुनि नहीं, भयानक राक्षस है। यह कहते हुए मकरी रूपी वह अप्सरा स्वर्ग लोक चली गयी।

हनुमान कालनेमि के पास लौटकर व्यंग्य करते हुए कहने लगे कि पहले गुरु दक्षिणा ले लीजिए—गुरुमंत्र पीछे लूंगा। हनुमान ने कालनेमि का मस्तक अपनी पूंछ में लपेट कर पछाड़ दिया और उसे धरती पर पटक दिया। मरते समय अपना असली रूप प्रकट कर राम-राम कहते हुए उसने अंतिम सांस ली। राम-नाम सुन हनुमान हर्षित हो आगे बढ़े।

इस भयानक माया और विघ्न को पारकर हनुमान सुषेण द्वारा निर्दिष्ट पर्वत पर औषधि-प्राप्ति हेतु पहुंचे। वे औषधि न पहचान सके। हनुमान ने तत्काल पर्वत उखाड़ा और उसे अपने करतल पर धारण कर लिया। रात्रि में आकाश मार्ग से शीघ्र लंका पहुंचने के लिए अयोध्या के ऊपर से तीव्र गति से उड़ते हुए चले आ रहे थे। नन्दीग्राम में राम की चरण-पादुका के समक्ष जागृत भरत ने अत्यंत विशाल हनुमान की आकाशगामी काया को देखकर यह अनुमान किया कि यह कोई राक्षस है। बिना फर के बाण से उन्होंने हनुमान पर प्रहार कर दिया।

लीन्ह कपिहि उर लाइ, पुलकित तनु लोचन सजल।
प्रीति न हृदय समाइ, सुमिरि राम रघुकुल तिलक।।

भरत के बाण-प्रहार से राम-नाम का स्मरण करते हुए हनुमान चेतनाहीन हो पृथ्वी पर गिर पड़े। राम-नाम का प्रिय उच्चारण सुनकर भरत दौड़े और अत्यंत आकुलता से हनुमान को हृदय से लगा लिया। भरत ने हनुमान की मूर्च्छा दूर करनी चाही, परन्तु हनुमान की मूर्च्छा भंग न हुई। भरत का मुख मलिन और मन खिन्न हो गया। आंखों में अश्रु भरकर उन्होंने कहा कि जिस ब्रह्मा ने मुझे राम से विमुख किया उसी ने यह दारुण कष्ट भी दे दिया। उन्होंने सोचा कि यदि मनसा-वाचा और कर्मणा राम के चरण-कमलों में मेरी निष्कपट भक्ति है और वे मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह बंदर शीघ्र चैतन्यावस्था में आकर सजीव हो जाए। भरत की यह मानसिक अभिलाषा सुनते ही राम की जय-जयकार करते हुए हनुमान उठ बैठे। भरत ने चैतन्य हनुमान को पुलकित हो हृदय से लगाया। उनके नेत्रों से आनंद की अश्रुधारा प्रवाहित हो उठी। राम के प्रति भरत के उस अमित प्रेम का वर्णन नहीं किया जा सकता था।

भरत ने अनुज लक्ष्मण, माता जानकी व अग्रज राम की कुशल-क्षेम पूछी। हनुमान ने समस्त परिस्थितियों का तत्काल वर्णन कर दिया। उपस्थित दुःखद घटना का वर्णन सुनकर वियुक्त भरत पश्चात्ताप करने लगे। वे बिलखने लगे कि मेरा संसार में जन्म लेना व्यर्थ है। मैं अपने स्वामी राम के किसी काम न आ सका। विपत्ति, विपरीत काल जानकर भरत के मन को ढाढ़स बंधाते हुए हनुमान ने कहा कि सबेरा होते ही काम बिगड़ जाएगा। यह सुनकर भरत बोले, तुम पर्वत सहित मेरे बाण पर आरूढ़ हो जाओ, मैं तुम्हें तत्क्षण भगवान राम के पास पहुंचा दूंगा।

हनुमान का प्रबल अहं जाग उठा। वह सोचने लगे कि मेरा भयानक बोझ धारण कर बाण कैसे चलेगा? परन्तु तत्काल राम की महिमा का स्मरण कर उन्होंने भरत का चरण-स्पर्श किया और कहा कि आपके शौर्य और शक्ति को हृदय में स्थापित कर मैं तत्काल लंका पहुंच जाऊंगा। भरत से सादर विदा ले हनुमान चल पड़े। भरत की राम के चरणों में अपरम्पार भक्ति, उनकी शक्ति और सहज स्वभाव आदि गुणों की मन ही मन बारंबार सराहना करते हुए हनुमान आकाश-मार्ग से बढ़े चले जा रहे थे।

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जियं जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।

वहां मूर्च्छित लक्ष्मण को देखकर राम सामान्य मनुष्य की भांति करुणा-विगलित हो बिलखने लगे कि आधी रात बीत गयी—हनुमान आये नहीं। भावना-विह्वल राम बारंबार चेतनाशून्य लक्ष्मण को छाती से लगाकर कलपने लगे। वे बिलाप करने लगे कि लक्ष्मण! तुम मुझे कभी दुःखी नहीं देख सकते थे। स्वभावतः तुम्हारा स्वभाव मृदुल था। मुझे लेकर तुमने माता-पिता को तिलांजलि दे दी। मेरे कारण तुम्हें जंगल में तुषार-आंधी और तप्त ग्रीष्म के कष्ट सहने पड़े। तुम्हारा वह प्रेम अब कहां है? मुझे व्याकुल बिलखते हुए देखकर भी तुम क्यों नहीं उठते? यदि मैं जानता कि वनवास में भाई का विछोह होगा तो पिता दशरथ की आज्ञा न मानता। इस संसार में पुत्र, धन, परिवार, पत्नी और सम्पत्ति सभी बारंबार मिल सकते हैं, परन्तु सहोदर भाई बार-बार नहीं मिलता। यह सोचकर लक्ष्मण, तुम अपनी निद्रा भंग करो। जैसे पंख के अभाव में पक्षी, मणि के अभाव में सर्प, और सूंडहीन श्रेठ हाथी अत्यंत करुण हो जाते हैं, उसी प्रकार हे भाई! यदि कहीं जड़ ईश्वर ने मुझे तुम्हारे अभाव में जीवित रहने दिया तो मेरा भी जीवन इन जीवों-सा ही करुण और दयनीय होगा। मैं अयोध्या कौन-सा मुंह लेकर जाऊंगा? स्त्री के लिए मैंने अपने प्यारे भाई की जिंदगी गंवा दी। मैं इस संसार में अपनी कायरता से पत्नी को बंदिनी बनवा देने की बदनामी सह लेता। पत्नी की हानि से कोई विशेष क्षति नहीं थी। अब भ्राता! मेरा यह निष्ठुर और कठोर हृदय स्त्री-हानि का अपयश और तुम्हारा शोक दोनों कष्टों को साथ-साथ झेलेगा कैसे? लक्ष्मण! तुम अपनी माता के प्राणाधार और अकेले पुत्र हो। तुम्हारा हाथ पकड़कर माता सुमित्रा ने मुझे सौंपा था। हर प्रकार से अत्यंत हितचिंतक और शुभेच्छु समझकर उन्होंने तुम्हारा संरक्षक मुझे बनाया था। लक्ष्मण! तुम उठकर मुझे समझाते क्यों नहीं कि अयोध्या वापस जाकर मैं माता सुमित्रा को क्या जवाब दूंगा?

इसी तरह, सामान्य मनुष्य की भांति, सबको चितामुक्त करने वाले राम मूर्च्छित लक्ष्मण को गोद में लेकर बिलाप कर रहे थे। उनके कमल की पंखुड़ियों के समान नेत्रों से विषाद केअश्रुकण बरस रहे थे। राम के करुण आर्त विलाप को कानों से सुनकर बंदरों का समूह बिलख उठा। उसी समय करुण प्रसंग में जैसे साक्षात् वीर-रस का भाव जागृत हो जाये, उसी तरह उस विरह-व्याकुल वातावरण में हनुमान का आगमन हुआ।

हर्ष-गद्गद राम हनुमान से लिपट गए। वैद्य सुषेण ने तत्काल जड़ी का प्रयोग किया। लक्ष्मण हर्षित व चैतन्य हो उठ बैठे। राम को नई जिंदगी मिल गयी। लक्ष्मण को हृदय से चिपटाकर राम भेंटने लगे। भालू और बंदरों का समूह हर्ष से विह्वल हो गया। हनुमान ने वैद्य सुषेण को सादर वापस पहुंचा दिया। रावण को जब समस्त वृत्तान्त का ज्ञान हुआ तो वह विषाद से भरकर मस्तक पीटने लगा।

लक्ष्मण की मूर्च्छा भंग होने पर घबड़ाया हुआ रावण कुंभकर्ण को जगाने लगा। निद्रा भंग होने पर कुंभकर्ण ने जब सारा वृत्तान्त सुना तो उसने रावण की खोटाई पर दुःखी होकर कहा कि मुझसे अंक में भर कर भेंट लो। अब मैं अपने दैहिक, दैविक, भौतिक—तीनों तापों से मुक्ति देने वाले श्यामवर्ण राम के दर्शन करने जा रहा हूं। उसने छककर मदिरा पान किया तथा अगणित भैंसों का भोजन किया। बिजली की तरह गर्जना करता हुआ कुंभकर्ण बिना सेना साथ लिये अकेले रणक्षेत्र में आ गया। वहीं विभीषण कुंभकर्ण से मिला और अपने साथ रावण की राजसभा में घटी सारी घटना कह सुनाई। कुंभकर्ण ने स्पष्ट कहा कि मनसा-वाचा-कर्मणा कपट छोड़कर तुम राम को मानो। मैं तो काल के वशीभूत हूं। मुझे अपना-पराया नहीं दिखायी दे रहा है।

विभीषण ने राम को सूचना दी कि पर्वत-सा विराट रणधीर कुंभकर्ण युद्ध हेतु आ रहा है। वृक्ष और पर्वतधारी बंदर कटकटा कर कुंभकर्ण पर प्रहार करने लगे। जैसे मदार के फलों के प्रहार से हाथी को चोट नहीं लगती वैसे ही निर्द्वन्द्व कुंभकर्ण बन्दर और भालुओं के प्रहार की परवाह न कर उनसे लड़ता रहा। हनुमान की मुष्टिका-प्रहार से वह व्याकुल हो धरती पर गिर सिर पीटने लगा। चैतन्य होकर पुनः उसने हनुमान पर प्रहार कर दिया। वे चक्कर खाकर गिर पड़े। उसने नल, नील को पटककर पछाड़ दिया। अंगद आदि सभी वानरों को मूर्च्छित कर अपरिमित शक्तिशाली राक्षस कुंभकर्ण सुग्रीव को कांख में दबाकर आगे बढ़ा। प्रहार की मूर्च्छा दूर होने पर हनुमान सुग्रीव को खोजने लगे। सुग्रीव शव



लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तनु लोचन सजल।
प्रीति [illegible] राम [illegible] तिलक।।

बनकर कुंभकर्ण की कांख से खिसक गये और अपने दांतों से कुंभकर्ण के नाक-कान काट लिये। आकाशमार्ग की ओर सुग्रीव बढ़ चले परन्तु कुंभकर्ण ने सुग्रीव का पैर पकड़कर पृथ्वी पर पटक दिया। सुग्रीव ने भी फुर्ती से उसे मारा और राम के पास चले आये।

कुपित कुंभकर्ण रणोत्साह से उन्मत्त होकर काल की तरह आगे बढ़ा। वह सभी बंदरों को अपना आहार बनाने लगा। बंदर उसके मुख-नाक और कान से निकालकर भागने लगे। उसके प्रबल भय से घबड़ाकर सारे योद्धा रणक्षेत्र से भाग खड़े हुए। उनकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। सैनिक आर्तनाद करने लगे। कुंभकर्ण ने बंदरों की सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया।

राम सुग्रीव, विभीषण और लक्ष्मण को सैन्य संचालन का आदेश देकर स्वयं हाथ में शारंग धनुष और कमर में तरकस बांधते हुए कुंभकर्ण की सेना का दलन करने लगे। राम की धनुष-टंकार से सेना की श्रवण शक्ति समाप्त हो गयी। सर्प के फन की तरह लाखों बाण उन्होंने बरसाये जिससे राक्षसों का समूह नष्ट होने लगा। बाण-प्रहार से राक्षस बादल की तरह बिखरने लगे। धरती पर भुजा-मस्तक-धड़-सिर-हाथ-पैर कट-कटकर गिर रहे थे। राम के बाणों ने भयानक राक्षसों को नष्टप्राय कर पुन: राम के तरकस में प्रवेश किया। क्षण भर में ही राम ने राक्षसी सेना का संहार कर दिया।

यह दु:खद दृश्य देखकर कुंभकर्ण ने सिंहनाद किया। उसने बड़े-बड़े पर्वतों को उखाड़कर बंदरों पर फेंकना शुरू कर दिया। राम ने अपने बाणों से उन सभी पर्वतों को धूल-धूसरित कर दिया। जैसे बादल में बिजली समा जाती है उसी तरह कुंभकर्ण के शरीर में राम के बाण बिंध गये। बाण-विद्ध कुंभकर्ण के शरीर से प्रवाहित रक्त-धार ऐसी दीखने लगी मानो काजल के पर्वत से गेरू के पनाले बह रहे हों। उसे शक्तिहीन देखकर बंदर-भालू उस पर आक्रमण करने के लिए दौड़े, परन्तु गजराज की तरह अगणित बंदरों को पकड़-पकड़ कर कुंभकर्ण नष्ट करने लगा। भेड़िये को देख भेड़ों के झुंड की तरह रीछ-वानर आर्तनाद करते हुए भागने लगे। सभी राम की दुहाई देने लगे। बंदरों और भालुओं की करुण वाणी सुनकर राम धनुष-बाण समेटने लगे। वीर रस में मग्न राम ने धनुष खींचकर सौ बाणों का सामूहिक संधान किया। बाण-प्रहार से घायल कुंभकर्ण ऐसी तीव्र गति से दौड़ा कि पर्वत कांपने लगे। पृथ्वी डगमगाने लगी। कुंभकर्ण ने एक पर्वत उखाड़ा। राम ने उसकी दाहिनी भुजा काट दी। वह बायें हाथ में दूसरी पर्वत-शिला लेकर दौड़ पड़ा। राम के बाण-प्रहार से उसकी बायीं भुजा भी धरती पर गिर पड़ी। अपनी भुजाओं के कट जाने पर पंखहीन मंदराचल पर्वत की भांति कुंभकर्ण राम को ऐसे घूरने लगा जैसे वह तीनों लोकों को निगल जाएगा। वह मुंह फाड़कर चिंघाड़ता हुआ दौड़ा। राम ने अपने धनुष को कानों तक तानकर कुंभकर्ण का मुख अगणित बाणों से भर दिया, पर वह धरती पर नहीं गिरा। तीर भरा हुआ उसका मुंह काल रूपी तरकस लग रहा था। राम ने बाण-प्रहार से उसका मस्तक धड़ से अलग कर दिया। उसका सिर रावण के सामने जा गिरा। मणिहीन सर्प की भांति रावण व्याकुल हो गया। रणक्षेत्र में कुंभकर्ण का प्रचण्ड धड़ दौड़ रहा था। राम ने उसके धड़ के दो टुकड़े कर दिये। आकाश से गिरे दो बृहद् पर्वत के टुकड़ों की तरह कुंभकर्ण के धड़ के टुकड़े रणक्षेत्र में गिर पड़े। राम के मुख पर श्रमबिन्दु झलक रहे थे। शरीर पर रक्तकण छलछलाये हुए थे। उनके दोनों हाथों में धनुष-बाण थे। रणक्षेत्र में बंदर-रीछ चतुर्दिक सुशोभित थे। दयालु राम ने कुंभकर्ण जैसे भयानक राक्षस को भी परमधाम दे दिया।

दिन का अंत होते ही युद्ध विराम कर सेनाएं अपने-अपने शिविरों की ओर लौट पड़ीं। योद्धा थककर चूर थे। राम की कृपा से पुन: उनमें नवशक्ति का संचार हो उठा। जिस प्रकार स्वयं अपना यश वर्णन करने से सारा पुण्य क्षय हो जाता है उसी तरह राक्षसों की संख्या युद्ध में घट रही थी। जैसे घास में अग्नि और बढ़ जाती है उसी तरह वानरी सेना की शक्ति निरंतर बढ़ रही थी। अपने भाई कुंभकर्ण के कटे सिर को रावण हृदय से लगाये हुए विलाप कर रहा था। रनिवास में स्त्रियां कुंभकर्ण की शक्ति और तेज बखान करती हुई छाती पीट-पीटकर रो रही थीं।

उस दु:खद बेला में मेघनाद ने अनेक प्रकार से अपने पिता को समझाकर उन्हें संतोष देते हुए कहा कि मेरी पौरुष-शक्ति आप कल देखिएगा। मैंने इष्टदेव की कृपा से जो शक्ति और रथ पाया है उसे अब तक आपको नहीं दिखाया था। मैंने उसे छिपाकर रख दिया है। शोक में जागते हुए और बढ़-चढ़ कर बातें करते-करते सवेरा हो गया।

लंका के चारों द्वारों पर बंदर डट गये। सुरक्षात्मक पंक्ति बांधकर बहादुर

राक्षस अपनी विजय के लिए युद्ध कर रहे थे। माया निर्मित रथ पर आरूढ़ मेघनाद आकाश में पहुंचकर अट्टहास करते हुए गर्जन करने लगा। बंदरों की सेना भयभीत हो गयी। मेघनाद आकाश से शूल, तलवार, कृपाण, वज्र, कुठार, परिधि, पत्थर और अनेक शक्तिशाली बाणों की वृष्टि करने लगा। मघा नक्षत्र के बादलों की फुहार की तरह बाणों की वर्षा हो रही थी। चारों ओर 'मारो, काटो' का कोलाहल सुनायी पड़ रहा था। पर्वत और वृक्ष लेकर बंदर आकाश की ओर दौड़ पड़े। मेघनाद अदृश्य हो गया। अपनी माया-शक्ति से उसने घाटी, रास्ते, पर्वत खोह--सर्वत्र बाणों का पिंजरा निर्मित कर दिया। कहीं भी मार्ग न मिलने से बंदर-भालू व्याकुल हो गये। हनुमान, अंगद, नल, नील सभी योद्धा इन्द्रजित के कारागार में पर्वतों की तरह बंदी हो गये। मेघनाद ने लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण आदि पर सर्पाकार बाणों का प्रहार कर उनका शरीर बींध दिया। वह राम पर भी बाणों का प्रहार करने लगा। वे बाण सांप के फन लगते थे। भगवान राम भी नागपाश में बंध गये। जिनका नाम-स्मरण भवसागर से मुक्ति दिला दे, ऐसे प्रभु मात्र युद्ध की शोभा बढ़ाने को नरलीला करते हुए नागपाश से बंधे रहे। प्रहार से व्याकुल राम की सेना के समक्ष मेघनाद प्रकट होकर अपशब्दों का प्रयोग करने लगा।

क्रोध में भरकर जांबवान् ने कहा कि खड़ा रह...!

मेघनाद कुपित होकर बोला कि वृद्ध समझ तुझे छोड़ रहा हूं। तू मुझे ललकारता है। मेघनाद ने जांबवान् पर तीव्र त्रिशूल का प्रहार किया। जांबवान् ने त्रिशूल को हाथ से रोककर उसी त्रिशूल से मेघनाद की छाती पर प्रहार कर दिया। मेघनाद पृथ्वी पर गिर पड़ा। क्रोध में भर जांबवान् ने मेघनाद का पैर पकड़ कर घुमाना शुरू किया और धरती पर उसे पटक कर अपनी अनुपम शक्ति का परिचय दिया, परन्तु अतुलित योद्धा मेघनाद मरा नहीं। तब जांबवान् ने उसका पैर पकड़कर लंका में फेंक दिया। इसी बीच नारद ने गरुड़ को युद्ध भूमि में भेजा। गरुड़ ने नागपाश काटकर राम को बंधनमुक्त कर दिया। मेघनाद की मूर्च्छा टूटी। अपने पिता को सामने देखकर वह लज्जा से गड़ गया। अजेय यज्ञ करने का दृढ़ निश्चय कर मेघनाद पर्वत की एकांत गुफा में चला गया।

विभीषण ने राम को सूचित किया कि मायावी मेघनाद अजेय यज्ञ कर रहा है। यदि वह यज्ञ करने में सफल हो गया तो उसे पराजित करना बड़ा कठिन होगा। राम ने तत्काल अंगद आदि सभी बंदरों को आदेश दिया कि रणक्षेत्र में तुम मेघनाद को वीरगति देकर ही लौटना। ऐसे बल और विवेक से उसे मारना जिससे राक्षसों का नाश हो जाय। लक्ष्मण के पीछे जांबवान् चल पड़े। राम के प्रताप को हृदय में धारण किए हुए मेघ के समान गर्जना करते लक्ष्मण ने घोषणा की कि यदि मेघनाद को आज मैंने रणक्षेत्र में वीरगति नहीं दी तो राम का सेवक कहलाना छोड़ दूंगा। मेघनाद के सहायक बनकर यदि सैकड़ों शंकर भी आ जाएं तो भी राम की शपथ, आज मैं उसे अवश्य मारूंगा। बंदरों ने देखा कि मेघनाद एकांत पर्वत की खोह में बैठा हुआ यज्ञ में भैंसों की रक्त-आहुति दे रहा है। बंदरों ने उसके यज्ञ का विध्वंस कर दिया। यज्ञ-विध्वंस हो जाने पर भी मेघनाद न उठा। बंदरों ने उसके बाल खींचना शुरू कर दिया और उस पर लगातार चरण-प्रहार करने लगे।

मेघनाद त्रिशूल लेकर दौड़ा। सभी बंदर लक्ष्मण के पीछे आकर खड़े हो गए। क्रोध से पागल मेघनाद बार-बार गरज रहा था। अंगद व हनुमान उससे लड़ने के लिए दौड़े। मेघनाद ने दोनों की छाती में त्रिशूल चुभोकर उनको धरती पर गिरा दिया। उसने लक्ष्मण पर भी त्रिशूल से आक्रमण किया। लक्ष्मण ने बाण संधान कर मेघनाद के त्रिशूल को कई टुकड़ों में विभक्त कर दिया। हनुमान व अंगद कुपित होकर मेघनाद पर प्रहार करने लगे। परन्तु मेघनाद को तनिक भी उनके प्रहार की परवाह नहीं थी। वह किसी तरह भी पराजित नहीं हो रहा था। गरजता हुआ कुपित काल की तरह वह बढ़ा आ रहा था। लक्ष्मण ने भयानक बाणों की वृष्टि प्रारम्भ की। वज्र के समान बाणों के समूह को अपनी ओर आता देखकर मेघनाद अंतर्ध्यान हो गया और विविध मायावी रूपी धारण कर लुक-छिपकर युद्ध करने लगा। बंदर भयभीत हो गये। राम की शक्ति का स्मरण कर पूर्ण वीरोचित शक्ति से भर लक्ष्मण ने घातक बाण का संधान किया। वह बाण मेघनाद के वक्षस्थल को बेध गया। मेघनाद ने राम-लक्ष्मण का स्मरण करते हुए रणक्षेत्र में अंतिम सांस ली। हनुमान ने मेघनाद का शव बिना प्रयास के उठा कर राजद्वार पर पहुंचा दिया।

पुत्र बध का समाचार सुनकर रावण मूर्च्छित हो गया। छाती पीट-पीट कर मंदोदरी विलाप करने लगी। लोग नीच रावण को कोस रहे थे। लंका नगरी में चतुर्दिक शोक व्याप्त था। रावण ने सभी को सांत्वना बंधायी।

प्रातःकाल रावण ने समस्त योद्धाओं के समक्ष घोषणा की कि युद्ध-कर्म से किसी सैनिक का मन तनिक भी डांवाडोल हो तो वह अभी चला जाए। युद्ध-भूमि से विमुख होने में कोई अच्छाई नहीं है। रावण ने कहा कि अपनी अजेय भुजाओं की अपरिमित शक्ति का बोध करके ही मैंने राम से बैर मोल लिया है। आक्रमणकारी को मैं भरपूर उत्तर दूंगा। पवन सदृश तीव्र रथ पर आरूढ़ हो रणदुंदुभी की जुझारू ध्वनि के मध्य रावण की सेना के अतुलनीय वीर काजल की आंधी की तरह रणक्षेत्र की ओर बढ़ चले। योद्धाओं के हाथों से शस्त्र गिर रहे थे। आंखों के सामने ही अनेक योद्धा रथों से गिर रहे थे। हाथी-घोड़े साज छोड़ कर चिंघाड़ रहे थे। गधे-कौवे-स्यार अशुभ और डरावनी बोली बोल रहे थे। कुत्ते भूंक रहे थे। उल्लू डरावनी आवाज में काल के दूत की तरह मृत्यु का संदेश सुना रहे थे। रावण को किसी भी अपशकुन की परवाह न थी। राक्षसों की अपरिमित चतुरंगिणी सेना विविध टुकड़ियों में विभक्त होकर अनेक रथ, सवारियों और वाहनों से सुसज्जित रण-क्षेत्र की ओर चली पड़ी। रथों के मस्तक पर रंग-बिरंगे ध्वज लहरा रहे थे। मदमत्त मतवाले हाथियों के झुंड पावस प्रेरित काले बादलों की तरह बढ़ रहे थे।

समुद्र क्षुभित हो उठा। पर्वत प्रकंपित होने लगे। दिग्गज चिंघाड़ने लगे, पवन की गति रुक गयी। पृथ्वी अकुला उठी। सेना के चलने से इतनी धूल उड़ी कि सूर्य छिप गया। रणभेरी की ध्वनि प्रलय-काल के बादलों की भांति गरज रही थी। मारू राग वीरों की रक्त-वाहिनियों में शक्ति स्रोत बनकर प्रवाहित हो रहा था। अपने अपराजेय पौरुष के बल पर सभी वीर सिंहनाद कर रहे थे। रावण ने उन्हें आदेश दिया कि वीरो! तुम रीछ, बंदरों के समूह को मसल डालो। मैं राजकुमारों को मारूंगा।

सेना रणक्षेत्र में प्रयाण कर चुकी थी। बंदर राम की दुहाई देकर दौड़ पड़े। विशाल पंख वाले पर्वतों की तरह उड़ते हुए बंदर विकराल काल के समान प्रतीत हो रहे थे। रंग-बिरंगे वीर बंदर बड़े निडर एवं शक्तिशाली थे। नख, दांत, पर्वत व वृक्ष उनके अस्त्र थे। वे सभी राम की जय-जयकार कर रहे थे। राक्षसों और बंदरों की सेना के सैनिक राम और रावण की जय-जयकार करते हुए अपनी-अपनी जोड़ियों से बढ़-चढ़ कर भिड़ गये।

रावण रथ पर सवार था। राम रथहीन थे। विभीषण अधीर हो उठा। उसके मन में संदेह जगा। उसने राम से प्रर्थना की कि नाथ! आपके पास न तो रथ है, न कवच और न पदत्राण। शक्तिशाली वीर रावण कैसे पराजित होगा?

राम ने विभीषण को समझाया कि विजय का रथ दूसरा है। शौर्य और धैर्य उस रथ के दो पहिये हैं। सत्य और सदाचार उस रथ की दृढ़ ध्वजा और पताका हैं। उस रथ में बल, विवेक, इन्द्रिय-निग्रह और परहित रूपी चार घोड़े दया, क्षमा और समानता की मंजी हुई डोर से जुते हुए हैं। ईश्वर-स्मरण ही उस रथ का चतुर सारथी है। वैराग्य ढाल और संतोष तलवार है। श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष, बुद्धि प्रचंड शक्ति और दान परशु हैं। निर्मल और स्थिर मन तरकस है जिसमें मन को वश में करने की प्रक्रिया शम, अहिंसा, यम और नियम रूपी अनेक बाण भरे हैं। श्रेष्ठजन और गुरुओं की अभ्यर्थना अभेद्य कवच हैं। इसके अतिरिक्त विजय का दूसरा कोई भी उपाय नहीं है। विभीषण! मैं धर्म रथ पर आरूढ़ हूं। अपने इसी दृढ़ रथ के बल पर ही किसी भी दुर्जेय शत्रु को पराजित किया जा सकता है। विभीषण की शंका मिट गई। राम की इस व्याख्या से वे गद्गद हो उठे।

उधर से रावण और इधर से अंगद और हनुमान ललकार रहे थे। राक्षस एवं रीछ-वानर राम तथा रावण की जय-जयकार कर परस्पर लड़ रहे थे। दोनों ओर के योद्धा परस्पर ललकारते, भिड़ते और एक-दूसरे को मसल-मसल कर धरती पर ढेर कर देते। योद्धा परस्पर मारते, काटते, पकड़ते, पछाड़ते, पेट फाड़ते, भुजाएं उखाड़ते और एक-दूसरे के पैर पकड़कर पृथ्वी पर पटक देते। वीर राक्षसों को धरती में गाड़कर बंदर बालू से ढंक रहे थे। क्रोधित काल की तरह बंदर लड़ रहे थे। राक्षसों के प्रहार से बंदरों के शरीर पर रक्तकण झलक रहे थे। बंदर राक्षसों की सेना को मसलते एवं मेघ की तरह गरजते, डांटते, चपेटते, मारते, दांतों से काट कर लातों से कुचल देते थे। वे राक्षसों को मसलकर चिंघाड़ते हुए छल-बल से राक्षसों का विनाश करने लगे। उनके गले फाड़ देते और उनकी अंतड़ियों की माला अपने गले में लटका लेते थे। साक्षात् नृसिंह का शरीर धारण

किये हुए बंदर रणक्षेत्र में भीषण युद्ध क्रीड़ा कर रहे थे। उनकी दर्पमयी वीर-वाणी आकाश और धरती पर चारों ओर छायी हुई थी।

अपनी शक्तिशाली सेना को बंदरों की शक्ति से विचलित होते देख सैनिकों को वापस बुलाकर रथारूढ़ रावण अपनी भुजाओं में धनुष-बाण ले कुपित होकर रणक्षेत्र में दौड़ पड़ा। हुंकार करते हुए बंदर अपने हाथों में वृक्ष, पहाड़, पत्थर लेकर रावण पर एक साथ टूट पड़े। वज्र तुल्य पर्वत रावण के शरीर के स्पर्श से टुकड़े-टुकड़े हो टूट गए। रथ रोककर रावण रण-क्षेत्र के मध्य अचल खड़ा हो गया। उसने झपट्टा मारकर बहुतेरे वानरों को रौंद दिया। रक्षा की गुहार करते हुए बंदर भागने लगे। रावण ने धनुषों से बाण-संधान प्रारंभ किया, सर्प की भांति सारे वातावरण में बाण लहराने लगे। रणक्षेत्र में कोलाहल मच गया। वानरी सेना पिटती, आर्तनाद करती राम के पास पहुंची।

कुपित लक्ष्मण राम का आदेश लेकर रणक्षेत्र की ओर धनुष, बाण और तरकस संभालते हुए चल पड़े। रणक्षेत्र में पहुंचते ही उन्होंने रावण को ललकारा कि वानरों को क्यों मार रहे हो? तुम्हारा दुश्मन मैं हूं। मुझसे लड़ो।

रावण ने कहा कि मेरे पुत्र के घातक! मैं तुझे ही ढूंढ़ रहा था। तुझे मारकर ही आज मेरी छाती ठंडी होगी। रावण ने प्रचंड बाण का प्रहार किया। लक्ष्मण ने उसे सैकड़ों खंडों में विभक्त कर दिया। रावण ने करोड़ों अस्त्र-शस्त्र चलाये जिन्हें लक्ष्मण ने तिल की तरह काट दिया। जब लक्ष्मण ने बाणों का प्रहार प्रारम्भ किया तो रावण का सारथी नष्ट हो गया। लक्ष्मण द्वारा संधान किये गये सैकड़ों बाण रावण के दसों मस्तक में इस तरह चुभ गए थे जैसे पर्वत-श्रृंखला में सर्प प्रविष्ट हो गये हों। पुनः लक्ष्मण ने सौ बाण रावण की छाती में मारे जिससे वह छटपटा कर धरती पर गिर पड़ा। जब उसकी मूर्च्छा टूटी तो ब्रह्मा द्वारा प्रदत्त शक्ति से लक्ष्मण की छाती पर उसने प्रहार किया। लक्ष्मण व्याकुल हो गिर पड़े। रावण उन्हें उठाने लगा परन्तु अतुलित बलशाली, संसार के आधार लक्ष्मण की अपरिमित शक्ति का उसे ज्ञान नहीं था।

इस दृश्य को देखकर हनुमान ने रावण को ललकारा। रावण ने उन पर मुष्टिका से प्रहार किया। हनुमान के घुटने टिक गये। हनुमान क्रोध में संभल कर उठे और जवाब में रावण को घूंसा दे मारा। जैसे वज्र गिरने से पर्वत ढह गया हो उसी तरह रावण धरती पर गिर पड़ा। मूर्च्छा टूटने पर जब चैतन्य हुआ तो हनुमान की अतुलित शक्ति की प्रशंसा करने लगा। हनुमान ने कहा कि मेरे पौरुष को धिक्कार है जो मेरे प्रहार के बाद भी तुम जिंदा हो। हनुमान लक्ष्मण को राम के पास उठा लाए। राम ने लक्ष्मण को संबोधित कर कहा कि तुम काल-भक्षक और देवताओं के रक्षक हो। तत्क्षण लक्ष्मण चैतन्य हो उठ बैठे। नवशक्ति से संयुक्त होकर पुनः लक्ष्मण शत्रु की ओर धनुष-बाण लेकर दौड़े। उन्होंने तत्काल रावण का रथ चकनाचूर कर सारथी को मारकर रावण को व्याकुल कर दिया। लक्ष्मण ने भयानक बाणों के प्रहार से रावण का हृदय बेध डाला। दूसरा सारथी उसे रथ में डालकर लंका ले भागा और विजयी लक्ष्मण ने राम के चरणों में अपना मस्तक सादर झुकाया।

लंका में जाकर अज्ञानी रावण यज्ञ-क्रिया में लीन हो गया। विभीषण ने रावण की यज्ञ-सिद्धि से राम को सचेत करते हुए कहा कि यज्ञ पूर्ण हो जाने पर रावण शीघ्र नहीं मरेगा। विभीषण ने राम से प्रार्थना की कि वानरों को भेजकर यज्ञ का विध्वंस कराइये। अंगद आदि सभी वीर योद्धा खेल ही खेल में लंका के गढ़ में प्रविष्ट हो गये। यज्ञरत रावण को देखकर अंगद ने कहा कि निर्लज्ज! रणभूमि छोड़ घर भाग आया। ऐसा कहकर अंगद ने उस पर पद-प्रहार किया फिर भी उसका ध्यान भंग न हुआ। बंदर रावण को दांतों से काटने और पैरों से मारने लगे। राजमहल की स्त्रियों के बाल खींचकर बाहर घसीटने लगे और स्त्रियां चिल्लाने लगीं।

रावण का यज्ञ-विध्वंस हो गया। क्रुद्ध होकर उसने बंदरों के पैर पकड़कर उन्हें पटकना शुरू किया। यज्ञ का विध्वंस देखकर रावण निराश हो गया। बंदर राम के पास लौट आए। जीवन की बाजी लगाकर रावण युद्ध के लिए पुनः चल पड़ा। एक साथ ही सारे अमंगल, अपशकुन होने लगे। गिद्ध उड़-उड़ कर रावण के सिर पर मंडरा रहे थे। परन्तु काल के वशीभूत रावण ने रणभेरी बजाने का आदेश दे दिया। पतंगों के समूह की तरह राक्षसों की सेना राम रूपी अग्नि में स्वाहा होने के लिए चल पड़ी।

राम ने मस्तक के जटाजूट को दृढ़ता से बांधा। उनका जटाजूट पुष्पित सुमनों से सजा था। राम ने कमर का फेंटा कसते हुए तरकस संभाल बाण धनुष पर चढ़ा

लिया। उनके हाथों में कठोर शारंग धनुष था। मेघ सदृश श्यामल राम के नेत्र क्रोध से लाल हो गये। उनके मनोहर विस्तृत वक्षस्थल पर भृगु-चरण चिन्ह, पुष्ट भुजदंड और हाथों में कठोर धनुष सुशोभित था।

भयंकर युद्ध में भालू-वानरों ने राक्षसों को मारना शुरू कर दिया।

देवराज इन्द्र ने राम को पैदल युद्ध करते देखकर क्षुभित होकर अपने सारथी मातलि से अपना देवरथ राम के पास भिजवा दिया। हर्षित मन राम उस दिव्य अनुपम तेजस्वी रथ पर आरूढ़ हुए। उसमें चार चंचल, मनोहर, अजर, अमर व मन की गति से भी तीव्रगामी घोड़े जुते हुए थे। राम को रथारूढ़ देख बंदरों की शक्ति बढ़ गयी। रावण ने युद्धक्षेत्र में स्वयं को अकेला पाकर माया द्वारा ऐसा दृश्य उपस्थित किया कि चारों ओर राम-लक्ष्मण नजर आने लगे। बंदर-भालू आश्चर्यचकित हो गये। सभी निर्जीव चित्र-से प्रतीत हो रहे थे। मुस्कराकर राम ने एक ही बाण में सारी मायावी रचना छिन्न-भिन्न कर दी।

अपने सैनिकों से राम ने कहा कि तुम थक गये हो। अब मेरा और रावण का युद्ध देखो। कुपित रावण राम को ललकारता रणक्षेत्र में आ गया। उसने अपने दर्प का बखान करते हुए कहा कि तपस्वी, सुनो! मैं रावण हूं। लोकपाल मेरे बंदी हैं। सारा संसार मेरा यश जानता है। तुमने युद्ध में खर-दूषण-विराध का वध किया। बेचारे बालि को व्याध की तरह मारा। कुंभकर्ण व मेघनाद का वध हुआ। यदि तुम रणक्षेत्र से तुरंत नहीं भाग गए तो मैं सारे बैर का बदला लेकर तुम्हें काल के हवाले कर दूंगा।

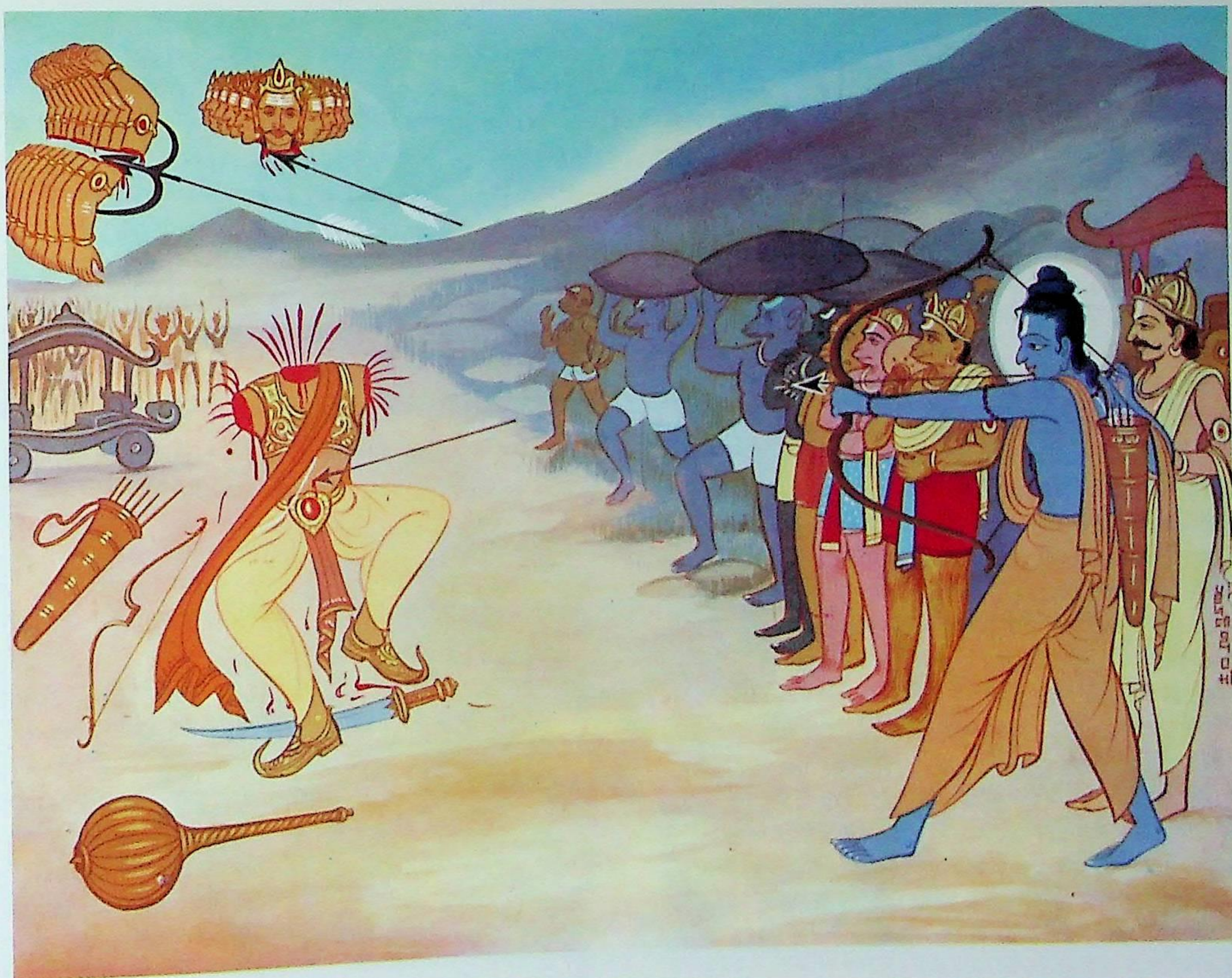
रावण की ऐसी अंधी दर्पोक्ति सुनकर राम ने हंसते हुए कहा कि तुम्हारी प्रभुता झूठी है। व्यर्थ की बकवास छोड़ो। अपना पुरुषार्थ दिखलाओ। राम ने रावण को नीति-वचन सुनाते हुए कहा कि संसार में पाटल, आम और कटहल की भांति तीन तरह के मनुष्य होते हैं। पाटल फूल देता है, आम फूल और फल दोनों तथा कटहल केवल फल। इसी तरह बहुत-से व्यक्ति कहते हैं, करते नहीं। कुछ कहते और करते हैं और तीसरे केवल करते हैं, कहते नहीं। राम का नैतिक उपदेश सुन रावण ठठाकर हंसने लगा और बोला कि मुझे ज्ञान सिखाते हो! दुश्मनी लेते नहीं डरे। अब प्राणों का मोह चिंतित कर रहा है!

रावण क्रुद्ध हो वज्र जैसे बाण छोड़ने लगा। कई दिन तक भयानक युद्ध हुआ। राम ने बार-बार रावण के दसों सिर व बीसों भुजाएं काट डालीं। लेकिन कटते ही उसके नये सिर-भुजाएं फिर पूर्ववत् उग जाते।

रावण सिर-भुजाएं कटने से भी नहीं मर रहा था। थके हुए राम ने विभीषण की ओर देखा। विभीषण ने राम से कहा कि रावण की नाभिकुण्ड में अमृत का वास है। रावण की संजीवनी-शक्ति वही अमृत है। विभीषण का संकेत पाकर राम ने हर्षित मन से विकराल बाण धनुष पर चढ़ाया। चारों ओर अपशकुन होने लगे। आकाश में जगह-जगह पुच्छल तारे उगने लगे। गधे, स्यार और कुत्ते आदि अशुभ आर्तनाद कर रहे थे। दसों दिशाएं युद्धाग्नि से जल रही थीं। बिना संयोग के ही सूर्य-ग्रहण लगा हुआ था। मंदोदरी का हृदय केले के पत्ते की तरह कांप रहा था। मूर्तियों के नेत्रों से अश्रु प्रवाहित होने लगे। आकाश से वज्रपात हो रहा था। तप्त, तीव्र, दुर्गन्धयुक्त आंधी चल रही थी। पृथ्वी कांप रही थी। बादलों से रक्त, धूल और बालों की अनवरत वर्षा हो रही थी। अपरिमित उत्पात और अमंगल हो रहे थे।

सायक एक नाभि सर सोषा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा।।
लै सिर बाहु चले नाराचा। सिर भुज हीन रुंड महि नाचा।।

राम ने धनुष पर बाण का संधान किया। उन्होंने कानों तक खिंची हुई प्रत्यंचा से काल-सर्प की तरह इकत्तीस बाणों को छोड़ दिया। एक बाण ने रावण की नाभि कुण्ड के अमृत को सोख लिया। अन्य तीस बाण उसके मस्तक व भुजाओं को काटकर ले उड़े। रावण का मस्तक व भुजाहीन धड़ पृथ्वी पर नाच रहा था। वेग से दौड़ते धड़ ने गर्जना की। धड़ के बोझ से धरती धंसने लगी। राम ने रावण का धड़ तीव्र बाणों के प्रहार से दो टुकड़ों में विभक्त कर दिया। मरते समय रावण ने गर्जना की—राम कहां हैं? मैं रणक्षेत्र में उन्हें निश्चय ही ललकार कर मारूंगा। निर्जीव रावण धरती पर गिर पड़ा। पृथ्वी, समुद्र, नदी, दिग्गज व पर्वत क्षुब्ध हो उठे। रावण का कटा धड़ भालू एंव बंदरों के समुदाय को तहस-नहस करता हुआ गिरा। राम के बाण रावण के मस्तक एवं भुजाओं को मंदोदरी के समक्ष रखकर तरकस में वापस आ गए। रावण का समस्त तेज राम के मुख में प्रविष्ट हो गया। चारों ओर देवता राम की जय-जयकार करने लगे। राम के शरीर



सायक एक नाभिसर सोषा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा।।
लै सिर बाहु चले नाराचा। सिर भुज हीन रुंड महि नाचा।।

पर रुधिर-कण झलक रहे थे। नील पर्वत पर बिजली के समूह युक्त नक्षत्रों की तरह जटाओं के मुकुट के बीच में लगे पुष्प सुशोभित हो रहे थे। अपनी भुजाओं से राम धनुष-बाण फेर रहे थे। बंदर-भालू हर्षित मन से राम की जय-जयकार रहे थे।

अपने पति रावण का मस्तक देख व्याकुल मंदोदरी मूर्च्छित हो धरती पर गिर पड़ी। राजगृह की अन्य स्त्रियां रोती हुई मंदोदरी को संभालने लगीं। पति की दुर्दशा देख वे आर्तनाद करने लगीं। उनके केश खुल गये। उन्हें अपने शरीर की सुधि न थी। छाती पीट-पीट कर वे रावण का यश:गान गाकर विलाप कर रोने लगीं। वे नारियां करुण विलाप कर रही थीं कि प्रियतम! तुम्हारी शक्ति से धरती डोलती थी। अग्नि, चन्द्रमा एवं सूर्य तुम्हारे तेज से प्रकाशित होते थे, शेषनाग और कच्छप तुम्हारे शरीर का भार नहीं सह सकते थे। तुम्हारा वही शक्तिशाली धूल-धूसरित शरीर आज धरती पर पड़ा है। वरुण, कुबेर, इन्द्र, वायु, काल एवं यमराज सभी तुमसे पराजित हो चुके थे। आज तुम अनाथ की तरह पड़े हो। तुम्हारी तथा पुत्र व परिवार-जनों की अवर्णनीय शक्ति थी। परन्तु राम-विद्रोह से आज तुम्हारी ऐसी दशा हो गयी है कि कोई कुल में रोने वाला नहीं है। विधाता की समस्त सृष्टि और दिशाओं के लोकपाल तुम्हारे वश में थे। परन्तु राम-विमुख होने से ही आज तुम्हारे सिर व भुजाएं गीदड़ खा रहे हैं। प्रियतम! मदमत्त काल के वशीभूत तुमने किसी की बात पर ध्यान ही नहीं दिया। शिव, ब्रह्मा जिस राम के आगे नतमस्तक रहते हैं, तुमने उस राम का स्मरण तक नहीं किया। जन्म से ही दूसरों के द्रोह में तत्पर थे पर फिर भी राम ने तुम्हें जो परमगति प्रदान की वह दुर्लभ गति योगियों को भी नहीं मिलती।

विधवा मंदोदरी बहुत दु:खी थी। उसकी मांग का सुहाग मिट गया था। अपने कुल की समस्त स्त्रियों को बिलखता देखकर विभीषण दु:खी मन वहां पहुंचा। अपने सगे भाई रावण की दुर्दशा देख वह क्षुभित हो उठा। राम ने लक्ष्मण से कहा कि विभीषण को समझाओ, धैर्य दो। लक्ष्मण ने विभीषण को अनेक प्रकार से प्रबोध दिया। विभीषण राम के पास आए। राम ने विभीषण को आदेश दिया कि शोक त्यागो। भाई की अंत्येष्टि करो। शोक त्याग कर विभीषण ने रावण की अंतिम क्रिया सम्पन्न की। मंदोदरी तथा अन्य पटरानियों ने रावण को तिलांजलि दी।

फिर विभीषण राम के पास गया। राम ने लक्ष्मण को बुलाकर कहा कि सभी नीतिकुशल वानर सेनापतियों को बुलाकर उनके साथ तुम जाओ और विभीषण का राजतिलक करो। पिता को दिए गए वचन से मैं आबद्ध हूं। मैं चौदह वर्ष के पहले नगर में नहीं जा सकता। राम की आज्ञा से विभीषण का राजतिलक करने की सारी व्यवस्था हुई। विभीषण को सादर सिंहासन पर बैठाकर लक्ष्मण ने राजतिलक किया। विनीत भाव से मस्तक झुकाकर विभीषण की लोगों ने स्तुति की। राजतिलक होने के बाद विभीषण पुन: राम के पास आए। राम ने अपनी बंदर-भालुओं की सेना के समक्ष घोषणा की कि तुम्हारी शक्ति से रावण पराजित हुआ और विभीषण ने राज्य पाया। त्रिकाल तक तीनों लोकों में नित्य मेरी और तुम्हारी यश और शुभ कीर्ति निरंतर विस्तीर्ण होगी। राम की कृतज्ञतापूर्ण वाणी सुनकर सारे बंदर मगन-मन राम के चरणों का स्पर्श करने लगे।

अब सोइ जतन करहुं तुम्ह ताता। देखहुं नयन स्याम मृदु गाता।।
तब हनुमान राम पहिं जाई। जनकसुता कै कुसल सुनाई।।

राम ने हनुमान को बुलाकर लंका जाने का आदेश दिया। राम ने हनुमान को अशोक वन में जाकर सीता को सारा समाचार सुनाने और उनका कुशल-समाचार ले आने के लिए कहा। हनुमान लंका नगरी में आये। राक्षस और राक्षसियां हनुमान के स्वागत के लिए दौड़ पड़ीं। राक्षसों ने विविध प्रकार से हनुमान की अभ्यर्थना एवं सत्कार करके उन्हें जानकी को दिखाया। दूर से ही जानकी को देखते ही हनुमान ने प्रणाम किया। जानकी ने भली-भांति रामदूत हनुमान को पहचान लिया।

जानकी ने हनुमान से पूछा कि कृपानिधि प्रभु, छोटे भाई लक्ष्मण व वानरों की सेना सकुशल तो है न?

हनुमान ने कहा कि माता जानकी! राम सब प्रकार सकुशल हैं। उन्होंने रणक्षेत्र में दशानन रावण को पराजित कर दिया। विभीषण लंका का अचल राज्य कर रहे हैं। यह सुखद समाचार सुनकर सीता अत्यंत हर्षित हो उठीं। उनका शरीर पुलकित हो गया। नेत्रों में प्रसन्नता के आंसू झलकने लगे। जानकी ने कहा कि हनुमान, इस त्रिलोक में तुम्हें देने योग्य मेरे पास कुछ भी नहीं है। हनुमान ने

कहा—माता! राक्षसों के राजा रावण सहित उसकी समस्त अतुलित सेना को पराजित करने वाले लक्ष्मण सहित राम की विजयी छवि देखकर निःसंशय मुझे आज समस्त ब्रह्मांड का राज्य मिल गया है।

जानकी ने हनुमान को आशीर्वाद दिया कि निरंतर तुम्हारे हृदय में समस्त गुण निवास करें। राम और लक्ष्मण सदा तुम्हारे अनुकूल रहें। जानकी ने कहा कि हनुमान! अब शीघ्रातिशीघ्र ऐसी व्यवस्था करो जिससे मैं अपनी आंखों से राम के श्यामल बदन का दर्शन कर सकूं। तत्काल हनुमान राम के पास आए और उन्हें जानकी की कुशल-क्षेम बतायी। राम ने विभीषण और अंगद को बुलाकर आदेश दिया कि हनुमान के साथ जाकर सीता को सादर यहां लाओ। सभी अशोक वन में जानकी के पास पहुंचे। अत्यंत विनयपूर्वक अनेक राक्षसियां सीता की सेवा कर रही थीं। विभीषण ने दासियों को संकेत से समझाया। दासियों ने भली प्रकार सीता को सुवासित जल से स्नान करा मूल्यवान वस्त्राभूषणों से सुसज्जित कर सुन्दर शिविका में आरूढ़ कराया। राम का स्मरण करती हुई हर्षित मन जानकी पालकी में चढ़ीं। उनके चारों ओर शस्त्रों से सुसज्जित अनेक रक्षक थे। माता जानकी का दर्शन करने के लिए वानरों में बहुत उत्साह था लेकिन पालकी के चारों ओर बेंत लिए रक्षक उन्हें रोकने लगे। यह देख राम ने तत्काल आदेश दिया कि सीता को पैदल ले आओ जिससे हमारे वानर सैनिक माता की तरह उन्हें देख सकें। सारी वानर सेना हर्षित हो उठी। सीता का असली स्वरूप अग्नि को अर्पित हो चुका था। उसे पुनः प्रकट करने के उद्देश्य से राम ने कुछ सत्य कटु कठोर शब्द कहे। जिसे सुनकर सीता विषाद से भर गयीं।

राम के आदेश को सिर-माथे पर रखकर मनसा-वाचा-कर्मणा सर्वथा और सर्वदा पवित्र जानकी ने अपने पुत्रवत् देवर लक्ष्मण से कहा कि लक्ष्मण! तुम मेरे धर्माचरण के सहायक बनो। तुरंत अग्नि प्रज्वलित करो। जानकी की विरह-विदग्ध, विवेकशील, नीतिमयी, धर्मप्राण वाणी सुनकर लक्ष्मण का गला भर आया। नेत्रों में अश्रुकण छा गये। राम से कुछ कह पाने में असमर्थ लक्ष्मण हाथ जोड़े खड़े रहे। इशारे से राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण दौड़े और बहुत-से काष्ठ-खंड एकत्र कर अग्नि प्रकट कर दी। अग्नि की लपटें आसमान को छूने लगीं। उसे देख जानकी हर्षित हुई। उन्हें तनिक भी भय और शंका न हुई।

सीता ने प्रज्वलित अग्निशिखा को संबोधित कर कहा कि यदि मन, वचन और कर्म से मेरे हृदय में राम को छोड़कर किसी अन्य की स्मृति और ध्यान नहीं है तो सबके मन की गति जानने वाले अग्निदेव! मेरा साक्षात्कार कर आग चंदन-सी शीतल हो जाए। सावन के मेघ सदृश राम की श्यामल मूर्ति को निहारती हुई जानकी ने प्रज्वलित अग्नि में प्रवेश किया। जलती हुई अग्निशिखा चंदन-सी शीतल हो गयी। सीता का लौकिक कलंक प्रचंड अग्नि में स्वाहा हो गया। यह रहस्य कौन समझे?

अग्नि ने शरीर धारण करके विश्व और वेदों में प्रसिद्ध मातृ-शक्ति-संपन्न जानकी को राम के हाथों वैसे ही समर्पित किया जैसे क्षीर सागर ने विष्णु को लक्ष्मी समर्पित की थी। जानकी राम की बायीं दिशा में विराजमान थीं। राम रूपी नवीन नील-कमल के वामांग में सुशोभित जानकी ऐसी लग रही थीं मानो सोने के कमल में कली प्रस्फुटित हो। सीता समेत राम की अपरम्पार छवि निरखकर रीछ, बन्दर हर्षातिरेक से उल्लसित हो राम की जय-जयकार कर रहे थे। इन्द्र का सारथी मातलि राम की आज्ञा लेकर रथ सहित लौट गया। देवताओं ने पुष्पवृष्टि करते हुए राम की स्तुति प्रारंभ की।

रावण की मृत्यु के बाद देवता, किन्नर और देव-स्त्रियां सभी हर्षित हृदय से राम की जय-जयकार करने लगे। ब्रह्मा ने हाथ जोड़ खड़े होकर पुलकित शरीर से राम की विविध प्रकार से बार-बार स्तुति की। राम-दर्शन से उनके नेत्र तृप्त ही नहीं हो रहे थे। तदनन्तर स्वर्गलोक से दशरथ वहां उपस्थित हुए। राम को देख उनके नेत्र छलछला आये। राम ने लक्ष्मण सहित उन्हें प्रणाम किया और कहा कि आप के पुण्य प्रभाव से ही मैं अजेय राक्षसों को पराजित करने में समर्थ हुआ।

दशरथ के देवलोक लौट जाने के बाद इन्द्र ने भी विविध प्रकार से राम का स्तवन प्रारंभ किया। राम ने इन्द्र से अपने श्रम-शिथिल सैनिकों के लिए अमृत की वर्षा कराई। अमृत का पान कर युद्ध में मरे बंदर-भालू जी उठे। सभी देवताओं के जाने के बाद शंकर राम के पास आए और पुलकित शरीर से त्रिपुरारि राम की वंदना करने लगे और यह वरदान मांगा कि लक्ष्मण, जानकी सहित आप निरंतर मेरे हृदय में निवास करिए। जब अयोध्या में आपका राजतिलक होगा तब आपकी लीला देखने मैं पुनः आऊंगा।



धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जगबिदित जो।
[illegible] आनि सो।।

शंकर के चले जाने के बाद विभीषण राम के पास आकर विनती करने लगे कि रावण व उसके सैनिकों का वध करने से आपका सुयश त्रैलोक्य में व्याप्त हो गया है। मुझ जैसे विवेकहीन, पापिष्ठी, दीन और जातिहीन पर आपने कृपा की है। चलकर मेरा घर पवित्र कीजिए और वहीं रणक्षेत्र का श्रम दूर कीजिए। लंका की समस्त सम्पत्ति का निरीक्षण कर बंदरों में प्रसन्नतापूर्वक उसका वितरण कीजिए। मुझे भी अपने साथ अयोध्यापुरी लेते चलिए।

विभीषण की यह विनती सुनकर राम के विशाल नेत्र सजल हो गये। राम ने कहा कि विभीषण, तुम्हारा राजकोष और घर सब कुछ मेरा है परन्तु भरत की विरहजन्य परिस्थितियों का स्मरण कर मेरा एक-एक क्षण कल्प के समान बीत रहा है। तपस्वी के वेश में दुर्बल शरीर से निरंतर मेरे नाम का स्मरण करने वाले भरत से शीघ्रातिशीघ्र मैं मिलूं ऐसी व्यवस्था करो। यदि निर्धारित समय व्यतीत हो जाने के बाद अयोध्या पहुंचा तो भरत को जीवित न पाऊंगा। भरत के प्रेम का स्मरण कर राम रोमांचित हो उठे। राम ने विभीषण से कहा कि तुम मुझे स्मरण करते हुए कल्प-कल्पान्तर तक लंका का राज्य करना। अंतिम क्षणों में तुम्हें संतों की तरह परमधाम प्राप्त होगा। गद्‌गद हो विभीषण बंदर-भालुओं सहित राम के चरणों पर गिर पड़े। वे राजमहल में जाकर पुष्पक विमान को मणियों और रत्नों से भरने लगे। राम की आज्ञा से विभीषण विमान सहित आकाश में जाकर मणि और वस्त्रों की वर्षा करने लगे। जिस बंदर-भालू को जो अमूल्य चीज पसंद थी, वह ग्रहण कर लेता। मणियों को बंदर मुख में लेते फिर स्वादहीन समझ उगल देते। राम, लक्ष्मण और जानकी को यह कौतूहल बड़ा ही सुखद लग रहा था। बंदर कपड़े और आभूषणों में सुशोभित होकर प्रसन्नचित्त राम के पास आए। राम ने अत्यंत मधुर वाणी में कहा कि भाइयो! तुम्हारी शक्ति से मैंने रावण को मारा और विभीषण का राजतिलक किया। अब मेरा स्मरण करते हुए निडर अपने-अपने निवासस्थल को लौट जाओ। बंदर उदास हो गये। वे प्रेम-विह्वल हो कहने लगे कि त्रैलोक्य के ईश्वर! हम बंदरों को दीन जानकर आपने कृतार्थ किया और अब आप ही हमें छोड़ रहे हैं। घर न जाने की इच्छा से बंदर राम को निरखने लगे। अन्ततः हर्ष-विषाद के मिले-जुले भावों सहित मन में राम का रूप धारण कर सभी बंदर अपने-अपने घर को लौट गए।

सुग्रीव, जांबवान, अंगद, नल, नील और हनुमान बंदरों के विदा हो जाने के बाद टकटकी लगाये हुए राम को अपलक निहार रहे थे। उनका अतिशय प्रेम देखकर राम ने सबको विमान पर चढ़ा लिया। विमान उत्तर दिशा की ओर कोलाहल करते हुए चल पड़ा। चतुर्दिक राम की जय-जयकार हो रही थी। जानकी सहित राम पुष्पक विमान के मनोहर सिंहासन पर ऐसे विराज रहे थे मानो सुमेरु के सर्वोच्च शिखर पर दमकती दामिनी के साथ श्याम मेघ सुशोभित हो। विमान को अयोध्या जाते हुए देखकर शीतल, सुरभित, मंद वायु प्रवाहित होने लगी। चारों ओर सुंदर शकुन होने लगे। आकाश, दिशाएं और नदियों का जल निर्मल हो गया। सभी प्रसन्न थे।

पुष्पक विमान से राम ने सीता को रणभूमि का दृश्य दिखाना प्रारंभ किया। उन्होंने कहा कि सीता! यहीं लक्ष्मण ने इन्द्र को पराजित करने वाले मेघनाद का वध किया था। हनुमान व अंगद के मारे हुए बड़े-बड़े राक्षस योद्धा रणक्षेत्र में पड़े हुए हैं। रावण व कुंभकर्ण यहीं मारे गये। यहां समुद्र पर मैंने पुल बांधा और शंकर की प्रतिमा स्थापित की। रामेश्वर की शंकर प्रतिमा को राम, जानकी ने प्रणाम किया। सीता की खोज में राम ने जिन-जिन वनों और आश्रमों में निवास किया था, उन सबका नाम ले-ले राम ने जानकी को दिखाया। अगस्त्य मुनि के दंडक वन में विमान आने पर राम अगस्त्य आदि सभी मुनियों के निवास पर गये। चित्रकूट में भी रुके; वहां के निवासी और मुनियों को संतुष्ट किया। राम ने कलिमलहारिणी सुहावनी गंगा का भी सीता को दर्शन करा प्रणाम करने को कहा। तीर्थराज प्रयाग में प्रवाहित त्रिवेणी का दर्शन करते हुए राम ने सीता को जन्मभूमि अयोध्या का दर्शन कराया। सीता ने अवधपुरी को प्रणाम किया। राम के नेत्र सजल हो गये। वे हर्ष से गद्‌गद हो रहे थे। त्रिवेणी स्नानोपरांत दान-पुण्य से निवृत्त होकर राम ने हनुमान को समझाया कि तुम ब्राह्मण का वेश धारण करके अयोध्या जाओ। भरत का कुशल-समाचार लेकर चले आओ। हनुमान अयोध्या चले। राम भरद्वाज ऋषि के आश्रम में आ गये और उनके चरणों की वंदना कर आशीर्वाद ले आगे बढ़े। निषादराज ने राम के आगमन का समाचार सुनकर 'नौका लाओ' की आवाज मल्लाहों को दी। विमान गंगा के तट पर उतरा। जानकी ने गंगा की अनेक प्रकार से पूजा की। हर्षित मन से गंगा ने सीता को



राम विरह सागर मह भरत मगन मन होत।
विप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत।

आशीर्वाद दिया कि तुम अखंड सुहागिनी रहो। निषादराज दौड़ता हुआ राम के पास आया। वह राम, जानकी को देखकर अपने शरीर की सुधि खो धरती पर गिर पड़ा। राम ने भरत की तरह उसे हृदय से लगा लिया। सबसे विदा लेकर राम अयोध्या के समीप आ गये।

अयोध्या में राम के लौटने की निर्धारित तिथि का अंतिम दिन था। अयोध्यावासी प्रेमातुर थे। चौदह वर्षों तक राम के वियोग में दुःखी स्त्री-पुरुष उनके आगमन की प्रतीक्षा में थे। सुंदर शकुन हो रहे थे। सभी प्रसन्न थे। नगर में चतुर्दिक रमणीयता छाई हुई थी। राम का आगमन होने वाला था। कौशल्या इत्यादि सभी माताओं के मन में हर क्षण ऐसे आनंद की अनुभूति हो रही थी कि सीता व लक्ष्मण के साथ राम के आने का समाचार कोई लाने ही वाला है। बारंबार भरत की दाहिनी आंख और दाहिनी भुजा शुभ शकुन प्रदर्शित करती फड़क उठती थी।

शुभ शकुन से मन ही मन हर्षातिरेक में भरत सोचन लगे, मेरे प्राणाधार राम के आगमन की निर्धारित तिथि का अब एक ही दिन शेष रह गया है। यह सोचकर भरत अत्यधिक चिंतित और दुःखी हो गये। वे सोचने लगे कि राम आये क्यों नहीं? कुटिल समझ कहीं मेरी सुधि तो नहीं भुला दी। लक्ष्मण भाग्यशाली व धन्य हैं जो राम के चरण-कमलों से अलग नहीं हुए। कपटी और कुटिल जानकर ही शायद राम ने मुझे अपने साथ नहीं लिया। राम मेरे कारण घटित विगत कुकृत्य को गंभीरता से ग्रहण करें तो सौ करोड़ कल्पों तक मुझे मुक्ति नहीं मिलेगी। परन्तु राम दीनबंधु और मृदुल स्वभाव के हैं। अपने सेवक के अवगुण पर वे कान नहीं देते। मेरे हृदय में ऐसा दृढ़ विश्वास हो रहा है कि राम अवश्य मिलेंगे। बड़े शुभ शकुन हो रहे हैं। यदि निर्धारित अवधि बीत जाने पर भी मैं जीवित रह गया तो मुझ-सा अधम इस संसार में कौन होगा?

राम बिरह सागर महं भरत मगन मन होत।
बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयेउ जनु पोत।।

राम के विरह रूपी सागर में भरत का हृदय डूब रहा था। उसी समय ब्राह्मण वेश धारणकर हनुमान भरत की रक्षा के लिए पोत बनकर आ गये। हनुमान ने देखा कि जटाओं का मुकुट धारण कर राम-राम का जाप करते कमलवत नेत्रों से प्रेमाश्रु प्रवाहित करते हुए कृश शरीर भरत कुशासन पर बैठे हैं। भरत को देखते ही हनुमान का शरीर पुलकित हो गया। नेत्रों से प्रेमाश्रु प्रवाहित होने लगे। हनुमान हर्षविह्वल हो अमृत-सी श्रुतिमधुर वाणी बोले कि जिन राम के वियोग में आप दिन-रात चिंतित हैं और जिनकी गुणावली की निरंतर रट लगाये हुए हैं वे राम सकुशल आ गये हैं। रणक्षेत्र में शत्रु को पराजित कर सीता और लक्ष्मण सहित देवताओं की प्रशस्ति सुनते हुए राम मार्ग में हैं। यह संदेश सुनते ही जैसे प्यासे को अमृत मिल जाए, उसी तरह भरत विगत दुःख भूल गये और उन्होंने पूछा कि मुझे यह अत्यंत सुखद संदेश देने वाले आप कौन हैं। कहां से आए हैं?

हनुमान ने अपना परिचय दिया कि मैं पवनपुत्र हनुमान, राम का सेवक हूं। परिचय प्राप्त करते ही भरत ने आदर के साथ उठकर हनुमान को वक्षस्थल से लगा लिया। उनका शरीर पुलकित हो गया और आंखों से प्रेमाश्रु झरने लगे। भरत ने कहा कि हनुमान! तुम्हारे दर्शन से मेरे विगत सारे दुःख समाप्त हो गये। तुम्हारे बहाने आज मुझे मानो राम ही मिल गये हों। बार-बार भरत ने राम की कुशल-क्षेम पूछी। कहने लगे कि हनुमान! तुम्हें क्या दूं? राम के आगमन के संदेश के बदले में दिये जा सकने योग्य पदार्थ मेरे पास नहीं है। मैं तुमसे उऋण नहीं हो सकता। राम का समाचार मुझे सुनाओ। हनुमान ने भरत के चरणों पर मस्तक झुकाकर राम की सारी शौर्य कथा कह सुनायी। भरत ने पूछा कि क्या राम मुझे कभी अपने दास की भांति स्मरण करते थे?

हनुमान भरत के चरणों पर गद्गद हो गिर पड़े और मन में सोचने लगे कि ब्रह्माण्ड के स्वामी राम स्वयं अपने मुख से जिन भरत के अगणित गुणों की प्रशंसा करते हैं, वह इतने विनम्र, पवित्र व सद्गुणों से परिपूर्ण क्यों न हों? हनुमान ने कहा कि हे नाथ! आप राम को प्राणों के समान प्रिय हैं। मैं सत्य कहता हूं। यह सुनकर भरत बार-बार प्रेमाधिक्य से हनुमान से गले मिलने लगे। भरत से विदा ले हनुमान ने राम के पास आकर सारा वृत्तांत कह सुनाया। हर्षित हो राम विमान पर चढ़ कर आगे बढ़े।



परे भूमि नहिं उठत उठाये। बर करि कृपासिंधु उर लाए।।
स्यामल गात रोम भए ठाढ़े। नव राजीव नयन जल बाढ़े।।

भरत प्रसन्नचित्त होकर अयोध्या आ गये और गुरु वशिष्ठ को राजमहल में भरत ने यह शुभ समाचार भेजा कि राम सकुशल अयोध्या आ रहे हैं। माताएं इस शुभ समाचार से प्रसन्न होकर दौड़ी आईं। रामागमन का संदेश सुन नगर-निवासी स्त्री-पुरुष हर्षविभोर हो गए। गजगामिनी सौभाग्यवती युवतियां दही, दूध, गोरोचन, फल, फूल, तुलसीदल सोने के थाल में सजाकर मंगल-गीत गाती हुई राम की आरती उतारने चलीं। जो भी जिस स्थिति में था उसी दशा में बच्चों और बूढ़ों को छोड़कर राम के दर्शन हेतु उत्कंठित दौड़ पड़ा। सभी एक-दूसरे से पूछ रहे थे कि कृपालु राम को आपने देखा है? राम से वियोग की घड़ी बीत चुकी थी। अयोध्यापुरी राम के नगर-प्रवेश का समाचार जानकर शोभा की खान हो गयी। शीतल, सुरभित व मन्द वायु प्रवाहित होने लगी। सरयू में अति निर्मल जल बहने लगा। आनंदित भरत शत्रुघ्न, वशिष्ठ, ब्राह्मण-समूह एवं कुटुम्बीजन सभी को साथ लेकर राम की अगवानी के लिए चल पड़े। नगर की स्त्रियां अट्टालिकाओं पर चढ़ आकाश से आ रहे विमान को देखकर हर्षित स्वर से मंगल-गीत गा रही थीं। अयोध्या रूपी समुद्र में राम रूपी पूर्ण चन्द्र की ज्योत्स्ना से हर्ष का ज्वार उमड़ आया था। अयोध्या नगरी की नवेली नारियां समुद्र की जल-तरंगों के समान थीं।

विमान में से रघुकुल रूपी कमल को प्रफुल्लित करने के लिए सूर्य के समान रामचन्द्र बंदरों को अच्छी तरह नगर-शोभा दिखा रहे थे। अंगद, सुग्रीव एवं विभीषण को संबोधित कर राम ने कहा कि अयोध्या पवित्रतम सुंदर पुरी है। वेद, पुराण और समस्त विश्व बैकुण्ठ की प्रशंसा करते हैं। परन्तु कम लोगों को ज्ञात है कि अयोध्या से बढ़कर मेरे लिए बैकुंठ भी नहीं है। यही मेरी जन्मभूमि है। इस नगरी की उत्तर दिशा में पवित्र सरयू प्रवाहित है जिसमें स्नान कर लोग बिना प्रयास के सायुज्य मुक्ति प्राप्त करते हैं। यहां के नागरिक मुझे बहुत प्रिय हैं। यह नगरी सुख की राशि और परमधाम स्वर्ग को मात देने वाली है। समस्त बंदर हर्षित हो कहने लगे कि अयोध्या धन्य है, जिसकी स्वयं राम प्रशंसा कर रहे हैं।

परे भूमि नहिं उठत उठाए। बर करि कृपासिंधु उर लाए।।
स्यामल गात रोम भये ठढ़े। नव राजीव नयन जल बाढ़े।।

जब राम ने देखा कि लोग मेरी अगवानी के लिए आतुर चले आ रहे हैं तो उन्होंने पुष्पक विमान को नगर के बाहर धरती पर उतरने के लिए प्रेरित किया। विमान से उतरकर राम ने पुष्पक विमान को कुबेर के पास विदा कर दिया। वियोग में कृश वामदेव, वशिष्ठ आदि मुनिवरों को भरत के साथ अपनी ओर आते देखकर राम-लक्ष्मण ने धनुष-बाण धरती पर रख दिये। राम-लक्ष्मण सहित दौड़कर गुरु वशिष्ठ के चरणों में नत हो गये। उनकी रोमावलि पुलकित थी। वशिष्ठ ने राम को गले लगाकर कुशल पूछा। राम ने कहा कि हम आपकी कृपा से सकुशल हैं। धर्मधुरीण राम ने समस्त ब्राह्मणों के समक्ष मस्तक झुकाया।

भरत ने राम के उन कमल-चरणों को पकड़ लिया जिन्हें निरंतर देवता, मुनिजन, शंकर तथा ब्रह्मा अपने हृदय में धारण करते हैं। भरत पृथ्वी पर खड़े राम के चरण पकड़े पड़े हुए थे। बार-बार राम के उठाने पर भी प्रेम गद्गद भरत नहीं उठ रहे थे। तब राम ने जबर्दस्ती भरत को उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। दोनों के श्यामल शरीर रोमांचित हो उठे। नवीन कमल के समान नेत्रों में अश्रु की बाढ़ आ गयी। राम अत्यंत प्रेम से भरत को हृदय से लगाये गले मिल रहे थे। दोनों की मिलन-छवि प्रेम और श्रृंगार के सशरीर मिलन की श्रेष्ठ शोभा पा रही थी। राम ने भरत से बार-बार कुशल-क्षेम पूछी परन्तु आनन्द में डूबे हुए भरत के मुख से वाणी नहीं निकल रही थी। राम के स्पर्श-सुख का अनुभव वचन से परे है, उसे हृदय ही जान पाता है। भरत ने कहा कि मुझ दुःखी दास को आपने दर्शन देकर सब कुशल कर दिया। मुझ जैसे दीन-दुःखी को विरह-सागर में डूबते हुए आपने हाथ पकड़ कर उबार लिया। हर्षित मन राम शत्रुघ्न को हृदय से लगाकर मिले। लक्ष्मण व भरत परम प्रेम से हर्षित हो कर एक-दूसरे को गले लगाये हुए थे। फिर लक्ष्मण शत्रुघ्न से गले मिले। भरत और शत्रुघ्न ने सीता के चरणों में सिर नवाकर परम सुख प्राप्त किया। राम को देख अयोध्यावासियों का विरह-वियोग आनंद में परिवर्तित हो गया। सभी को मिलने के लिए प्रेमातुर देखकर राम असंख्य रूपों में प्रकट हो गये और समस्त अयोध्यावासियों से एक साथ मिलने लगे। अपनी कृपा दृष्टि से उन्होंने समस्त नर-नारियों को शोकरहित कर दिया। राम के आगे बढ़ने पर कौशल्या और अन्य माताएं ऐसे दौड़ीं जैसे

बियाई हुई गाय अपने बछड़े को घर पर छोड़कर चरवाहे के वश में चरने गयी हो और गोधूलि वेला में हुंकार करती हुई थन से दूध टपकाती बछड़े से मिलने के लिए आतुर दौड़ रही हो। ऐसी ममतामूर्ति माताओं से श्रद्धापूर्वक मिलकर राम ने वियोग से उत्पन्न उनके भयानक दुःख का शमन कर दिया। राम की अमृतमयी कोमल बाणी से सभी माताएं हर्षित व सुखी हुईं। सुमित्रा राम के चरणों में निरत अपने पुत्र लक्ष्मण से मिलीं। राम कैकेयी से मिलकर उनका आशीर्वाद पा तृप्त हो गये। वे बार-बार कैकेयी से मिले पर कैकेयी क्षोभ से लज्जित थी। जानकी ने भी अपनी समस्त सासुओं के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

अपने पुत्र राम के कमल-मुख को माताएं निर्निमेष निहार रही थीं। पुलकित नेत्रों में आंसू आ जाते परन्तु मंगल बेला में वे बरबस नेत्रों में अश्रु-जल को रोक लेतीं। सोने के थाल से आरती उतारकर बार-बार माताएं उनकी अंग-छवि निरख रही थीं। वे मंगल हेतु अमूल्य मणियां न्यौछावर कर रही थीं। राम को देखकर कौशल्या ने अपने मन में बार-बार विचार किया कि किस भांति इन सुकुमार बच्चों ने बलशाली राक्षसों व लंकाधिपति रावण को मारा। सभी माताएं लक्ष्मण तथा सीता के साथ राम को देखकर परम आनंद में मग्न हो रही थीं।

लंका के स्वामी विभीषण, वानरराज सुग्रीव, नल, नील, जांबवान, अंगद, हनुमान आदि ने वानरी रूप छोड़कर मनुष्य का शरीर धारण कर लिया। राम के साथ आये हुए सभी प्राणी प्रेम और आदर के साथ भरत के स्नेह, शील, दृढ़ प्रतिज्ञा और नियम-पालन की प्रशंसा कर रहे थे। अपने साथ अयोध्यावासियों का स्नेहपूर्ण सद्व्यवहार तथा राम के चरणों में नागरिकों की अडिग श्रद्धा की सभी सराहना कर रहे थे। राम ने अपने सहयोगियों को बुलाया और सबसे गुरु वशिष्ठ के चरण स्पर्श करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि गुरु वशिष्ठ हमारे कुलपूज्य हैं। इन्हीं की कृपा से मैंने राक्षसों को रणक्षेत्र में पराजित किया। राम ने वशिष्ठ से कहा कि मेरे सभी मित्र युद्ध रूपी समुद्र को पार करने में जहाज बनकर सहायक हुए। मेरी भलाई के लिए इन्होंने प्राणों की बाजी लगाकर अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर दिया। ये सभी मुझे भरत से भी अधिक प्रिय हैं। राम के ये वचन सुनकर सभी लोग प्रेम-विह्वल हो गये। प्रत्येक क्षण वे सभी राम और अयोध्यावासियों के व्यवहार से नवीन आनंद की अनुभूति कर रहे थे। राम के समस्त सहयोगियों ने माता कौशल्या के चरणों में अपना मस्तक झुकाया। कौशल्या ने उन्हें हर्षित मन से आशीर्वाद देते हुए कहा कि तुम लोग राम के समान ही मुझे प्रिय हो।

राम अपने महल की ओर चल पड़े। नगर के नर-नारी हर्षित मन से अट्टालिकाओं पर चढ़कर राम का दर्शन कर रहे थे। अयोध्या के प्रत्येक गृह के प्रवेश-द्वार पर स्वर्णकलश सजे थे और मंगल के लिए बन्दनवार, ध्वजाओं का चारों ओर वितान तना हुआ था। अयोध्या की गलियां इत्र से सींची गयी थीं। धरती पर गजमुक्ताओं के मंगल चिन्ह अंकित थे। अयोध्या नगरी में नाना प्रकार की मंगलमयी सुंदर साज-सामग्रियों से अपूर्व छवि छायी हुई थी। अयोध्या के प्रत्येक द्वार पर आनंद के नगाड़े घनघना रहे थे। बहुत-सी स्त्रियां विविध प्रकार का दान न्यौछावर कर रही थीं। उनके हृदय से हर्ष फूट रहा था। चारों ओर वातावरण में आशीर्वाद शब्द गूंज रहा था। स्वर्ण-थाल में आरती सजाकर स्त्रियां सस्वर मंगल-गान कर रही थीं। वे रघुकुल रूपी कमल-वन के लिए सूर्य के समान दीपित राम की आरती उतार रही थीं। अयोध्या नगर की वैभवशाली शोभा, संपत्ति तथा कल्याण का वेद, शेषनाग और सरस्वती भी वर्णन करने में असमर्थ थे।

अयोध्या रूपी सरोवर में नगर की नारियां कुमुदिनियों जैसी थीं। राम-विरह रूपी सूर्य के ताप से वे मुरझा गयी थीं परन्तु राम रूपी पूर्णमासी के चन्द्रमा के उदित होने से आज वे खिल उठीं। अयोध्या के नर-नारियों को सनाथ कर राम राजमहल में आए। राम को ज्ञात था कि कैकेयी अपने दुष्कर्मों से लज्जित हैं। अतः सबसे पहले राम कैकेयी के राजमहल में गए। राम ने उन्हें प्रबोध देकर संतुष्ट किया, समझाया, फिर अपने महल में आए। जब वे अपने आवास में प्रविष्ट हो गये तब अयोध्यावासी प्रमुदित हो उठे।

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।
सुत बिलोकि हरषीं महतारी। बार-बार आरती उतारी।।

वशिष्ठ ने अयोध्या के प्रमुख पुरोहितों को बुलाकर कहा कि आज अत्यंत सुदिन और शुभ घड़ी है। आप ब्राह्मणगण यदि आदेश दें तो राम को राज सिंहासन पर आरूढ़ किया जाए। सभी ब्राह्मण वशिष्ठ मुनि से कहने लगे कि राम का



गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य हमारे। इनकी कृपां दनुज रन मारे।।
ए सब सखा सुनहुं मुनि मोरे। भए समर सागर कहं बेरे।।

राज्याभिषेक समस्त विश्व के लिए सुखद है। राम का राजतिलक करने में अब किसी कारण तनिक भी विलम्ब नहीं होना चाहिए।

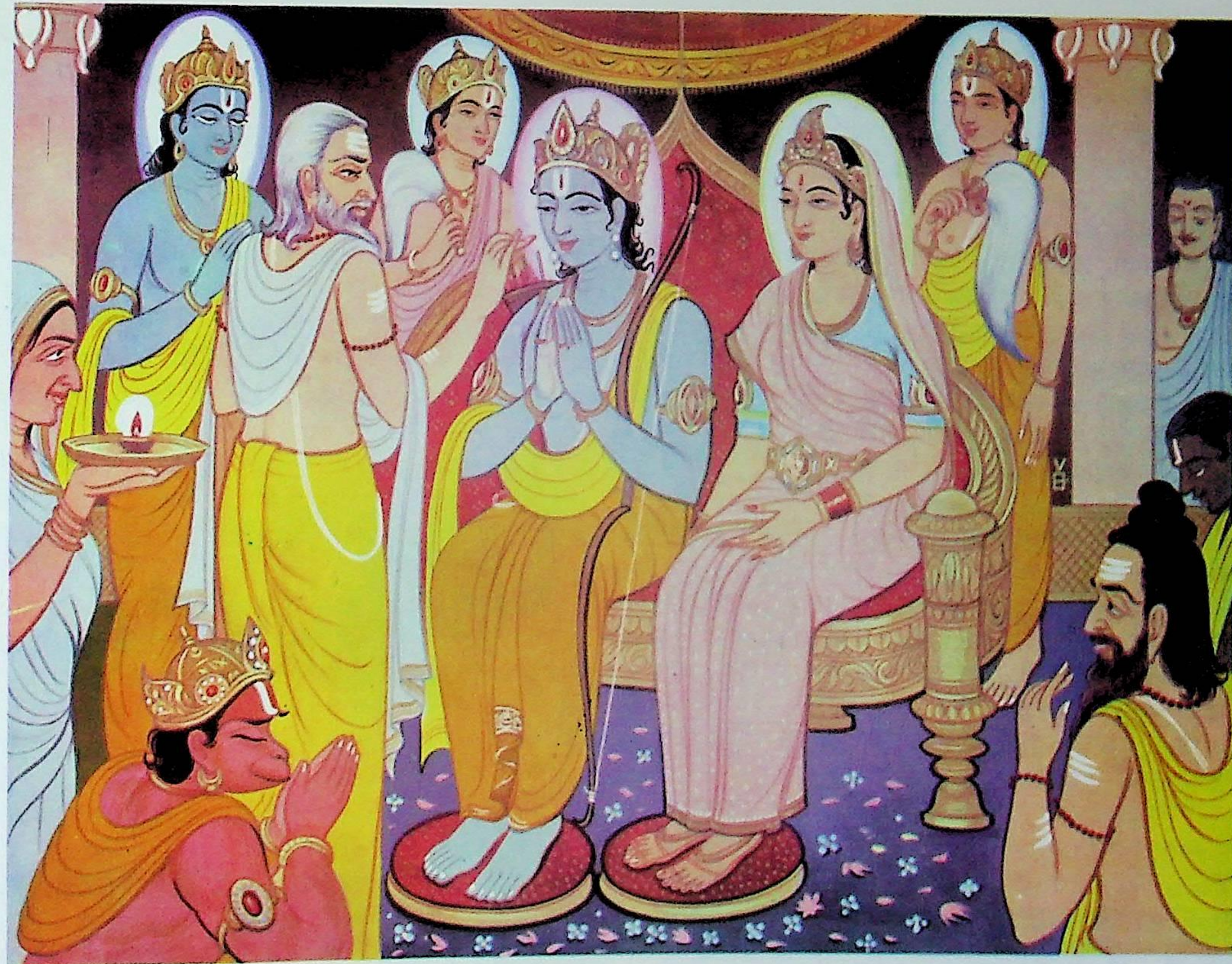
ब्राह्मणों से आदेश लेकर वशिष्ठ मुनि ने सुमंत से राजतिलक की व्यवस्था करने के लिए कहा। सुमंत ने तीव्र गति वाले हाथी-घोड़ों से दूतों को स्थान-स्थान पर भेजकर राजतिलक के लिए मंगल-द्रव्य मंगाये। राजतिलक की संपूर्ण तैयारी करके सुमंत वशिष्ठ के समक्ष उपस्थित हुए।

अयोध्यानगरी अत्यंत सुंदर ढंग से सजायी गयी थी। देवताओं ने निरंतर पुष्प वृष्टि की झड़ी लगा दी। राम ने राजसेवकों को बुला कर कहा कि पहले मेरे सखाओं को स्नान कराओ। राम की आज्ञा पाकर सभी सेवक दौड़ पड़े। उन्होंने सुग्रीव तथा अन्य सभी अतिथियों को स्नान करवाया। भरत की उलझी जटाजूटों को राम ने अपने हाथों से सुलझाया और संवारा। अपने तीनों भाइयों को भक्तवत्सल राम ने अपने हाथों स्नान कराया। फिर राम ने अपनी जटाएं सुलझायीं। वशिष्ठ के आदेशानुसार राम स्नान कर वस्त्राभूषण से सुसज्जित हो गये। उनके अंग-प्रत्यंग का सौंदर्य करोड़ों कामदेवों की छवि को लज्जित कर रहा था। सासुओं ने स्नेह के साथ जानकी को स्नान कराकर सुसज्जित किया। राम की बायीं ओर रूप और गुणों की खान जानकी सुशोभित हुई। माताएं राम और जानकी की युगल जोड़ी देखकर अत्यंत हर्षित हुईं।

गुरु बसिष्ट कुलपूज्य हमारे। इन्ह की कृपा दनुज रन मारे।।
ए सब सखा सुनहुं मुनि मेरे। भए समर सागर कहं बेरे।।

उसी समय विमानों पर चढ़कर ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि सभी देवता और ऋषियों का समूह सुख-रूप राम का दर्शन करने अयोध्या आया। राम की अलौकिक छवि देखने में अनुरक्त वशिष्ठ मुनि ने सूर्य के समान तेजस्वी राजसिंहासन मंगवाया। अपूर्व सिंहासन पर ब्राह्मणों को मस्तक झुकाकर राम सिंहासन पर आसीन हुए। मुनियों का समूह प्रफुल्लित था। ब्राह्मणगण ऋचाओं का उच्चारण कर रहे थे। आकाश से देवता और मुनिगण राम की जय-जयकार कर रहे थे। वशिष्ठ मुनि ने सर्वप्रथम राम का राजतिलक किया। उनकी आज्ञा पाकर वहां उपस्थित सभी श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने राम का तिलक किया। चौदह वर्षों से राम के राजतिलक की सजोई गयी माताओं की साध और अभिलाषा पूरी हुई। वे हर्षित मन से राम की छवि देखकर उनकी आरती उतारने लगीं। ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा से संतुष्ट किया गया। याचकों को इतना अधिक दान दिया गया कि उन्हें भविष्य में मांगने की आवश्यकता ही नहीं रही। तीनों लोकों के स्वामी राम सिंहासनारूढ़ थे। आकाश में देवता दुंदुभी बजा रहे थे। किन्नर और गंधर्व प्रशस्ति-गान कर रहे थे। अप्सराएं नृत्य कर रही थीं। देवता और मुनिगण आनंदातिरेक से हर्षित थे। भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, विभीषण, अंगद और हनुमान राम के राजसिंहासन के समीप छत्र, चंवर, पंखा, धनुष, तलवार, ढाल और शक्ति लिये हुए विराजमान थे। सीता सहित राम के अंग-प्रत्यंग का सौंदर्य करोड़ों कामदेवों की छवि को लज्जित कर रहा था। नवीन मेघ के समान सुंदर राम के श्याम शरीर पर सुशोभित पीताम्बर देवताओं के मन को सम्मोहित कर रहा था। राम के अंग-प्रत्यंग पर अनेकानेक विचित्र आकर्षक आभूषण तथा मस्तक पर रत्नजटित राजमुकुट सुसज्जित था। विराट वक्षस्थल, विशाल भुजाओं तथा कमल के समान नेत्रों वाले राम का दर्शन करने वाले मनुष्य धन्य हो रहे थे। उस समय वहां जो छवि छायी हुई थी, उसका वर्णन सरस्वती, वेद और शेषनाग भी नहीं कर सकते। उसका वास्तविक आनन्द तो शिवजी ही जानते हैं।

राजतिलक के अवसर पर उपस्थित सभी देवता अनेक प्रकार से राम की वंदना कर स्वर्गलोक लौट गये। वंदी रूप में चारों वेद राम-दरबार में उपस्थित होकर वंदना करने लगे। प्रशस्ति करते हुए उन वंदियों ने कहा कि सगुण-निर्गुण रूप राम! आप अनुपम रूपवान, राजाओं के सिरमौर हैं। आपकी जय हो! मनुष्य का अवतार लेकर रावण आदि दुराचारी प्रचण्ड और दुष्ट राक्षसों को अपने बाहुबल से पराजित करने वाले तथा संसार के अत्यंत भीषण दुःखों को भस्मसात करने वाले प्रणतपाल दयालु हैं। आपको सीता सहित बारम्बार नमस्कार है। देव, राक्षस, नाग, मनुष्य, जगत के समस्त चराचर आपकी विषम माया के वशीभूत हैं। काल-कर्म और गुणों के वशीभूत असंख्य जीव रात-दिन विषम संसार के कठिन मार्ग पर भटक रहे हैं। आपकी कृपादृष्टि जिन मनुष्यों पर पड़ी, वे दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों तापों से मुक्त हो गये। भवसागर के दुःख को हरने में कुशल भगवान! हमारी रक्षा करें। हम आपको प्रणाम करते हैं। अपने ज्ञान के अभिमान



प्रथम तिलक वशिष्ठ मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।
सुनि विलोकि हरषीं महतारी। बार बार आरती उतारी।।

में उन्मत्त जिसने संसार के कष्टों से मुक्ति प्रदान करने वाली आपकी भक्ति का आदर नहीं किया, वह देवताओं के समान दुर्लभ पद पाकर भी पतित ही होता है। जो मनुष्य अपनी समस्त आशाओं को तिलांजलि देकर केवल आपका नाम जपते और भक्ति करते हैं, वे सांसारिक पीड़ाओं से मुक्ति पा जाते हैं। आपके जिन चरणों की पूजा ब्रह्मा तथा शिव करते हैं, जिनकी रज से अहल्या का उद्धार हुआ, जिनके नख से तीनों लोकों को पवित्र करने वाली देवनदी गंगा प्रवाहित हुई, जिन ध्वजा, वज्र, अंकुश और कमलचिन्ह से युक्त चरणों में यात्रा के समय मार्ग के कुश-कांटे चुभे, हम आपके उन्हीं चरण-कमलों की नित्य वंदना करते हैं। हम अजन्मा, अद्वैत, अनुभव से ही जाने जा सकने वाले, आपके निर्गुण स्वरूप को जानने में असमर्थ हैं। हम आपके सगुण स्वरूप का निरंतर यश गाते हैं। हे करुणामय स्वामी! सद्गुणों की खान! मनसा-वाचा-कर्मणा सभी विकार त्यागकर हम आपके चरणों से प्रेम करते रहें, यही वरदान दीजिए। वेदों ने राम की प्रशस्ति की और सबके देखते-देखते ब्रह्म लोक चले गये।

राज दरबार में पुलकित शरीर शंकर उपस्थित हो राम की विनती कर कहने लगे कि लक्ष्मी के साथ विचरण करने वाले सांसारिक कष्टों के विनाशक राम की जय हो। हे अवधेश! देवताओं के स्वामी! रमापति! सांसारिक तापों से तप्त, व्याकुल मुझ शरणागत की रक्षा कीजिए। आपने धरती के सबसे बड़े उत्पीड़क दसमुख और बीस भुजाओं वाले रावण का नाश किया। आपने राक्षस-समूह रूपी पतिंगों को अपने बाण रूपी अग्नि की प्रचण्ड ज्योति से भस्म कर दिया। आप भू-मण्डल की शोभा तथा तरकस, धनुष और बाण धारण करने वाले पुरुष श्रेष्ठ हैं। भयानक मोह, मद, और ममता रूपी गहन अंधकार रात्रि को नष्ट करने के लिए आप तेज-राशि सूर्य के समान हैं। कामदेव रूपी मायावी भील ने मनुष्य रूपी मृगों के हृदय पर वासना का बाण साधकर धराशायी कर दिया था। उस कामदेव रूपी किरात को मारकर विषय रूपी वन में भटक रहे पापी अनाथों की रक्षा कीजिए। जो लोग आपके चरणों का निरादर करते हैं, वे अथाह संसार सागर के भंवर में फंसकर रोग और वियोगयुक्त रहते हैं। जो लोग आपके चरित्र का गुणगान करते हैं उन सत्पुरुषों को संत और ईश्वर सदा प्रिय लगते हैं। ऐसे समरस मनुष्यों में आसक्ति, लोभ, अहंकार, मद आदि कुटेव नहीं होते। अपनी योग-साधना का भरोसा कर मुनिगण प्रसन्न मन आपके चरण-कमलों के सेवक बन जाते हैं। वे निरंतर नियमपूर्वक आपका स्मरण करते हुए शुद्ध हृदय से आपके चरणों की सेवा करते हैं। वैभव और विपत्ति उनके लिए समान होते हैं। आप मुनि-मानस-कमल के भ्रमर हैं। आप रणधीर, अजेय और महान हैं। मैं आपकी वंदना करता हूं। आप भवरोग की महान औषधि हैं और अभिमान को हरने वाले हैं। लक्ष्मीपति राम गुण, शील और कृपा के आगार हैं। हे राजन! आप जन्म-मरण-राग-द्वेष आदि मानसिक द्वन्द्व को समूल नष्ट कर मुझ दीन-हीन सेवक पर कृपा दृष्टि कीजिए। मैं बार-बार आपके चरण-कमलों की अनन्य भक्ति का वर मांगता हूं। विविध प्रकार से राम की आराधना कर शंकर चले गये। राम के राजतिलक का पवित्र प्रसंग वैराग्य और ज्ञान देने वाला है, तीनों तापों व जन्म-मृत्यु के भय को दूर करने वाला है। जो राम कथा को सकाम भाव से सुनते हैं उन्हें नाना प्रकार की सम्पत्ति प्राप्त होती है। वे संसार में देवदुर्लभ सुख भोगकर अंत में परमधाम सिधारते हैं। रामराज्य का वर्णन सुनकर जीवनमुक्त, विरक्त और विषयी क्रमशः भक्ति, मुक्ति और नित्य नई सम्पदा प्राप्त करते हैं। राम ज्ञान, वैराग्य और भक्ति को दृढ़ करने वाले तथा मोह रूपी नदी को पार करने के लिए नाव के समान हैं।

अयोध्या में नित्य नव मंगल महोत्सवों का आयोजन होता था। सभी वर्गों के लोग प्रसन्नचित्त रहते थे। सबके हृदय में नित्य शिव, मुनि और ब्रह्मा के वंदनीय राम के चरण-कमलों के प्रति नवीन प्रेम जागृत होता था। नित्य दीन याचक विविध दान और निछावर प्राप्त करते थे। नित्य प्रति निर्धनों को दान दिया जाता था। सभी वानर ब्रह्माण्ड सुख में मग्न, राम-चरणों में लवलीन थे। दिन बीतते देर नहीं लगी। लोगों ने छः महीने सुध-बुध खोकर बिता दिये। दूसरों के प्रति संतों के मन में विद्रोह की भावना जैसे नहीं जागती वैसे ही वानरों को अपनी गृह-स्मृति स्वप्न में भी नहीं आती थी।

एक दिन राम ने सखामण्डली को अपने समीप बैठाकर वात्सल्यमयी वाणी में कहा कि तुम सभी लोगों ने मेरी बड़ी सेवा की। उसकी किस प्रकार बड़ाई करूं? मेरे हित-चिंतन के लिए तुमने अपना गृह-सुख त्याग दिया। भाई, राज्य, सम्पत्ति, शरीर, राजमहल और स्नेही मुझे सभी प्रिय हैं लेकिन तुम लोगों से बढ़कर मेरे

लिए कोई प्रिय नहीं है। मैं झूठ नहीं कहता। किसे अपना सेवक प्रिय नहीं होता? मैं अपने आश्रितों से सबसे अधिक प्रेम करता हूं। मेरे आत्मीय मित्रो! अब सभी लोग अपने-अपने घर जाओ और दृढ़ आत्मविश्वास के साथ मुझे स्मरण करना। मैं सर्वव्याप्त और सबका हित करने वाला हूं। निरंतर मुझे प्रेम करना।

राम की यह प्रेममयी वाणी सुनकर सभी भाव-विह्वल हो उठे। यह सब भूल गये कि हम कौन हैं? कहां हैं? सभी शरीर की सुध-बुध खो बैठे। सभी राम के समक्ष हाथ जोड़े प्रेम के वशीभूत खड़े थे। राम ने अपने प्रति अभूतपूर्व प्रेम देखकर विविध ज्ञानोपदेश प्रारम्भ किया। वे सभी सेवक राम के समक्ष कुछ न कह सके। वे एकटक राम के चरण-कमलों को निहारते रहे। राम ने विविध प्रकार केअनुपम सुहावने वस्त्राभूषण मंगवाये। सर्वप्रथम भरत ने अपने हाथों वानरराज सुग्रीव को संवार कर वस्त्राभूषण पहनाए। राम के संकेत पर लक्ष्मण ने विभीषण को रुचिकर वस्त्राभूषण धारण करवाए। अंगद गुमसुम चुपचाप बैठे थे। हिल नहीं रहे थे। राम उन्हें अनुराग-विह्वल देखकर मौन रहे। जांबवान, नल आदि को राम ने अपने हाथों वस्त्राभूषण पहनाकर सुसज्जित किया। सभी सखा राम की अमिट सजीव मूर्ति हृदय में स्थापित कर, चरणों में मस्तक झुकाकर विदा हुए।

अंगद सबके विदा हो जाने के बाद अपने आसन से उठे। विनीत भाव से आंखों से अश्रुपात करते हुए प्रेम-रस में डूबी हुई वाणी में राम से प्रार्थना करने लगे कि आप सुख और दया के वारिधि, दीनदयाल, आर्तबन्धु और सर्वज्ञाता हैं। मेरे पिता बालि जब अंतिम श्वास ले रहे थे तो मुझे आपकी गोद में निराश्रित छोड़ गये थे। आप अशरण को शरण प्रदान करने वाले, भक्तों के हित-चिंतक और लाज रखने वाले हैं। मुझे मत छोड़िये। आप मेरे माता-पिता-गुरु—सब कुछ हैं। आपके चरण-कमल छोड़कर मैं कहां जाऊं? आपके स्मरण के अतिरिक्त घर पर मेरा कौन-सा कार्य है? मैं ज्ञान, बुद्धि और शक्ति हीन हूं। मुझे अपना दीन सेवक समझ कर अपनी शरण में रखिए। मैं घर का छोटा-से-छोटा काम और नीची-से-नीची सेवा करूंगा और आपके चरण-कमलों के दर्शन और सेवा करता हुआ इस असार संसार से तर जाऊंगा। अंगद राम के चरणों पर गिर पड़े और अपनी रक्षा के लिए याचना करते हुए कहने लगे कि नाथ! मुझे घर जाने के लिए मत कहिए।

करुणासिंधु राम ने अंगद को अपने वक्षस्थल से लगा लिया। भाव-विह्वल राम के नेत्रों से अश्रुकण छलक रहे थे। राम ने अपने हाथ से माला, विविध आभूषण, मणि आदि से अंगद को सुसज्जित कर उन्हें बहुत प्रकार से समझाकर घर के लिए विदा किया। भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण कृतज्ञ-भाव से सस्नेह अंगद को छोड़ने चले। अमिट प्रेम से भरे अंगद बारम्बार पीछे मुड़कर राम की ओर निहार रहे थे। राम की देखने, सुनने, चलने, हंसने और मिलने की प्रत्येक मुद्रा को स्मरण कर व्याकुल हो अंगद चले जा रहे थे। सोचते थे, शायद अब राम रुकने को कहें। प्रभु से विदाई का रुख देख राम के चरणों को हृदय में स्थापित कर अंगद चल पड़े। सभी वानरों को सादर नगर के बाहर पहुंचाकर भरत सभी भाइयों सहित वापस आ गये।

हनुमान ने सुग्रीव के चरण पकड़कर प्रार्थना की कि दस दिनों तक राम के चरणों की सेवा कर मैं पुनः आपके दर्शन करूंगा। सुग्रीव ने कहा कि पवनसुत! तुम पुण्यपुंज हो। जाओ, राम-चरणों की सेवा करो। अंगद ने हनुमान से हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि प्रभु से मेरा प्रणाम कहना। उन्हें मेरा स्मरण दिलाना। सभी बंदर अयोध्या से विदा हो गये। हनुमान ने लौटकर राम को अंगद का संदेश दिया। राम गद्गद हो उठे। निषादराज को वस्त्राभूषण का दान दिया गया। राम ने मनसा-वाचा-कर्मणा धर्म का अनुसरण करते हुए घर जाकर उसे भजन करने की प्रेरणा दी। राम ने कहा कि निषाद! तुम मुझे भरत के समान प्रिय हो। निरंतर अयोध्या आना। आंखों से जल बरसाता निषादराज राम-चरणों को अपने हृदय में स्थापित कर अपने कुटुम्बियों के बीच लौट गया।

राम के राज्यारोहण पर तीनों भुवन हर्षित हो उठे। राम के तेज से समस्त विषमताएं नष्ट हो गयीं। लोगों ने परस्पर ईर्ष्या भाव त्याग दिया। रामराज्य में नागरिक वर्णाश्रम धर्म में प्रवृत्त होकर दिन-रात वैदिक रीति से जीवन बिताते हुए शोक, भय से मुक्त, निरंतर सुख प्राप्त कर रहे थे। रामराज्य में किसी व्यक्ति को, दैविक, भौतिक और शारीरिक आपदा व्याप्त नहीं हुई। परस्पर प्रेम में निरंतर निरत रहकर वेदवर्णित नीति के अनुसार धर्मानुसार मार्ग पर सभी प्राणी अग्रसर थे। धर्म के चारों चरण—सत्य, शौच, दया और दान—सारे ब्रह्माण्ड में आच्छादित थे। स्वप्न में भी पाप का अस्तित्व नहीं रह गया। समस्त अयोध्यावासी स्त्री-पुरुष रामभक्ति में लीन थे। किसी की अल्पायु में मृत्यु नहीं

हुई, न कहीं कोई उत्पीड़ित था। सभी नारी-पुरुष सुंदर, स्वस्थ और निरोग थे। कोई दुःखी, दरिद्र, दीन न था। कोई भी शुभ लक्षणों से हीन न था।

रामराज्य में किसी को काई दम्भ न था। विविध कलाओं में चतुर स्त्री-पुरुष अति गुणज्ञ थे। सभी ज्ञानी, पण्डित तथा शास्त्रविद थे। भेदभाव और सांसारिक छल-बल से उनका कोई संपर्क न था। रामराज्य में जड़-चेतन जीवों को काल, कर्म और स्वभाव से उत्पन्न पीड़ा का बोध न था। सम्पूर्ण पृथ्वी के एक मात्र क्षत्रप कौशल-नरेश राम थे। रामराज्य की सुख-संपत्ति का वर्णन शेषनाग और सरस्वती भी नहीं कर सकते। सभी उदार, परोपकारी तथा विद्वानों की सेवा करने वाले थे। पुरुष एकपत्नीव्रत तथा स्त्रियां मन, वचन, कर्म से पति का हित चाहने वाली थीं।

राम के राज्य में 'दंड' शब्द का प्रयोग मात्र संन्यासियों के 'दंड' के अर्थ में होता था। किसी को दंडित करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। 'भेद' मात्र नाचने वालों के समाज में था। सभी अनुकूल थे। समाज में परस्पर सामंजस्य था। जीतने के लिए केवल मन ही शेष था, किसी का कोई बाहरी शत्रु था ही नहीं।

वन-वृक्षों में निरंतर फल-फूल उत्पन्न होते थे। पशु, पक्षी, हाथी और सिंह परस्पर बैर भुलाकर प्रेम से साथ-साथ रहते थे। पक्षी मधुर स्वर में गुंजन करते रहते। निर्भय पशुओं का समूह वन में आनंदपूर्वक विचरण करता था। शीतल मंद और सुरभित वायु प्रवाहित हो रही थी। भौंरे कमल-वन में मकरंद लेते हुए गुंजार करते थे। लता-वृक्ष मांगने से ही मधु टपका देते थे। गायें मनचाहा दूध देती थीं। धरती निरंतर कृषि से लहलहाती शस्य श्यामला बनी हुई थी। त्रेतायुग में सतयुग की स्थितियां प्रकट हो गयीं। समुद्र सीमा का उल्लंघन नहीं करते थे। लहरें समुद्र-तट पर लोगों के लिए रत्न बिखेर देती थीं। सरोवर कमल से आच्छादित थे। दसों दिशाओं में प्रसन्नता छायी हुई थी। रामराज्य में चन्द्रमा की किरणें अमृतमयी ज्योत्स्ना बिखेरतीं और ऋतु के अनुसार आवश्यकतानुकूल ही सूर्य ताप देते थे। मेघ मांगने पर जल-वृष्टि करते थे।

राम ने अनेकानेक अश्वमेध यज्ञ किये। सुपात्रों को अनेक प्रकार के दान दिये। श्रीराम वेदमार्ग का पालन करनेवाले, धर्म-धुरीण, त्रिगुणातीत और ऐश्वर्य में इन्द्र जैसे थे।

सुशील और विनम्र जानकी हमेशा अपने पति राम की इच्छा के अनुकूल आचरण करती थीं। यद्यपि राम के अपूर्व राजमहल में सुयोग्य, सुबुद्ध अगणित सेवक-सेविकाएं थीं। सेवा का महत्व जानने वाली सीता गृहस्थी का सारा काम स्वयं राम की रुचि के अनुसार करती थीं। वे राम की सेवा की समस्त विधियां जानती थीं। जिस कार्य से पति सुखी हों वही कार्य सीता करती थीं। मान-मद छोड़कर सीता समस्त सासुओं की निरंतर सेवा करती थीं। ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा वंदित कृपा-दृष्टि के दर्शन के लिए सदा अनिन्द्य जगत् जननी सीता की देवगण लालायित हो वंदना करते, फिर भी वह उनकी ओर देखती तक नहीं थीं। महिमामय स्वभाव को छोड़कर केवल राम के चरण-कमलों की सेवा करती थीं।

सभी भाई अपनी शक्ति के अनुसार राम के चरणों में प्रीतिपूर्वक सेवारत थे। वे राम के मुख-कमल की ओर निरंतर निहारते रहते थे कि राम किसी कार्य का हमें आदेश दें। समस्त भाइयों को राम सच्चे हृदय से प्यार करते थे। उन्हें विविध प्रकार से शिक्षा दिया करते थे। देवताओं को न प्राप्त होने वाली सुख-सम्पदा रामराज्य में अयोध्यावासी भोग रहे थे। रात-दिन समस्त नागरिक प्रार्थना करते कि राम के चरणों में निरंतर हमारी प्रीति बनी रहे।

सीता को लव, कुश दो सुंदर पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों पुत्र गुणी, विजयी और सुंदर थे। वे राम के प्रतिबिम्ब थे। सभी भाइयों के दो-दो पुत्र हुए, जो बड़े ही रूपवान, गुणवान और सुशील थे। ज्ञानी, अजन्मा, निर्विकार, इन्द्रिय, माया, मन और गुणों से परे सच्चिदानंद राम मानवीय लीलाएं कर रहे थे।

नित्य प्रातःकाल सरयू में स्नान कर राम ऋषि-मुनियों और सज्जनों के साथ सभा में बैठते। वैदिक-पौराणिक कथाएं भी राम सुनते थे। समस्त भाइयों के साथ भोजन करते हुए राम को देख सभी माताएं विह्वल हो जाती थीं। हनुमान के साथ भरत और शत्रुघ्न उपवन में भ्रमण के लिए जाते। वे राम के विगत चौदह वर्षों की कथाएं हनुमान से पूछते। हनुमान अपनी सुंदर बुद्धि से राम के गुणों का वर्णन करते। दोनों भाई राम के गुणगान सुन हर्षित हो बार-बार राम की विगत कहानी सुनते। प्रत्येक घर में पुराण और नाना प्रकार से राम के पवित्र चरित्र का पाठ होता। रात-दिन कैसे बीत जाते थे, ज्ञात ही नहीं होता था। अयोध्यावासियों को राम की उपस्थिति से जो सम्पदा मिली, हजारों शेषनाग एक साथ उसका वर्णन

नहीं कर सकते। सनकादिक ऋषि प्रतिदिन राजा राम के दर्शन करते। नगर की शोभा देखकर वे वैराग्य भूल जाते थे।

अयोध्या में रत्नजटित स्वर्ण अटारियां तथा रंग-बिरंगे सुन्दर स्तम्भों वाले भवन थे। अयोध्या नगरी के चारों ओर सुंदर परकोटा था, जिस पर रंग-बिरंगे कंगूरे बने थे। सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, वृहस्पति, राहु और केतु नव ग्रहों ने जैसे सामूहिक रूप से सेना सजाकर अयोध्या को अमरावती में परिवर्तित कर दिया था। धरती पर रंग-बिरंगी कांचों की गच ढाली गयी थी जो मुनियों के मन को भी आंकर्षित कर लेती थीं। अयोध्या में आकाश से बात करने वाले उज्ज्वल महल थे। प्रत्येक भवन पर स्थित कलशों के प्रकाश मानो सूर्य और चन्द्रमा की दीप्ति को भी फीका करते थे। मोतियों से रचे झरोखों में मणियों के दीपक जलते थे। घरों की ड्योढ़ियां सोने की बनी हुई थीं। मणियों के स्तम्भ थे। ब्रह्मा ने जैसे अपने हाथों मरकत-जटित स्वर्ण दीवारें बनाई थीं। स्फटिक के सुन्दर आंगन थे। मनोहर, सुंदर व विशाल भवनों के प्रवेश द्वार पर हीरे-जड़े बड़े-बड़े स्वर्ण कपाट लगे हुए थे। प्रत्येक घर में सुन्दर चित्रशालाएं थीं जिनमें राम का चरित्र सुंदरता से चित्रित था। प्रत्येक गृह में पुष्पवाटिकाएं और उपवन थे। निरन्तर उनमें सुहावनी और ललित लताएं वसंत ऋतु की तरह पुष्पित रहती थीं। मनोहर स्वर में भौंरे गुंजार करते थे। शीतल-सुरभित-मंद वायु प्रवाहित होती रहती थी। उन उपवनों में बालकों द्वारा पाले गये सुंदर तथा मधुर गुंजन करने वाले पक्षी थे। महलों के ऊपर मोर, हंस, सारस और कबूतर सुशोभित रहते थे। अपनी प्रतिछवि देखकर मनमोहक पक्षी मधुर वाणी में कूजन कर आनन्द के साथ नृत्य करते थे। बच्चे शुक-सारिकाओं को 'रघुपति! सुखदायक राम!' शब्द रटाते थे। अयोध्या का राजद्वार सब प्रकार से सुंदर था। नगर की गलियों, चौक और हाट-बाजारों की सुन्दरता अवर्णनीय थी। अयोध्या में बिना किसी मूल्य के सभी वस्तुएं प्राप्त होती थीं। जहां लक्ष्मीपति स्वयं विराजमान हों वहां किस सम्पदा का अभाव? बहुत-से व्यापारी कुबेर की भांति समृद्ध थे। स्त्री-पुरुष बाल-वृद्ध सुखी, सच्चरित्र और सुन्दर थे।

अयोध्या नगरी की उत्तर दिशा में निर्मल पवित्र सरयू नदी प्रवाहित थी। सरयू के तट पर सुन्दर घाट थे। घाटों पर तनिक भी कीचड़ न था। हाथियों, घोड़ों और पशु-पक्षियों के पानी पीने के लिए अत्यन्त मनोहर घाट बने थे। स्त्रियों के लिए सुंदर पनघट बने थे, जहां पुरुषों के लिए स्नान वर्जित था। अयोध्या का राजघाट हर तरह से सुन्दर और श्रेष्ठ था। वहां चारों वर्णों के पुरुष स्नान करते थे। सरयू तट के सुन्दर उपवनों में देव-मन्दिर थे। शांत सरयू के तट पर मुनियों, ज्ञानियों और संन्यासियों के अनेक आश्रम थे। वहां तुलसी के अगणित पौधे मुनियों ने लगाए थे। नगर के बाहर का क्षेत्र भी बहुत सुंदर था। वन, उपवन, बावड़ियों तथा तालाबों से युक्त अयोध्यापुरी सारे पापों को नष्ट करने वाली थी। अनुपम बावड़ियां, तालाब तथा मनोहर और विशाल कुएं शोभित थे, जिनकी सुंदर सीढ़ियों और निर्मल जल को देख देवता और मुनिजन भी मोहित हो जाते थे। उन तालाबों में बहुरंगे कमल खिले थे। पक्षी चहकते थे। भौंरे गुंजारते थे। सुरम्य उपवन में कोयल आदि पक्षी अपनी मधुर वाणी में मानो पथिकों को आमंत्रित करते थे। जहां रमापति स्वयं राजा हों उस नगरी की शोभा का कैसे वर्णन किया जाये? मणि-माणिक संपन्न सभी सिद्धियां अयोध्यापुरी में छायी हुई थीं।

जहां-तहां लोग राम के गुणों को गाते हुए एक-दूसरे को यही सीख देते थे कि शरणागतवत्सल, शोभा, शील और रूप के धाम कमलनयन श्यामलगात राम को भजो। जैसे पलक नेत्र की रक्षा करती हैं उसी प्रकार भक्तों की रक्षा करने वाले राम का भजन करो। धनुष-बाण और तरकसधारी, संत-कमल-वन के लिए सूर्य रूप रणधीर राम का स्मरण करो। काल रूपी सर्प के लिए गरुड़ के समान तथा निष्काम भाव से प्रणाम करते ही ममता को विनष्ट कर देने वाले राम का गुणगान करो। लोभ, मोह रूपी मृगों को बधिक की भांति नष्ट कर देने वाले राम को भजो। कामदेव रूपी हाथी को नष्ट करने के लिए सिंह रूप राम का भजन करो। संशय तथा शोक रूपी गहन अंधकार को नष्ट करने को सूर्य सदृश, भय-राक्षस समूह रूपी वन के लिए दावाग्नि जैसे और संसार के दर्प का नाश करने वाले, जानकी सहित राम को क्यों नहीं भजते? वासना रूपी मच्छरों का नाश करने के लिए तुषार के समान, नित्य, एकरस, अजन्मा, अविनाशी तथा पृथ्वी को पापियों से रहित करने वाले उदार राम का भजन करो। नगर के समस्त स्त्री-पुरुष राम की गुण-गाथा गाते रहते और राम निरन्तर सबके अनुकूल थे।

काकभुशुंडि से सारी राम कथा सुन गरुड़ बहुत आनंदित हुए। उनका मोह तथा

भ्रम नष्ट हो गया। फिर उन्होंने काकभुशुंडि के समक्ष अपनी जिज्ञासा रखी कि ज्ञान और भक्ति में श्रेष्ठ क्या है? लोक तथा वेद में ज्ञान को दुर्लभ बताया गया है, लेकिन काकभुशुंडि ने भक्ति का वरण किया। गरुड़ ने भक्ति को प्राथमिकता देने का कारण काकभुशुंडि से पूछा।

गरुड़ की जिज्ञासा से प्रसन्न होकर आदरपूर्वक काकभुशुंडि ने उत्तर दिया कि भक्ति और ज्ञान में तनिक भी भेद नहीं है। संसारजन्य दु:खों को दोनों दूर करते हैं। फिर भी मुनियों ने भक्ति और ज्ञान में भेद करते हुए कहा है कि ज्ञान और वैराग्य, योग और विज्ञान ये सब पुरुष के स्वभाव हैं। पुरुष स्वभावतः प्रबल होते हैं। स्त्री स्वभाव से ही निर्बल होती है। स्त्री को वही त्याग सकते हैं जो धीरबुद्धि हैं। विषयों के वशीभूत, राम-चरणों से विमुख कामी पुरुष नारी संसर्ग नहीं त्याग सकता। अत्यन्त ज्ञानी विद्वान मुनिगण भी मृगनैनियों के नयनकटाक्ष से घायल हो जाते हैं और उनका चन्द्रमुख निरखते रहते हैं। वेद, पुराण और संतों का मत है कि स्त्रियों की यह परस्पर अनोखी रीति है कि वे एक-दूसरे के स्वरूप पर विमुग्ध नहीं होतीं। माया और भक्ति दोनों ही स्त्री-रूप हैं। राम को भक्ति प्यारी है। माया बेचारी तो नर्तकी मात्र है। राम केवल भक्ति से प्रसन्न होते हैं। माया इसी कारण भक्ति से भयभीत रहती है। जिस व्यक्ति के हृदय में निरुपम और विशुद्ध राम-भक्ति निर्विघ्न रूप से निवास करती है उस व्यक्ति से माया को संकोच होता है। वह अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर पाती। इसीलिए विवेकशील ज्ञानी मुनि लोग भक्ति की याचना करते हैं। राम का यह रहस्य जल्दी कोई नहीं जानता। राम की कृपा से ही इसका ज्ञान जिसे हो जाता है, स्वप्न में भी उसे मोह नहीं बांध सकता।

गरुड़! ज्ञान और भक्ति के अन्य भेद भी सुनो, जिसे सुनकर राम के चरणों में निर्विघ्न प्रेम उत्पन्न होगा।

जीव ईश्वर का अंश है। अतः वह अविनाशी, चेतन, निर्मल और सुख की खान है। माया के वशीभूत हो जाने से वही जीव तोते और बन्दर की तरह स्वयं ही बंध जाता है। इस प्रकार माया से जड़ और चेतन के बीच भेद की ग्रंथि बन गयी है। माया द्वारा उत्पन्न इस भेद के छूटने में बड़ी कठिनाई होती है। सांसारिक प्रपंचों से मुक्त न होने के कारण जीव दु:खी रहता है। वेद और पुराण ने यद्यपि बहुत-से उपाय बताये लेकिन भेद-ग्रंथि सुलझने की अपेक्षा उलझती ही जाती है।

जीव के हृदय में भयानक अंधकार छाया हुआ है। गांठ दिखायी नहीं पड़ती; मनुष्य उससे छूटे तो कैसे? ईश्वर की कृपा और संयोग यदि हो तो इस बंधन से मनुष्य छूट सकता है। राम की कृपा से हृदय में सात्विक श्रद्धा रूपी गाय बसे, वेद-विदित अपार जप, तप, धर्म, और नियम के हरित तृणों को वह गाय चरे और अपने भावमय छोटे बछड़े को दूध पिलाये। निवृत्ति रूपी पैरों की रस्सी से उस गाय के पैर बंधे हों, निर्मल मन रूपी दूध दूहने वाला अहीर विश्वास रूपी पात्र में परम धर्म रूपी दुग्ध दुह कर निष्काम भाव रूपी अग्नि पर उसे तपाये। संतोष और क्षमा रूपी वायु से उस औटे हुए धर्म रूपी दूध को ठण्डा कर धैर्य तथा शम रूपी जामन से जमाया जाए। प्रसन्नता रूपी कमोरी में इन्द्रिय दमन रूपी मथनी के सहारे सत्य तथा सुंदर वाणी रूपी रस्सी से उसका मन्थन किया जाए। इस क्रिया से जो निर्मल परम पवित्र वैराग्य रूपी नवनीत निकाल लिया जाए उसे योगाग्नि प्रकट कर समस्त शुभाशुभ कर्म रूपी ईंधन में जला दिया जाए। इस आंच में जब नवनीत का ममता रूपी नि:सत्व जल जाए और उस ज्ञान रूपी घी को बुद्धि की निश्चयात्मिका वृत्ति से शीतल किया जाए तब विज्ञान रूपी बुद्धि, ज्ञान रूपी इस निर्मल घृत को चित्त रूपी दीपक में भरे और समता रूपी दीवट पर उस दीपक को सजाकर रखा जाए। जागृत, स्वप्न, और सुसुप्त अवस्थाओं और सत्व, रज, तम तीनों गुण रूपी कपास से तुरीयावस्था रूपी रुई निकालकर कड़ी बत्ती बनाकर तेजपुंज, विज्ञानमय दीप प्रकाशित हो तब उस प्रकाश से मद-मोह-ईर्ष्या आदि पतंगे नष्ट हो जाते हैं।

मैं ही ब्रह्म हूं। यह अखण्ड वृत्ति ही ज्ञान-दीपक की परम प्रचण्ड दीप-शिखा है। ज्ञान-दीपक द्वारा आत्मानुभव के सुख के सुन्दर प्रकाश में सांसारिक जड़ता, अविवेक और विभ्रम नष्ट हो जाते हैं। अति प्रवल मोह आदि का गहन अंधकार नष्ट हो जाता है। विज्ञान रूपी बुद्धि आत्मानुभव रूपी ज्योति को प्रकाशित कर हृदय में जड़ और चेतन की गांठ को सुलझाती है। यदि यह ग्रंथि किसी प्रकार खुल जाए तो जीवन कृतार्थ होता है। मन की गांठ को खुलता जानकर माया विघ्नों का जाल फैला देती है। माया ऋद्धि-सिद्धि को प्रेरित करती है, वह बुद्धि को लाभ दिखाती है। छल-बल से ज्ञान रूपी दीपक के पास जाकर अपने आंचल की हवा से

उसे बुझा देती है। विवेकी ऋद्धि-सिद्धियों को अहितकर जान उनकी ओर नहीं देखते। यदि व्यक्ति माया के विघ्नों से विचलित नहीं होता तो देवता प्रपंच रचते हैं। इन्द्रियों के द्वार, हृदय रूपी घर के द्वार और गवाक्ष जैसे हैं। देवताओं का उन पर अधिकार है। विषय रूपी हवा को आते देखकर देवता कपाट खोल देते हैं और हृदय में विषय-वायु के प्रवेश से विज्ञान का दीपक बुझ जाता है। ग्रंथि के छूटने से पूर्व ही अंधकार छा जाता है। विषय रूपी वायु से बुद्धि व्याकुल हो जाती है। इन्द्रियों के नियंत्रक देवताओं को ज्ञान अच्छा नहीं लगता। उन्हें विषयभोग प्रिय हैं। वासना रूपी वायु बुद्धि को भी बावला बना देती है। उस ज्ञान रूपी दीपक को कौन प्रकाशित करे? ज्ञान दीपक के बुझ जाने से जीव फिर सांसारिक कष्टों में फंस जाता है। ईश्वर की माया बड़ी कठिन है। उससे जल्दी पार नहीं पाया जा सकता है।

ज्ञान-मार्ग वर्णन, कथन संग्रह समझने और साधना में अत्यन्त कठिन है। यदि किसी प्रकार ज्ञान प्राप्त भी हो जाए तो भी उसे बनाये रखने में अनेक विघ्न हैं। ज्ञान-मार्ग तलवार की धार है जिस पर से फिसलने में देर नहीं लगती। जो ज्ञान रूपी तलवार की धार पर निर्विघ्न चल सकता है वह कैवल्य परम पद प्राप्त करता है। राम की भक्ति से वही दुर्लभ मोक्ष अनिच्छा रहने पर भी भक्त को प्राप्त हो जाती है। जैसे स्थल के बिना करोड़ों उपाय करने पर भी जल ठहर नहीं सकता, उसी प्रकार राम-भक्ति के बिना मोक्ष का आनन्द भी कहीं और नहीं टिक सकता। यही सोचकर सच्चे भक्त मुक्ति का निरादर कर भगवान की भक्ति में लवलीन रहते हैं। भक्ति से अनायास और बिना परिश्रम के सांसारिक कष्ट जड़ से नष्ट हो जाते हैं। भोजन तृप्ति के लिए किया जाता है। उसे जठराग्नि अपने आप बिना हमारे प्रयत्न के पचाती है। जो मूर्ख होगा उसे ही यह सहज सुखप्रद भक्ति प्रिय नहीं होगी। इस संसार में सेवा-भाव के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती, यह जानकर मनुष्य को राम के चरणारविन्दों का भजन करना चाहिए। जो जड़ को चेतन और चेतन को जड़ कर देते हैं ऐसे राम को जो लोग स्मरण करते हैं, वे धन्य हैं।

काकभुशुंडि गरुड़ को ज्ञान-दीपक के बारे में बताकर फिर भक्ति रूपी मणि की महिमा बताने लगे। भक्ति रूपी चिंतामणि जिसके हृदय में बसती है वह दिन-रात परम प्रकाश से स्वयं ही आलोकित रहता है। दीपक, बत्ती, घृत उसे कुछ भी नहीं चाहिए। ज्ञान-दीपक के लिए ये सभी चीजें आवश्यक हैं। ऐसे भक्त व्यक्ति के पास मोह रूपी दरिद्रता नहीं आती, न लोभ रूपी वायु उस मणि को नष्ट कर सकती है। प्रबल अविद्याओं का अंधकार तिरोहित हो जाता है। मद, लोभ आदि सारे पतंगे उसे बुझा नहीं पाते। जिसके हृदय में राम-भक्ति का वास हो जाता है उसके हृदय के समीप काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि नहीं फटकते। विष उसके लिए अमृत तथा शत्रु मित्र हो जाते हैं। प्रकाश के मणिदीप के बिना सुख असंभव है। विभिन्न दु:खप्रद मानस-रोग उसे नहीं व्यापते, जिसके पास भक्ति-चिंतामणि है, राम भक्ति में जो लीन रहते हैं ऐसे व्यक्तियों को स्वप्न में भी रंच मात्र क्लेश नहीं होता। संसार में वे ही विवेकी हैं जो इस मणिदीप की प्राप्ति के लिए अनवरत यत्न करते रहते हैं। यह मणि संसार में ही प्रत्यक्ष है परन्तु राम कृपा बिना किसी को प्राप्त नहीं होती। उसकी प्राप्ति के सुगम उपाय हैं, किन्तु मनुष्य उन उपायों की उपेक्षा करते हैं। वेद और पुराण पवित्र पर्वत श्रृंखलाएं हैं। राम की चरित्र कथाएं सुन्दर खान हैं। साधुजन रहस्यमय खान का भेद जानते हैं और अपनी सद्बुद्धि रूपी कुदाल से उसे खोदते हैं। ज्ञान और विराग ऐसे सज्जनों के नेत्र हैं। जो प्राणी आस्था सहित खोज करते हैं वे सभी सुखों की खान भक्ति रूपी मणि को प्राप्त कर लेते हैं।

राम के भक्त राम से बढ़कर हैं। राम समुद्र हैं और धीर सज्जन भक्त श्यामल मेघ। राम चन्दन वृक्ष हैं, संतजन पवन। सुहावनी भगवत् भक्ति ही सभी कार्यों की चरम उपलब्धि है। संतों के अतिरिक्त कोई भी उसे प्राप्त नहीं कर सकता। ब्रह्म समुद्र और ज्ञान मंदराचल है। संतगण देवता हैं। मंदराचल को मथकर मधुर भक्ति रूपी कथा-अमृत को संतगण निकालते हैं। राम-भक्ति रूपी योद्धा वैराग्य रूपी ढाल और ज्ञानरूपी खड्ग से लोभ-मोह रूपी शत्रुओं को मार कर विजय प्राप्त करते हैं।

गरुड़ ने काकभुशुंडि से जिज्ञासा की कि मेरे सात प्रश्नों का उत्तर देकर मुझे तृप्त करें। सबसे दुर्लभ शरीर कौन है? सबसे बड़ा दु:ख कौन है? सबसे अच्छा सुख कौन है? संत और असंत का स्वभाव कैसा होता है? वेदों में प्रसिद्ध महान पुण्य क्या है और अति भयानक पाप कौन हैं? फिर आप मानस-रोगों का भी वर्णन कीजिए। आप सर्वज्ञाता हैं। मुझ पर आपका स्नेह है। मेरी जिज्ञासा तृप्त कीजिए।

काकभुशुंडि ने गरुड़ की जिज्ञासा शांत करते हुए कहा कि मनुष्य-शरीर के समान कोई शरीर नहीं है। मानव-शरीर स्वर्ग और मोक्ष की सीढ़ी है। वह ज्ञान, वैराग्य और भक्ति देने वाला है। मानव-शरीर धारण कर ईश्वर का स्मरण न कर केवल सांसारिक विषय-वासनाओं में लीन रहने वाले अति मंदबुद्धि हैं। वे मानो पारसमणि फेंक कर उसके बदले में शीशे का टुकड़ा ग्रहण कर लेते हैं। दरिद्रता से बढ़कर कोई दु:ख नहीं। संत समागम से बड़ा कोई सुख नहीं है। मनसा-वाचा और कर्मणा दूसरों का हित करना संतों का सहज स्वभाव है। संत दूसरों की भलाई के लिए और अभागे दुष्ट दूसरों को कष्ट देने के लिए पीड़ा सहते हैं। संत भोजवृक्ष के समान हैं जो अपनी छाल तक दूसरों के उपकार के लिए दान कर स्वयं घोर विपत्ति सहते हैं। दुष्ट लोग सन की तरह दूसरों को बांधने की रस्सी बनने के लिए अपनी खाल तक खिचवाकर दु:सह कष्ट सहकर मृत्यु को प्राप्त होते हैं। बिना किसी स्वार्थ के सांप और चूहों की भांति दुष्ट दूसरों का बुरा करते हैं। खेती का नाश करने वाले ओले जैसे खेती को नष्ट कर खुद भी नष्ट हो जाते हैं, ऐसे ही दुष्ट भी दूसरों का अपकार कर खुद समाप्त हो जाते हैं। नीच ग्रह केतु की भांति दुष्टों का अवतरण संसार को पीड़ित करने के लिए होता है। संत का अवतरण चन्द्रमा के समान सदैव सुखद है। अहिंसा वेदों में प्रसिद्ध परम-धर्म है और परनिंदा से बड़ा कोई पाप नहीं है। गुरु की निन्दा करने वाला एक हजार जन्म तक मेंढक बनता है। ब्राह्मणों का निंदक अहंकारी मनुष्य घोर नर्क भुगतकर कौए की योनि में जन्म लेता है, देवता तथा वेदों के निंदक अभिमानी जीव गौरीव नर्क में पड़ते हैं। संतनिंदक उल्लू बनते हैं, जिन्हें मोह रूपी रात्रि प्रिय है ओर ज्ञान-सूर्य उनके लिए सदा के लिए अस्त हो गया है। जो जड़ मनुष्य सबकी निन्दा करते हैं वे चमगादड़ का जन्म लेते हैं।

मानस-रोग का वर्णन करते हुए काकभुशुंडि ने कहा कि सभी रोगों की जड़ मोह है जिससे भयानक शूल उत्पन्न होता है। काम वात है, लोभ कफ है, क्रोध रूपी पित्त नित्य हृदय में जलन पैदा करता है। यदि पित्त, कफ और वात तीनों आपस में मिल जाते हैं तो भयानक सन्निपात हो जाता है। इसी प्रकार काम, लोभ, तथा क्रोध जिस जीव में होते हैं, वह सन्निपात के रोगी की तरह बावला तथा विभ्रमित हो जाता है। संसार में नाना प्रकार के दुर्दम्य वासना रूपी मनोरथ हैं जो शूल के समान चुभते हैं। ममता दाद है और ईर्ष्या खुजली। हर्ष और विषाद अनिष्टकारी ग्रहों के समान हैं। दूसरों को सुखी देखकर उत्पन्न होने वाली डाह क्षय रोग है। मन की कुटिलता कुष्ट रोग है। अहंकार भयानक दु:खदायी डमरू रोग है। दंभ, कपट, मद और मान शरीर से सूत के समान निकलने वाला कीड़ा नहरूआ रोग है। तृष्णा प्रचण्ड जलोदर रोग है। पुत्र, धन और यश तीन प्रकार की इच्छाएं प्रबल तिजारी रोग हैं। मत्सर और अविवेक दो प्रकार के ज्वर हैं। इस प्रकार न जाने कितने असाध्य मानस-रोग हैं। एक ही रोग से मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। अगणित व्याधियां जीव को पीड़ा देती हैं। ऐसी अवस्था में शांति कैसे प्राप्त हो? नियम, जप, दान, ज्ञान न जाने और भी कितनी औषधियां हैं परन्तु सभी दु:साध्य रोग उक्त औषधियों से नहीं मिटते। सभी प्राणी किसी न किसी रोग से पीड़ित हैं। शोक, हर्ष, प्रेम और वियोग के दु:खों से सभी दु:खी हैं। कम लोग ही मानस के दु:साध्य रोगों को समझ पाते हैं। इन अनिष्टकारी रोगों का ज्ञान होते ही रोग कुछ क्षीण तो हो जाते हैं, परंतु नष्ट नहीं होते। मनुष्यों को दु:खी देखकर न उनका नाश होता है न वे दूर होते हैं। वासना रूपी कुपथ्य पाकर मुनियों के हृदय में भी उनका अंकुरण हो जाता है, साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या? यदि संयोग बन जाए, राम की कृपा से सभी विकार नष्ट हो जाते हैं। सद्‌गुरु रूपी वैद्य पर विश्वास कर विषयों की आशा न करने का परहेज बरता जाए, राम-भक्ति रूपी संजीवनी बूटी श्रद्धा से परिपूर्ण बुद्धि के अनुपात के साथ लेने से ही ये रोग नष्ट हो सकते हैं अन्यथा करोड़ों उपायों से भी वे नष्ट नहीं होते। मन को तब निरोग जानना चाहिए जब उत्तम बुद्धि रूपी क्षुधा नित्य बढ़ती रहे और वासना व आशा रूपी दुर्बलता तिरोहित हो जाए। इसके बाद जब व्यक्ति निर्मल ज्ञान सागर के अमृत जल से स्नान करे तभी हृदय में रामभक्ति छा जाती है। शिव, ब्रह्मा आदि मुनियों का यह दृढ़ मत है कि राम के चरण-कमलों से प्रेम करना चाहिए। वेद, पुराण आदि ग्रन्थ कहते हैं कि राम-भक्ति के बिना स्वप्न में भी सुख संभव नहीं है। कछुए की पीठ पर बाल भले उग आएं, बांझ स्त्री का पुत्र भले ही किसी का वध कर डाले, आकाश में नाना पुष्प भले ही प्रफुल्लित हो जाएं, किन्तु राम-विरुद्ध नीति पर चलने वाला व्यक्ति कभी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। मृगतृष्णा से प्यास बुझ जाए, खरगोश के सींग निकल आएं, अंधकार भले ही सूर्य को मिटा दे, लेकिन राम-

विमुख जीव को सुख नहीं मिल सकता। हिमखण्ड से अग्नि उत्पन्न हो जाए, जल-मंथन से घृत निकले, बालू पेरने से तेल की धार प्रवाहित हो उठे किन्तु एकाग्र चित्त से राम के ध्यान बिना संसार के इस सागर से पार नहीं उतरा जा सकता। राम मच्छर को ब्रह्मा और ब्रह्मा को मच्छर कर देते हैं। यही सोचकर विवेकी प्राणी सन्देह छोड़कर राम का भजन कर दुस्तर संसार से तर जाते हैं।

काकभुशुंडि बोले—मैंने राम के अनुपम चरित्र के आधार पर कहीं संक्षेप और कहीं विस्तार से अपनी बुद्धि के अनुसार सारी कथा कह सुनायी। वेदों का यही कहना है कि सब कुछ छोड़ ईश्वर का भजन करना चाहिए। मुझ जैसे मूर्ख ममता करने वाले राम को छोड़ और किसका भजन करें? आप विज्ञान रूप हैं, आपको मोह नहीं है। आपने तो मुझ पर कृपा करके शुक, सनकादिक और शंकर के मन को प्रिय लगने वाली अत्यन्त पावन राम कथा पूछी। संसार में एक क्षण के लिए एक बार भी सत्संग हो जाए, यह दुर्लभ है। हे गरुड़! आप जरा सोचिए कि क्या मैं राम भजन का अधिकारी हूं? सब प्रकार से नीच और अपवित्र मुझको भगवान ने पवित्र कर दिया। आज मैं धन्य-धन्य हूं। राम ने मुझे अपना सेवक जानकर आप जैसे संत का दर्शन कराया। अपने विवेक के अनुसार जितना कह सकता था, वह सब कुछ स्पष्ट कर दिया। राम के गुणों का बार-बार वर्णन कर काकभुशुंडि मन ही मन हर्षित होने लगे।

काकभुशुंडि कहने लगे—वेदों ने 'नेति-नेति' कहकर राम की महिमा का वर्णन किया है। राम के चरण शंकर और ब्रह्मा पूजते हैं। मुझ जैसे अपावन पर कृपा राम-हृदय की कोमलता का द्योतक है। राम जैसा स्वभाव किसी का भी देखने-सुनने में नहीं आया। साधक, सिद्ध, मुक्तजन, विरक्त, कवि, पंडित, कर्मण्य, संन्यासी, योगी, वीर, साधक, तपस्वी, ज्ञानी, धर्म-कर्म में लवलीन विद्वान और ब्रह्मज्ञानी सभी रामभजन बिना मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकते। मैं उन्हीं राम की वंदना करता हूं। उनकी शरण में जाने पर पापी भी शुद्ध हो जाते हैं। जिनका नाम तीनों प्रकार की पीड़ा को नष्ट करने वाला है, ऐसे राम मुझ पर तथा आप पर निरंतर कृपालु रहें।

राम-चरणों में काकभुशुंडि की भक्ति देखकर और उनकी ज्ञानमयी बातें सुनकर संदेहमुक्त गरुड़ ने प्रेमपूर्वक कहा कि भक्ति-रस में सनी राम-कथा आपकी वाणी से सुनकर मैं कृतार्थ हूं। माया से उद्भूत मेरी सारी विपत्तियां नष्ट हो गयीं। राम के चरणों में नया प्रेम उत्पन्न हो गया। आपने मुझे अपरम्पार सुख दिया है। उसका प्रत्युपकार मैं नहीं कर सकता। मैं आपके चरणों की वंदना करता हूं। आप पूर्णकाम राम के चरणों के पुजारी हैं। आप जैसे संत जो कुछ करते हैं उससे दूसरों का हित होता है। कवियों ने संतों का हृदय नवनीत के समान कहकर उचित उपमा नहीं दी। नवनीत अपने ताप से पिघलता है परन्तु संत जन दूसरों की पीड़ा से द्रवित होते हैं। काकभुशुंडि के चरणों में मस्तक झुकाकर और अपने हृदय में राम का ध्यान स्थित कर गरुड़ वैकुण्ठ लोक गये।

शिवजी पार्वती से बोले—संत समागम से बढ़कर कोई दूसरा लाभ नहीं है और बिना हरिकृपा से संत समागम नहीं प्राप्त होता। राम-कथा के पवित्र इतिहास को सुनते ही विविध बंधन छूट जाते हैं। शरणागतों के कल्पवृक्ष तथा करुणागार राम के चरणों में अद्भुत प्रीति उत्पन्न हो जाती है। जो लोग एकाग्रचित्त होकर राम-कथा सुनते हैं उनके मन, वचन, कर्म से उत्पन्न पाप नष्ट हो जाते हैं। तीर्थयात्रा आदि विविध साधम, ज्ञान, योग, वैराग्य, ज्ञान में निपुणता, विभिन्न धर्म, कर्म, व्रत, संयम, जप, तप, यज्ञ, नीति, दम, जीव दया, ब्राह्मण एवं गुरु सेवा, विद्या, विनम्रता, विवेक और बड़प्पन जो भी साधन वेदों में वर्णित हैं, सबका फल ही हरिभक्ति है। वेद-वर्णित राम की भक्ति बहुत ही कम लोगों ने प्राप्त की है। जो भी राम-चरणों की भक्ति-कथा विश्वासपूर्वक सुनते हैं वे मुनिदुर्लभ भगवान की भक्ति अनायास ही प्राप्त कर लेते हैं। वे ही सर्वज्ञ, गुणी और विद्वान पृथ्वी के भूषण, दानी और पंडित हैं। वे ही गुणज्ञ, विख्यात धर्मपरायण और कुलरक्षक हैं, जो राम के चरणों में प्रेम करते हैं। वैदिक सिद्धान्तों का उन्हीं ने निर्वाह किया है। नीतिकुशल और सच्चा रणधीर वही है, जो सारे छल-प्रपंच को छोड़कर राम का भजन करता है। कवि, विद्वान और वीर वही है जो छल-कपट छोड़ राम का गुणगान करता है।

धन्य है वह देश जहां गंगा की धारा प्रवाहित होती है। धन्य है वह स्त्री जो पतिव्रत धर्म का पालन करती है। धन्य है वह राजा जो न्याय से नहीं डिगता। वह विप्र धन्य है जो अपना धर्म नहीं छोड़ता। धन्य है वह धन जो प्रथम गति दान को प्राप्त होता है। वह बुद्धि धन्य है जो निरन्तर पुण्य में निरत रहती है। वह घड़ी



सियाराम मय सब जग जानी। करहूं प्रनाम जोरि जुग पानी।।

धन्य है जिसमें सत्संग प्राप्त हो। वह जन्म धन्य है जिसमें अगम्य भक्ति प्राप्त हो जाए। वह कुल धन्य, मान्य और अत्यन्त पवित्र है जिस कुल में राम जैसे सेवापरायण विनीत पुरुष उत्पन्न होते हैं।

शंकर पार्वती से बोले—बहुत दिनों से उस संजोई हुई गुप्त राम-कथा को अपनी बुद्धि के अनुसार मैंने कह सुनाया। राम-कथा ऐसे दुष्ट तथा हठी से नहीं कहनी चाहिए, जो भगवान की इस कथा को मन से नहीं सुनते। लोभी, कामी, क्रोधी से, जो जड़ चेतन के स्वामी राम का स्मरण न करे, राम-कथा नहीं कहनी चाहिए। ब्राह्मणों के द्रोही को, भले ही वह इन्द्र-सा शक्तिशाली ही क्यों न हो, राम-कथा नहीं सुनानी चाहिए। नीति-निपुण संतजनों के सेवक ही राम-कथा सुनने के अधिकारी हैं। जिन्हें राम प्राणों से बढ़कर प्रिय हैं और जो राम के चरणों में प्रीति रखते हुए मुक्ति चाहते हैं वे ही सप्रेम इस अमृत रूपी कथा को अपने कानों में भरकर तृप्त होंगे। यह राम-कथा मन की कालिमा को नष्ट करने वाली है। सांसारिक भवबाधाओं को नष्ट करने वाली संजीवनी बूटी है।

राम भक्तिमार्ग की सात सुन्दर सीढ़ियां इसमें हैं। राम जिस पर विशेष कृपा करते हैं वही इन पर पांव रखता है। कपट छोड़ जो राम-कथा सुनते हैं उनकी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। संसार-सागर को गाय के खुर के समान वे लांघ जाते हैं। पार्वतीजी राम-कथा सुनकर गद्‌गद हो कर बालीं—हे प्रभु! मेरा संदेह नष्ट हो गया। राम-चरणों में नई प्रीति जागी। मैं कृतार्थ हो गयी।

राम-कथा संसार के दुःखों को दूर करने वाली, सन्देहों को मिटाकर संतों को आनन्दित करने वाली है। राम-कथा से बढ़कर राम के उपासकों के लिए कुछ नहीं है। कलियुग में योग, पूजा, जप, तप कोई साधन नहीं है। राम-स्मरण कर उनका गुणानुवाद करना और सुनना ही हितकर है। कवि, वेद, संत और पुराणों का कथन है कि पापियों को पवित्र करने का स्वभाव केवल राम का है। कुटिलता छोड़कर राम का भजन करने से ही सद्‌गति प्राप्त होती है। गणिका, गीध, अजामिल तथा अन्य बहुत-से दुष्टों को राम-भजन ने ही मुक्ति प्रदान की। भयानक पापी यवन, किरात, चाण्डाल आदि भी एक बार राम-नाम का उच्चारण कर पवित्र हो गये। जो मनुष्य रघुवंश शिरोमणि राम का चरित्र सुनते और गाते हैं वे कलियुग के पाप तथा मन के कलुष को निर्मल कर बिना परिश्रम रामधाम प्राप्त करते हैं। रामचरितमानस की पांच-सात अर्धालियां भी जिसके हृदय में स्थान पा लेती हैं उसके हृदय का अविद्याजन्य अंधकार भगवान राम हर लेते हैं। राम के समान निष्काम, हितकारी, दाता दूसरा नहीं है। तुलसीदास जी कहते हैं—राम की रंचमात्र कृपा से मुझ जैसे मंदबुद्धि को परम विश्राम प्राप्त हुआ। न तो मेरे समान कोई दीन है न राम के समान दीनों का हितचिंतक। यह सोचकर हे राम! मेरे भीषण तापों को नष्ट करो। कामी को जैसे स्त्री और लोभी को जैसे सम्पत्ति प्यारी होती है वैसे राम मुझे निरन्तर प्रिय लगते रहें।

भगवान शंकर ने राम-चरण-कमलों में अनन्य भक्ति प्राप्त करने के लिए जिस रामायण की रचना की थी, तुलसी ने अपने अंतःकरण के अंधकार को दूर करने के लिए उसी रामचरितमानस को भाषाबद्ध किया। यह ग्रंथ पुण्यरूप, पापहर, सदा कल्याणप्रद, विज्ञान और भक्ति देने वाला, माया, मोह आदि कलुषों को नष्ट करने वाला, निर्मल, प्रेम रस से परिपूर्ण तथा मंगलप्रद है। रामचरितमानस रूपी मानसरोवर में छककर डुबकी लगाने वाले संसार की प्रखर प्रबल तप्त किरणों से नहीं जलते।

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहुं मोहि राम।।


प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार